वास्तुकला

और

भवन निर्माण

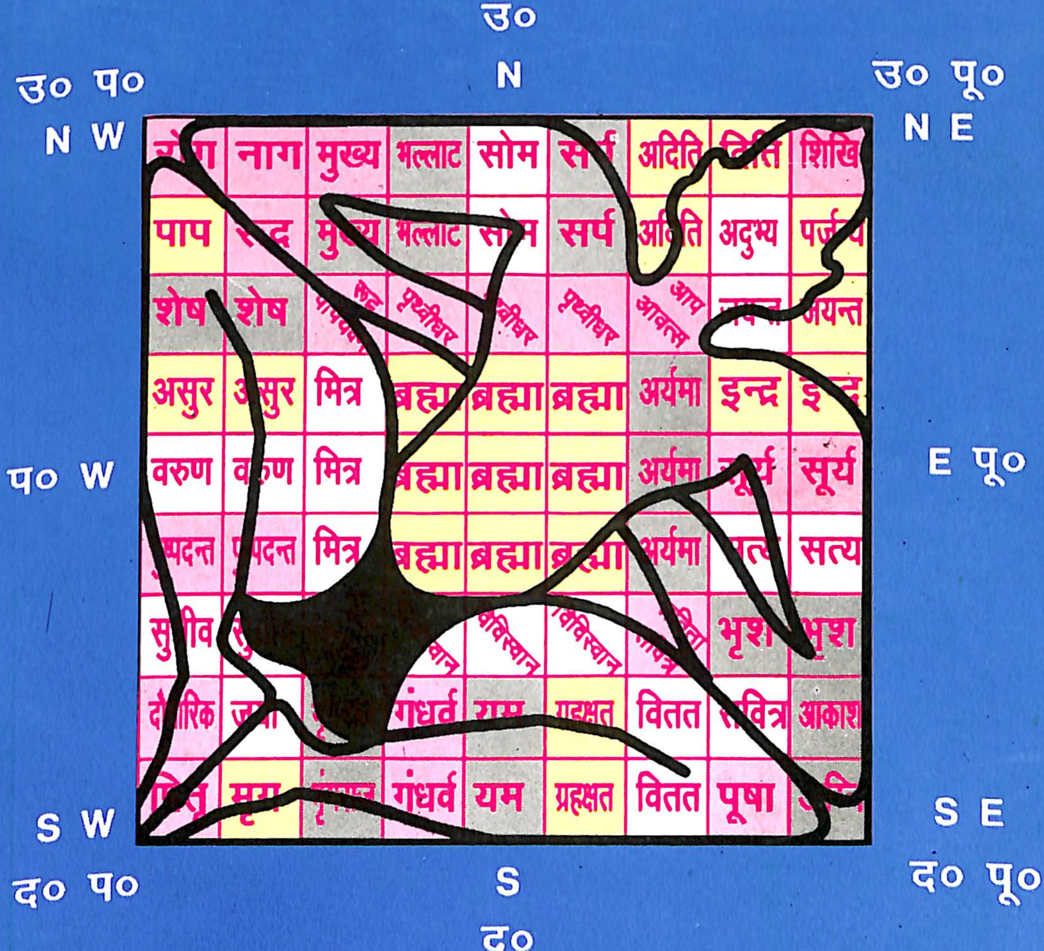

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

वास्तुकला और भवन निर्माण

*प्राचीन भारत के समस्त भवनों, मन्दिरों, महलों, गुफाओं, कुँओं और बावड़ियों का निर्माण, वैदिक वास्तुकला के आधार पर ही होता था, जिससे उस समय का मानव प्रसन्न, सुखी एवं सम्पन्न रहता था। विदेशी प्रभाव के आडम्बरवश धीरे-धीरे वास्तुकला विकृत होती चली गयी। सीमेण्ट, लोहे व अशास्त्रीय ढंग से बने भवनों में लोग दुःखी, संतप्त और उदासीन रहने लगे। वस्तुतः आज मानव जीवन की सार्थकता नष्ट होने लगी है और अशान्त मानव, भौतिक जीवन की विलासिता से ऊबकर क्लांत और तनावग्रस्त हो चुका है। भारतीय वास्तुकला के सिद्धान्तों में छिपी वैज्ञानिकता को वास्तुविदों ने पहचाना और इस कला को पुनर्जीवित कर दिया। वास्तु-सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित गृह सुख-शान्तिदायक होते हैं। यदि आप अपने रहने के लिए भवन बना रहे हैं तो इस पुस्तक को पढ़कर सुखदायी गृह बनाएं। **'वास्तुकला और भवन निर्माण'** नामक इस उपयोगी पुस्तक को आपके लिए लिखा है आपके प्रिय लेखक **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** ने। सुखी जीवन के लिए गृह निर्माण, वास्तुकला के सिद्धान्तों के अनुरूप करना सुख-समृद्धि का पोषक है।*

समर्पण

उन समस्त जनों को जो निज भूमि पर वास्तु-निर्माण द्वारा सुखी और समृद्ध होना चाहते हैं।

—उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

वास्तुकला और भवन निर्माण

(सुख-समृद्धि कारक वास्तु निर्माण की रीति बताने वाला उत्कृष्ट ग्रन्थ)

लेखक

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

बी०एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर

मूल्य : 125.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार – 249401

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन,**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे), हरिद्वार-249 401
फोन : (0133) 426297, 426195

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स,** रेलवे रोड़, हरिद्वार,
फोन : (0133) 428510

मुख्य वितरक : 1. पुस्तक संसार, बड़ा बाजार, हरिद्वार
2. पुस्तक संसार, नुमाइश मैदान, जम्मू
3. गगनदीप पुस्तक भंडार, एस.एन. नगर, हरिद्वार

पुस्तक : **वास्तुकला और भवन निर्माण**

लेखक : **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'**

संस्करण : चतुर्थ संस्करण - सन् २००१

मुद्रक : राजा आफसेट प्रिंटर्स, ललित पार्क, दिल्ली-91

चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश का पुनर्मुद्रण या फोटोकॉपी करने के लिए लेखक एवं प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

VASTUKALA AUR BHAWAN NIRMAN

(Sukh-Samridhi Karak Vastu-Nirman Ki Riti Batane Wala Utkrishat Granth)

WRITTEN BY :

DR. UMESH PURI 'GYANESHWAR'

PUBLISHED BY :

RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR
(INDIA)

ISBN : 81-86955-00-3

प्रकाशकीय

विश्व की प्राचीन वास्तुकला के क्षेत्र में भारत का अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। यह कहने में भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि सम्पूर्ण भारत असंख्य स्मारकों का एक विशाल संग्रहालय है। प्राचीन काल से ललित कलाओं की तरह वास्तुकला का महत्वपूर्ण स्थान है। भवन निर्माण को साधारण शिल्प से ऊपर माना गया है। भवनों का निर्माण करते समय कलात्मकता और उपयोगिता दोनों की अपेक्षा समझी गयी।

विदेशी विद्वानों द्वारा रचित वास्तु-साहित्य में भारतीय वास्तु साहित्य व परम्परा की उपेक्षा की गयी है। जबकि प्राचीन भारतीय साहित्य में वास्तु-सम्बन्धी बहुमूल्य व प्रचुर सामग्री उपलब्ध है, परन्तु विदेशी विद्वानों ने इसका प्रयोग न के बराबर किया है, भारतीय वास्तु के उद्भव और विकास में भी भारत के स्वतन्त्र चिन्तन को महत्व न देने के कारण प्राचीन भारतीय वास्तु या स्थापत्य का यही रूप हमारे सम्मुख उपस्थित न हो सका।

आवास मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता में से एक है। प्रत्येक मनुष्य की आकांक्षा यह है कि वह अपने भवन में निज परिवार के साथ सुख-शान्ति व समस्त सुविधाओं के साथ रहे। आपकी यह मनोकांक्षा पूर्ण हो इसलिए यह पुस्तक प्राचीन वास्तुशास्त्र के आधार पर आपके उपयोग के लिए अनुभवी एवं विद्वान लेखक भारत प्रसिद्ध ज्योतषाचार्य डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर' ने अपने अमूल्य अनुभवों को इस पुस्तक में आपके उपयोग के लिए अभिव्यक्ति प्रदान की है। भवन निर्माण करते समय भूमि चयन व नींव से लेकर भवन निर्माण के उपरान्त गृह प्रवेश, शिलान्यास और वास्तु-शान्ति तक की अनमोल जानकारी सरल, सुबोध भाषा में दी गई है। हमें विश्वास है इससे वास्तुविद, भवन निर्माण कर्त्ता, नक्शानवीस व सामान्य जन मार्ग दर्शन प्राप्त करके लाभान्वित होंगे। लेखक एवं प्रकाशक का प्रयास तभी सफल है जब आप सब इसे उपयोग में ला सकें। पुस्तक के संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक

Randhir Singh

(रणधीर सिंह)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्याल्ल क्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुदीर्यते।।

—समरांगण सूत्रधार, 1/5

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकार नहीं है जिससे यह निश्चित किया जा सके कि कोई भी भवन सही निर्मित है या नहीं। वस्तुतः जनता जनार्दन पर कृपा स्वरूप वास्तुशास्त्र प्रस्तुत किया जा रहा है।

— स्नेहपाती आपके नाम —

प्रिय पाठकों,

मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं—रोटी, कपड़ा और मकान। इन अनिवार्य आवश्यकताओं के अभाव में जन्म लेना ही निरर्थक है। जिस प्रकार प्राणमय शरीर के लिए पोषक तत्व रोटी (भोजन) के रूप में आवश्यक हैं, उसी प्रकार व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के लिए भवन (मकान या गृह) का होना भी अत्यावश्यक है, क्योंकि भवन (मकान या गृह) जीवन के सभी अंगों का आश्रय है।

वैसे भी संसार में अनेक मानव जन्म लेते हैं, परन्तु उनमें से कुछेक ही स्वअर्जित धन से भवन-निर्माण करा पाने में सफल होते हैं। भवन-निर्माण कराने पर वास्तविक प्रसन्नता, सुखानुभूति व मानसिक शान्ति सपरिवार अनुभूत होती है।

चारों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास) में गृहस्थाश्रम प्रधान है। गृहस्थाश्रम पर अन्य तीन आश्रम आश्रित हैं, फलतः प्रत्येक गृहस्थ हेतु गृह (भवन) का होना अनिवार्य है। गृह के बिना परिवार की रक्षा एवं इच्छित सुखों की प्राप्ति, संभव नहीं है। गृह होने पर ही धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति, गृहस्थ की अस्मिता और व्यावहारिक निर्वाह सम्भव है। गृहहीन का तो कोई अस्तित्त्व ही नहीं है। भवन की महत्ता इसी बात से परिलक्षित होती है कि जो पुरुष निज पूर्वजों द्वारा निर्मित भवन में जीवनयापन करता है वह पुरुषार्थहीन है।

सीमेण्ट, लोहे वं अशास्त्रीय (वास्तुविज्ञान के सिद्धान्तों के विरुद्ध) ढंग से बने भवनों में लोग दु:खी, संतप्त और उदासीन रहने लगे हैं। फलतः मानव जीवन की सार्थकता ही नष्ट होने लगी है। आज का अशान्त मानव भौतिक जीवन की विलासिता से ऊबकर क्लांत और तनावग्रस्त हो चुका है, इस समय वह शान्ति की खोज में और अधिक विलासिता में लिप्त होता जा रहा है। आज के आधुनिक मानव की अपेक्षा प्राचीन भारत का मानव अधिक प्रसन्न, सुखी व शान्त था। उस प्राचीन काल का मानव वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को जानता था और उसी आधार पर निर्मित भवनों में रहता था।

आज भी दक्षिण भारत में वास्तु सिद्धान्तों का अधिक प्रचलन है, इसीलिए दक्षिण भारतीय लोग उत्तर भारत के लोगों से अधिक सम्पन्न एवं शान्त हैं। यदि आप भी सुखी, सम्पन्न एवं शान्त होना चाहते हैं तो वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को अपनाकर अपने रहने के लिए भवन निर्मित करें या अपने बने-बनाए भवन में परिवर्तन करें।

दक्षिण भारत में प्रचलित वास्तुशास्त्र अनायास सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय हो गया और इस विषय पर अनेक पुस्तकों से बाजार भर गया। ऐसा क्या हो गया था, जो वास्तुशास्त्र की मांग बढ़ गयी और एक बार फिर वास्तुशास्त्र की वापसी पूर्ण जोर-शोर से होने लगी। इसके पीछे भी एक घटना है। एक दिन प्रातः आंध्र प्रदेश के मुख्य चुनाव अधिकारी अपने कार्यालय पहुँचे तो वे सन्न रह गए और अपरिचितों की तरह अपने केबिन को देख रहे थे जहाँ आज से पहले वे बैठकर अपना कार्य

करते थे। अब छिन चुका था। उन्हें बताया गया कि नीचे की किसी मंजिल पर उनके बैठने का प्रबन्ध किया जा रहा है। हैदराबाद में आंध्र सचिवालय की पांचवी मंजिल उनका कार्यालय था, वहाँ अब मुख्यमन्त्री एन. चन्द्रा बाबू नायडू के लिए मन्त्रणा कक्ष बनना प्रारम्भ हो चुका था। ऐसा मुख्य चुनाव अधिकारी के साथ ही नहीं हुआ था और भी अनेक अधिकारी थे जिनके कार्यालय नीचे की मंजिलों पर स्थानान्तिरित कर दिए गए थे। इस सबके पीछे 'वास्तुशास्त्र' कार्य कर रहा था। मुख्यमन्त्री नायडू ने वास्तुविदों की सलाह पर यह सब किया था। अपने श्वसुर स्व. एन. टी. रामाराव को हटाकर मुख्यमन्त्री बने नायडू की मुख्य समस्या यह थी कि अपना कार्यालय और केबिन कहां बनाएं ? वे वहां बैठने को तैयार नहीं थे जहाँ कभी उनके श्वसुर बैठते थे। वास्तुविदों की सलाह के अनुसार जैसे-तैसे कुछ परिवर्तन कराकर श्वसुर के केबिन में बैठने को तैयार हो गए, पर जल्द ही उन्होंने अपने लिए दूसरा स्थान चयनित कर लिया। पर उसके लिए भी वास्तुशास्त्री पूर्णत: तैयार नहीं थे। अन्तत: सचिवालय के ए ब्लाक के नए भवन की चौथी मंजिल पर चन्द्राबाबू ने अपने लिए स्थान चुना। उनके कार्यालय के लिए तैयारी की गई, पर वे इसमें न बैठकर इससे ऊपरी मंजिल में बैठना चाहते थे। बाद में इसमें मुख्य सचिव को बिठाया गया। मंजिल में मुख्य चुनाव अधिकारी के कमरे को चन्द्राबाबू ने ले लिया। 1 अक्टूबर 95 को विधिविधान से पूजा-पाठ कराकर मुख्यमन्त्री ने अपने कार्यालय में कार्यारम्भ किया। परन्तु दो दिन बाद ही उनके साढू सांसद डॉ० डी. वेंकटेश्वर राव ने उनका साथ छोड़ दिया और अपने साथ चौदह विधायक लेकर वापस अपने श्वसुर एन. टी. आर. के धड़े में आ लगे। ऐसे में नायडू के मित्रों ने सारा जोर नए कार्यालय को दिया। एक बार पुन: वास्तुविदों से मन्त्रणा की गई तो उन्होंने सलाह दी कि आपके कार्यालय के ऊपर स्थित समस्त कार्यालयों में बैठे अधिकारियों को हटाया जाए क्योंकि मुख्यमन्त्री के ऊपर किसी को नहीं बैठना चाहिए। वास्तुविदों की सलाह के अनुसार ऊपरी मंजिल के सभी कार्यालय वहाँ से हटा दिए गए।

वास्तुशास्त्र के अनुरूप कार्यालय बनाकर काम करने वाले आजकल तेजी से बढ़ रहे हैं। यहाँ तक अनेक आर्किटेक्ट भी वास्तु संबंधी सलाह देने लग गए हैं। वास्तुशास्त्र का प्रचलन दक्षिण भारत में अधिक है, परन्तु अब धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत में प्रचलित होता जा रहा है। औद्योगिक घराने तो इसमें अधिक रूचि ले रहे हैं।

प्रसिद्ध आर्किटेक्ट बी. एस. रेड्डी इसे विशुद्ध विज्ञान मानते हैं। वे अमेरिका से आर्किटेक्ट में स्नातकोत्तर डिग्री लेकर भारत आए हैं और यहाँ पर वास्तुविद् बनकर सर्वाधिक व्यस्त हो गए हैं। उनके अनुसार वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर थोड़े परिवर्तन से ही अत्यधिक प्रभाव पड़ने लगता है। वास्तु दोष का निदान हो जाने पर जीवन में परिवर्तन आ जाता है।

वास्तुशास्त्र के अनमोल सिद्धान्त सूर्य की स्थिति और ब्रह्माण्ड पर उसके प्रभाव को ध्यान में रखकर निर्धारित किए गए हैं। सूर्य का प्रकाश और उसका ताप महत्वपूर्ण है। भूमि का प्रकार व हवा की दिशा भी वास्तु सिद्धान्तों में अपनी महत्ता रखती है।

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को गहनता से देखें तो यही लगता है कि प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। भूमि पर किसी भी प्रकार के निर्माण से प्रकृति प्रभावित होती है। वास्तु सिद्धान्त हमारी जीवन पद्धति के पक्षधर है जिसका लक्ष्य किसी भी निर्माण को इस ढंग में करना है कि कम से कम क्षति प्रकृति को पहुँचे। आपके मन में यह विचार भी कौंध सकता है कि प्रकृति को क्षति न पहुँचे, यह तो ठीक है। लेकिन यह शास्त्र समृद्धि में सहायक भी हो सकता है, यह बात गले नहीं उतरती। ब्रह्माण्ड में स्थित सभी तत्त्वों के प्रति हमारा शरीर आकर्षित होता है। ये तत्त्व प्रकृति और हमें प्रभावित करते हैं। यदि हम प्रकृति के विरुद्ध जायेंगे तो प्रभावित ही होंगे अर्थात् कुप्रभाव पड़ेगा, फलस्वरूप हमारी अवनति ही होगी और यदि प्रकृति के अनुरूप चलेंगे तो सुप्रभाव पड़ेगा जिसके प्रतिफल में उन्नति होगी जो हमें समृद्धिशाली बनने में सहायक होगी।

आज लोग सोच रहे हैं कि एक कमरा इधर से उधर करने, फैक्ट्री का मुख्यद्वार बदल देने, अपने कार्यालय की कुर्सी की दिशा बदलने से वास्तु दोष का निदान हो जायेगा और गृह-शन्ति के साथ-साथ समृद्धि का द्वार खुल जाएगा। समस्त दुःख-दर्द दूर हो जायेंगे और जीवन सरलता से सरपट दौड़ने लगेगा तो क्यों न वास्तुविद् से सलाह ली जाए ?

आज व्यस्त वास्तुविद् एक घन्टे का दस हजार रुपये से अधिक ले रहे हैं और अपने ठहरने और आने-जाने का व्यय अलग से लेते हैं। आप बड़े-बड़े वास्तुशास्त्रियों तक आसानी से नहीं पहुँच सकते। लेकिन हम चाहते हैं कि आप भी वास्तु सिद्धान्तों से लाभ उठाएँ। इसी बात को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखने के लिए तत्पर हुआ। अनेक वर्षों के अध्ययन और इसके सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने के बावजूद आपके उपयोग हेतु इस पुस्तक में सरल ढंग से वास्तु-सिद्धान्त समझा रहा हूँ।

आज लोगों के पास समय बहुत कम है एवं लोग प्राचीन सिद्धान्तों को विस्मृत भी करते जा रहे हैं, ऐसे में भवन निर्माण में प्राकृतिक स्रोतों के माध्यम् से ऊर्जा कैसे प्राप्त करें, इसका ज्ञान होना चाहिए। इस पुस्तक के माध्यम् से लोगों को व्यवहारिक, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का ज्ञान हो सकेगा। इसमें वास्तु के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल, बोधगम्य व व्यवहारिक भाषा में प्रतिपादित किया गया है। यदि किसी विषय को वैज्ञानिक, धार्मिक एवं ज्योतिषीय ढंग से विश्लेषित कर दिया जाए तो उसकी उपयोगिता सार्थक हो जाती है। वास्तु सिद्धान्त भवनों में पर्यावरण को सुरक्षित करने के साथ-साथ उत्तम स्वास्थ्य के लिए अनुकूल ऊर्जा भी उत्पन्न करते हैं। वास्तु-सिद्धान्तों के आधार पर किए गए परिवर्तनों से आश्चर्यजनक लाभ होता है। पुस्तक के सार-गर्भित वास्तु सिद्धान्तों को एक ही दृष्टि में अल्प परिश्रम से शीघ्र जानने के लिए पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में दिए गए कोष्ठक को पढ़ें, जहाँ दिशा ज्ञान के लिए एक ओर वास्तु पुरुष भी अंकित है।

यदि आप इनको प्रयोग में लाकर थोड़ा भी लाभ प्राप्त कर सके या सुख-समृद्धि व शान्ति पा सके तो यह श्रम निरर्थक नहीं होगा।

इस पुस्तक को पूर्ण करने में ज्ञात–अज्ञात विद्वानों, मित्रों, परिजनों एवं वास्तुविदों का जो सहयोग मिला उसके लिए उनको विस्मरण करना धृष्टता ही होगी। इस पुस्तक को आप तक पहुँचाने में भाई रणधीर सिंह जी ने जो उत्साह दिखाया, इसके लिए वे सहज साधुता के पात्र है। इस पुस्तक को पूर्ण करने में स्नेहिल मित्र हेमन्त गोयल के सुझावों व सहयोग का भी सराहनीय योगदान है।

विश्वास है कि आप इस पुस्तक को पढ़कर इसके सिद्धान्तों को व्यवहार में लाकर सुखी व शान्त जीवन व्यतीत करेंगे। यदि आपको थोड़ा भी लाभ इस पुस्तक से हुआ तो आप अपने विचार स्नेह–पत्रों के रूप में अवश्य लिख भजेंगे।

स्नेह पत्रों की प्रतीक्षा में.... ।

स्नेहाकांक्षी

(डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर)

18 फरवरी, 1996

सम्पर्क :
ज्योतिष निकेतन
1065/3, शास्त्री नगर
स्कीम नं. 7, गढ़ रोड
मेरठ—250005
दूरभाष : (0121) 565639

वास्तु
आधृत निर्माण
सुख–समृद्धि का कारक है।

आवासीय, व्यापारिक, औद्योगिक, फार्महाऊस, अपार्टमेंन्ट्स, सिनेमा, होटल आदि का निर्माण कर रहे हैं, तो वास्तु–सलाह लें।
डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'
ज्योतिष निकेतन,
1065/2, शास्त्री नगर,
मेरठ 250 005
दूरभाष : (0121) 565639
मिलने से पूर्व समय ले लें।

VASTU CONSELLING
Councelling on Residential Commercial & Industrial Buildings, Cinema Halls, Hotel, Restaurent, Turf Clubs, Farm Lands, Agricultural Lands, Appartments etc.
Contact :
Dr. Umesh Puri 'Gyaneshwar'
JYOTISH NIKETAN,
1065/2, SHASTRI NAGAR,
MEERUT 250 005
✆(0121) 565639
Please Fix Appointment

अनुक्रम

समर्पण	2
प्रकाशकीय	5
श्रीगणेशाय नमः	6
स्नेहपाती आपके नाम	7—10
अनुक्रम	11—14
वास्तुशास्त्र का परिचय, उद्भव, विकास और महत्ता	**15—27**
वास्तुशास्त्र क्या है ?	15
वास्तुशास्त्र का अनुकरण क्यों करें ?	16
वास्तु का उद्भव और रूप	17
वास्तु और वैदिक साहित्य	18
वास्तु का पहला प्रयोग	19
वास्तुशास्त्र का प्रथम प्रवर्तक	20
वास्तुविद्या या शास्त्र का विकास	20
योग्य स्थपति कौन ?	23
वास्तुकला और पंचमहाभूत	24
वास्तुशास्त्र की व्यापकता एवं महत्त्व	25
उत्तम गृह और ज्योतिष योग	**28—34**
भूमि व भवन संबंधी मुख्य ज्योतिष ज्ञान	29
भवन प्राप्ति के ज्योतिष योग	29
स्वपराक्रम से निर्मित भवन प्राप्ति का योग	29
बंगले का योग	30
आकर्षक एवं सुन्दर भवन का योग	30
अनायास दूजों द्वारा निर्मित भवन प्राप्ति का योग	30
एक से अधिक भवनों का योग	31
भवन, वाहन व नौकर प्राप्ति का योग	31
बिना प्रयास या अल्प प्रयास के भवन प्राप्ति का योग	31
कोठी प्राप्ति का योग	32
भूमि, वाहन, माता और संगीत का सुख प्राप्ति योग	32
विभिन्न प्रकार के भवन प्राप्ति का योग	32
प्रचुर धन सहित भवन प्राप्ति का योग	32
भूपति होने का योग	33
भाई द्वारा भूमि प्राप्ति का योग	33
स्त्री द्वारा भूमि प्राप्ति का योग	33
शत्रु से भूमि प्राप्ति का योग	34
सम्पत्ति व भवन हानि या नष्ट होने का योग	34
भवन हेतु स्थान और दिशा चयन कैसे करें	**35—46**
नाम राशि कौन सी ग्रहण करें ?	35
वर्ग, वर्ग के वर्ण, वर्गेश, वर्ग संख्या और दिशा	36
वर्ग चक्रम्	37
नगर व मौहल्ला के चयन के प्रकार	38
नगर या मौहल्ला एवं नाम राशि विचार चक्रम्	39
नगर या मौहल्ला और व्यक्ति की काकिणी संख्या से विचार	40
काकिणी फल विचार	42
दिशा चयन कैसे करें	44
शुभाशुभ दिशा ज्ञान चक्रम्	45
भूमि एवं भूखण्ड विचार	**47—75**
भूमि क्रय क्यों करते हैं ?	47
क्या यह सही है ?	47
क्या करें ?	48
भूमि के प्रकार	48
ब्राह्मणी भूमि	48
क्षत्रिया भूमि	48
वैश्या भूमि	49
शूद्रा भूमि	49
भवन और वृक्ष	49
शुभाशुभ भूमि लक्षण चक्रम्	50
भूमि चयन करते समय यह भी विचारें	52

भूमि का ढलान 53
उन्नत भूमि फल 53
अवनत भूमि फल 55
पृष्ठानुसार भूमि के प्रकार व फल 57
गजपृष्ठा भूमि 57
कूर्मपृष्ठा भूमि 58
दैत्यपृष्ठा भूमि 58
नागपृष्ठा भूमि 58
भूमि की परीक्षा कैसे करें ? 59
भूमि परीक्षण का प्रथम प्रकार 59
भूमि परीक्षण का दूसरा प्रकार 60
भूखण्ड का आकार और फल विचार 61
वर्गाकार भूखण्ड 62
आयताकार भूखण्ड 62
वृत्ताकार भूखण्ड 63
अशुभ आकार के भूखण्डों का स्वरूप एवं फल 64
त्रिकोणाकार भूखण्ड 64
चक्राकार भूखण्ड 65
शकटाकार भूखण्ड 66
सूपाकार भूखण्ड 66
धनुषाकार भूखण्ड 67
तबलाकार व मृदंगाकार भूखण्ड 68
व्यंजनाकार भूखण्ड 68
चिमटाकार भूखण्ड 69
अण्डाकार भूखण्ड 70
विषमबाहु भूखण्ड 70
अर्द्ध वृत्ताकार भूखण्ड 71
अन्य शुभ आकार के भूखण्ड 71
चतुष्कोणाकार भूखण्ड 72
षटकोणाकार भूखण्ड 72
अष्टकोणाकार भूखण्ड 73
गोमुखाकार 73
सिंह मुखाकार 74
भद्रासन भूखण्ड 74
काकमुखी भूखण्ड 75

भूखण्ड का दिशा निर्धारण एवं खण्ड विभाजन 76–86
दिशाएँ एवं विदिशाएँ 76
दिशा निर्धारण कैसे करें ? 77
भूखण्ड का चार खण्डों में विभाजन 78
भूखण्ड का आठ खण्डों में विभाजन 79
दिशाओं का महत्त्व 83
दिशाफल विचार 83
उत्तर-दक्षिण ध्रुव की भूखण्ड में स्थिति 84

भूखण्ड विस्तार एवं ह्रास विचार 87–95
भूखण्ड में ईशान कोण की वृद्धि 87
भूखण्ड में आग्नेय कोण की वृद्धि 88
भूखण्ड में नैर्ऋत्य कोण की वृद्धि 89
भूखण्ड में वाचण्य कोण की वृद्धि 90
नैर्ऋत्य कोण में घटा भूखण्ड 91
वाचण्य कोण में घटा भूखण्ड 92
ईशान कोण में घटा भूखण्ड 93
आग्नेय कोण में घटा भूखण्ड 94
कर्जात्मक स्थिति वाले भूखण्ड 94

भूखण्ड स्थिति विचार 96–115
भूखण्ड के एक ओर मार्ग 96
भूखण्ड के पूर्व की ओर मार्ग 96
भूखण्ड के पश्चिम की ओर मार्ग 97
भूखण्ड की उत्तर की ओर मार्ग 97
भूखण्ड के दक्षिण की ओर मार्ग 97
भूखण्ड के दोनों ओर मार्ग 98
भूखंण्ड के उत्तर व पूर्व दिशा में मार्ग 98
भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा में मार्ग 99
भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा में मार्ग 99
भूखण्ड के दक्षिण व पूर्व दिशा में मार्ग 100
भूखण्ड के पूर्व व पश्चिम दोनों दिशाओं में मार्ग 100
भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण दोनों दिशाओं में मार्ग 101

भूखण्ड के तीनों ओर मार्ग 101
भूखण्ड के चारों ओर मार्ग 103
वेधदोष युक्त भूखण्ड 104
एक दिशा से वेधयुक्त भूखण्ड 104
दो दिशा से वेधयुक्त भूखण्ड 106
तीन दिशाओं से वेधयुक्त भूखण्ड 107
दो विपरीत दिशाओं से वेधयुक्त भूखण्ड 109
चारों दिशाओं से वेधयुक्त भूखण्ड 109
पूर्व दिशा में 'टी' आकृति एवं बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड 110
बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड 111
अन्य प्रकार के वेध 113

भूमि का शल्य शोधन 116–118

शल्य कैसे जानें ? 116
शल्य शोधन कैसे करें 118
शल्य शोधन करें या न करें 118

वास्तु पुरुष 119–125

वास्तु पुरुष की उत्पत्ति एवं परिचय 119
वास्तु पुरुष का भूखण्ड पर भवन निर्माण योजना में महत्त्व 120
पद देवता विन्यास 121
वास्तु पुरुष का वास ज्ञान 124
वास्तु पूजा विचार 124

भवन निर्माण योजना और प्रारूप विचार 126–157

भवन निर्माण हेतु 31 अनमोल सूत्र 126
भवन में कक्ष कहाँ-कहाँ बनाएँ 127
रसोईघर हेतु उपयुक्त स्थान 130
भोजनालय हेतु उपयुक्त स्थान 130
भण्डारग्रह हेतु उपयुक्त स्थान 131
पूजा स्थल हेतु उपयुक्त स्थान 131
शौचालय हेतु उपयुक्त स्थान 132
स्नानगृह हेतु उपयुक्त स्थान 132
शयनकक्ष हेतु उपयुक्त स्थान 133
स्वाध्याय या अध्ययनकक्ष हेतु उपयुक्त स्थान 133
स्वागतकक्ष हेतु उपयुक्त स्थान 134
पानी की टंकी हेतु उपयुक्त स्थान 134
वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन के मानचित्र 135
भवन में विभिन्न कक्षों के निर्माण का विवेचन 140
स्नानघर, शौचालय 140
आंगन 141
पशुशाला, स्वागतकक्ष या बैठक, भोजनालय, रसोईघर या भण्डार गृह 142
बालकनी 143
गैराज, पोर्टिको 144
मीटर बोर्ड, मेन स्विच, विद्युत कक्ष, सोपान या सीढ़ी 145
पूजागृह, नगदी, तिजोरी, अध्ययनकक्ष 147
खुला स्थान, जल प्रवाह 148
शयनकक्ष 149
तहखाना, दुछत्ती, सेवकों के गृह 150
कुआँ एवं टयूबवेल, खिड़कियाँ, मुख्यद्वार 151
सेप्टिक टैंक, भवन में वृक्ष, ब्रह्म स्थान 155
दिशाओं का प्रभाव 156

गृहारम्भ मुहूर्त विचार 158–166

भूमि क्रय विक्रय करने का मुहूर्त 158
गृह निर्माण मुहूर्त 159
पंचक 161
वृष वास्तु विचार 163
गृहायु 164
भूमि शायन विचार 165

शिलान्यास विचार 167–171

नींव खनन कैसे करें ? 167
राहु मुख ज्ञान चक्रम् 170
सर्पमुख विचार 171

गृह निर्माण संबंधी अन्य मुहूर्त 172–182

गृह द्वार दिशा विचार 172
द्वार स्थापना या चौखट चढ़ाने का मुहूर्त 174

गृह प्रवेश मुहूर्त 175
वास्तु शान्ति मुहूर्त 178
कुआँ या नलकूप खुदवाने का मुहूर्त 179
देवालय (मन्दिर) निर्माण मुहूर्त 180
प्रतिमा निर्माण मुहूर्त 181
देव प्रतिष्ठा मुहूर्त 181

वास्तु कला की वैज्ञानिकता 183–191

चुम्बकीय तरंगों तथा सूर्य रश्मियों का प्रभाव 184
वास्तु में पंच तत्वों की महत्ता 185
वास्तु शास्त्र में दिक् सामुख्य की महत्ता 186
भवन का दक्षिण पश्चिम भाग ऊँचा क्यों ? 187
दक्षिण-पश्चिम में खिड़की-दरवाजे कम क्यों ? 187
आग्नेय कोण में रसोईघर क्यों ? 188
उत्तर-पूर्व में जल-स्त्रोत और पूजा स्थल क्यों ? 188
दक्षिण दिशा में सिरहाना क्यों ? 188
उत्तर क्षेत्र धनकारक क्यों ? 189
भवन के चहुँ ओर खुला स्थान क्यों ? 189
अव्यक्त लौकिक ऊर्जा एवं शक्ति का उपयोग 190
तुलसी के पौधे को आँगन में लगाने का महत्त्व 190

वास्तु शास्त्र की धार्मिकता और धार्मिक वास्तु 192–196

धर्म प्रत्येक कार्य में निहित है। 192
हमारा भवन से मन्दिर जैसा सम्बन्ध है। 193
धार्मिक वास्तु और ईशान कोण 193
धार्मिक वास्तु का विकास 194
धार्मिक वास्तु में दिशा निर्धारण की उपयोगिता 195
दिशा देवता चक्रम् 196

वास्तु और मांगलिक चिह्न 197–201

अलौकिक मांगलिक चिह्न स्वास्तिक 197
मंगल चिह्न ओम् 199
शुभ मंगल कलश 199
मांगलिक चिह्न मीन 200
मांगलिक चिह्न पंचागुलक हाथ 200
भवन में चित्र स्थापना 201

वास्तु के विभिन्न प्रयोग 202–220

नगर नियोजन में वास्तु प्रयोग 202
आवासीय भवनों में वास्तु प्रयोग 203
सदैव प्रयोग में लाएँ। 203
समूह आवासीय योजना में वास्तु प्रयोग 205
बहु मन्जिले भवनों में वास्तु प्रयोग 209
व्यावसायिक केन्द्र में वास्तु प्रयोग 211
रेस्तराँ, जलपान गृह एवं होटल में वास्तु प्रयोग 213
सिनेमा हाल में वास्तु प्रयोग 214
औद्योगिक प्रतिष्ठान में वास्तु प्रयोग 216

वास्तु दोष निवारण 221–224

शिलान्यास एवं वास्तु शान्ति विचार 225–264

नींव व शिलान्यास पूजन की सरल रीति 225
वास्तु शान्ति विधि 236

□□□

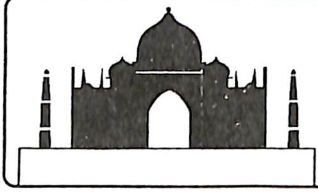

वास्तु आधृत निर्माण सुख व शान्ति का परिचायक है।

1 वास्तुशास्त्र का परिचय, उद्‌भव, विकास और महत्ता

समस्त ज्ञान के पार्श्व में सृष्टि ऐसी प्राकृतिक व्यवस्था है जिसमें सभी वस्तुएँ एक दूजे से अन्योन्याश्रित हैं, इस व्यवस्था को दृष्टिगत करें तो हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इसकी (सृष्टि) व्यवस्था को समझकर अपना जीवन इसके अनुरूप व्यवस्थित करें।

मनुष्य प्राणियों में सर्वोपरि होने के कारण सृष्टि के नियमों को लाँघने का प्रयास करता है अर्थात् वह प्रकृति को जीतना चाहता है। यह चाहत पाश्चात्य दृष्टि से परिपूरित है, इसको भारतीय परम्परा में आसुरी प्रवृत्ति कहा गया है। पाश्चात्य भवन निर्माण (Architecture) इसका एक उदाहरण है। कहने का तात्पर्य यही है कि पाश्चात्य विकास भोगवादी और विनाशकारी है जबकि इसके विपरीत भारतीय दर्शन सभी ज्ञान के पीछे आत्मविकास की बात करता है।

वास्तुशास्त्र क्या है ?

वास्तु शब्द 'वस्तु' से बना है। वस्तु का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है **'जो है'** या **'जिसकी सत्ता है'**, वही वस्तु है। वस्तु से सम्बन्धित शास्त्र ही वास्तुशास्त्र है। वस्तु शब्दों से पृथ्वी, भवन, वाहन और पलंग इन चारों वस्तुओं का बोध होता है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश व नगरों के निर्माण की योजना से लेकर छोटे-छोटे भवनों और उनमें रखे जाने वाले फर्नीचर और वाहन निर्माण तक की योजना आ जाती है। सामान्यतः इसका मुख्य संबंध भवन निर्माण की कला है।

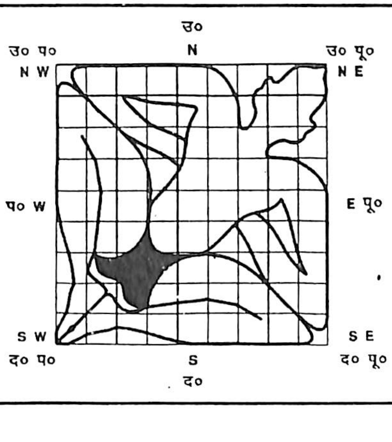

वास्तु शब्द 'वस्तु' से बना है। वस्तु का व्युत्यत्तिपरक अर्थ है 'जो है' या 'जिसकी सत्ता है', वही वस्तु है। वस्तु का शास्त्र ही वास्तुशास्त्र है। यहाँ वस्तु से तात्पर्य पृथ्वी, भवन, वाहन और पलंग से है।

भवन निर्माण के चार मुख्य चरण हैं—

1. **पहला चरण**—विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप भवन की योजना।
2. **दूसरा चरण**—आराम और सुविधा के अनुरूप उपयुक्त आकार-प्रकार का चयन।
3. **तीसरा चरण**—बाह्य एवं अन्तः साज-सज्जा।
4. **चौथा चरण**—संरचनात्मक विकास जो कि तकनीकी पक्ष से सम्बद्ध है।

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र इनसे ही सम्बन्धित है। यह सर्वविदित है कि पाश्चात्य दृष्टि इन्द्रियजन्य ज्ञान तक सीमित है जोकि केवल व्यक्तपक्ष की व्याख्या कर सकता है। व्यक्त पक्ष के पार्श्व में कुछ अव्यक्त भी है जिसका बोध अनुमान या अलौकिक प्रत्यक्ष से सम्भव है। भारतीय दृष्टि में सृष्टि, मनुष्य और उसके आवास अव्यक्त ब्रह्माण्डीय शक्तियों से प्रभावित होते हैं। तात्पर्य यही है कि इन अव्यक्त प्रभावों का मनुष्य सर्वाधिक लाभ उठा सके; इसके लिए उसे उपयुक्त भवन बनाना चाहिए। यह कैसे बने इसकी जानकारी वास्तुशास्त्र से होती है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने मानव के हित हेतु वास्तुशास्त्र का सृजन किया जिसे हम भवन-निर्माण कला (Art of Architecture) भी कह सकते हैं।

वास्तुशास्त्र का अनुकरण क्यों करें ?

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ विज्ञान दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता गया। भवन-निर्माण की कला में भी परिवर्तन होते गये जो कि पाश्चात्य दृष्टि से परिपूरित और तथाकथित आधुनिकता के प्रभाव से मंडित हैं, इसका मूल कारण यही है कि हम यह समझ बैठे कि भवन कोई चलायमान वस्तु तो है नहीं जो असन्तुलित होकर लड़खड़ाकर धराशायी हो जायेगी। इस अज्ञानता के कारण हमने वास्तुशास्त्र के उपयोगी सिद्धान्तों

प्राचीन ऋषि-मुनियों ने सृष्टि, मनुष्य और आवास पर पड़ने वाली अव्यक्त ब्रह्माण्डीय शक्तियों से मनुष्य को सर्वाधिक लाभ पहुँचाने के लिए वास्तुशास्त्र का सृजन किया जिसे हम भवन निर्माण कला भी कहते हैं।

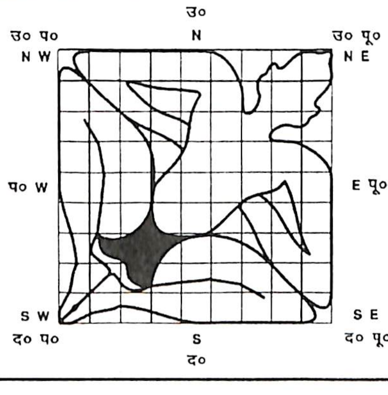

की उपेक्षा की है। वर्तमान में मानव अस्थिर, दुःखी, तनावग्रस्त और अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। वह इतना अशान्त हो चुका है कि उसमें निराशा के साथ-साथ हीनता एक विध्वंसात्मक रूप में प्रस्फुटित होने लगी है जिसमें उसके उत्प्रेरक क्रोध और आक्रोश हैं जो उसकी परिणति विध्वंस में ही करते हैं। ऐसे में हमें भवन निर्माण के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता है क्योंकि वास्तु सिद्धान्तों पर आधारित भवन बनेगा तो उसमें रहने वाला व्यक्ति, शांत और सुखी होगा। इसके अतिरिक्त जो भवन बन चुके हैं उनके दोष वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप दूर कर दें या उनमें परिवर्तन ले आयें तो अन्य व्यक्ति भी शांत व सुखी हो पायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हम वास्तु नियमों का शत-प्रतिशत पालन करें तो अपने जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकते हैं और यह परिवर्तन हमें सफलता के शीर्ष तक पहुँचा सकता है। वास्तुशास्त्र के द्वारा हम अपने जीवन में मानसिक शांति, स्वास्थ्य, धन आदि लाभों को प्राप्त करके सुखी व सम्पन्न बन सकते हैं। इसीलिए इस शास्त्र का हमें अनुकरण करना चाहिए।

वास्तु का उद्भव और रूप

वास्तु या स्थापत्य को ललित कला कहा गया है। भारतीय परम्परा में वास्तु को वेदांग से समुद्भूत कहा गया है। इसका विशेष सम्बन्ध ज्योतिष एवं कल्प से जोड़ा गया है। मूलतः स्थापत्य (वास्तु) भवन-निर्माण कला है। 'भवन' मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है और आज बढ़ती जनसंख्या को दृष्टिगत करें तो आवास की समस्या महत्त्वपूर्ण है।

आदि से ही मानव को जीवन रक्षा हेतु किसी आश्रय की आवश्यकता पड़ी। प्रारम्भ में वृक्ष, शाखाएँ, पर्वत व पहाड़ की कन्दराएँ या गुफाएँ उसके आश्रय बने। कालान्तर में मानव द्वारा प्राकृतिक गुफाओं के अतिरिक्त स्वतः ही पहाड़ों को काट-छाँटकर आश्रय के लिए गुफाएँ बनायी जाने लगीं।

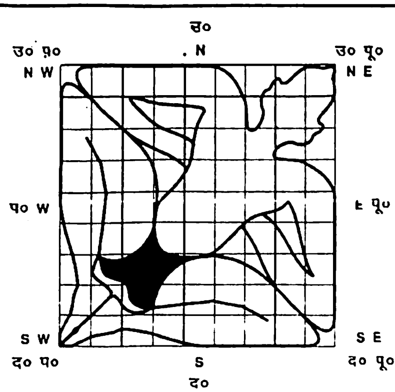

भवन कोई चलायमान तो है नहीं जो प्रभावित होगा—यह सोचकर जो वास्तु सिद्धान्तों की उपेक्षा करते हैं, वे अस्थिर, दुःखी और तनावग्रस्त होने के साथ-साथ अनेक समस्याओं से जूझते रहते हैं।

मानव सभ्यता के विकास के साथ निवास में भी परिवर्तन आया। कन्दराओं व गुफाओं को छोड़कर मानव समतल भूमि पर आ बसा। अपने निवास के लिए उसने पत्थर, मिट्टी और लकड़ी के द्वारा घर बनाए। तभी से संघटित जीवन की परम्परा आरम्भ हुई, जिसने ग्रामों, पुरों और नगरों को जन्म दिया। शनैः-शनैः भवन-निर्माण विकसित सभ्यता का एक प्रमुख अंग बन गया। भवन-निर्माण में भी भू-चयन, मापन और संस्कार आदि तत्त्व भी विकसित हुए। धीरे-धीरे आश्रय या निवास के अतिरिक्त पूजा-पाठ के लिए भी भवनों की आवश्यकता पड़ने लगी, इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मन्दिरों का निर्माण होने लगा। भारतीय धार्मिक (मन्दिर) वास्तु का इतिहास तो अत्यन्त रोचक है। इसी आवश्यकताओं के अनुरूप वास्तु ने लौकिक वास्तु एवं धार्मिक वास्तु में दो रूप ग्रहण कर लिये।

लौकिक वास्तु मानव की अपनी मूलभूत आवश्यकता आश्रय के लिए भवन निर्माण के रूप में विकसित हुआ। धार्मिक वास्तु के विकास में धार्मिक कारण प्रधान था, इसके मूल में प्रतिमा पूजन के साथ-साथ इष्टदेवों मृत राजाओं तथा प्रिय कुटुम्बियों की मूर्तियों को सुरक्षित रखने की आकांक्षा थी। मानव ने अकेले या सामूहिक रूप में प्रार्थना करने हेतु खुले स्थान की अपेक्षा आवेष्टित या परिवृत्त स्थान अधिक उपयुक्त समझा।

वास्तु और वैदिक साहित्य

भारतीय साहित्य में ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन है। उसमें वास्तु या स्थापत्य सम्बन्धी अनेक उल्लेख मिलते हैं। उनसे ज्ञात होता है ईसा पूर्व द्वितीय सहस्त्राब्दी के पूर्व भारतीयों को भवन-निर्माण का सर्वाधिक ज्ञान था। चारों वेदों तथा परवर्ती वैदिक साहित्य में ऐसे उल्लेख प्राप्त होते हैं जो स्थापत्य व वास्तु के विविध अंगों पर प्रकाश डालते हैं। ऋग्वेद

वास्तुशास्त्र का अनुकरण करने से आप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, सफलता और सुख-समृद्धि पा सकते है और वास्तु-सिद्धान्तों को अपनाकर निज जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकते हैं।

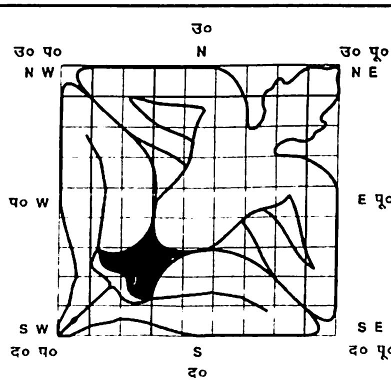

तथा अथर्ववेद में भवन-विन्यास का जो रूप उपलब्ध है उसकी परम्परा भारत में निरन्तर जारी रही।

वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है कि भवन-निर्माण कला में सादगी एवं सुरूचि थी। लोगों का जीवन सादा था इसीलिए निवास-गृहों में आडम्बर आवश्यक न समझा जाता था। सौन्दर्य बौद्ध-वैदिक आर्यों में विद्यमान था। इसका ज्ञान ऋग्वेद एवं परवर्ती वैदिक साहित्य से होता है।

ऋग्वेद में कई स्थलों पर 'वास्तोस्पति'[1] नामक देवता का उल्लेख मिलता है। गृहनिर्माण से पूर्व इस देवता का आवाह्न किया जाता था। एक स्थान पर वास्तोस्पति[2] तथा इन्द्र को तथा अन्यत्र[3] वास्तोस्पति तथा त्वष्ट्रा को एक ही माना गया है। परवर्त्री वास्तु-साहित्य में त्वष्ट्रा को एक कुशल कारीगर माना गया है।

वैदिक साहित्य में ग्राम, पुर, दुर्ग, गढ़ या प्राकार, गृह, वेदिका, तोरण, यूप (स्तम्भ), शब्दों का प्रयोग बहुतायत में मिलता है। इनसे ज्ञात होता है कि वैदिक काल में वास्तु-विद्या का प्रचलन था।

वास्तु का पहला प्रयोग

वास्तुशास्त्र का पहला प्रयोग ऋग्वेद के सूत्रों में मिलता है। सिन्धुघाटी की सभ्यता के निष्कर्ष बताते हैं कि उस काल में वास्तुशास्त्र अपने चरमोत्कर्ष पर थी। वैसे भी भारतीय वास्तुशास्त्र का उद्‌भव वेदांग (ज्योतिष एवं कल्प) से माना गया है। चारों वेदों के चार ही उपवेद लिखे गए हैं। चार उपवेदों (गांधर्ववेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद और स्थापत्यवेद) में एक स्थापत्य वेद भी था। इस स्थापत्य को ही अन्य शब्दों में वास्तु कहते हैं।

---

1. ऋग्वेद 7/54, 7/55, 8/17/14 आदि
2. ऋग्वेद 8/17/14
3. ऋग्वेद 5/41/8

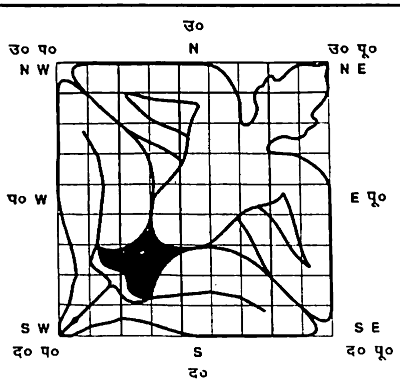

मानव ने आश्रय के लिए वृक्ष, शाखाएँ, पर्वत, पहाड़ की कन्दराएँ व गुफाओं का प्रयोग किया और बाद में पत्थर, मिट्टी और लकड़ी के घर बनाए। कालान्तर में भवन-निर्माण के अनेक संस्कार विकसित हुए। आश्रय व आवास के अलावा पूजा- पाठ के लिए भी भवन (मन्दिर) बनाने प्रारम्भ कर दिए। इसी क्रम में संघटित जीवन की परम्परा के सूत्रपात के कारण ग्रामों, पुरों और नगरों का जन्म हुआ।

वास्तुशास्त्र का प्रथम प्रवर्तक

विश्वकर्मा को वास्तुशास्त्र का प्रथम प्रवर्तक एवं आचार्य माना जाता है। दक्षिण भारत में लोक-प्रचलित समरांगण सूत्रधार में एक कथा आती है जो इस प्रकार है—

'ब्रह्मा ने सृष्टि के बाद संसार बनाने की योजना का प्रारूप बनाने का सम्पूर्ण भार हाराजा पृथु को सौंप दिया था। परन्तु पृथु राजा होने के कारण स्थापत्य कैसे करते ? वे पितामह के पास पहुँचे। उधर वसुन्धरा (पृथ्वी) भी ब्रह्मा के पास पहुँची। दोनों की बातें सुनकर ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को बुलाया और संसार के निर्माण का कार्य उन्हें सौंपा। विश्वकर्मा ने अब तक देवपुरियों का निर्माण किया था। संसार के निर्माण हेतु ही उन्होंने वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त बनाए। उन्होंने कहा—'वास्तविद् को सामुद्रिक, गणित, ज्योतिष और छन्द का ज्ञान अवश्य करना चाहिए।' विश्वकर्मा देवताओं के वास्तुविद् थे। जो बाद में भूवासियों के लिए प्रथम वास्तु प्रवतर्क बने।

वास्तुविद्या या शास्त्र का विकास

भारतीय वास्तुविद्या का जन्म वैदिक काल में ही हुआ, लेकिन इसका रूप वेदान्तों के समय में स्थिर हुआ। पुराणों और आगमों में इसका विकास हुआ। बाद में वास्तुविद्या के आचार्यों ने उसे एक अलग शास्त्र का रूप प्रदान किया।

वैदिक काल से 13वीं शताब्दी तक भारतीय वास्तुशास्त्र की दशा और दिशा अच्छी रही, परन्तु बाद में निरन्तर यह भटकता रहा और धीरे-धीरे विस्मृति की गर्त में चला गया।

भटकाव और उपेक्षा के बाद जो वास्तुशास्त्र हमें प्राप्त हुआ है, उसे समझना सरल नहीं है। प्रसिद्ध वास्तु विद्वान द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल कहते

सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद में वास्तु का पहला प्रयोग मिलता है। तभी से वास्तु-शास्त्र का उद्भव हुआ और वैदिक साहित्य इन उल्लेखों से परिपूरित है। वेदों में 'वास्तोस्पति' देवता और कुशल कारीगर के रूप में 'त्वष्टा' का उल्लेख मिलता है। चार उपवेदों में 'स्थापत्य' भी है। स्थापत्य को ही 'वास्तु' के रूप में जाना जाता है।

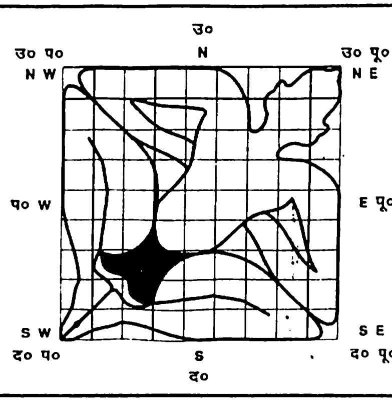

हैं—वास्तुशास्त्र की न कोई व्याख्या है और न ही कोई कोश। गुरु शिष्य की परम्परा भी अविद्यमान है। यद्यपि दक्षिण भारत के शिल्पी आज भी मयमत या विश्वकर्मीय वास्तु के सिद्धान्तों का अनुकरण करते हैं। अनेक शिल्पियों को वास्तु सिद्धान्त कण्ठस्थ हैं, पर वे उनकी न तो शास्त्रीय व्याख्या कर सकते हैं और न भाषा ही समझते हैं। यह शास्त्र पितृ-पितामहगत है। यह अवश्य है सभी थोड़े-बहुत ज्ञाता हैं, शेष तो कर्म का कौशल अभ्यासजन्य होता है नाकि शास्त्र-जन्य। वास्तुशास्त्र के जो ग्रन्थ विगत शताब्दियों में प्राप्त हुए हैं, उनकी व्याख्या तो नगण्य है।

वास्तुशास्त्र के उद्भावकों में विश्वकर्मा तथा मय के नाम अधिक लोकप्रिय थे। विश्वकर्मा को देवों का स्थापित या देव-वास्तु प्रवर्तक माना गया। मय असुर-वास्तु-प्रवर्तक के रूप में जगत् प्रसिद्ध हुए। भारत में स्थापत्य-विषयक दोनों धारणाएँ (सुर-असुर) साथ-साथ विकसित होती रहीं। कालान्तर में उनके विभिन्न तत्त्व एक दूसरे में घुलमिल गए, लेकिन फिर भी कतिपय मौलिक अन्तर दीर्घकाल तक विद्यमान रहा।

वास्तुशास्त्र-विषयक ग्रन्थों की सूची विस्तृत है। शास्त्रीय ग्रन्थों के अतिरिक्त वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्र, जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ, आगम्, तन्त्र, पुराण एवं बृहत्संहिता आदि ग्रन्थों में वास्तु-विषयक सामग्री यत्र-तत्र वर्णित है।

वास्तुशास्त्र में दो परम्पराएँ अधिक लोकप्रिय हैं—

1. **उत्तरी वास्तु परम्परा**—इस परम्परा के मुख्य वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थ सूत्रधार मंडन, विश्वकर्म प्रकाश, समरांगण सूत्रधार, वास्तुरत्नावली आदि हैं।
2. **दक्षिणी वास्तु परम्परा**—इस परम्परा के मुख्य वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थ विश्वकर्मीय शिल्प, मय मत, मानसार, काश्यप शिल्प, अगस्त्य सकलाधिकार, शिल्प संग्रह, शिल्परत्न, चित्र लक्षण आदि हैं।

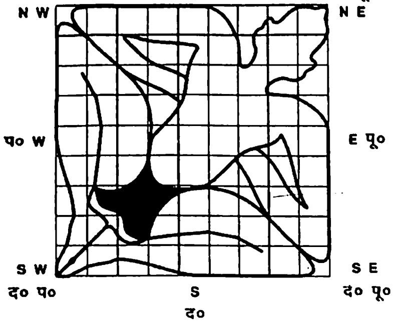

वास्तुशास्त्र के प्रथम प्रवर्तक देवताओं के वास्तुविद् विश्वकर्मा हैं। ब्रह्मा ने संसार का प्रारूप बनाने का समस्त भार राजा पृथु को सौंपा था। राजा पृथु के अनुरोध पर संसार के निर्माण हेतु ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को नियुक्त किया था जिन्होंने देवपुरियों का निर्माण किया था। पृथु आद्य व्यवस्थापक और शासक हैं। विष्णु, देवताओं, ऋषियों और दिक्पालों ने उनका राज्याभिषेक किया था।

इन दोनों परम्पराओं के मुख्य ग्रन्थों के अतिरिक्त वास्तुशास्त्र पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं और उनमें से अनेक आज उपलब्ध हैं।

वास्तु-विषयक इस विशाल साहित्य को तथा नष्ट होने से बच गए स्मारकों एवं मूर्तियों को देखने से ज्ञात होता है कि वास्तु-तक़नीक का विकास प्राचीन भारत में हुआ था।

आज वास्तुशास्त्र पर जो सामग्री हमें प्राप्त हो रही है, वह शताब्दियों के कठोर थपेड़ों को झेलती हुई यहाँ पहुँची है। उसका बहुत बड़ा भाग काल-कलवित हो गया है, लेकिन जो भी जितना भी हमें उपलब्ध है, वही संसार के वास्तुविज्ञान में अपना स्थान बना लेने को बहुत है। हमारा वास्तुशास्त्र आज भी महान और उपयोगी है। इसमें सभी बातों की चर्चा की गई है।

वास्तु-साहित्य में नगर या पुर निर्माण के विस्तृत विवरण मिलते हैं। नगर हेतु जिन मुख्य अंगों की चर्चा इनमें हैं वे निम्नलिखित हैं—

1. **भू-परीक्षा**—इसमें भूमि परीक्षा के सिद्धान्त है।
2. **भूमि संग्रह**—इसमें उपयुक्त भूमि को चयन करने की रीति का वर्णन है।
3. **दिक्परिच्छेद**—इसमें दिशा-निर्धारण के लिए युक्तियां बतलायी गयी हैं।
4. **पदविन्यास**—समस्त भूमि को वर्गाकार रूप में विभाजित करना इसमें समझाया गया है।
5. **बलिकर्म-विधान**—इसमें आवश्यक पूजन बतलाया गया है जोकि निर्माण से पूर्व करना आवश्यक है।
6. **ग्राम या नगर-विन्यास**—इसमें ग्राम और नगर को बसाने के लिए आवश्यक योजना कैसे बनायी जाए, इसकी विस्तृत चर्चा की गई है।

वास्तुशास्त्र का उद्भव वैदिककाल में ही हुआ है। वैदिककाल से 13वीं शताब्दी तक इसकी दशा और दिशा अच्छी रही, बाद में भटकाव के कारण विस्मृति की कोख में छिप गया। भटकाव और उपेक्षा के फलस्वरूप जो वास्तुशास्त्र हमें प्राप्त हुआ है। उससे ही हम विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर खड़े हो सकते हैं।

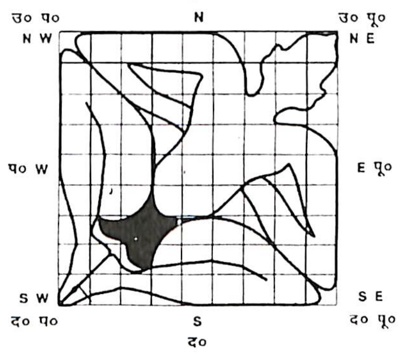

7. **भूमि-विधान**—विभिन्न तल वाले भवनों के निर्माण संबंधी चर्चा इसमें है।
8. **गोपुर-विधान**—इसमें द्वार-निर्माण संबंधी ज्ञान वर्णित है।
9. **मण्डप-विधान**—इसमें मन्दिर या धर्म-स्थल के निर्माण संबंधी ज्ञान वर्णित है।
10. **राजवेश्म-विधान**—इसमें राजकीय महल या प्रासाद के निर्माण का ज्ञान वर्णित है।

योग्य स्थपति कौन ?

स्थपति या भवन-निर्माता का व्यवसाय समाज में सम्मानित माना जाता था। जीवन को व्यवस्थित एवं कलात्मक बनाने में भवन-निर्माण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उत्तम निवास के लिए आवास होना सुख-समृद्धि का वाहक माना जाता है। स्थपति या वास्तुविद् अपनी योग्यता व कुशलता से भवन को ऐसा रूप देता है कि उसमें निवास करने वाले गृह-स्वामियों को सुख-शान्ति व आनन्द मिले। वास्तु संबंधी ग्रन्थों में वास्तुविद् या स्थपति के विभिन्न गुणों का वर्णन है।

मालवा के प्रसिद्ध शासक भोज परमार ने 11वीं शताब्दी के आरम्भ में स्वरचित ग्रन्थ 'समरांगण सूत्रधार' में स्थपति की योग्यता का वर्णन इस प्रकार से किया है—

शास्त्रं कर्म तथा प्रजाशीलं च क्रिययान्वितम्।
लक्ष्यलक्षणयुक्तार्थन्शास्त्रनिष्ठो नरो भवेत्।।

—समरांगण सूत्रधार, 44/2

स्थपति को शास्त्र ज्ञाता तथा व्यवहारिक कर्म में कुशल होना चाहिए। प्रज्ञावान् तथा शीलवान् होना आवश्यक है। लक्षणों के साथ वास्तु विषय का सम्यक् ज्ञान उसके पीछे अपेक्षित है।

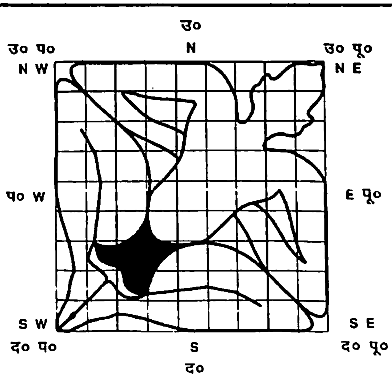

स्थपति (वास्तुविद्) को वास्तु सिद्धान्तों का शास्त्रीय ज्ञान होना चाहिए, उसे प्रज्ञावान् व शीलवान् होने के साथ-साथ समस्त ज्ञान को क्रियारूप में परिणित करने की योग्यता भी होनी चाहिए। योग्य वास्तुविद् निज कुशलता से भवन को ऐसा रूप देता है कि उसमें रहने वाले सुख-समृद्धि व शान्ति के वाहक बनते हैं।

समरांगण सूत्रधार में भवन निर्माण के क्रियापक्ष पर विशेष बल दिया गया है और लिखा है—

यस्तु केवल शास्त्रज्ञः कर्म स्वपरिनिष्ठितः।
स मुह्यति क्रियाकाले दृष्ट्वा भीरूरिवाहवम्।।

—समरांगण सूत्रधार, 44/8

जो स्थपति (वास्तु) शास्त्र का ज्ञान रखता है, पर उसे क्रिया रूप (व्यवहार) में परिणत करना नहीं जानता वह व्यवहार में लाते समय उसी प्रकार असफल हो जाता है जिस प्रकार भीरु व्यक्ति युद्ध के समय एकाएक घबरा जाता है।

वास्तुकला और पंचमहाभूत

वास्तु शब्द 'वस्तु' शब्द से बना है। अतः कोई भी योजना एवं निर्मित वस्तु 'वास्तु' के अन्तर्गत आती है। कठोपनिषद् द्वितीय वल्ली के 20वें श्लोक में कहा है—**अजोरजीयान्महतो महीयानात्मास्य** अर्थात् चाहे कोई वस्तु अत्यन्त बड़ी हो या अत्यन्त छोटी उसका निर्माण पंचमहाभूतों से ही हुआ है। इनको (वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और आकाश) अधिक से अधिक प्राकृतिक स्त्रोतों से कैसे पाया जाए, यह सब वास्तु कला में निहित है।

भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के श्लोक 27 में कहा गया है—

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।

अर्थात् समस्त कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा ही सम्पादित होते हैं, लेकिन फिर भी अहंकार से मोहित हुए अन्तःकरण वाला पुरुष यह मान लेता है कि मैं कर्त्ता हूँ।

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त इस प्रकार बनाए गए हैं कि प्राकृतिक स्त्रोतों

वस्तु चाहे छोटी हो या बड़ी उसका निर्माण पंचमहाभूतों (वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और आकाश) से हुआ है। इनको प्राकृतिक स्त्रोतों से अधिक से अधिक कैसे पाया जाए, इसका ज्ञान वास्तुशास्त्र से होता है। पंचमहाभूत प्रकृति के मूल में निहित होने के कारण समस्त कर्म प्रकृति द्वारा ही सम्पादित होते हैं। वस्तुतः प्रकृति से भरपूर लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

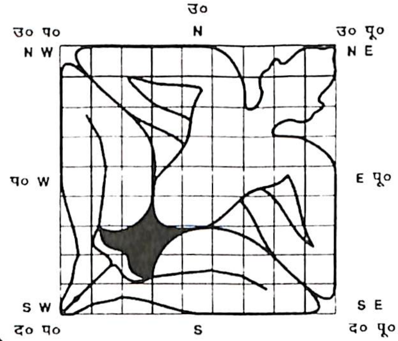

के द्वारा हमें सर्वाधिक ऊर्जा उपलब्ध हो सके और हम उत्तम स्वास्थ्य, सुख व शान्ति प्राप्त कर सकें।

पंचमहाभूत ब्रह्माण्ड में पाए जाते हैं और शरीर भी इनसे निर्मित है। स्वस्थ जीवन हेतु इनके रहस्य को समझकर निज-जीवन को इसके अनुरूप ढालना होगा तभी अव्यक्त ऊर्जाओं से लाभ उठा सकेंगे। यह कैसे प्राप्त हो इसकी चर्चा वास्तुशास्त्र में होती है। यह सर्वविदित है कि प्राकृतिक शक्तियों के अनुरूप जीवनयापन करने से स्वास्थ्य सुख-समृद्धि और शान्ति प्राप्त होती है जबकि इनके विपरीत चलने से रोग, विभिन्न प्रकार के दुःख, निर्धनता एवं अशान्ति अपने बाहुपाश में जकड़ लेती है।

वास्तुशास्त्र की व्यापकता एवं महत्त्व

भारतीय दर्शन मनुष्य के चार लक्ष्य बताता है—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। समस्त भारतीय शास्त्रों का परम लक्ष्य इनको प्राप्त करने का मार्ग बताना है। इन चारों की प्राप्ति के लिए शरीर मन और बुद्धि का अनुकूल होना अनिवार्य है अर्थात् शरीर स्वस्थ होगा, मन स्थिर होगा और बुद्धि निर्मल होगी तो इनकी प्राप्ति सहज में हो सकेगी। ऐसा तभी संभव है जब भवन अव्यक्त ऊर्जाओं को ध्यान में रखकर निर्मित किया जायेगा। भारतीय दर्शन का एक छोर सृष्टि विज्ञान है और दूसरा आत्म-ज्ञान। सृष्टि विज्ञान विश्व की रचना, स्थिति एवं प्रलय के सिद्धान्त एवं क्रम का निरूपण करते हुए यह भी स्पष्ट करता है कि मानव का इससे (सृष्टि) क्या सम्बन्ध है ? सृष्टि की अपनी संरचना, गति एवं नियति है। सरंचना से तात्पर्य यही है कि सृष्टि के समस्त अंग (सूर्य, चन्द्रमा व अन्य गृहादि, पृथ्वी व इसके पशु-पक्षी, वृक्ष और मनुष्य आदि) अन्योन्याश्रित है। गति से तात्पर्य यह है कि सृष्टि की समस्त वस्तुएँ निरन्तर परिवर्तनशील हैं, परन्तु यह

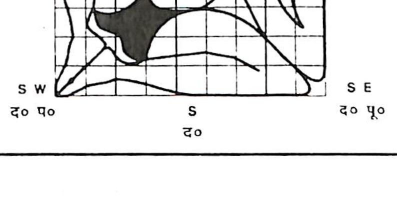

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार परम लक्ष्य हैं। इनको तभी प्राप्त कर सकते हैं जब शरीर स्वस्थ, मन स्थिर और बुद्धि निर्मल हो। शरीर, मन और बुद्धि का यह रूप वास्तु सिद्धान्तानुरूप बने भवन में रहकर सहज में प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इसमें रहकर प्रकृति की अव्यक्त ऊर्जाओं का प्रचुर लाभ प्राप्त होता है।

(परिवर्तन) व्यवस्थित और क्रमबद्ध है। सृष्टि की संरचना और गति ही इसकी नियति है जिसका नियन्ता ईश्वर है।

समस्त जीव ऋतुओं के परिवर्तन एवं पर्यावरण के उतार-चढ़ाव के प्रभाव को संवेदनशील होने के कारण एक निश्चित सीमा तक ही सह सकते हैं। प्रत्येक प्राणी अपनी सुरक्षा हेतु आश्रय बनाता है, आश्रय का अर्थ उस स्थान से है जहाँ प्राणी रहता है। जलचर एवं थलचर अपनी सुविधानुसार स्थान परिवर्तित कर लेते हैं जबकि मनुष्य ने अपने समन्वित विकास हेतु भवन रूपी आश्रय की व्यवस्था की और इसके लिए समय-समय पर अनेक सिद्धान्त बनाए। इन सिद्धान्तों का लक्ष्य यही था—ऐसा उत्तम भवन बने जो मानव की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति सहित शांति एवं सम्पन्नता प्रदान कर सके।

भारतीयों ने वास्तु को एक धार्मिक कृत्य माना। उन्होंने वास्तु-कला को विभिन्न खोजों के उपरान्त वैज्ञानिकता के साथ-साथ धार्मिक आधार प्रदान किया ताकि सभी लोग वास्तु के सिद्धान्तों को ग्रहण करते रहें। हजारों बरसों से अनेकानेक उतार-चढ़ावों के पश्चात् हम आज भी शास्त्र निहित वास्तु सिद्धान्तों से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं तभी तो भवन-निर्माण से पूर्व भूमि-पूजन करते हैं और गृह-प्रवेश के लिये शुभ मुहूर्त निकालते हैं। भारतीय मनीषियों ने वास्तुशास्त्र को धर्म एवं ज्योतिष का एक अंग माना है, परन्तु फिर भी इसके सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर सत्य सिद्ध होते हैं। जिन्होंने वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का पालन किया है उनमें से अधिकांश स्वस्थ सुखी एवं शान्त हैं। दक्षिण भारत में वास्तु सिद्धान्तों का प्रचलन अधिक है और वहाँ के लोग इन्हें व्यवहार में भी लाते हैं जिस कारण उनका जीवन अधिक शान्तिप्रद है।

ग्राम, नगर और गृह (भवन) निर्माण की चर्चा जिसमें हो उसे वास्तुशास्त्र कहते हैं। वास्तु-सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित भवन या इनके

भारत में वास्तु को धार्मिक कृत्य माना गया है। ऐसा होने पर भी इसमें विज्ञाम का प्रचुर समिश्रण है। वास्तु का लक्ष्य यही है—ऐसा उत्तम भवन बने जिससे मानव विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति सहित सुख-शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त कर सके। इसका प्रमाण दक्षिण भारत है, वहाँ के लोग वास्तु को अपनाने के कारण अधिक सुखी, शान्त व समृद्ध हैं।

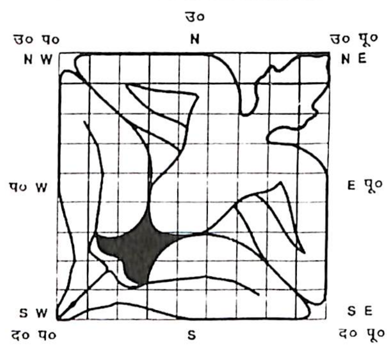

आधार पर भवनों को वास्तु-दोष से मुक्त कर देने पर ये सुख-शान्ति व समृद्धिकारक होते हैं। यह जान लें कि गृहस्थ के कोई भी कार्य अपने गृह (भवन) आवास (घर) में शुभ होते हैं। दूसरे के घर में किए गए कर्म शुभफलदायी नहीं होते हैं ? वस्तुतः गृहस्थ के लिए आवास का बनाना आवश्यक है। अगले अध्यायों में इसी बात की चर्चा करेंगे कि आप किस प्रकार वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर गृह बनाएं जिससे सुख-शान्ति व समृद्धि में वृद्धि हो और उसमें किए गए समस्त कार्य सफल हों।

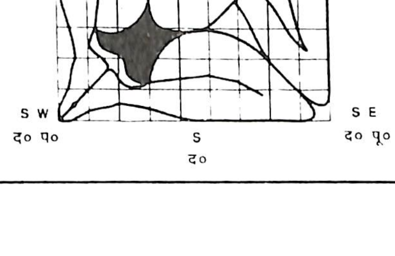

भवन वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप ही बनाना चाहिए। यदि भवन बना-बनाया ले रहे हैं तो उसमें जो वास्तु-दोष हों उनका निराकरण अच्छे वास्तु-सलाहकार से सलाह लेकर कर लेना चाहिए। यह जान लें—दूजे के घर में किए कार्य शुभ नहीं होते हैं। गृहस्थ के समस्त कार्य निज गृह (भवन) में ही शुभ होते हैं। वास्तुशास्त्र की उपयोगिता इसे व्यवहार में लाने पर आप स्वतः जान लेंगे।

2 उत्तम ग्रह और ज्योतिष योग

मनुष्य का भाग्य जन्म लेते ही निर्धारित हो जाता है। ग्रह-दशा के परिवर्तन के साथ-साथ उनका भाग्य भी परिवर्तित होता रहता है।

मनुष्य का जीवन भाग्य और वास्तु से प्रभावित होता है। दोनों का प्रभाव 50-50 प्रतिशत है। मनुष्य अपने भाग्य को तो बदल नहीं सकता परन्तु वास्तु की सहायता से निज प्रयत्नों को सफलता तक अवश्य पहुँचा सकता है। **यदि मनुष्य का भाग्य उत्तम है और वास्तु दूषित है तो प्रयासों का परिणाम 50 प्रतिशत ही मिलेगा। यदि वास्तुदोष भी दूर हो जाए तो शत-प्रतिशत प्रयास सफल हो सकते हैं। यदि भाग्य निर्बल है और वास्तु दोष भी है तो सफलता मिलनी असंभव है। यदि वास्तु दोष दूर कर लें तो प्रयास 50 प्रतिशत सफल हो सकते हैं, जबकि भाग्य तो बदला नहीं जा सकता है।**

वास्तु और ज्योतिष का सनातन सम्बन्ध है। यदि भवन वास्तु दोष युक्त हो और भाग्य भी निर्बल हो तो उसमें रहना कदापि उचित नहीं है क्योंकि उसमें रहने वाला व्यक्ति दुःखी, अशान्त और कंगाल हो सकता है।

इस अध्याय में उन ज्योतिष योगों की चर्चा करेंगे जिनको अपनी जन्मकुण्डली में देखकर आप यह निश्चय कर सकेंगे कि भूमि प्राप्ति व भवन निर्माण का योग आपके भाग्य में है या नहीं।

मनुष्य जीवन का सौभाग्य एवं सार्थकता उत्तम भवन निर्माण करना है। मनुष्य जीवन के पुरुषार्थ, पराक्रम एवं अस्तित्त्व की सर्वप्रथम पहचान उसके भवन से होती है।

मनुष्य के पुरुषार्थ, पराक्रम, अस्तित्त्व, सौभाग्य एवं सार्थकता की पहचान उसके भवन से ही होती है। वास्तु और ज्योतिष का सनातन सम्बन्ध है। मनुष्य भाग्य को तो बदल नहीं सकता पर वास्तुदोष को दूर करके पूर्ण सफलता का अधिकारी बन सकता है। भाग्यशाली भी है तो शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है।

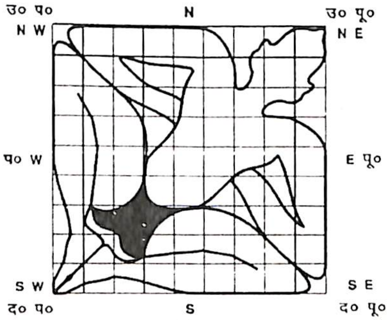

जनसंख्या वृद्धि के कारण सभी भवन के स्वामी बन सकें यह संभव नहीं है। एक चौथाई जनसंख्या तो आवास विकास परिषद् द्वारा निर्मित घरों में रह रही है। कुछ भवनों के स्वामी सुखी व समृद्ध हैं तो कुछ के निर्धन एवं दुःखी। ऐसी जटिल परिस्थितियों में भवन-निर्माण संबंधी योगों पर ज्योतिषात्मक चिन्तन करना जटिल है। लेकिन फिर भी हम यहाँ इसकी चर्चा करेंगे।

भूमि व भवन संबंधी मुख्य ज्योतिष ज्ञान

भूमि का कारक ग्रह मंगल है। जन्मपत्री का चौथा भाव भूमि एवं भवन से सम्बन्ध रखता है। उत्तम भवन की प्राप्ति के लिए चतुर्थेश (चौथे भाव का स्वामी) की केन्द्र-त्रिकोण में स्थित होना अनिवार्य है।

यदि चौथे भाव का स्वामी उच्च, मूल त्रिकोण, स्वग्रही, उच्चाभिलाषी, मित्र क्षेत्री, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो निश्चित रूप से भवन का सुख मिलता है। जन्मपत्री में मंगल की स्थिति भी सुदृढ़ होनी चाहिए। चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि, युति व प्रभाव का भी विश्लेषण करना होगा। चतुर्थ व चतुर्थेश का बली होना आवश्यक है तो लग्न व लग्नेश का सुदृढ़ होना भी अत्यावश्यक है। साथ-साथ दशमेश, नवमेश, व लाभेश का सहयोग भी आवश्यक है।

भवन प्राप्ति के ज्योतिष योग

अब यहाँ पर विभिन्न ज्योतिष योगों की चर्चा करेंगे जिन्हें आप अपनी जन्मकुण्डली में खोजकर यह जान सकेंगे कि भवन निर्माण या प्राप्ति का योग आपके भाग्य में है या नहीं।

स्व पराक्रम से निर्मित भवन प्राप्ति का योग

जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी (चतुर्थेश) किसी शुभ ग्रह

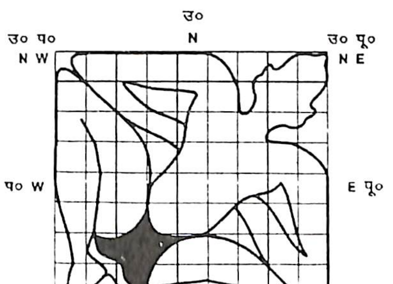

भूमि का ग्रह मंगल है। जन्मपत्री का चौथा भाव भूमि व भवन का है। वस्तुतः चौथे भाव के स्वामी (चतुर्थेश) का केन्द्र त्रिकोण में होना उत्तम भवन प्राप्ति का ज्योतिष योग है। मंगल और चतुर्थेश लग्नेश व नवमेश का बली होना या शुभग्रहों से युत या दृष्ट होना भवन प्राप्ति का अच्छा संकेत है।

के साथ युति करके 1, 4, 5, 7, 9, 10वें भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति को स्वश्रम से निर्मित उत्तम सुख-सुविधाओं से युक्त भवन प्राप्त होता है।

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी (चतुर्थेश) पहले (लग्न) भाव में हो और पहले (लग्न) भाव का स्वामी (लग्नेश) चौथे भाव में हो तो भी ऐसा व्यक्ति स्व पराक्रम व पुरुषार्थ से अपना घर (भवन) बनाता है।

बंगले का योग

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव में चन्द्र और शुक्र की युति हो या चौथे भाव में कोई उच्च राशिगत (उच्च राशि में स्थित ग्रह) हो, चौथे भाव का स्वामी केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10वें) भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति के पास अपना बंगला या महलनुमा भवन होता है जिसमें कलात्मक बगीचा व जलाशय होता है।

आकर्षक एवं सुन्दर भवन का योग

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी (चतुर्थेश) एवं दसवें भाव का स्वामी (दशमेश) चन्द्रमा और शनि से युत हो तो ऐसे व्यक्ति का भवन दूजों से अलग, सुन्दर आकर्षक एवं नूतन साज-सज्जा से युक्त होता है।

अनायास दूजों द्वारा निर्मित भवन प्राप्ति का योग

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी (चतुर्थेश) एवं पहले (लग्न) भाव का स्वामी (लग्नेश) चौथे भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति को अचानक भवन की प्राप्ति होती है जोकि दूजों द्वारा निर्मित होता है।

यह जान लें सभी ग्रह कुण्डली में जिस भाव में स्थित हैं वहाँ से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। शनि सातवें भाव से अतिरिक्त तीसरे व दसवें भाव को, गुरु नौंवे व पाँचवें भाव को और मंगल चौथे व आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

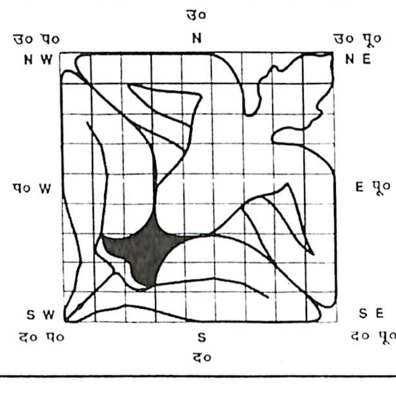

एक से अधिक भवनों का योग

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव में या चौथे भाव का स्वामी चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो और चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति अनेक भवनों में रहता है और उसे अनेक भवन बदलने पड़ते हैं। यदि चर की जगह स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) हो तो व्यक्ति के पास स्थायी भवन होते हैं।
- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी (चतुर्थेश) बली हो तथा लग्न (पहले) का स्वामी, चौथे भाव का स्वामी, दूसरे भाव का स्वामी इन तीनों में से जितने ग्रह केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10) भाव में हो उतने भवन होते हैं।

भवन, वाहन व नौकर प्राप्ति का योग

- जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी दूसरे भाव में और दूसरे भाव का स्वामी नौवें भाव में स्थित हो अर्थात् परिवर्तन योग हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय बारहवें वर्ष में होता है और 32वें वर्ष के उपरान्त उसे वाहन, भवन और नौकर का सुख मिलता है।

बिना प्रयास या अल्प प्रयास के भवन प्राप्ति का योग

- पहले व सातवें भाव का स्वामी पहले (लग्न) भाव में हो तथा चौथे भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति को बिना प्रयास के भवन प्राप्त होता है।
- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी उच्च, मूलत्रिकोण या स्वराशि में हो तथा नौवें भाव का स्वामी केन्द्र (1, 4, 7, 10)

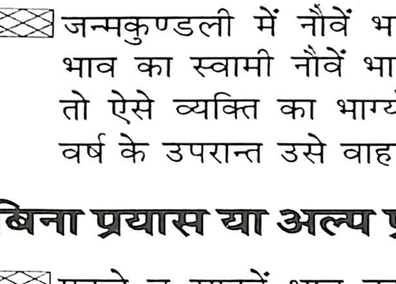

मेष व वृश्चिक का मंगल, वृष व तुला का शुक्र, मिथुन व कन्या का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु व मीन का गुरु एवं मकर व कुंभ का स्वामी शनि है। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, व मीन रूपी बारह राशियों के क्रमांक 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 हैं। अत: 1 से तात्पर्य मेष, 2 से तात्पर्य वृष आदि है।

भाव में हो तो ऐसे जातक को थोड़े प्रयास में ही भवन प्राप्ति हो जाती है।

जन्मकुण्डली के पहले और सातवें भाव का स्वामी पहले या चौथे भाव में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, नौवें भाव का स्वामी केन्द्र (1, 4, 7, 10) भाव में हो और चौथे भाव का स्वामी उच्च, मूल त्रिकोण या स्वराशि का हो तो ऐसा व्यक्ति थोड़े प्रयास से अच्छा भवन प्राप्त कर लेता है।

कोठी प्राप्ति का योग

जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी यदि दसवें भाव के स्वामी के साथ केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10) भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति को सुख-सुविधाओं से युक्त कोठी प्राप्त होती है।

भूमि, वाहन, माता और संगीत का सुख प्राप्ति योग

जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी स्वराशि, स्वनवांश था उच्चराशि में हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि, वाहन, माता और संगीत से सुख प्राप्त होता है।

विभिन्न प्रकार के भवन प्राप्ति का योग

जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी व दसवें भाव का स्वामी एक साथ युति करके शनि एवं मंगल के साथ हों तो ऐसे व्यक्ति के पास विभिन्न प्रकार के भवन होते हैं।

प्रचुर धन सहित भवन प्राप्ति का योग

दूसरे व ग्यारहवें भाव के स्वामी चौथे भाव में स्थित हो और

जन्मपत्री में जो अंक संख्या प्रत्येक भाव में लिखी रहती है वो राशि की क्रम संख्या है, उससे राशि का बोध होता है और उसका स्वामी उस भाव का स्वामी है। जैसे पहले भाव में 3 लिखा है तो इसका तात्पर्य है पहले भाव में मिथुन राशि है जिसका स्वामी बुध है। इसी प्रकार अन्यत्र समझें।

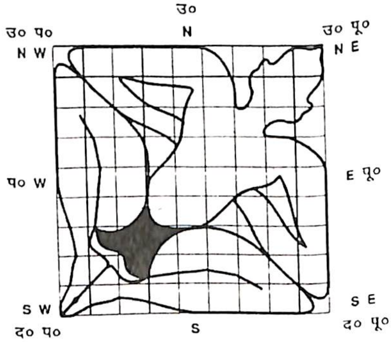

चौथे भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को प्रचुर धन सहित भवन प्राप्त होता है।

भूपति होने का योग

- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी दसवें भाव में और दसवें भाव का स्वामी चौथे भाव में हो तथा मंगल ग्रह बली हो तो व्यक्ति बहुत भूमि का स्वामी अर्थात् भूपति होता है।
- जन्मकुण्डली के दसवें और चौथे भाव के स्वामी बलवान हों और एक दूसरे के मित्र हों तो भी ऐसा व्यक्ति भूपति अर्थात् बहुत भूमि का स्वामी होता है।
- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी व चौथा भाव दोनों शुभग्रहों से युत हों तो भी ऐसा व्यक्ति भूमि का स्वामी होता है।
- जन्मकुण्डली के चौथे भाव का स्वामी पाँचवें भाव में हो तो भी ऐसा व्यक्ति बहुत भूमि का स्वामी होता है।
- जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी स्वराशि का 10 या 11वें भाव में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत भूमि का स्वामी होता है।

भाई द्वारा भूमि प्राप्ति का योग

- जन्मकुण्डली के तीसरे भाव का स्वामी या तृतीय भाव का कारक मंगल चौथे भाव के स्वामी के साथ स्थित हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई से भूमि प्राप्त होती है।

स्त्री द्वारा भूमि प्राप्ति का योग

- जन्मकुण्डली में शुक्र चौथे भाव में और चौथे भाव का स्वामी

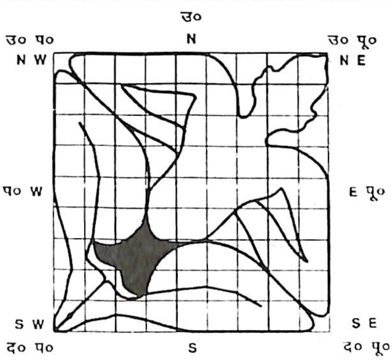

लग्न या प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम या भाग्य दशम, एकादश या लाभेश व व्यय ये जन्मपत्री के बारह भाव होते हैं। इन भागों में अंकित अंक की राशि के स्वामी ग्रह को उसका स्वामी कहते हैं।

सातवें भाव में स्थित हो और ये दोनों परस्पर मित्र हों तो ऐसे व्यक्ति को पत्नी या स्त्री के द्वारा भूमि प्राप्त होती है।

शत्रु से भूमि प्राप्ति का योग

- जन्मकुण्डली में छठे भाव का स्वामी चौथे भाव में और चौथे भाव का स्वामी छठे भाव में स्थित हो तथा छठे भाव का स्वामी चौथे भाव के स्वामी से अधिक बली हो तो ऐसे व्यक्ति को शत्रु से भूमि प्राप्त होती है।

सम्पत्ति व भवन हानि या नष्ट होने का योग

- चौथे भाव का स्वामी बारहवें या आठवें भाव में होकर पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति व भवन नष्ट हो जाती है। उसका भवन सम्बन्धी, किरायेदार या शत्रु द्वारा हड़प लिया जाता है या प्राकृतिक आपदा से नष्ट हो जाता है। चौथे भाव के स्वामी का जाप या रत्न धारण करने से इस हानि से बचा जा सकता है।
- चौथे भाव का स्वामी जिस नवांश राशि में हो उसका स्वामी ग्रह बारहवें या आठवें भाव में हो तो ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति व भवन उसके हाथों से निकल जाता है या हानि व नष्ट हो जाता है।

इस अध्याय में 25 ज्योतिष योगों की चर्चा विस्तार सहित की गई है। आप इन योगों को अपनी कुण्डली में ढूँढकर यह निर्णय कर सकते हैं कि भवन व भूमि प्राप्ति का योग आपके भाग्य में है या नहीं।

'उत्तम गृह और ज्योतिष योग' नामक अध्याय दो के सभी 25 योगों को ध्यान से जन्मपत्री में ढूँढिए। भूमि व भवन निर्माण के जितने अधिक योग होंगे उतनी आसानी से भूमि प्राप्ति व भवन निर्माण कर सकेंगे।

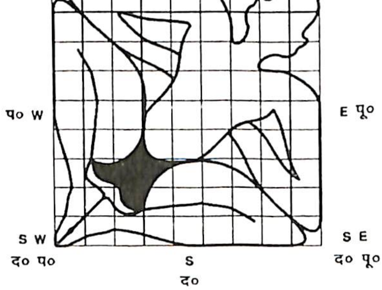

3 भवन हेतु स्थान और दिशा चयन कैसे करें

भवन निर्माण से पूर्व यह विचार करना आवश्यक है कि किस शहर या नगर के किस मौहल्ले में रहें ? कभी-कभी भवन निर्माण के लिए अपनी इच्छानुसार किसी नगर या मौहल्ले का चयन कर लेना हानिकारक सिद्ध होता है।

ज्योतिष में मुहूर्त विचार की शाखा स्वरशास्त्र का यह कथन है—प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक नगर या मौहल्ला भवन निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं होता है। वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति को स्वरशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार यह निश्चित कर लेना चाहिए कि उसके लिए अमुक नगर या मौहल्ला रहने के लिए उपयुक्त रहेगा या नहीं। इसके अतिरिक्त उसे यह भी निर्णय कर लेना चाहिए कि नगर या मौहल्ले के किस दिशा वाले भाग में रहना उपयुक्त रहेगा। इस अध्याय में हम इसी पर विचार करेंगे।

नामराशि कौन सी ग्रहण करें ?

भारत में दो प्रकार के नामों की प्रधानता है—राशिनाम और बोलता नाम (प्रसिद्ध या प्रचलित नाम)। राशि का नाम जन्म नक्षत्र के चरणाक्षर के अनुसार रखा जाता है और बोलता नाम वह है जो लोक-व्यवहार में प्रचलित रहता है, इस अध्याय में बारम्बार जहाँ नाम की चर्चा आती है वहाँ कौन सा नाम ग्रहण किया जाये इसमें सन्देह होना स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में शास्त्रीय मत अग्रलिखित हैं—

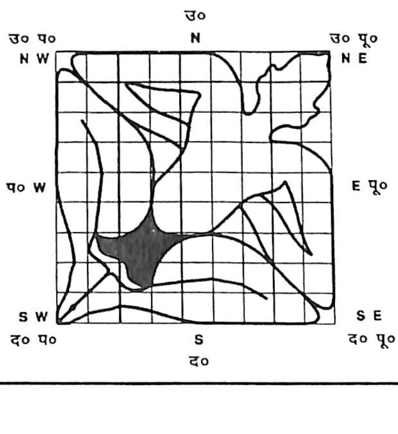

भवन निर्माण करने से पूर्व यह विचार कर लेना चाहिए कि कौन सा नगर व मौहल्ले का कौन सा भाग अनुकूल है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक नगर या मौहल्ला, भवन निर्माण हेतु उपयुक्त नहीं होता है। उपयुक्त दिशा भी चयन कर लेनी चाहिए क्योंकि अनुकूल दिशा वाले भाग में निर्मित भवन सर्वप्रकार से शुभसूचक होता है।

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।।

अर्थात् समस्त शुभकार्यों में, यात्रा में, ग्रह गोचर विचार में जन्मराशि की प्रधानता है, नाम राशि का विचार न करें, देश, ग्राम, गृह युद्ध, सेवा (नौकरी) व्यवहार (मुकदमा या व्यापार) में नाम राशि का विचार प्रधान है, जन्मराशि का विचार न करें। जिसकी जन्मराशि ज्ञात न हो उसके समस्त विचार प्रचलित नाम राशि से ही विचारने चाहिएं। कहा भी गया है—**'जन्म न ज्ञायते येषां तेषां नाम्नो गवेष्यते।'** जिसका जन्म नाम ज्ञात न हो उसका प्रचलित नाम से विचार करना चाहिए। सिद्धान्त यही है कि जहाँ जन्म नाम का निर्देश हो वहाँ जन्म राशि का ही नाम ग्रहण करना चाहिए अन्यथा 'प्रसिद्ध नाम' ग्राह्य करें। किसी मनुष्य के अनेक प्रसिद्ध नाम हों तो किसको ग्रहण करें, इस संदर्भ में शास्त्रीय व्यवस्था यही है कि सोता हुआ मनुष्य जिस नाम से जाना जाये उसे ही प्रधान समझें। राशि, वर्ण, स्वरादि में नाम का प्रथम अक्षर ही ग्रहण किया जाता है। जैसे किसी का नाम अशोक है तो उसके नाम के प्रथम अक्षर 'अ' के अनुसार ही राशि मेष हुई। ध्यान रखें यहाँ समस्त स्थानों पर व्यक्ति और नगर की नाम राशि को ही व्यवहार में लाया जायेगा।

वर्ग, वर्ग के वर्ण, वर्गेश, वर्ग संख्या और दिशा

यहाँ एक 'वर्ग चक्रम्' बनाकर दे रहे हैं जिनमें आठों वर्ग और उनके वर्ण, वर्गेश, वर्ग की संख्या और दिशा दे रहे हैं। इसको भली-भांति समझ लें क्योंकि इसका प्रयोग विचार करते समय करना पड़ेगा।

देश, ग्राम, गृह, युद्ध, नौकरी, व्यापार व मुकदमें में नाम राशि का प्रयोग करना चाहिए। जन्मराशि का प्रयोग यात्रा, ग्रहगोचर एवं शुभकार्यों में करना चाहिए। किसी व्यक्ति के कई नाम हों तो पुकारने पर वह जिस नाम से सोता हुआ जाग जाए उसी को प्रयोग में लाना चाहिए।

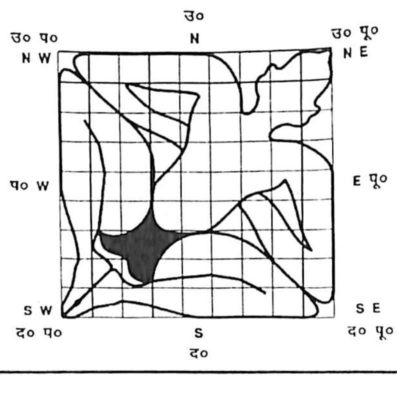

वर्ग चक्रम्

क्रम	वर्ग नाम	वर्ग के वर्ण							वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा
1	अवर्ग	अ	इ	उ	ए	ऐ	ओ	औ	गरुड़	1	पूर्व
2	कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ			मार्जार	2	आग्नेय
3	चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ			सिंह	3	दक्षिण
4	टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण			श्वान	4	नैर्ऋत्य
5	तवर्ग	त	थ	द	ध	न			सर्प	5	पश्चिम
6	पवर्ग	प	फ	ब	भ	म			मूषक	6	वायव्य
7	यवर्ग	य	र	ल	व				मृग	7	उत्तर
8	शवर्ग	श	ष	स	ह				मेष	8	ईशान

टिप्पणी—आग्नेय दिशा से तात्पर्य पूर्व और दक्षिण के मध्य नैर्ऋत्य दिशा से तात्पर्य दक्षिण और पश्चिम के मध्य, वायव्य दिशा से तात्पर्य उत्तर और पूर्व के मध्य से है। स्पष्टता के लिए अधोलिखित दिशा चक्रम् देखें—

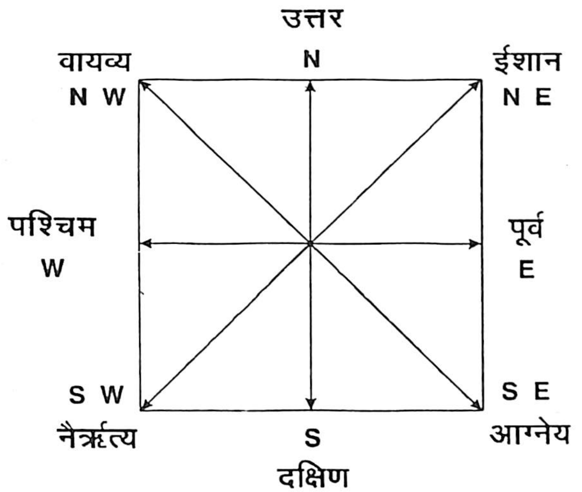

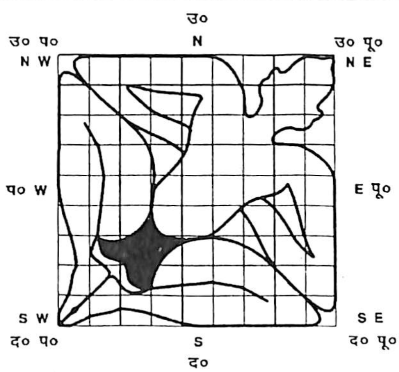

व्यक्ति की नाम राशि से नगर या मौहल्ला की नाम राशि 2, 5, 9, 10 या 11वीं हो तो शुभ, 1 व 7 हो तो शत्रु, 4, 8 या 12वीं हो तो रोग, 3 या 6 हो तो रोगकारक समझना चाहिए। नगर शुभ न हो तो जिस मौहल्ले में गृह निर्माण करना हो वह शुभ होना चाहिए। यदि नगर व मौहल्ला शुभ तो सर्वोत्तम है।

नगर व मौहल्ला के चयन के प्रकार

उपयुक्त नगर या मौहल्ला के चयन के दो प्रकार हैं—

1. नगर या मौहल्लों और व्यक्ति की नाम राशियों से विचार।
2. नगर या मौहल्ला और व्यक्ति की काकिणी संख्या से विचार।

नगर या मौहल्ला और व्यक्ति की नाम राशियों से विचार

व्यक्ति की नाम राशि से नगर या मौहल्ला की नगर राशि (जहाँ उसे रहना है) 2, 5, 9, 10 या 11वीं है तो इसका फल शुभ समझना चाहिए। यदि व्यक्ति की नाम राशि से नगर या मौहल्ला की नाम राशि परस्पर 1, 3, 4, 6, 7, 8 या 12वीं हो तो इसका फल क्रमशः शत्रु, हानि, रोग, हानि, शत्रु, रोग और रोग समझना चाहिए। नगर या मौहल्ला व व्यक्ति की नाम राशि ज्ञान के लिए देखें—राशि चक्रम्। बाद में सरलता से परस्पर

राशि चक्रम्

राशियाँ	वर्णाक्षर								
मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
वृष	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	दा	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुंभ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दी	चा	ची

व्यक्ति की वर्ग संख्या को दुगना करके उसमें नगर की वर्ग संख्या जोड़कर 8 से भाग देने पर जो शेष बचे वह व्यक्ति की काकिणी संख्या होगी। इसी प्रकार नगर की वर्ग संख्या को दुगना करके उसमें व्यक्ति की वर्ग संख्या जोड़कर 8 से भाग देने पर जो शेष बचे वह नगर की काकिणी संख्या होगी।

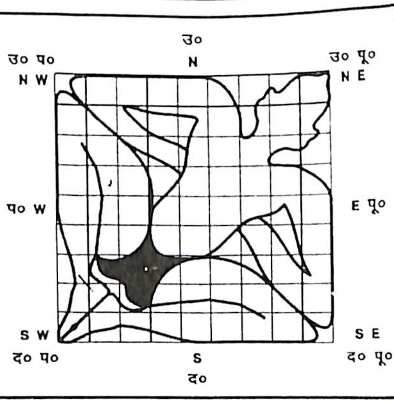

विचार के लिए नगर या मौहल्ला एवं नाम राशि विचार चक्रम् का प्रयोग करना चाहिए। यह चक्रम् आपकी सुविधा हेतु बनाया है। चक्रम् न हो तो राशि का परस्पर संबंध गिनकर ज्ञात करना पड़ता है।

नगर या मौहल्ला एवं नाम राशि विचार चक्रम्

नगर या मोहल्ला की नाम राशि	व्यक्ति की राशि											
	1. मेष	2. वृष	3. मिथुन	4. कर्क	5. सिंह	6. कन्या	7. तुला	8. वृश्चिक	9. धनु	10. मकर	11. कुम्भ	12. मीन
1. मेष	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ
2. वृष	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि
3. मिथुन	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	शुभ
4. कर्क	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	रोग
5. सिंह	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि
6. कन्या	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु
7. तुला	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग
8. वृश्चिक	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ	शुभ
9. धनु	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग	शुभ	शुभ
10. मकर	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शुभ	रोग	शुभ
11. कुम्भ	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु	रोग
12. मीन	रोग	शुभ	शुभ	शुभ	रोग	शत्रु	हानि	शुभ	रोग	हानि	शुभ	शत्रु

उदाहरणतः मान लो कोई व्यक्ति जिसका नाम अशोक है और वह मेरठ में भवन क्रय या निर्माण करना चाहता है तो अशोक की राशि मेष हुई और मेरठ शहर की राशि ।संह है। नगर या मौहल्ला एवं नाम राशि विचार चक्रम् में देखा तो मेष राशि के लिए सिंह राशि शुभ है अतः अशोक मेरठ शहर में भवन क्रय या निर्माण कर सकता है। इसी प्रकार आप किसी के लिए भी विचार कर सकते हैं।

यदि किसी के लिए शहर या नगर शुभ न हो तो उसकी नाम राशि

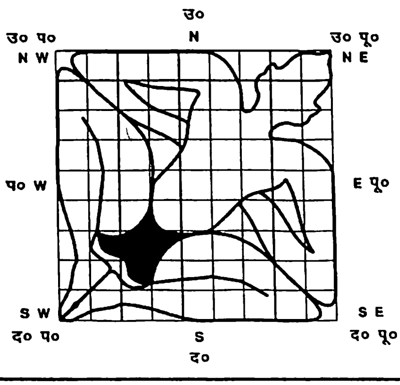

नगर से व्यक्ति की काकिणी संख्या अधिक हो तो लाभदायक, नगर से व्यक्ति की काकिणी संख्या कम हो तो नगर हानिकारक और नगर व व्यक्ति की काकिणी संख्या समान हो तो नगर सम (न लाभ न हानि) स्थिति रहेगी। व्यक्ति की काकिणी संख्या नगर काकिणी संख्या से जिस अनुपात में अधिक होगी उसी अनुपात में लाभदायी होगी।

और मौहल्ला की नाम राशि से विचार करके देखना चाहिए कि मौहल्ला शुभ है या नहीं। मौहल्ला शुभ हो तो मौहल्ले में भवन क्रय या निर्माण कर लेना चाहिए।

मान लो अशोक मेरठ नगर के शास्त्रीनगर कालोनी में भवन बनाना चाहता है। अशोक की राशि मेष है और शास्त्रीनगर की राशि कुंभ है। नगर या मौहल्ला एवं नाम राशि विचार चक्रम् में देखा तो मेष राशि के लिए कुंभ राशि शुभ है। अतः अशोक मेरठ शहर के शास्त्रीनगर कालोनी में भवन क्रय कर सकता है अथवा निर्माण कर सकता है।

नगर व मौहल्ला दोनों व्यक्ति की नाम राशि के अनुकूल हों तो सोने में सुहागे जैसी स्थिति होगी। यदि नगर अनुकूल नहीं है परन्तु कालोनी या मौहल्ला अनुकूल है तो भी शुभ ही है। यदि दोनों की राशि समान है तो सम होती है अर्थात् न हानि व लाभ की स्थिति है।

मान लो उमेश मेरठ शहर के शास्त्रीनगर कालोनी में रहता है, क्या यह शहर व कालोनी उसके लिए शुभ है। उमेश की राशि वृष है और शास्त्रीनगर की राशि कुंभ है। चक्रम के अनुसार वृष के लिए कुंभ राशि शुभ है जबकि मेरठ की सिंह राशि रोगकारक है। अतः उमेश मेरठ नगर के शास्त्रीनगर कालोनी में भवन क्रय कर सकता है अथवा निर्माण कर सकता है।

नगर व मौहल्ला दोनों व्यक्ति की नाम राशि के प्रतिकूल हों तो कभी भी वहाँ भवन क्रय या निर्माण नहीं करना चाहिए क्योंकि वहाँ चिन्ता, परेशानी, कष्ट व दुःख ही रहेगा।

नगर या मौहल्ला और व्यक्ति की काकिणी संख्या से विचार

इसमें व्यक्ति की काकिणी संख्या का साधन करना पड़ता है। व्यक्ति की काकिणी संख्या ज्ञात करने की रीति इस प्रकार है—

'व्यक्ति की वर्ग संख्या को दुगना करके उसमें नगर की वर्ग

निजवर्ग से पहले वर्ग की दिशा सर्वोत्तम, दूसरे वर्ग की मध्यम, तीसरे वर्ग की मध्यम, चौथे वर्ग की सामान्य, पाँचवें वर्ग की अशुभ, छठे वर्ग की सामान्य सातवें वर्ग की मध्यम और आठवें वर्ग की भी मध्यम होती है। किसी भी वर्ग वाला व्यक्ति नगर के मध्य भाग में बिना किसी शंका के भवन निर्माण कर सकता है।

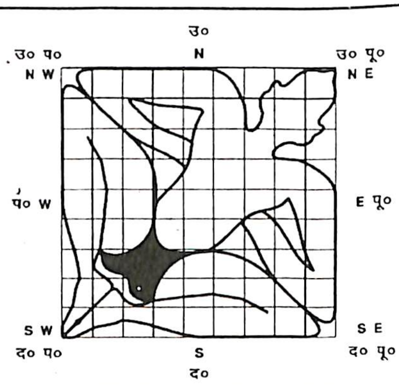

संख्या जोड़कर योगफल में 8 से भाग देने पर जो शेष बचे वह उस व्यक्ति की काकिणी संख्या होगी।'

इसी प्रकार नगर की काकिणी संख्या ज्ञात करने की रीति इस प्रकार है—

'नगर की वर्ग संख्या को दुगना करके उसमें व्यक्ति की वर्ग संख्या जोड़कर योगफल में 8 से भाग देने पर जो शेष बचे वह नगर की काकिणी संख्या होगी।'

उदाहरणतः अशोक कुमार मेरठ में भवन निर्माण करना चाहता है। इसकी काकिणी संख्या ज्ञात करके बताओ कि यह शहर उसके लिए अनुकूल रहेगा या नहीं।

अशोक का **वर्ग अवर्ग** है जिसका **वर्गेश गरुड़** है और **वर्ग संख्या 1** है।

नगर मेरठ का **वर्ग पवर्ग** है जिसका **वर्गेश मूषक** है और **वर्ग संख्या 6** है।

अशोक की वर्ग संख्या 1 को दुगना करने पर 2 आया इसमें मेरठ की वर्ग संख्या 6 जोड़ी तो योगफल 8 आया इसमें 8 से भाग दिया तो शेष 0 (शून्य) आया। शून्य (0) अशोक की काकिणी संख्या है।

मेरठ की वर्ग संख्या 6 को दुगना करने पर 12 आया इसमें अशोक की वर्ग संख्या 1 जोड़ी तो योगफल 13 आया इसमें 8 से भाग दिया तो शेष 5 आया। पाँच (5) नगर मेरठ की काकिणी संख्या है।

इस प्रकार आप किसी भी व्यक्ति व नगर की काकिणी संख्या ज्ञात कर सकते हैं।

यदि बिना गणना के काकिणी संख्या ज्ञात करना चाहते हैं तो **नगर व व्यक्ति काकिणी संख्या व फल ज्ञान चक्रम्** का प्रयोग करें जोकि आपकी सुविधा के लिए यहाँ बनाकर दे रहे हैं। इस चक्र से एक दृष्टि में नगर व व्यक्ति की काकिणी संख्या व उसका फल ज्ञात हो जाता है।

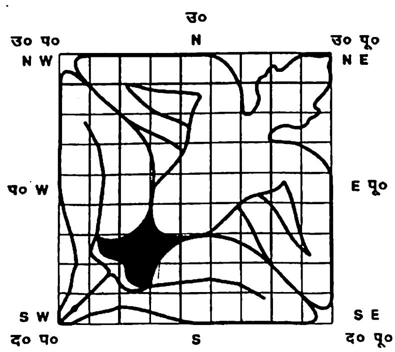

भवन निर्माण के लिए अनुकूल नगर या मौहल्ला चयन करके यह निश्चय करें कि नगर या मौहल्ले का कौन सी दिशा का भाग अनुकूल या सर्वोत्तम है। बाद में भूमि परीक्षा करके देखें कि भूमि उपयुक्त है या नहीं। लोग भूमि भवन निर्माण, व्यापार हेतु, कालोनी बनाने के लिए और धन के विनियोजन हेतु खरीदते हैं।

काकिणी फल विचार

1. यदि नगर की काकिणी संख्या व्यक्ति की काकिणी संख्या से कम हो तो वह नगर व्यक्ति के लिए लाभ देने वाला होगा।

नगर व व्यक्ति काकिणी संख्या व फल ज्ञान चक्रम्

नगर का वर्ग	काकिणी	व्यक्ति का वर्ग							
		1. अवर्ग	2. कवर्ग	3. चवर्ग	4. टवर्ग	5. तवर्ग	6. पवर्ग	7. यवर्ग	8. शवर्ग
1. अवर्ग	व्यक्ति नगर	3 3 सम	5 4 लाभ	7 5 लाभ	1 6 हानि	3 7 हानि	5 0 लाभ	7 1 लाभ	1 2 हानि
2. कवर्ग	व्यक्ति नगर	4 5 हानि	6 6 सम	0 7 हानि	2 0 लाभ	4 1 लाभ	6 2 लाभ	0 3 हानि	2 4 हानि
3. चवर्ग	व्यक्ति नगर	5 7 हानि	7 0 लाभ	1 1 सम	3 2 लाभ	5 3 लाभ	7 4 लाभ	1 5 हानि	3 6 हानि
4. टवर्ग	व्यक्ति नगर	6 1 लाभ	0 2 हानि	2 3 हानि	4 4 सम	6 5 लाभ	0 6 हानि	2 7 हानि	4 0 लाभ
5. तवर्ग	व्यक्ति नगर	7 3 लाभ	1 4 हानि	3 5 हानि	5 6 हानि	7 7 सम	1 0 लाभ	3 1 लाभ	5 2 लाभ
6. पवर्ग	व्यक्ति नगर	0 5 हानि	2 6 हानि	4 7 हानि	6 0 लाभ	0 1 हानि	2 2 सम	4 3 लाभ	6 4 लाभ
7. यवर्ग	व्यक्ति नगर	1 7 हानि	3 0 लाभ	5 1 लाभ	7 2 लाभ	1 3 हानि	3 4 हानि	5 5 सम	7 6 लाभ
8. शवर्ग	व्यक्ति नगर	2 1 लाभ	4 2 लाभ	6 3 लाभ	0 4 हानि	2 5 हानि	4 6 हानि	6 7 हानि	0 0 सम

टिप्पणी—व्यक्ति व नगर के सम्मुख लिखे अंक उनकी काकिणी संख्या हैं।

भूमि माता होने के कारण आराध्य है। उसका परीक्षण कराकर ही क्रय करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में विधिवत परीक्षणोपरान्त भूमि क्रय करके क्षेत्र पूजन व सम्भव हो तो शल्य शोधन भी करना चाहिए। बाद में मिट्टी के प्रकार के अनुसार भूमि का वर्ण विचारना चाहिए।

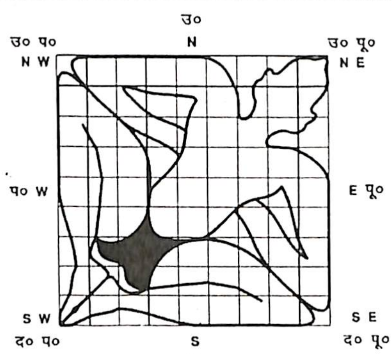

2. यदि नगर की काकिणी संख्या व्यक्ति की काकिणी संख्या से अधिक हो तो वह नगर व्यक्ति के लिए हानि कारक होगा।

3. यदि नगर की काकिणी संख्या और व्यक्ति की काकिणी संख्या समान हो तो वह नगर व्यक्ति के लिए न हानिकारक व न लाभदायक होगा अर्थात् सम होगा।

4. व्यक्ति की काकिणी संख्या नगर की काकिणी संख्या से जितनी अधिक होगी वह नगर व्यक्ति के लिए उसी अनुपात में लाभदायी रहेगा।

कहने का तात्पर्य यही है कि नाम राशि और काकिणी संख्या दोनों से जो नगर व मौहल्ला या कालोनी शुभ व लाभदायी हो उसी में भवन क्रय करें या निर्माण करना चाहिए।

टिप्पणी—अनेक पुस्तकों व टीकाओं में व्यक्ति की अपेक्षा नगर की काकिणी अधिक होने से शुभ कहा है जोकि गलत है। व्यक्ति की काकिणी संख्या अधिक होनी चाहिए, यही उपयुक्त है। स्पष्टीकरण के लिए श्री सीताराम झा कृत 'मुहूर्त चिन्तामणि' की टीका देख सकते हैं।

स्वं वर्ग द्विगुणं विधाय परवर्गाढयं गजैः शेषितम्।
काकिण्यस्त्वन योश्च तद्विवरतो यस्याधिकाः सोऽर्थयः ।।

अर्थात् नाम और ग्राम (नगर) की काकिणी (पूर्व समय का सिक्का (धन) के साघनार्थ, अपनी वर्ग संख्या को दूना करके दूसरे की वर्ग संख्या जोड़कर 8 के भाग देने से जो शेष बचे, वह अपनी-अपनी (नाम और ग्राम) की काकिणी (सम्पत्ति) होती है। इन दोनों में जिसकी काकिणी (धन) अधिक हो वह अर्थद् (उत्तमर्ण = धन देने वाला) होता है अर्थात् जिसकी काकिणी अल्प हो वह अधमर्ण ऋण लेने वाला होता है।

श्री सीताराम झा अपनी पुस्तक 'समय शुद्धि-विवेक' (संस्करण संवत् 2024) के तृतीय रत्न 'कृत्य विवेक' के पृ० 13 पर कहते

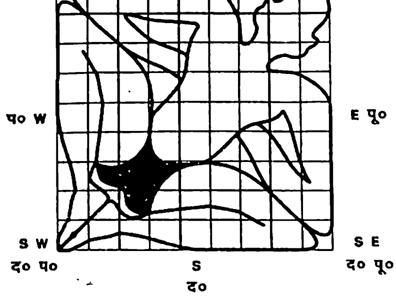

जो भूमि सफेद, मधुर, सुगन्धयुक्त हो तो वह ब्राह्मणी और सुखदा होती है। जो भूमि लाल, कषैली, रक्तगन्धयुक्त हो तो वह क्षत्रिया व राज्यप्रदा होती है। जो भूमि हरे, पीले, खट्टी, शहद सदृश गन्धयुक्त हो तो वह वैश्या और धनप्रदा होती है। जो भूमि काली, कड़वी, मदिरासदृश गन्धयुक्त हो तो वह शूद्रा व त्याज्य होती है।

हैं—कई टीकाकार या संशोधक 'अर्थद्' शब्द देखकर प्रमादवश कुतर्क कर लिये कि ग्राम को अर्थद् (धन होता) होना अच्छा होगा, क्योंकि पाने वाले का धन मिलेगा। इसलिए टीका में लिख दिये कि 'ग्राम धन अधिक होना अच्छा होगा।' किन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि कोई भी व्यक्ति ग्राम में सबसे धनवान् (धनदाता) ही होना चाहता है। दूसरों से धन चाहने वाला तो अधमर्ण, याचक (भीखमंगा) होता है। प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कर्ण धनदाता थे, राजा भोज अर्थद् (धनदाता) थे। अतः अर्थद् होना ही श्रेष्ठ है। इसलिए साधक (योगी) की काकिणी ही अधिक होनी चाहिए।

अब तक हम किस स्थान में रहें यह विचार कर रहे थे। अब इसकी चर्चा करेंगे कि अमुक नगर में अमुक व्यक्ति के लिए निवास योग्य दिशा कौन सी शुभ है।

दिशा चयन कैसे करें ?

चयनित नगर विशेष में रहने योग्य दिशा का चयन कैसे करें ? अब यह बतलाते हैं। दिशा का चयन भी वर्ग के अनुसार करेंगे। यह सर्वविदित है कि अपने वर्ग से पंचम वर्ग शत्रु वर्ग होता है। जैसे गरुड़ के वर्ग से पाँचवां वर्ग सर्प शत्रु है, अतः गरुड़ वर्ग की पूर्व दिशा है और सर्प वर्ग की पश्चिम दिशा है, वस्तुतः स्पष्ट है कि ये परस्पर एक दूजे हेतु अशुभ हैं। **कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को चयनित नगर में अपने वर्ग से पंचम वर्ग की दिशा को छोड़कर किसी भी दिशा में निवास के लिए भूमि क्रय करके भवन निर्माण करना चाहिए। अपने वर्ग से पंचम वर्ग की दिशा हानिकारक है अर्थात् अशुभ है। यदि व्यक्ति अपने ही वर्ग की दिशा में निवास करे तो वह सर्वोत्तम माना गया है। अपने से चौथा वर्ग मित्र अर्थात् इसकी दिशा शुभ और अन्य वर्ग को उदासीन समझना चाहिए अर्थात् इसकी दिशा मध्यम है। वर्ग के अनुसार विचार करने**

जिस भूमि पर आम, पपीता, आँवला, अमरूद, अनार, पलास के वृक्ष उत्पन्न होते हो वह श्रेष्ठ भूमि, जिस भूमि पर उगे वृक्षों पर फल-फूल, लता व वनस्पतियाँ सरलता से वृद्धि करें तो उत्तम भूमि, जिस भूमि पर खट्टे व कड़वे फलों वाले वृक्ष (शमी, नीम आकड़ा, खेजड़ा आदि) उत्पन्न हो तो मध्यम भूमि और काँटे-झाड़-झंखाड़, बैर, करीर के वृक्ष उत्पन्न हो वह भूमि सामान्य होती है।

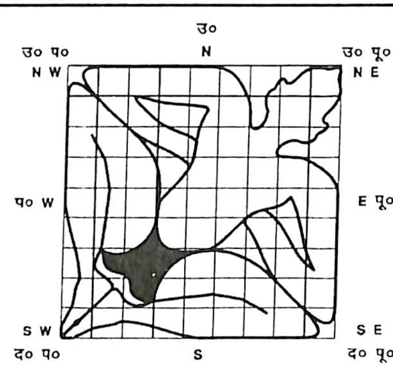

शुभाशुभ दिशा ज्ञान चक्रम्

व्यक्ति का वर्ग (वर्गेश)	नगर की दिशाएँ							
	पूर्व (गरुड़)	आग्नेय (मार्जार)	दक्षिण (सिंह)	नैऋत्य (श्वान)	पश्चिम (सर्प)	वायव्य (मूषक)	उत्तर (मृग)	ईशान (मेष)
अवर्ग (गरुड़)	सर्वोत्तम	मध्यम	मध्यम	सामान्य	अशुभ	सामान्य	मध्यम	मध्यम
कवर्ग (मार्जार)	मध्यम	सर्वोत्तम	मध्यम	मध्यम	सामान्य	अशुभ	सामान्य	मध्यम
चवर्ग (सिंह)	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तम	मध्यम	मध्यम	सामान्य	अशुभ	सामान्य
टवर्ग (श्वान)	सामान्य	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तग	मध्यम	मध्यम	सामान्य	अशुभ
तवर्ग (सर्प)	अशुभ	सामान्य	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तम	मध्यम	मध्यम	सामान्य
पवर्ग (मूषक)	सामान्य	अशुभ	सामान्य	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तम	मध्यम	मध्यम
यवर्ग (मृग)	मध्यम	सामान्य	अशुभ	सामान्य	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तम	मध्यम
शवर्ग (मेष)	मध्यम	मध्यम	सामान्य	अशुभ	सामान्य	मध्यम	मध्यम	सर्वोत्तम

टिप्पणी—चक्र बनाते समय विद्वानों के इस मत को **'पंचम अशुभ दिशा से आगे पीछे की दिशा अर्थात् चौथे और छठे वर्ग की दिशा को भी सामान्य समझकर त्याज्य देना चाहिए'**, स्वीकार किया गया है। वस्तुतः अपने वर्ग से चौथा व छठा वर्ग सामान्य ही लिखा गया है।

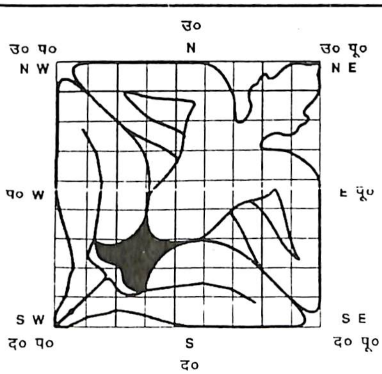

भवन में तुलसी का पौधा, पूर्व दिशा में पीपल, दक्षिण में गूलर, पश्चिम में बरगद, उत्तर में पाकड़ का वृक्ष लगाना उत्तम है। वृक्ष मुख्य भवन से दूर हटकर लगाने चाहिएं। प्रयास करें जिस भूमि पर पीपल या वटवृक्ष का पेड़ लगा हो उस पर भवन न बनाएँ। पूर्व में बरगद, दक्षिण में पाकड़, पश्चिम में पीपल और उत्तर में गूलर का वृक्ष न लगाएँ।

पर किसी भी वर्ग वाला व्यक्ति नगर के मध्य भाग को भवन निर्माण के लिए बिना किसी शंका के चयन कर सकता है।

अपने वर्ग के लिए दिशा चयन करने के लिए 'शुभाशुभ दिशा ज्ञान चक्रम्' बनाकर दे रहे हैं जिससे आप तुरन्त अपने लिए अनुकूल दिशा ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरणतः अशोक मेरठ नगर में भवन निर्माण करना चाहता है। अशोक का वर्ग अवर्ग (गरुड़) है और मेरठ का वर्ग पवर्ग (मूषक) है। राशि विचार से मेरठ उसके लिए शुभ है, परन्तु काकिणी विचार से मेरठ हानिकारक है। उससे पूछा गया तो वह बोला मैं शास्त्रीनगर में भवन बनाऊँगा। शास्त्रीनगर का वर्ग शवर्ग (मेष) है जोकि उसके वर्ग अवर्ग (गरुड़) से विचारने पर ज्ञात हुआ कि लाभकारक है। अतः वह शास्त्रीनगर में भवन बना सकता है। यदि मेरठ भी लाभप्रद होता तो सोने में सुहागे वाली बात होती। अब वह पूछता है कि शास्त्रीनगर में किस दिशा में भवन बनाए। उसका वर्ग अवर्ग (गरुड़) है, अनुकूल 'दिशाज्ञान चक्रम्' में देखा तो ज्ञात हुआ कि उसके लिए पूर्व दिशा सर्वोत्तम एवं पश्चिम दिशा अशुभ है। अतः उसे शास्त्रीनगर के पूर्वी भाग में भवन निर्माण करना चाहिए।

इस प्रकार आप किसी भी व्यक्ति के लिए अनुकूल नगर या मौहल्ला चयन करके यह जान सकते हैं कि उस नगर या मौहल्ला की कौन सी दिशा अनुकूल है।

उबड़-खाबड़, ऊँची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी, फटी हुई या फिसलने वाली, मलयुक्त, बांबियां, बिल युक्त, अस्थियां दबी हुई और जीव-जन्तुओं से आक्रान्त भूमि पर भवन का निर्माण नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसी भूमि रोग, कष्ट, दुःख व धनहानि कारक है।

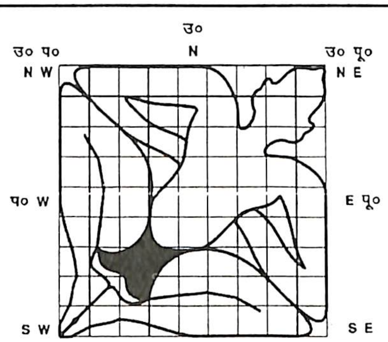

4 भूमि एवं भूखण्ड विचार

भवन निर्माण से पूर्व भूमि चयन के लिए उसकी परीक्षा व महत्ता को विस्मरण नहीं किया जा सकता है। भूमि के बिना भवन बन ही नहीं सकता। वस्तुतः सर्वप्रथम भूमि पर विचार करना होगा। उपयुक्त भूमि के चयन के लिए भूमि विचार करते समय हमें यह देखना होता है कि वह भवन-निर्माण के योग्य है या नहीं।

भूमि क्रय क्यों करते हैं ?

प्रायः भूमि का क्रय अनेक दृष्टियों से किया जाता है। अधिकांश लोग अपने भवन हेतु भूमि क्रय करते हैं, कुछ लोग व्यापार हेतु भूमि क्रय करते हैं, कुछेक कालोनी बनाने के लिए भूमि क्रय करके बाद में भूखण्ड गृहस्थों को विक्रय करके धनार्जन करते हैं और अनेक लोग धन का विनियोजन करने के लिए भूमि क्रय करते हैं। भूमि क्रय करते समय इसकी शुभाशुभता पर विचार करने के लिए भू-परीक्षण करना चाहिए।

क्या यह सही है ?

महानगर में भूमि-संकुचन के कारण लोग श्मशान के आस-पास भी भवन बना लेते हैं, किन्तु यह उचित नहीं है और ये भवन शुभ भी नहीं है और इसमें रहने वाले परिवार पूर्णतः सुखी भी नहीं हैं।

भू-स्वामी या भू-व्यापारी बिना-विचारे भूखण्ड विक्रय करते हैं, चाहे

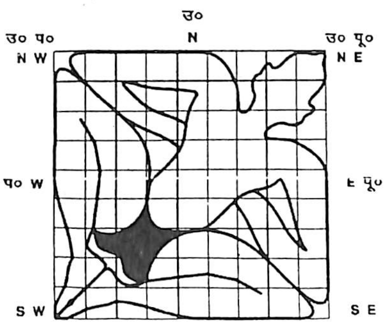

भूखण्ड के दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) कोण में कोई जलस्त्रोत अर्थात् कुँआ, तालाब, पोखर, गड्ढा, हैन्डपम्प आदि नहीं होना चाहिए। प्रायः नैर्ऋत्य कोण की ओर ऊँचे भवनों का होना उत्तम है। जलस्त्रोत ईशान कोण की ओर होना चाहिए।

भूमि रहने योग्य न हो। ऐसी भूमि बाद में प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होती है और इस पर बने भवन भी धाराशायी हो जाते हैं।

क्या करें ?

भूमि माता है, सदा आराध्य है। अतः उसका परीक्षण कराकर ही इसे क्रय करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में विधिवत् परीक्षण के उपरान्त ही भूमि क्रय करनी चाहिए। भूमि क्रय कराकर क्षेत्र-पूजन के साथ-साथ सम्भव हो तो शल्य-शोधन भी कराना चाहिए।

भूमि के प्रकार

वर्णानुसार भूमि चार प्रकार की होती है—

1. ब्राह्मणी भूमि
2. क्षत्रिया भूमि
3. वैश्या भूमि
4. शूद्रा भूमि

1. ब्राह्मणी भूमि

सफेद रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में मधुरता का अनुभव कराने वाली व सुन्दर गन्ध वाली ब्राह्मणी भूमि होती है। यह भूमि स्पर्श करने में सुखदायक होती है। यह भूमि गृहस्थों के लिए शुभ होती है। इस पर भवन बनाकर रहने से परिवार में चित्त शुद्धि, धन-धान्य एवं समस्त सुख रहते हैं। सरस्वती व लक्ष्मी दोनों की कृपा बनी रहती है।

इस प्रकार की भूमि पर साहित्यिक संस्था, विश्वविद्यालय, स्कूल, विद्यालय, मन्दिर, धर्मशाला व मांगलिक कार्यों हेतु भवन निर्माण करना चाहिए।

2. क्षत्रिया भूमि

लाल रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में कषैली व रक्त गन्ध से युक्त

भूखण्ड के पूर्व-उत्तर की भूमि यदि ढलानदार हो और दक्षिण-पश्चिम दिशा में पहाड़ या ऊँची चट्टानें हो तो शुभ है। अतः भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग ऊँचा और ईशान कोण नीचा होना शुभ है।

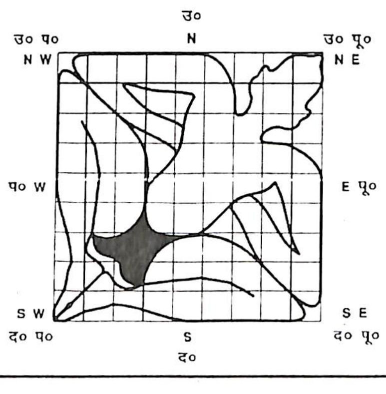

भूमि क्षत्रिया होती है। यह भूमि स्पर्श करने में कठोर होती है। यह भूमि राज्यप्रदा होती है।

इस प्रकार की भूमि पर राजकीय कार्यालय, सैनिक या बहादुरों के लिए भवन बनाना उपयुक्त है। इस भूमि से पराक्रम की ऊर्जा स्वतः व सरल रूप से मिलती है। इस पर सभागार, छावनी, शस्त्रागार, कारखाना, सैनिक कालोनी आदि बनाना चाहिए।

3. वैश्या भूमि

हरे या पीले रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में खट्टी व शहद सदृश गन्ध से युक्त भूमि वैश्या होती है। यह भूमि व्यवसायियों के लिए श्रेष्ठ है। इसमें दुकानें, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, धनिकों को भवन, बंगला या कोठी निर्मित करनी चाहिए। वैश्या भूमि धनप्रदा होती है।

4. शूद्रा भूमि

काले रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में कड़वी व मदिरा सदृश गन्ध से युक्त भूमि शूद्रा भूमि होती है। यह भूमि त्याज्य होती है। यह भूमि स्पर्श करने पर अति कठोर होती है।

यह भूमि मात्र उद्योग-धन्धों हेतु उपयुक्त कही गयी है। ऐसी भूमि श्रमिक कालोनी, कुष्ठ आश्रम या श्मशान आदि के लिए त्याज्य देनी चाहिए। जनता के लिए कालोनी बसाने के योग्य नहीं होती है।

सुविधा हेतु अगले पृष्ठ पर 'शुभाशुभ भूमि लक्षण चक्रम्' बनाकर दे रहे हैं। इस चक्र को देखने मात्र से भूमि संबंधी लक्षण ज्ञात हो जाते हैं।

भवन और वृक्ष

भूमि के लक्षण के अनुरूप आप यह ज्ञात कर सकते हैं कि भूमि का प्रकार कौन सा है और वह कैसी है ?

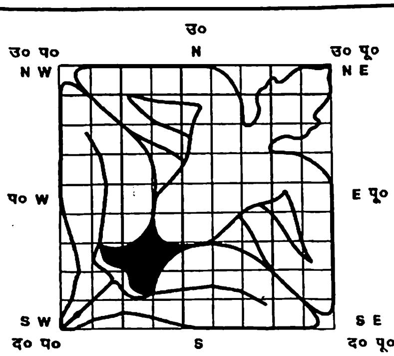

भूमि का पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय कोण, नैर्ऋत्य कोण उन्नत् अर्थात् ऊँचा होना शुभ है जबकि ईशान व वायव्य कोण की भूमि उन्नत होना अशुभ है।

'शुभाशुभ भूमि लक्षण चक्रम्'

भूमि का प्रकार	भूमि का रंग	भूमि का स्वाद	भूमि की गन्ध	फल
1. ब्राह्मणी	सफेद	मधुर	सुगन्धयुक्त	सुखदा
2. क्षत्रिया	लाल	कषैली	रक्तगन्ध	राज्यप्रदा
3. वैश्या	हरा/पीला	खट्टी	शहद सदृश गन्ध	धनप्रदा
4. शूद्रा	काला	कड़वी	मदिरा सदृश गन्ध	त्याज्य

भवन निर्माण से पूर्व यह भी देख लेना चाहिए कि जिस भूमि पर वृक्ष, लता, पौधे, झाड़ी, घास, काँटेदार वृक्ष आदि हों तो वह कैसी रहेगी ? अब इसकी चर्चा करेंगे ? कुछ आवश्यक सूत्र दे रहे हैं जिससे भूमि चयन में आपको निर्णय करने की योग्यता प्राप्त होगी। ये सूत्र निम्नलिखित हैं—

1. जिस भूमि पर आम, पपीता, आँवला, अमरूद, अनार, पलास आदि के वृक्ष बहुतायत में उत्पन्न हों, वह भूमि **श्रेष्ठ** कही गई है।
2. जिन वृक्षों पर फल-फूल आते रहते हैं और लता एवं वनस्पतियाँ सरलता से वृद्धि करती हैं, वह भूमि भी **उत्तम** कही जाती है।
3. जिस भूमि पर खट्टे-कड़वे फलों वाले वृक्ष शमी, नीम, आकड़ा, बबूल, खेजड़ा आदि उत्पन्न होते हैं, वह भूमि **मध्यम** कही जाती है।
4. जिस भूमि पर कंटीले वृक्ष, झाड़-झंखाड़, सूखी घास, बेर, करीर आदि के वृक्ष उत्पन्न होते हैं, वह भूमि **सामान्य** कही जाती है।
5. जो व्यक्ति अपने भवन में सुखी रहना चाहता है उसे कभी उस भूमि पर निर्माण नहीं करना चाहिए, जहाँ पीपल या वटवृक्ष के वृक्ष हों। इन वृक्षों के आसपास भी भवन नहीं बनाना चाहिए। पीपल के वृक्ष पर भूत-प्रेतों का वास होता है। सोमवती अमावस को पीपल पर श्री

भूमि का आग्नेय कोण, दक्षिण दिशा, नैर्ऋत्य कोण, पश्चिम व वायव्य कोण अवनत (नीचा) होना शुभ नहीं है जबकि, उत्तर-दिशा, ईशान कोण व पूर्व दिशा अवनत होना शुभ है।

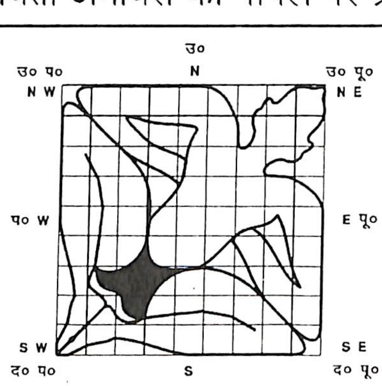

विष्णु लक्ष्मी सहित विराजते हैं। अतः इस दिन इसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। पीपल का पूजन करना उत्तम है। वटवृक्ष रात्रिकाल में दूषित वायु छोड़ता है जिससे आसपास रहने वाले प्राणियों के स्वास्थ्य में बाधा आती है। इसकी जड़े भूमि के भीतर दूर-दूर तक फैल जाती है जो भवन को उखाड़ फेंकने में समर्थ हैं या भवन में दरारें भी आ सकती है। सीताफल के वृक्ष पर हमेशा सर्प या विषैले जीव-जन्तु वास करते हैं, इसलिए इस वृक्ष के आसपास भवन निर्माण करना निषेध है। अतः तीनों वृक्षों (पीपल, वटवृक्ष, सीताफल) से युक्त भूमि या इनके आसपास भवन बनाना निषेध है।

6. तुलसी का पौधा श्रेष्ठ कहा गया है। जिस भूमि पर तुलसी वन हो वहाँ पर भवन निर्माण करना उत्तम है। तुलसी का पौधा अपने चारों ओर 50 मीटर तक का वातावरण शुद्ध करता है। इसमें कृमिनाशक शक्ति विद्यमान है। काली तुलसी तो सदैव आराध्य होती है। रविवार को तुलसी वन या तुलसी के पौधे के पास नहीं जाना चाहिए, इसका स्पर्श भी अशुभ है। रविवार के संयोग से इसके पौधे से दूषित रश्मियां निकलती हैं। तुलसी का पौधा घर के आँगन में लगाना चाहिए।
7. भवन के समीप पूर्व में पीपल का वृक्ष, दक्षिण में गूलर, पश्चिम में बरगद, उत्तर में पाकड़ (पर्कटी) का वृक्ष उत्तम होता है। सामान्यतः तो ये वृक्ष भूखण्ड के आसपास न हो तो उत्तम है। यदि रखने हैं तो उपर्युक्त दिशाओं में मुख्य भवन के बाद खुले क्षेत्र में लगाएँ। यह भी जान लें कि पूर्व में बरगद, दक्षिण में पाकड़, पश्चिम में पीपल और उत्तर में गूलर का वृक्ष वर्जित है। यदि लगायेंगे तो पीपल के कारण अग्निभय पाकड़ के कारण प्रमाद, बरगद के कारण शस्त्रभय और गूलर के कारण उदर रोग होगा।

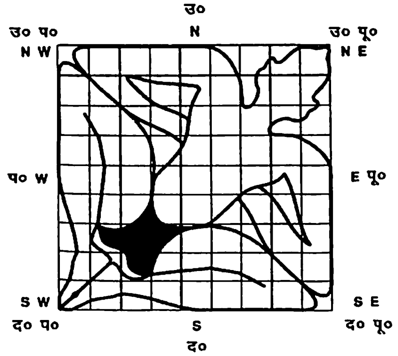

नैर्ऋत्य और वायव्य कोण में उन्नत भूमि गजपृष्ठा, मध्य में उन्नत और चारों ओर से अवनत भूमि कूर्मपृष्ठा, पूर्व, आग्नेय व ईशान दिशा में उन्नत और पश्चिम दिशा में अवनत भूमि दैत्यपृष्ठा और पूर्व-पश्चिम दिशा में लम्बी व दक्षिण-उत्तर दिशा में उन्नत भूमि नागपृष्ठा होती है।

भूमि चयन करते समय यह भी विचारें

- जिस भूमि के **दक्षिण दिशा** की ओर जल स्रोत हो तो उस भूमि पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए। ऐसी भूमि सुख-समृद्धिदायक नहीं होती है। इसके विपरीत जिस भूमि के **उत्तर दिशा** की ओर जलस्रोत हो तो ऐसी भूमि शुभ कही जाती है, इस पर भवन निर्माण करना पराक्रम वृद्धि कारक है। जिस भूमि के **पश्चिम दिशा** की ओर जलस्रोत हो तो उस भूमि पर भवन निर्माण करना सामान्य है।
- जो भूमि, उबड़-खाबड़, ऊँची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी, फटी हुई या फिसलने वाली हो तो उस पर भवन नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि वह भूमि रोगकारक होती है।
- जिस भूमि पर बांबियां बिल आदि हों, वहाँ पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए क्योंकि यह भूमि कष्ट देने वाली होती है।
- जिस भूमि पर चहुँ ओर मल बिखरा हुआ हो, वहाँ दुर्गन्ध बहुत हो, भूमि में अस्थियाँ दबी हों या विषैले जीव-जन्तुओं से आक्रान्त हो तो उस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए। ऐसी भूमि दुःख धनहानि कारक होती है।
- ऊसर-भूमि या टीलों से युक्त भूमि पर भी भवन-निर्माण नहीं करना चाहिए क्योंकि यह भी उन्नति में बाधक एवं धनहानि कारक है।
- भूखण्ड के पूर्व-उत्तर की भूमि यदि ढलानदार है तो उत्तम है।
- भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा में पहाड़ या ऊँची चट्टाने हों तो शुभ है।
- भूखण्ड के ईशान कोण की ओर तालाब, नदी, पानी की टंकी भूमि के नीचे हो तो शुभ है।

गजपृष्ठा भूमि और कूर्मपृष्ठा भूमि शुभ अर्थात् धन-धान्य, यश, सुख व दीर्घायुकारक है जबकि दैत्यपृष्ठा और नागपृष्ठा भूमि अशुभ है अर्थात् कलहकारी, पशु, पुत्र व धनादि हानि व शत्रुभय कारक है। शुभ भूमि ग्राह्य और अशुभ भूमि भवन निर्माण हेतु त्याज्य है।

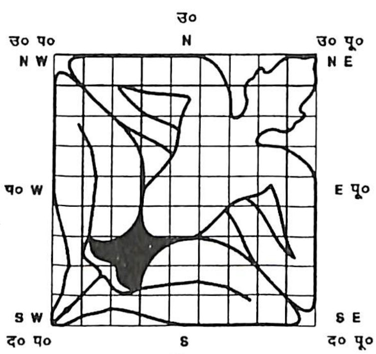

- ☐ भूखण्ड के नैर्ऋत्य कोण की ओर ऊँचे भवन हो तो उत्तम है।
- ☐ भूखण्ड के दक्षिण-पश्चिम दिशा में कोई कुआं, तालाब, पोखर, गड्ढा आदि है तो अशुभ है।

भूमि का ढलान

वास्तुविदों ने भूमि के उन्नत-अवनत होने अर्थात् ऊँची-नीची होने के शुभाशुभ फल बताए हैं। वस्तुतः भवन निर्माण करते समय उसके ढलान पर भली-भांति विचार करना चाहिए।

उन्नत भूमि फल

- ☐ **पूर्व दिशा** में भूमि उन्नत हो तो सन्तान हानि या उनका विकास नहीं होने देती। ऐसी भूमि पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।
- ☐ **पश्चिम दिशा** में भूमि उन्नत हो तो वंश वृद्धिकारक होती है।
- ☐ **उत्तर दिशा** में भूमि उन्नत हो तो सदैव सुखदायक होती है।
- ☐ **दक्षिण दिशा** में भूमि उन्नत हो तो धन व आयु वृद्धि कारक होती है।
- ☐ **आग्नेय कोण** दिशा में भूमि उन्नत हो तो सुखदायी व धनदायी होती है।
- ☐ **नैर्ऋत्य कोण** दिशा में भूमि उन्नत हो तो व्यवसाय व धन-समृद्धि कारक होती है।
- ☐ **ईशान कोण** दिशा में भूमि उन्नत हो तो कष्टदायी होती है।
- ☐ **वायव्य कोण** दिशा में भूमि उन्नत हो तो धनहानि कारक होती है।

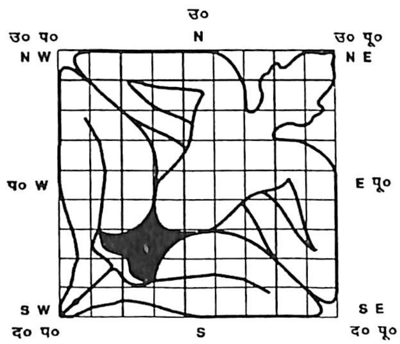

भूमि परीक्षा से यह ज्ञात होता है कि भूमि ठोस है या झिरझिरी व ढीली है। झिरझिरी, ढीली व पोली भूमि गृह-निर्माण के लिए अनुपयुक्त है। भवन की नींव के लिए ठोस आधार होना चाहिए। वस्तुतः भूमि ठोस होनी चाहिए।

अब उपर्युक्त आठ सूत्रों को चित्र में दिखाकर समझाते हैं। देखें चित्र—'उन्नत भूमि फल'

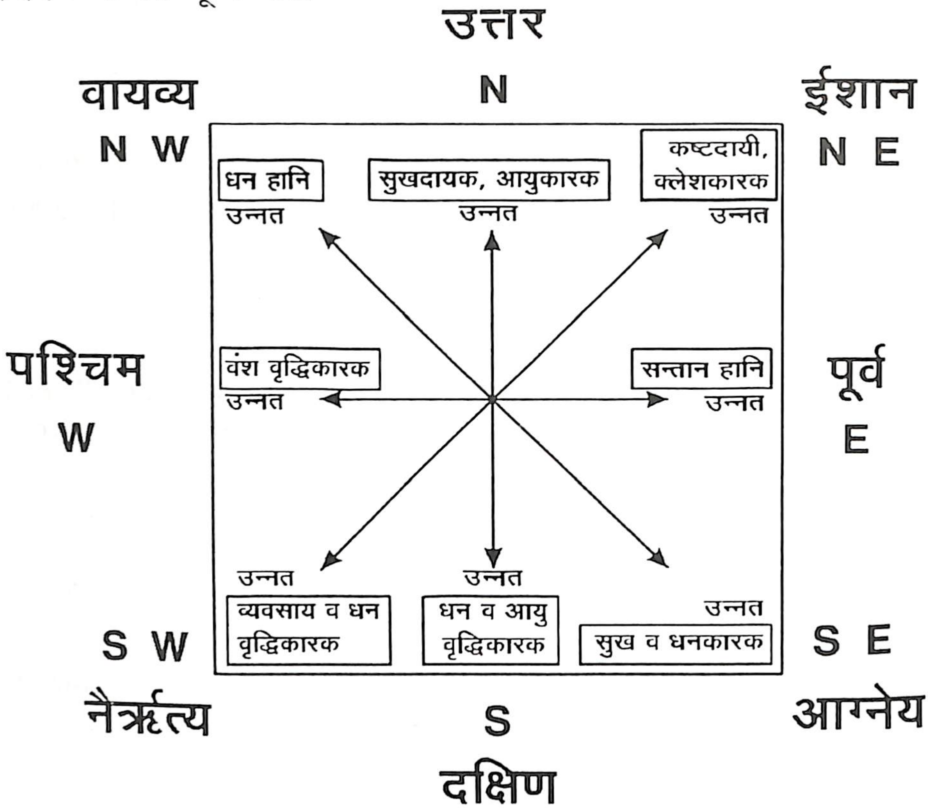

चित्र—उन्नत भूमि फल

अतः उपर्युक्त चित्र के आधार पर उन्नत भूमि फल चक्रम् बनता है, देखें अगले पृष्ठ पर—उन्नत भूमि फल चक्रम्।

भूखण्ड के उत्तर दिशा में डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदकर सारी मिट्टी निकालकर निकाली गई मिट्टी से पुनः गड्ढा भरने पर मिट्टी शेष बचती है तो भूमि श्रेष्ठ, शेष नहीं बचती तो भूमि मध्यम, कम रह जाती है तो भूमि निकृष्ट है। श्रेष्ठ भूमि झिरझिरी न होकर ठोस होगी।

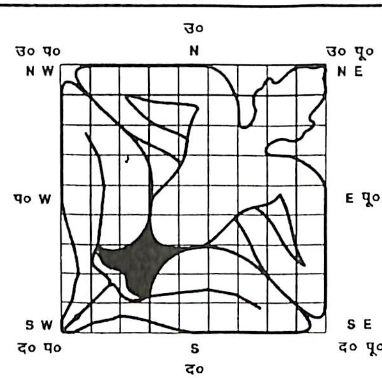

उन्नत भूमि फल चक्रम्

भूमि की दिशा जो उन्नत है	फल
1. पूर्व	पुत्रनाश
2. आग्नेय	सुख व धन लाभ
3. दक्षिण	स्वास्थ्य, धन व आयुप्रद
4. नैर्ऋत्य	व्यवसाय व धन वृद्धि कारक
5. पश्चिम	वंश वृद्धि, अर्थात् पुत्र-पुत्री प्रदा
6. वायव्य	द्रव्य या धन हानि
7. उत्तर	सुख व आयु कारक
8. ईशान	कष्टदायी व भय क्लेश कारक

अवनत भूमि फल

यदि अभीष्ट दिशा की ओर भूमि झुकी हुई अर्थात् अवनत हो तो उसका क्या फल होगा बताते हैं—

- ☐ भूमि **पूर्व दिशा** में अवनत हो तो वृद्धि कारिणी होती है।
- ☐ भूमि **आग्नेय दिशा** में अवनत हो तो अग्निभय कारक होती है।
- ☐ भूमि **दक्षिण दिशा** में अवनत हो तो मृत्यु शोक दायिनी होती है।
- ☐ भूमि **नैर्ऋत्य दिशा** में अवनत हो तो गृह व धन नाश कारक होती है।
- ☐ भूमि **पश्चिम दिशा** में अवनत हो तो अपयश व पुत्रमरण कारक होती है।
- ☐ भूमि **वायव्य दिशा** में अवनत हो तो उद्वेग करने वाली होती है।
- ☐ भूमि **उत्तर दिशा** में अवनत हो तो धन लाभ कारक होती है।

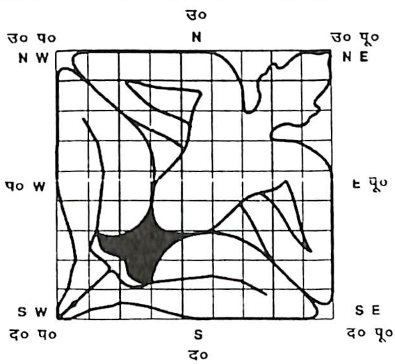

भूखण्ड के उत्तर दिशा में डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदकर उसकी मिट्टी निकालकर उसमें मुख तक पानी भर दीजिए और उत्तर दिशा की ओर सौ कदम चलिए या 120 सैकण्ड के बाद देखें गड्ढा पानी से पूरा भरा है तो भूमि श्रेष्ठ, पानी आधा भरा है तो भूमि मध्यम और पानी नहीं बचा है तो भूमि अशुभ है।

☐ भूमि **ईशान दिशा** में अवनत हो तो ज्ञान, सुख-सम्पत्तिदायी होती है।

भूमि की अवनत दिशा का फल अब चित्र में अभिव्यक्त करके बतलाते हैं—देखें—अवनत भूमि फल।

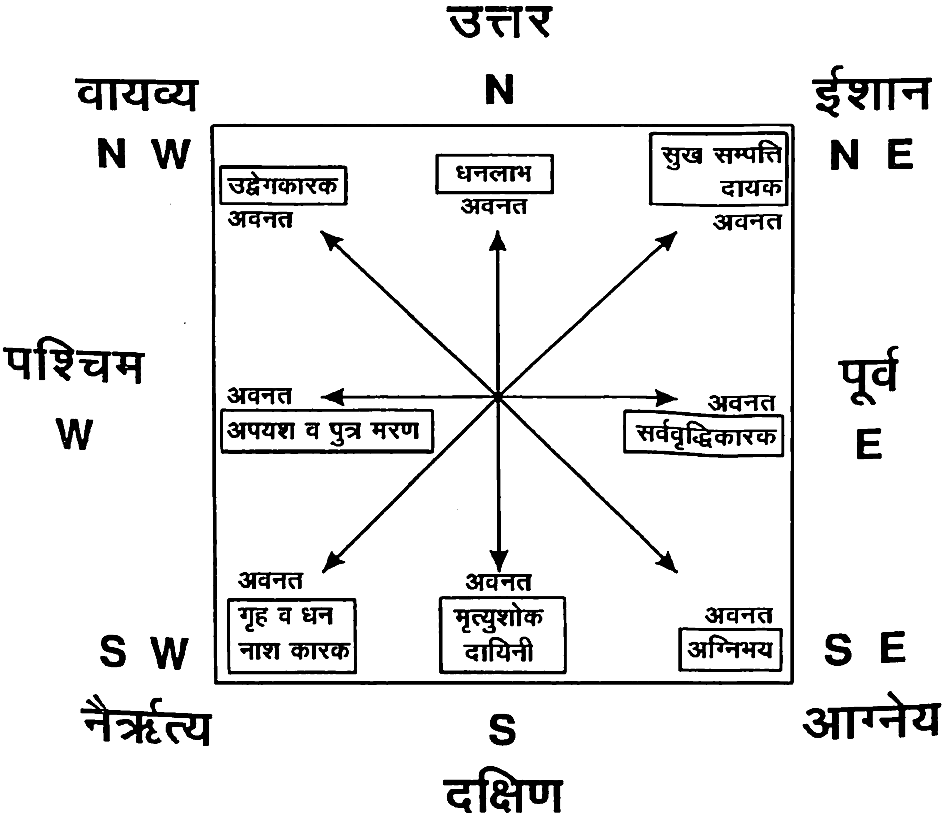

चित्र—अवनत भूमि फल

श्रेष्ठ भूमि या मध्यम भूमि पर भवन निर्माण कर सकते हैं। निकृष्ट भूमि पर भवन निर्माण वर्जित है। श्रेष्ठ भूमि झिरझिरी व ढीली नहीं होती है, मध्यम भूमि थोड़ी ढीली व झिरझिरी होती है और निकृष्ट भूमि झिरझिरी व ढीली होने के कारण त्याज्य है।

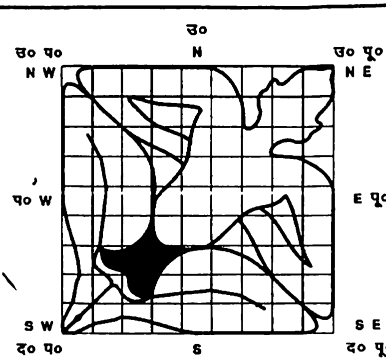

अतः उपर्युक्त चित्र के आधार पर 'अवनत भूमि फल चक्रम्' बनता है, देखें—'अवनत भूमि फल चक्रम्।'

अवनत भूमि फल चक्रम्

भूमि की दिशा जो अवनत है	फल
1. पूर्व	सर्व वृद्धि कारिणी
2. आग्नेय	अग्नि भय
3. दक्षिण	मृत्युशोक दायिनी
4. नैर्ऋत्य	गृह व धन नाश कारक
5. पश्चिम	अपयश व पुत्रमरण कारक
6. वायव्य	उद्वेगकारक
7. उत्तर	धन लाभ कारक
8. ईशान	सुख-सम्पत्तिदायक

पृष्ठानुसार भूमि के प्रकार व फल

भूमि की दिशाओं में लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई के आधार पर भी भूमि की गुणवत्ता और शुभाशुभ का विचार करके भवन-निर्माण हेतु भूमि का चयन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से भूमि चार प्रकार की होती है—

1. गजपृष्ठा भूमि
2. कूर्मपृष्ठा भूमि
3. दैत्यपृष्ठा भूमि
4. नागपृष्ठा भूमि

गजपृष्ठा भूमि

दक्षिणे पश्चिमे चैव नैर्ऋत्ये वायुकोणके।
एषूच्चं यत्र भूमो सा गजपृष्ठाभिधीयते।।

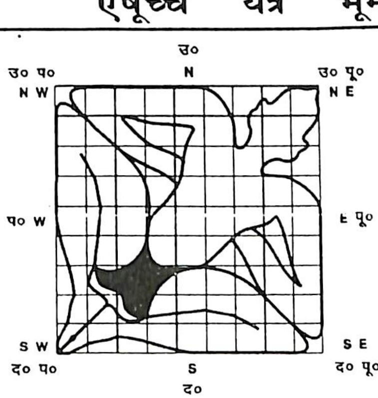

आकार की दृष्टि से वर्गाकार भूखण्ड सर्वश्रेष्ठ, आयताकार भूखण्ड श्रेष्ठ एवं वृत्ताकार भूखण्ड शुभ होता है। चतुष्कोणाकार, षटकोणाकार, अष्टकोणाकार, गोमुखाकार, सिंहमुखाकार, भद्रासन भूखण्ड एवं काकमुखी भूखण्ड भी भवन निर्माण की दृष्टि से शुभ है।

वासस्तु गजपृष्ठायां धनधान्यप्रदायकः।
आयुर्वृद्धिकरो नित्यं कर्तुः संजायते ध्रुवम्।।

जो भूमि नैर्ऋत्य और वायव्य दिशा में उन्नत हो उसे गजपृष्ठा भूमि कहते हैं। इस भूमि पर भवन निर्माता धन-धान्य से पूर्ण और दीर्घायु होता है।

कूर्मपृष्ठा भूमि

मध्य उच्चं भवेद्यत्र नीचं चैव चतुर्दिशम्।
कूर्मपृष्ठा च सा भूमिः कथिता गजकोत्तमैः।।
वासश्च कूर्मपृष्ठायां नित्यमुत्साहवर्धकः।
धन धान्यादिकं तस्य जायते च यशः सुखम्।।

जो भूमि मध्य में उन्नत (ऊँची) और चारों ओर से अवनत (नीची) हो तो उसे कूर्मपृष्ठा कहते हैं।

कूर्मपृष्ठा भूमि पर भवन निर्माण करने से उत्साह, धन-धान्य, यश और सुख की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठा भूमि

पूर्वाग्नि-शुम्भुकोणेषु स्थलमुच्चं यदा भवेत्।
पश्चिमे यत्र नीचं सा दैत्यपृष्ठाऽभिधीयते।।
वासस्तु दैत्यपृष्ठायां सदा कलहकारकः।
पशुपुत्र धनादीनां हानिर्भवति गेहिनः।।

जो भूमि, पूर्व, आग्नेय, ईशान दिशा में उन्नत (ऊँची हो और पश्चिम दिशा में अवनत (नीची) हो तो उसे दैत्यपृष्ठा कहते हैं।

दैत्यपृष्ठा भूमि पर भवन निर्माण करने से नित्य कलह, पशु, पुत्र तथा धनादि की हानि करने वाली होती है।

नागपृष्ठा भूमि

पूर्वपश्चिमयोर्दीर्घा योच्चा दक्षिणसौम्ययोः।

आकार की दृष्टि से त्रिकोणाकार, चक्राकार, शकटाकार, सूपाकार, धनुषाकार, तबलाकार, मृदंगाकार, व्यंजनाकार, चिमटाकार, अण्डाकार, विषमबाहु और अर्द्धवृत्ताकार भूखण्ड अशुभ होते हैं। इन पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

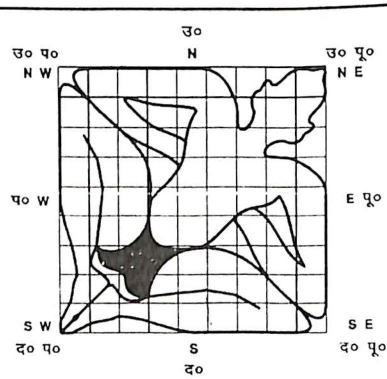

नागपृष्ठा च सा प्रोक्ता निन्दिता पूर्वसूरिभिः।।
तत्र वासो गृहेशस्य धनधान्यादिहानिकृत।
रिपुभीतिकदश्चैव तस्मात्तां परिवर्जयेत्।।

जो भूमि पूर्व-पश्चिम दिशा की ओर लम्बी हो, दक्षिण उत्तर में अवनत (ऊँची) हो तो उसे नागपृष्ठा कहते हैं।

नागपृष्ठा भूमि पर भवन निर्माण करने से धन-धान्यादि की हानि, सदैव शत्रु का भय या वृद्धि होती है। अतः इस भूमि को त्याज्य देना चाहिए।

भूमि की परीक्षा कैसे करें ?

भूमि के प्रकार, ढलान, शुभाशुभ एवं पृष्ठादि पर विचार करने के बाद भूमि की परीक्षा करें। यह भली-भांति जान लें कि जो भूमि ठोस नहीं है वह भवन निर्माण के लिए कदापि उपयुक्त नहीं है। वस्तुतः भूमि का परीक्षण गृह-निर्माण से पूर्व अवश्य करना चाहिए।

भूमि परीक्षण से यह ज्ञात हो जाता है कि भूमि झिरझिरी या ढीली तो नहीं है। झिरझिरी, ढीली व पोली भूमि गृह-निर्माण के लिए अनुपयुक्त होती है। भवन की नींव के लिए ठोस आधार तैयार किया जाता है। ठोस आधार ठोस भूमि पर ही अच्छी तरह तैयार हो सकता है।

अब भूमि परीक्षण की रीति समझाते हैं। भूमि की परीक्षा के दो प्रकार हैं—

भूमि परीक्षण का प्रथम प्रकार

भूखण्ड के उत्तर दिशा के कोण में लगभग डेढ़ फुट (1.5') गहरा व चौड़ा गड्ढा खोदें और गड्ढे में से सारी मिट्टी निकालकर उस निकाली गई मिट्टी से गड्ढे को पुनः भरें। यदि यह मिट्टी गड्ढा भरने पर मिट्टी—

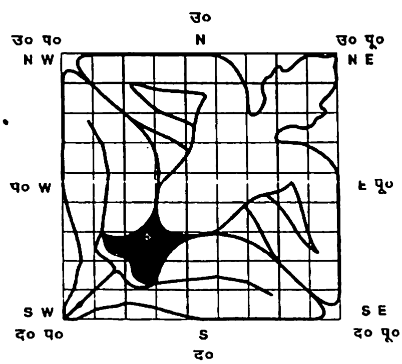

भवन निर्माण करते समय दिशा निर्धारण ठीक से करें। ठीक दिशा निर्धारण न होने के कारण निर्माण करते समय कक्ष एवं द्वार आदि की दिशा में दोष होने के कारण पूर्ण भवन की स्थिति वास्तु के विपरीत हो जायेगी। अतः दिशा का निर्धारण ठीक ढंग से करना चाहिए।

— शेष बचती है अर्थात् अधिक निकलती है तो समझ लें कि भूमि श्रेष्ठ है।
— शेष नहीं बचती है अर्थात् पूरी पड़ती है तो समझ लें कि भूमि मध्यम है।
— न शेष बचती है और न अधिक निकलती है, अपितु कम पड़ जाती है अर्थात् निकाली गई मिट्टी से गड्ढा पूरा नहीं भर पाता है तो समझ लें कि भूमि अधम (निकृष्ट) है।

भूमि परीक्षा के प्रथम प्रकार से यह ज्ञात हो जाएगा कि भूमि झिरझिरी है या ठोस।

श्रेष्ठ भूमि पर भवन-निर्माण कराना चाहिए क्योंकि यह भूमि गृह-निर्माण हेतु उपयुक्त है।

मध्यम भूमि पर भी भवन निर्माण करा सकते हैं क्योंकि यह भी गृह-निर्माण हेतु उपयुक्त ही है।

अधम भूमि पर भवन-निर्माण नहीं कराना चाहिए क्योंकि यह भूमि अशान्त होने के कारण सुख एवं सौभाग्य का क्षय करके दुःखों को आमंन्त्रित करती है।

भूमि परीक्षण का दूसरा प्रकार

जिस भूमि का परीक्षण करना है, उसमें भूमि को 1.5′ (डेढ़ फुट) गड्ढा खोदकर उसकी मिट्टी निकाल दीजिए और फिर उस गड्ढे में मुख तक पानी भर दीजिए। बाद में उत्तर दिशा की ओर सौ कदम चलिए (घड़ी हो तो 120 सैकण्ड गिनने के बाद) और लौटकर देखिए—
— यदि गड्ढे में पानी जितना भरा था उतना ही रहे तो भूमि श्रेष्ठ है।
— यदि गड्ढे में आधा जल शेष है तो भूमि मध्यम है।

दिशाएँ चार हैं—उत्तर, दक्षिण, पूर्व पश्चिम और विदिशाएँ भी चार हैं—उत्तर-पूर्व (ईशान), दक्षिण-पूर्व (आग्नेय), दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) और उत्तर पश्चिम (वायव्य)। उपर्युक्त चार दिशाएँ एवं चार विदिशाओं के साथ-साथ आकाश व पाताल को मिलाकर दस दिशाएँ मानी जाती हैं।

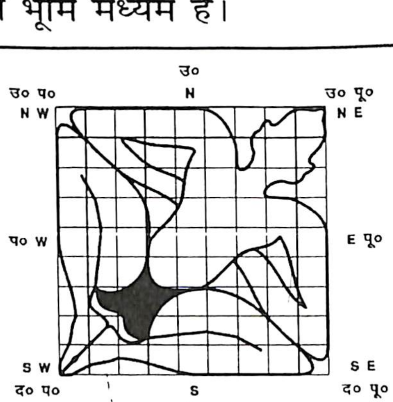

— यदि जल पूर्णतः सूख गया है और नाममात्र को भी नहीं बचा है तो वह भूमि निकृष्ट अर्थात् अशुभ है।

श्रेष्ठ या मध्यम भूमि पर भवन-निर्माण कर सकते हैं। प्रयास करना चाहिए कि श्रेष्ठ भूमि पर ही भवन निर्माण हो। निकृष्ट भूमि पर कदापि भवन नहीं बनाना चाहिए।

भूमि परीक्षण के दूसरे प्रकार से यह ज्ञात हो जाता है कि वह ढीली या उसमें ढीलापन (Looseness) तो नहीं है। भवन-निर्माण के लिए ढीली भूमि अनुपयुक्त होती है।

श्रेष्ठ भूमि ढीली नहीं होती है, मध्यम भूमि थोड़ी ढीली होती है और निकृष्ट भूमि तो ढीली ही होती है।

भूखण्डों का आकार और फल विचार

भूखण्ड (Plot) क्रय करते समय उसका अच्छी प्रकार परीक्षण कर लेना चाहिए। भूमि का प्रकार ढलान, शुभाशुभ, पृष्ठादि एवं भूमि की परीक्षा भी करनी चाहिए। भूमि के कोणों का भी महत्व होता है। भूमि का चयन करते समय उसके आकार को भी नहीं भूलना चाहिए। अब भूमि के आकार की चर्चा करेंगे।

भवन-निर्माण हेतु भूखण्ड विभिन्न आकारों में मिलते हैं, जैसे वर्गाकार, आयताकार, गोल, त्रिकोण आदि। 'वास्तुशास्त्र' में विभिन्न आकार के भूखण्डों के गुण-दोष व फल बताए गए हैं। वर्तमान में भूखण्डों का चयन कर पाना एक समस्या है, पर अवसर मिलने पर आकार के अनुरूप विचार करके भूखण्ड का चयन करना चाहिए। यहाँ शुभ आकार वाले भूखण्डों का आकार एवं फल बता रहे हैं।

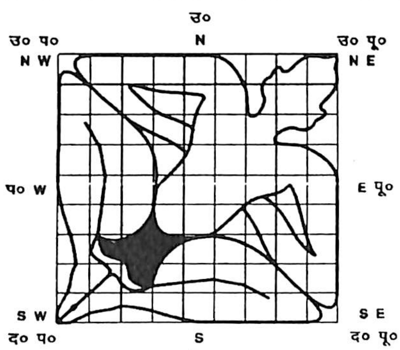

दिशा ज्ञान के बाद भूखण्ड को चार या आठ खण्डों में विभाजित करना चाहिए। सर्वप्रथम भूखण्ड का केन्द्र ज्ञात करके वहाँ कुतुबनुमा रखकर उत्तर दिशा ज्ञात करके उत्तर-दक्षिण रेखा खींच लें और सही दिशाओं का ज्ञान कर लें। बाद में 90 अंश पूर्व और 90 अंश, पश्चिम के दो कोण बनाकर रेखाएँ खींचकर भूखण्ड के चार भाग कर लेने चाहिएं।

वर्गाकार भूखण्ड

जिस भूखण्ड की लम्बाई-चौड़ाई समान हो और चारों कोण 90 अंश के हों या चारों भुजाएँ समान हो तो उसे वर्गाकार-भूखण्ड (Square plot) कहते हैं।

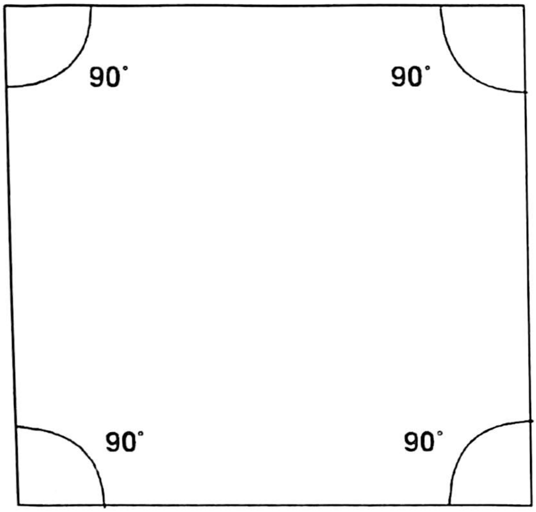

चित्र—वर्गाकार भूखण्ड

वर्गाकार भूखण्ड सर्वश्रेष्ठ होता है। इस पर भवन-निर्माण करने से धन लाभ और स्वास्थ्य ठीक रहता है। भवन-निर्माण हेतु यह भूखण्ड चयन करने योग्य है।

आयताकार भूखण्ड

जिस भूखण्ड की दो भुजाएँ बड़ी व दो छोटी हों व चारों कोण 90 अंश के हों तो उसे आयताकार भूखण्ड (Rectangular) कहते हैं।

भूखण्ड को आठ खण्डों में विभाजित करने के लिए केन्द्र व उत्तर दक्षिण दिशा का निर्धारण करके पूर्व में 22.5 और पश्चिम में 22.5 अंश के दो कोण बनाकर एवं केन्द्र से पूर्व-पश्चिम रेखा पर भी उत्तर में 22.5 अंश और दक्षिण में 22.5 के दो कोण बनाकर रेखाएँ खींच लेंगे तो 45-45 अंश के आठ खण्ड बन जाएँगे।

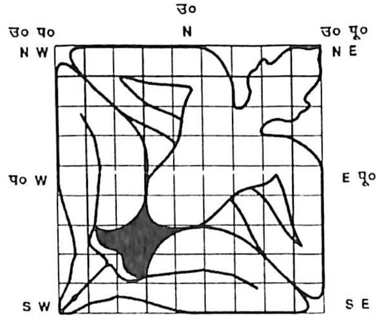

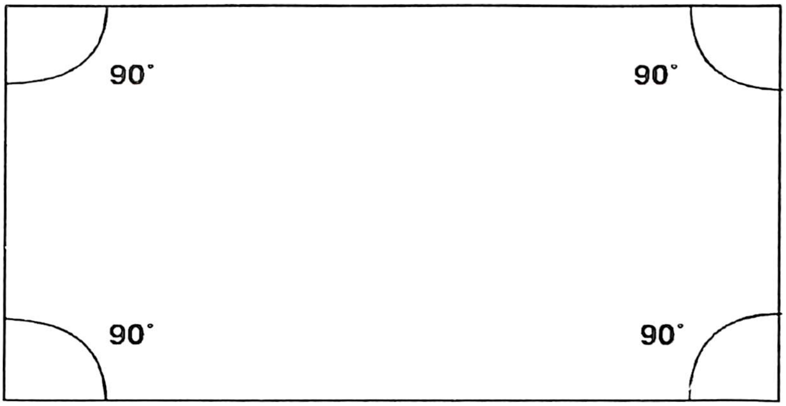

चित्र—आयताकार भूखण्ड

आयताकार भूखण्ड श्रेष्ठ होता है। इस पर भवन-निर्माण करने पर धन, पुष्टि व सिद्धि वर्धक होता है। कहने का तात्पर्य है कि धन लाभ, स्वास्थ्य ठीक एवं सभी कार्य सिद्ध होते हैं। भवन-निर्माण हेतु यह भूखण्ड चयन करने योग्य है।

टिप्पणी —आयताकार भूखण्ड की लम्बाई-चौड़ाई का 1 : 2 होना चाहिए अर्थात् मान लो चौड़ाई 10 मीटर है तो लम्बाई लगभग 20 मीटर हो या लम्बाई 10 मीटर है तो चौड़ाई लगभग 5 मीटर हो।

वृत्ताकार भूखण्ड

जो भूखण्ड गोले की तरह हो उसे वृत्ताकार भूखण्ड (Circular) कहते हैं।

वृत्ताकार भूखण्ड उत्तम होता है। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने से सभी प्रकार के शुभ फल मिलते हैं। यह भूखण्ड धन व ज्ञानवर्धक होता है। भवन-निर्माण हेतु यह भूखण्ड चयन करने योग्य है।

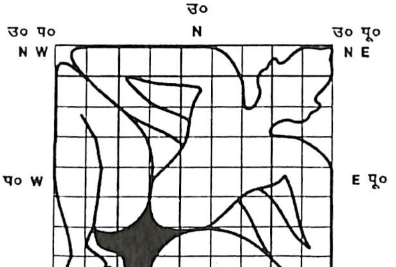

भूखण्ड को आठ खण्डों में विभाजित करने के लिए केन्द्र व दिशाओं का ज्ञान करने के बाद प्रत्येक दिशा की भुजा के तीन बराबर भाग करके रेखा खींच लेने पर आठ खण्ड बन जाऐंगे और केन्द्र का भाग मध्य भाग कहलायेगा जो वास्तु के अनुसार आंगन के लिए छोड़ना चाहिए।

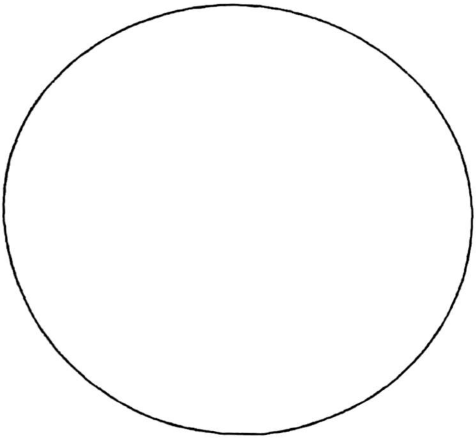

चित्र—वृत्ताकार भूखण्ड

अशुभ आकार के भूखण्डों का स्वरूप एवं फल

भूखण्ड में कोणों का बहुत महत्व होता है। जो भूखण्ड अनेक कोणों वाले होते हैं वे शुभ नहीं होते हैं। अब यहाँ अशुभ आकार के भूखण्डों का स्वरूप एवं फल बता रहे हैं। इन आकृतियों वाले भूखण्डों को त्याज्य देना चाहिए।

त्रिकोणाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड त्रिकोण की आकृति की तरह हो तो उसे त्रिकोणाकार भूखण्ड (Triangular Plot) कहते हैं।

यह भूखण्ड अशुभ होता है। इस पर भवन निर्माण करने से गृहस्वामी वृथा भाग दौड़ करता रहता है। वह तीन-तेरह करने के कारण अपना ही अहित कर बैठता है। उसे राज्य भय रहता है। यह भूखण्ड त्याजने योग्य है।

पूर्व और आग्नेय दिशा का तत्त्व अग्नि, पश्चिम व वायव्य दिशा का तत्त्व वायु, उत्तर व ईशान दिशा का तत्त्व जल एवं दक्षिण व नैर्ऋत्य दिशा का तत्त्व पृथ्वी होता है।

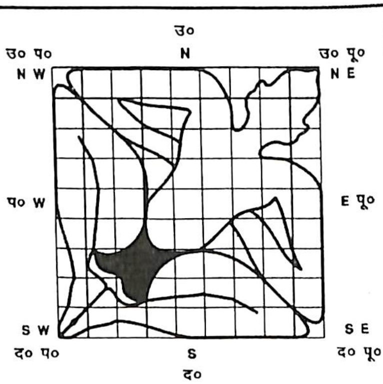

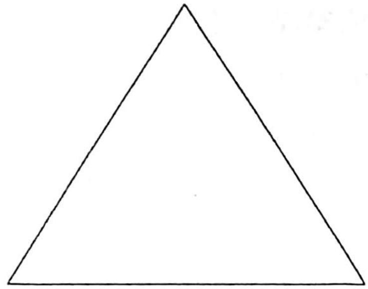

चित्र—त्रिकोणाकार भूखण्ड

चक्राकार भूखण्ड

जो भूखण्ड अष्टकोणात्मक या पहिए की तरह हो तो उसे चक्रादार भूखण्ड (Wheel shaped) कहते हैं।

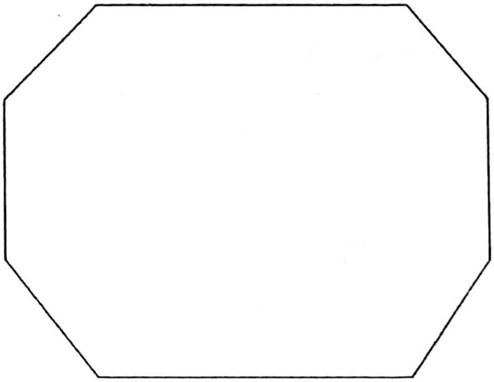

चित्र—चक्राकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ होता है और त्याजने योग्य है। इस पर भवन निर्माण करने से निर्धनता आ जाती है और परेशानी बढ़ती है।

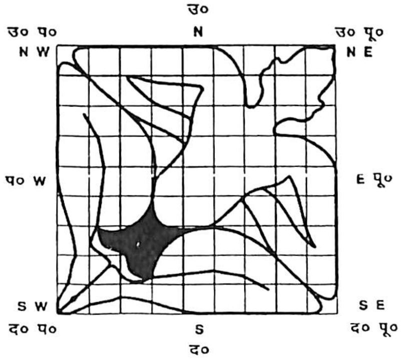

पूर्व दिशा का इन्द्र, पश्चिम दिशा का वरुण, उत्तर दिशा का कुबेर, दक्षिण दिशा का यम, ईशान कोण का रुद्र, वायव्य कोण का वायु, आग्नेय कोण का अग्नि एवं नैर्ऋत्य कोण का अनंता या नैरुत देवता होता है।

शकटाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड बैलगाड़ी के आकार का हो तो उसे शकटाकार (Bull Cart Shaped Plot) भूखण्ड कहते हैं।

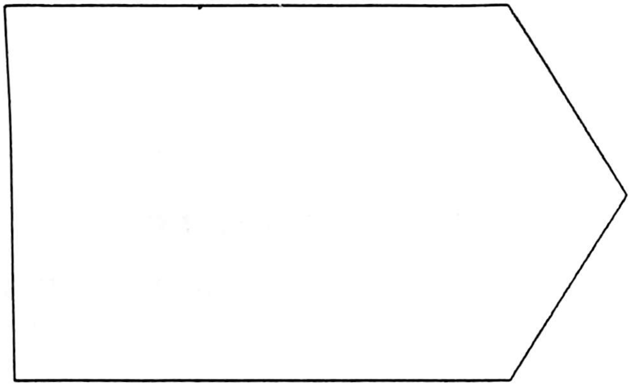

चित्र—शकटाकार भूखण्ड

शकटाकार भूखण्ड पर भवन निर्माण करने से वृथा भागदौड़, व्याधि, अग्नि भय एवं आर्थिक तंगी रहती है। यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है।

सूपाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड सूप के आकार का हो उसे सूपाकार (Trapeziun) भूखण्ड कहते हैं।

सूपाकार भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस पर भवन निर्माण करने से सुख-सम्पत्ति नष्ट होती है और आर्थिक तंगी रहती है।

पुरुषों के लिए पूर्व दिशा उत्तम व पश्चिम दिशा अधम है, जबकि स्त्रियों के लिए उत्तर दिशा उत्तम व दक्षिण दिशा अधम है। ईशान दिशा शुभ एवं नैर्ऋत्य दिशा अशुभ मानी जाती है।

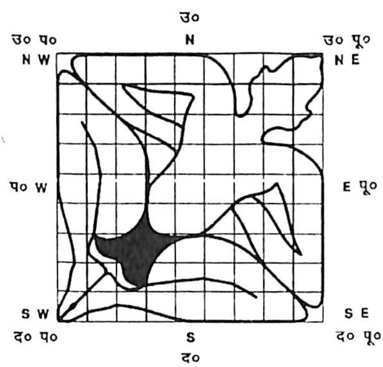

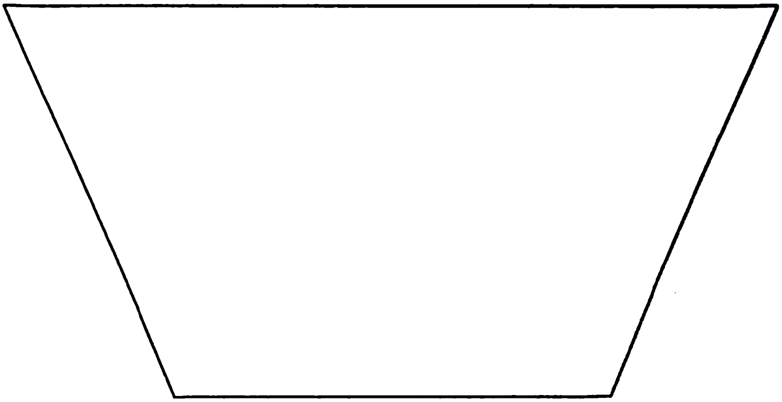

चित्र—सूपाकार भूखण्ड

धनुषाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड धनुष के आकार का होता है उसे धनुषाकार भूखण्ड (Bow Plot) कहते हैं।

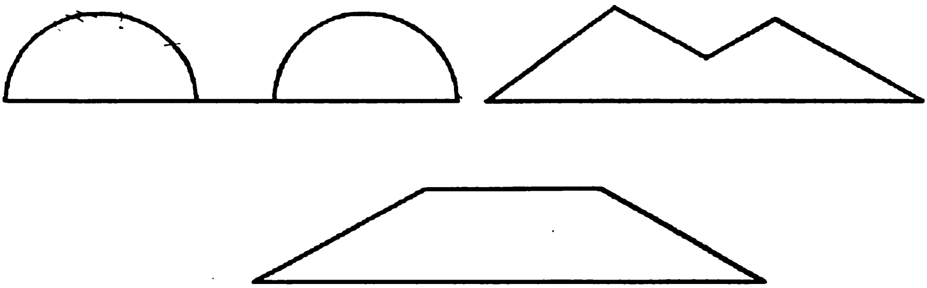

चित्र—धनुषाकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस पर भवन निर्माण करने से शत्रु भय वृद्धिकारक एवं कष्टदायी होता है।

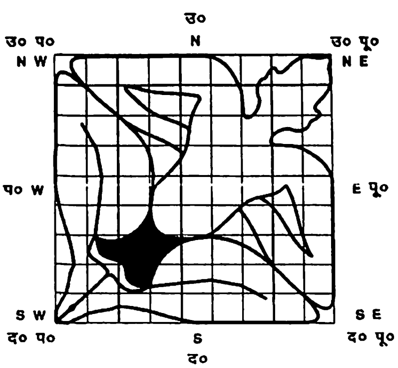

भूखण्ड पर भवन बनाते समय पूर्व दिशा में सर्वाधिक खुला, उत्तर दिशा में उससे कम खुला, दक्षिण-पश्चिम दिशा में खुला स्थान न के बराबर छोड़ना चाहिए।

तबलाकार व मृदंगाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड तबले के आकार का होता है उसे तबलाकार भूखण्ड (Tabla Plot) कहते हैं।

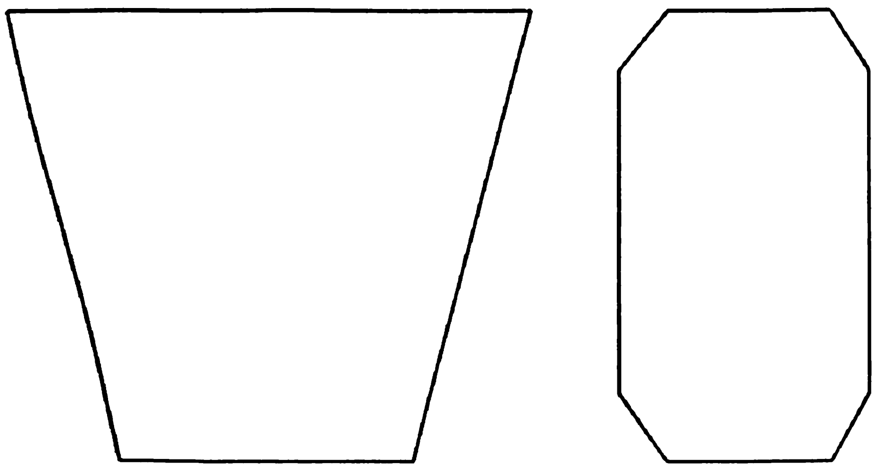

चित्र—तबलाकार व मृदंगाकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस पर भवन निर्माण करने से समृद्धि कभी नहीं आती है। तबले की तरह खाली ही रहना पड़ता है।

जो भूखण्ड मृदंग की आकृति सदृश होता है उसे मृदंगाकार भूखण्ड (Mridauga Shaped Plot) कहते हैं। यह भूखण्ड अशुभ होता है और स्त्रियों के लिए मृत्युकारक होता है।

व्यंजनाकार भूखण्ड

यह भूखण्ड हाथ की पंखीनुमा होता है। पंखीनुमा भूखण्ड (Hand Fan Shaped Plot) अशुभ होता है।

भूखण्ड पर उत्तर-दक्षिण चुम्बकीय ध्रुव की स्थिति ज्ञात कर लेनी चाहिए। इसकी स्थिति भूखण्ड के सामने की दीवार या मार्ग के समान्तर या लम्बवत् होनी चाहिए। चुम्बकीय ध्रुव की स्थिति असमान्तर कोण में नहीं होनी चाहिए।

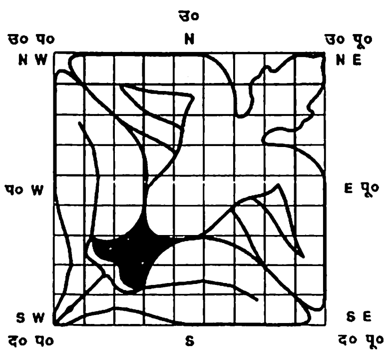

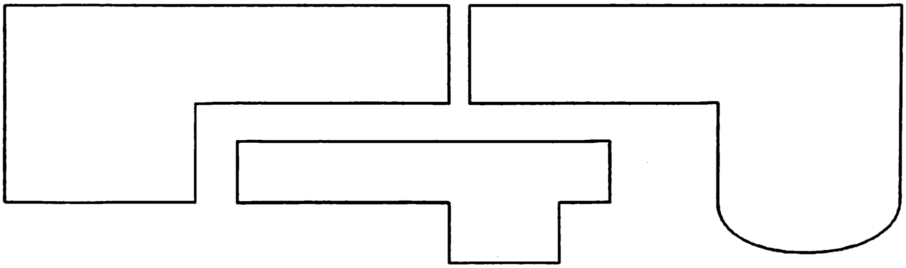

चित्र—पंखीनुमा या व्यंजनाकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस पर भवन निर्माण करने से आर्थिक तंगी के कारण निर्धनता रहती है।

चिमटाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड चिमटे के आकार का होता है उसे चिमटाकार भूखण्ड कहते हैं।

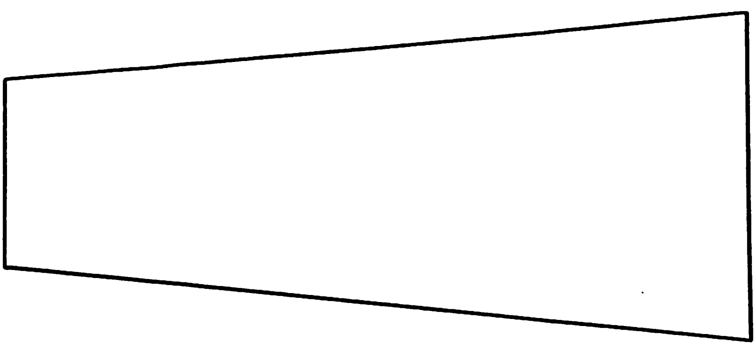

चित्र—चिमटाकार भूखण्ड

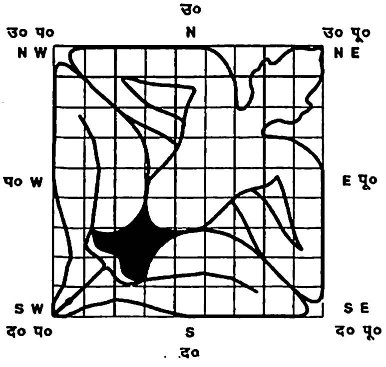

भूखण्ड की चारों भुजाएँ समकोण पर हों तो उत्तम, यदि समकोण नहीं है तो उत्तर-पश्चिम की भुजाएँ अधिक कोण पर स्थित होनी चाहिए। दक्षिण-पूर्व की भुजाएँ समकोण पर होनी चाहिएं और उत्तर-पूर्व की भुजाएं न्यूनकोण (90 अंश से कम) पर होनी चाहिएं।

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने से घर में कलह रहती है।

अण्डाकार भूखण्ड

जो भूखण्ड अण्डे के आकार का हो उसे अण्डाकार भूखण्ड (Egg Shaped Plot) कहते हैं।

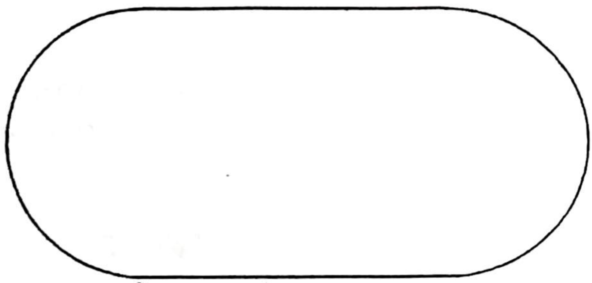

चित्र—अण्डाकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने से सदैव हानि होती है।

विषमबाहु भूखण्ड

जिसकी सभी भुजाएँ अलग-अलग नाप की हो तो उसे विषमबाहु भूखण्ड कहते हैं।

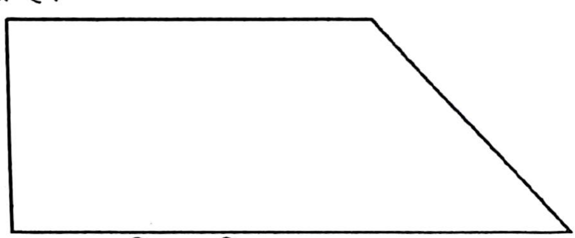

चित्र—विषमबाहु भूखण्ड

भूखण्ड के कोणों में विस्तार या ह्रास होने पर शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। भूखण्ड में ईशान कोण की वृद्धि हो अर्थात् उत्तर-पूर्व या पूर्व-उत्तर या उत्तर व पूर्व दोनों ओर ईशान कोण में वृद्धि या विस्तार होने पर भूखण्ड शुभ व श्रेष्ठ होता है।

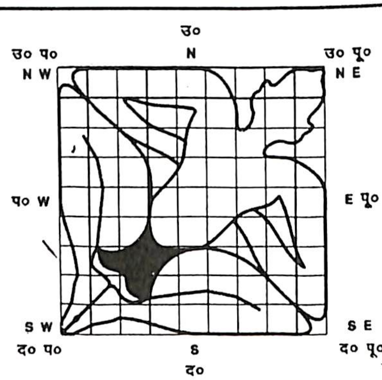

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य है। इस पर भवन-निर्माण करने से अशान्ति, दुःख एवं आर्थित तंगी रहती है।

अर्द्ध वृत्ताकार भूखण्ड

जो भूखण्ड आधे वृत्त के समान होता है उसे अर्द्धवृत्ताकार भूखण्ड (Semi Circle Plot) कहते हैं।

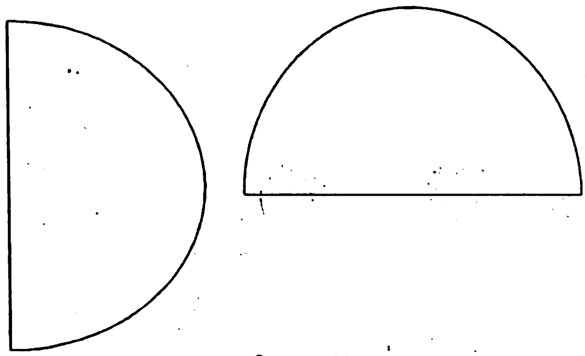

चित्र—अर्द्धवृत्ताकार भूखण्ड

यह भूखण्ड अशुभ एवं त्याजने योग्य होता है। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने पर भवन-निर्माता कभी सन्तुष्ट नहीं होता है, अपनी आधी-अधूरी जिन्दगी से चिन्तित रहता है।

अन्य शुभ आकार के भूखण्ड

अब यहाँ पर कुछ अन्य आकृतियों के भूखण्डों की चर्चा करेंगे जो विशेष दृष्टि कोणों से शुभ होते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

1. चतुष्कोणाकार
2. षटकोणाकार
3. अष्टकोणाकार

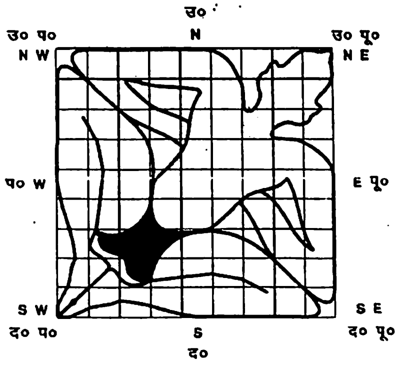

भूखण्ड में आग्नेय कोण की वृद्धि हो अर्थात् पूर्व-दक्षिण, दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर या पूर्व व दक्षिण दोनों ओर आग्नेय कोण में वृद्धि या विस्तार हो तो भूखण्ड अशुभ होता है, इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

4. गोमुखाकार
5. सिंहमुखाकार
6. भद्रासन भूखण्ड
7. काकमुखी भूखण्ड

1. चतुष्कोणाकार भूखण्ड

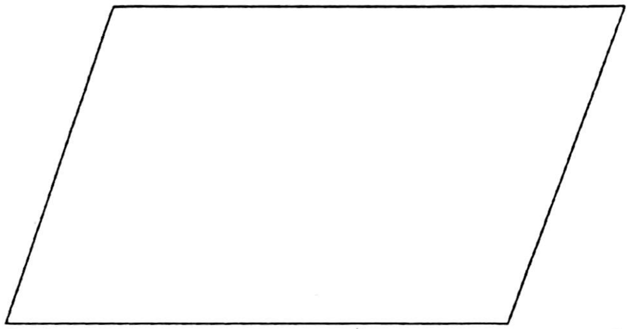

चार कोणों वाला भूखण्ड चतुष्कोणाकार भूखण्ड होता है। इस भूखण्ड पर भवन-निर्माण करने से सुख की प्राप्ति होती है।

2. षटकोणाकार भूखण्ड

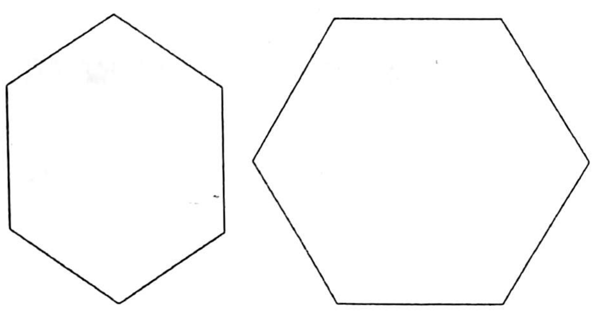

भूखण्ड में नैर्ऋत्य कोण की वृद्धि हो अर्थात् दक्षिण दिशा या पश्चिम दिशा की ओर या पश्चिम व दक्षिण दोनों दिशा में नैर्ऋत्य कोण की ओर वृद्धि या विस्तार हो तो भूखण्ड अशुभ होता है, इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

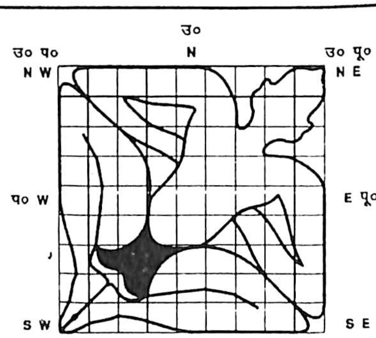

छह कोणों पर छह भुजाओं से युक्त भूखण्ड षटकोणाकार भूखण्ड होता है। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करके रहने से उन्नति व सफलता होती है।

3 अष्टकोणाकार भूखण्ड

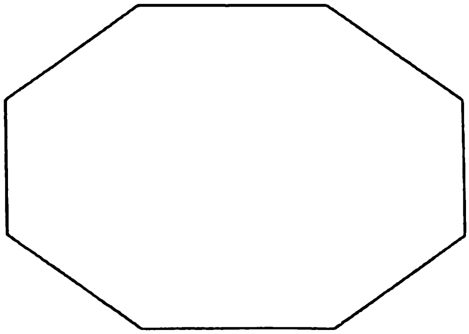

जो भूखण्ड आठ कोणों व आठ भुजाओं से युक्त होता है उसे अष्टकोणाकार भूखण्ड कहते हैं। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करके रहने से सुख व समृद्धि मिलती है।

4. गोमुखाकार

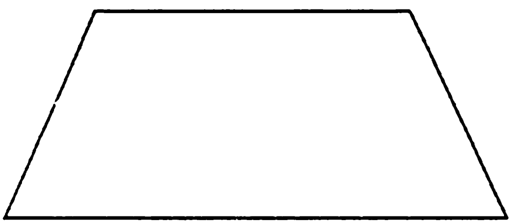

जो भूखण्ड सामने से कम व पीछे से अधिक हो तो उसे गोमुखाकार भूखण्ड कहते हैं। ऐसी भूमि भवन बनाकर रहने के लिए शुभ व व्यापारिक दृष्टिकोण से निर्माण करने के लिए अशुभ होती है।

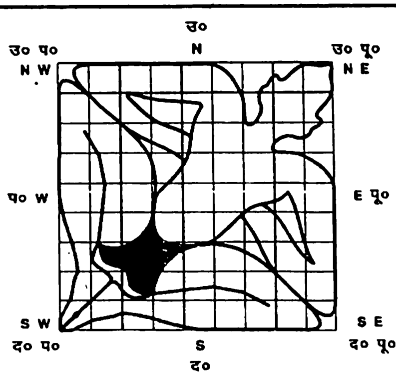

भूखण्ड में वायव्य कोण की वृद्धि हो अर्थात् पश्चिम दिशा या उत्तर दिशा या उत्तर व पश्चिम दोनों दिशा की ओर वायव्य कोण में वृद्धि या विस्तार हो तो भूखण्ड अशुभ होता है, इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

5. सिंहमुखाकार

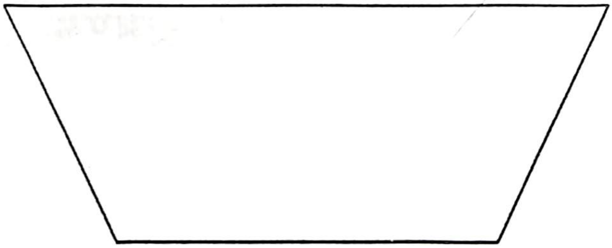

जो भवन सामने से अधिक व पीछे से कम हो तो उसे सिंहमुखाकार भूखण्ड कहते हैं। ऐसा भूखण्ड भवन बनाकर रहने के लिए अशुभ और व्यापारिक प्रतिष्ठान के लिए भवन बनाने हेतु शुभ होता है।

6. भद्रासन भूखण्ड

जिस भूखण्ड की लम्बाई व चौड़ाई समान हो तथा मध्य भाग समतल हो तो उसे भद्रासन भूखण्ड कहते हैं ऐसी भूमि पर भवन-निर्माण करके वास करने से सभी प्रकार का कल्याण होता है।

यदि भूखण्ड वायव्य कोण में उत्तर या पश्चिम दिशा में घटा हुआ हो तो ये दोनों स्थितियाँ शुभ है। इन भूखण्डों पर भवन निर्माण करना चाहिए।

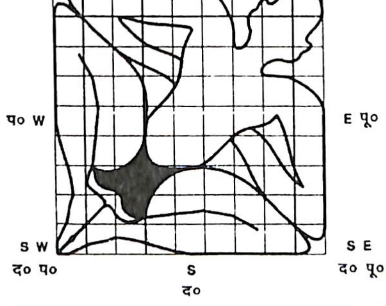

7. काकमुखी भूखण्ड

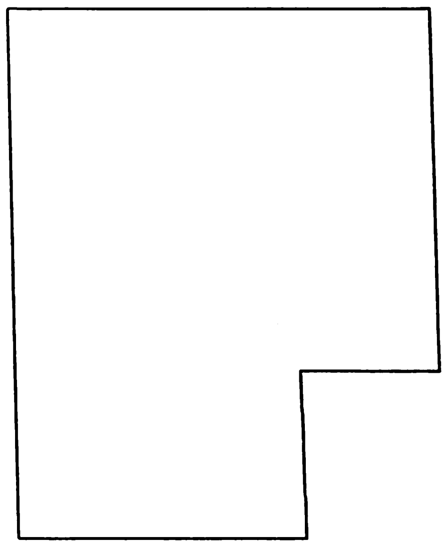

काकमुखी भूखण्ड आगे से संकरा और पीछे से चौड़ा होता है। प्रायः यह भूखण्ड सूपाकार का उल्टा होता है। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करने वाला सुखी व सम्पन्न होता है।

इस अध्याय में भूमि व भूखण्ड सम्बन्धी विचार करते हुए भूमि क्रय क्यों करें, भूमि के प्रकार, भूमि का ढलान, पृष्ठानुसार भूमि के प्रकार व फल व भूमि की परीक्षा के साथ-साथ भूखण्ड के विभिन्न आकारों और उनके फल की चर्चा की है। अगले अध्याय में भूखण्ड का दिशा निर्धारण करना बताऐंगे।

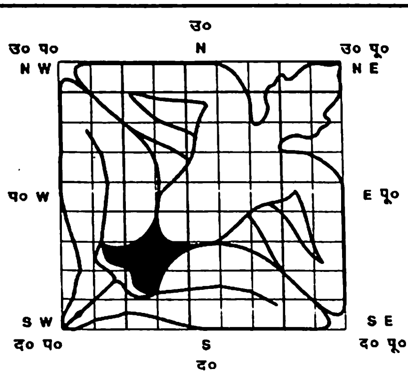

यदि भूखण्ड वायव्य कोण में उत्तर और पश्चिम दोनों दिशा में घटा हुआ हो तो यह स्थिति भी शुभ है। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करना चाहिए।

5 भूखण्ड का दिशा निर्धारण एवं खण्ड विभाजन

भवन-निर्माण से पूर्व दिक् शोधन अर्थात् दिशा का निर्धारण अनिवार्य है, क्योंकि भवन-निर्माण की योजना बनाते समय भूखण्ड की दिशाओं का ज्ञान करना पड़ता है।

दिक् शोधन के अभाव में दिशा का उपयुक्त निर्धारण न होने के कारण निर्माण कार्य के समय कक्ष एवं द्वार आदि की दिशा में त्रुटि होने पर पूरे भवन की स्थिति परिवर्तित हो जायेगी और सारी स्थिति वस्तु के विपरीत हो जाएगी। इस स्थिति से बचने के लिए ही दिक् शोधन करना पड़ता है। जब तक हमें सही दिशा का ज्ञान नहीं होगा तब तक हम वास्तुशास्त्र के अनुकूल भवन-निर्माण नहीं कर सकेंगे।

प्राचीनकाल में शंकु रोपण द्वारा छाया के आधार पर, ध्रुव तारे के अनुसार एवं नक्षत्र वेध के आधार पर दिक् शोधन अर्थात् दिशा निर्धारण किया जाता था। आजकल चुम्बकीय कुतुबनमा (Compass) द्वारा उत्तर दिशा का ज्ञान करके शेष दिशाएँ आसानी से ज्ञात कर लेते हैं।

दिशाएँ व विदिशाएँ

चार दिशाएँ, चार विदिशाएँ और आकाश व पाताल को मिलाकर दस दिशाएँ होती हैं।

दिशाएँ चार हैं—

1. उत्तर, 2. दक्षिण, 3. पूर्व, 4. पश्चिम

विदिशाएँ चार हैं—

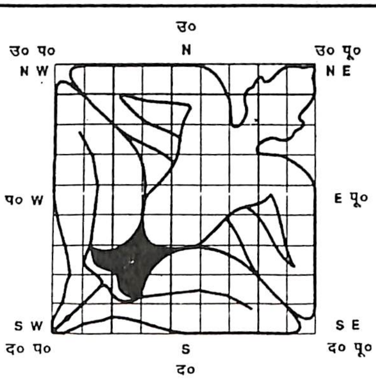

यदि भूखण्ड आग्नेय कोण में पूर्व या दक्षिण या पूर्व-दक्षिण दोनों दिशा में घटा हुआ हो तो ये तीनों स्थितियाँ शुभ हैं। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करना चाहिए।

1. ईशान (उत्तर-पूर्व कोण)
2. आग्नेय (पूर्व-दक्षिण कोण)
3. नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम कोण)
4. वायव्य (उत्तर-पश्चिम कोण)

दिशा निर्धारण कैसे करें ?

भूखण्ड चाहे चौकोर हो या वर्गाकार उसके केन्द्र को आधार मानकर चुम्बकीय कुतुबनमा के द्वारा उत्तर दिशा ज्ञात करते हैं। बाद में नीचे लिखे अनुसार शेष दिशा समझते हैं।

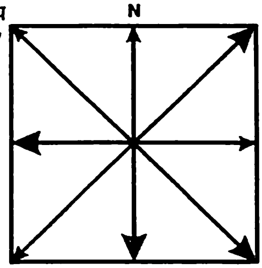

—उत्तर के दायीं ओर पूर्व दिशा होती है।
—उत्तर के विपरीत दक्षिण दिशा होती है।
—पूर्व के विपरीत पश्चिम दिशा होती है।
—पूर्व व दक्षिण के मध्य का कोण आग्नेय होता है।
—दक्षिण व पश्चिम के मध्य का कोण नैर्ऋत्य होता है।
—उत्तर व पश्चिम के मध्य का कोण वायव्य होता है।
—उत्तर पूर्व के मध्य का कोण ईशान होता है।

यदि भूखण्ड ईशान कोण में उत्तर या पूर्व या उत्तर-पूर्व दोनों दिशा में घटा हुआ हो तो ये तीनों स्थितियाँ अशुभ हैं। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

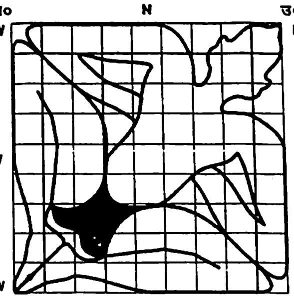

अतः स्पष्ट है दिशाएँ व विदिशाएँ आठ हैं जोकि निम्न हैं—

1. उत्तर (NORTH)
2. दक्षिण (SOUTH)
3. पूर्व (EAST)
4. पश्चिम (WEST)

विदिशाएँ

5. उत्तर-पूर्व (ईशान) (NORTN EAST)
6. दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) (SOUTH EAST)
7. दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) (SOUTH WEST)
8. उत्तर-पश्चिम (वायव्य) (NORTH WEST)

दिशा व कोण का ज्ञान होने के बाद भूखण्ड के चार तथा आठ खण्डों में विभाजन करते हैं।

भूखण्ड का चार खण्डों में विभाजन

भूखण्ड चाहे चौकोर हो या वर्गाकार, सर्वप्रथम उसका केन्द्र निकालकर वहाँ कुतुबनुमा रखकर उत्तर दिशा ज्ञात करें और एक रेखा भूखण्ड में उत्तर व दक्षिण को खींच दें, देखें चित्र—2-अ।

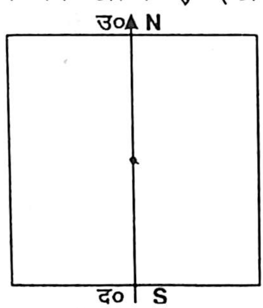

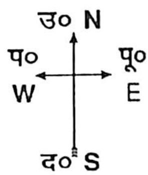

चित्र—'अ'

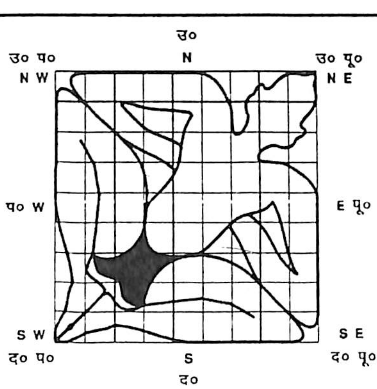

यदि भूखण्ड में सामने के दो कोण अधिक कोण, एक कोण समकोण एवं एक कोण न्यूनकोण हो तो ऐसे भूखण्ड कर्णात्मक स्थिति वाले टेढ़े होते हुए भी शुभ होते हैं। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करना शुभ होता है।

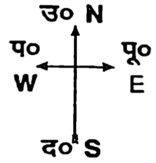

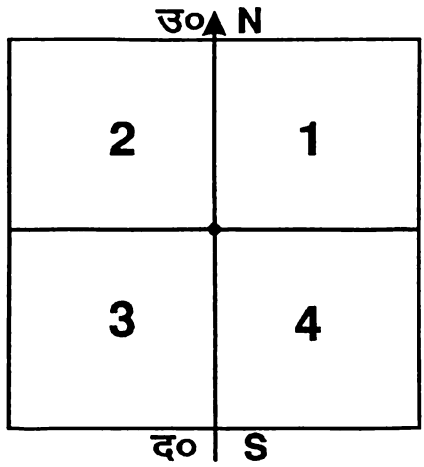

चित्र—'ब'

बाद में इस रेखा से 90 अंश पूर्व और 90 अंश पश्चिम के दो कोण बनाकर रेखाएँ खीचं लें, देखें चित्र—'ब'

उपर्युक्त ढंग से 90-90 अंश के चार खण्ड अर्थात् 360 अंश के चार खण्ड भूखण्ड में बने जो निम्न प्रकार हैं—

1. उत्तर पूर्व (ईशान) खण्ड (North East Sector)
2. दक्षिण पूर्व (आग्नेय) खण्ड (South East Sector)
3. दक्षिण पश्चिम (नैर्ऋत्य) खण्ड (South West Sector)
4. उत्तर पश्चिम (वायव्य) खण्ड (North West Sector)

भूखण्ड का आठ खण्डों में विभाजन

अब भूखण्ड को आठ खण्डों में विभाजित करने की रीति बताते हैं। सर्वप्रथम भूखण्ड का केन्द्र निकालकर वहाँ कुतुबनुमा रखकर उत्तर दिशा ज्ञात करें और फिर उत्तर दक्षिण की ओर एक रेखा खींच दें, देखें चित्र—2-अ।

कर्णात्मक भूखण्ड में उत्तर-पश्चिम व पूर्व-दक्षिण कोण अधिक कोण, उत्तर-पूर्व कोण समकोण एवं दक्षिण-पश्चिम कोण न्यूनकोण हो तो यह स्थिति शुभ व भवन निर्माण के लिए उपयुक्त है।

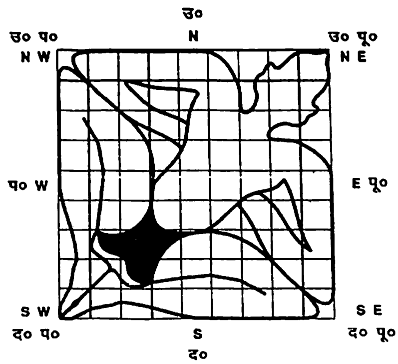

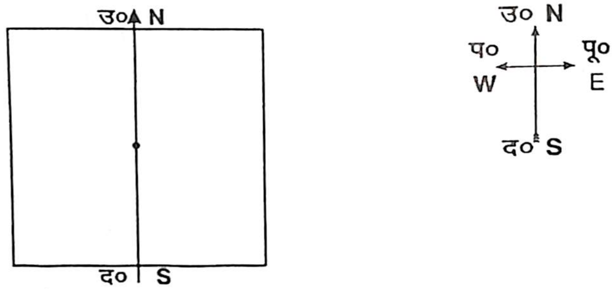

चित्र—2-अ

बाद में इस रेखा से 22.5 अंश पूर्व और 22.5 अंश पश्चिम की ओर दो कोण बनाकर रेखाएँ खींच लें, देखें चित्र—2-ब।

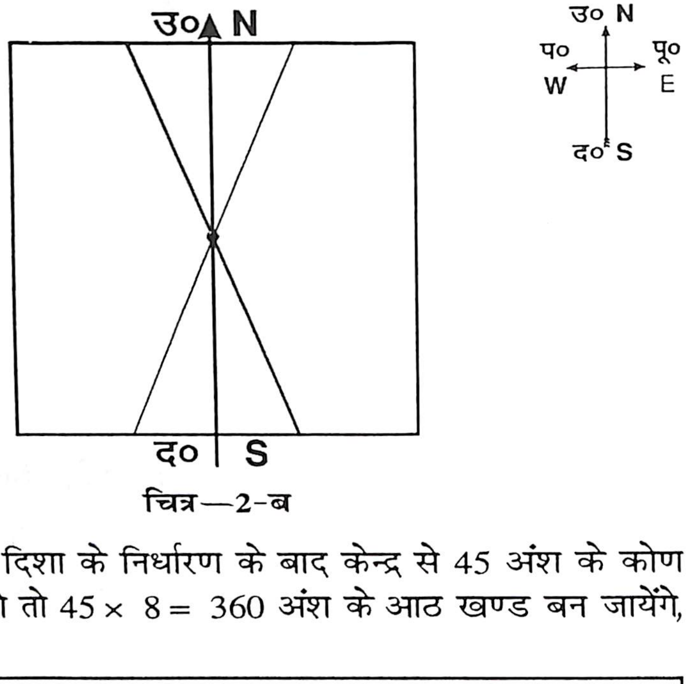

चित्र—2-ब

उत्तर-दक्षिण दिशा के निर्धारण के बाद केन्द्र से 45 अंश के कोण से रेखाएँ खींच देंगे तो 45 × 8 = 360 अंश के आठ खण्ड बन जायेंगे, देखें चित्र—2-स।

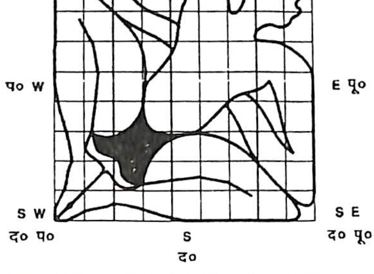

कर्णात्मक भूखण्ड में उत्तर-पश्चिम कोण समकोण, उत्तर-पूर्व व पश्चिम-दक्षिण कोण अधिक कोण और दक्षिण-पूर्व-कोण न्यूनकोण हो तो यह स्थिति शुभ व भवन निर्माण के लिए उपयुक्त है।

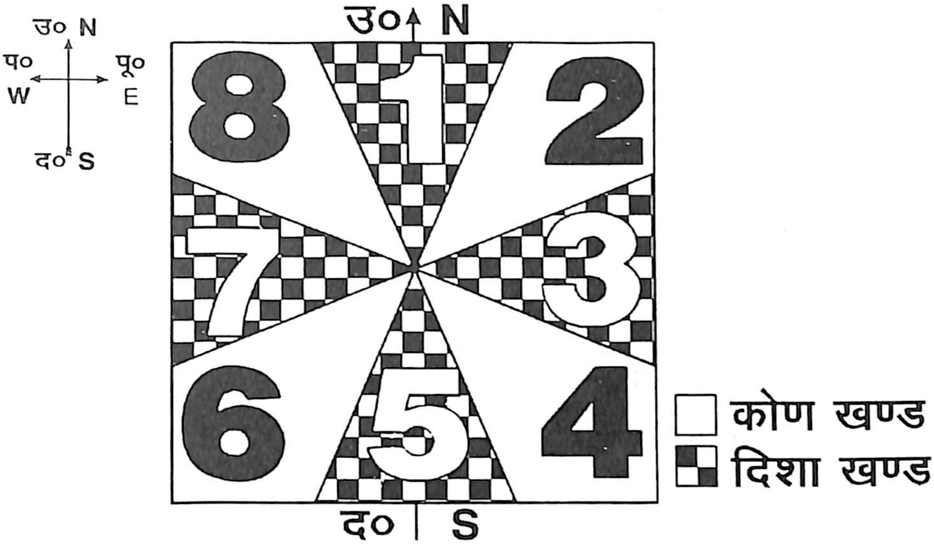

चित्र—2-स

उपर्युक्त ढंग से 45-45 अंश के आठ खण्ड भूखण्ड में बने जो निम्न प्रकार हैं—

1. उत्तर खण्ड (North Sector)
2. उत्तर पूर्व खण्ड (North East Sector)
3. पूर्व खण्ड (East Sector)
4. दक्षिण पूर्व खण्ड (South East Sector)
5. दक्षिण खण्ड (South Sector)
6. दक्षिण पश्चिम खण्ड (South West Sector)
7. पश्चिम खण्ड (West Sector)
8. उत्तर पश्चिम खण्ड (North West Sector)

अथवा भूखण्ड के आठ खण्डों को इस प्रकार भी विभाजित कर सकते हैं—

कर्णात्मक भूखण्ड में उत्तर-पश्चिम व दक्षिण-पूर्व कोण अधिक कोण, उत्तर-पूर्व कोण कोण न्यूनकोण एवं पश्चिम- दक्षिण कोण समकोण हो तो यह स्थिति शुभ या भवन निर्माण के लिए उपयुक्त है।

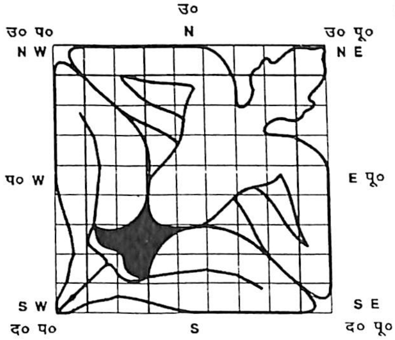

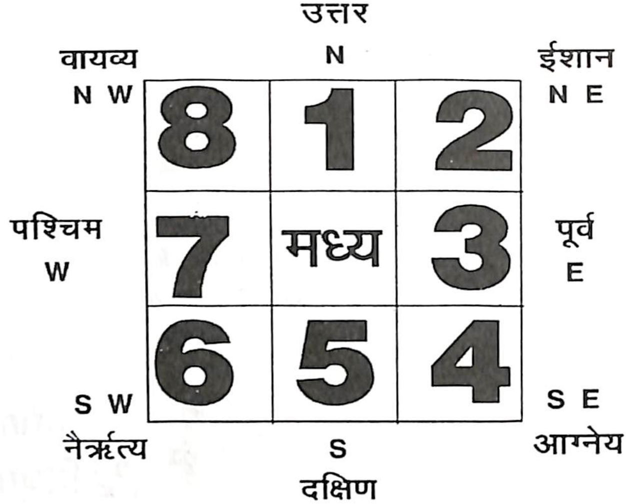

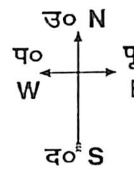

भूखण्ड में दिशा ज्ञान व खण्डों का विभाजन समझा दिया है। भूखण्ड पर दिशा ज्ञात करने का भी अभ्यास करना चाहिए। उपर्युक्त चित्रों में दिशा निर्धारण उत्तर-दक्षिण समानान्तर कोण पर आधारित हैं। परन्तु व्यवहार में अधिकांश भूखण्ड समानान्तर नहीं पाए जाते, इसलिए भूखण्ड पर दिशा साधन करके खण्डों का विभाजन करना पड़ता है।

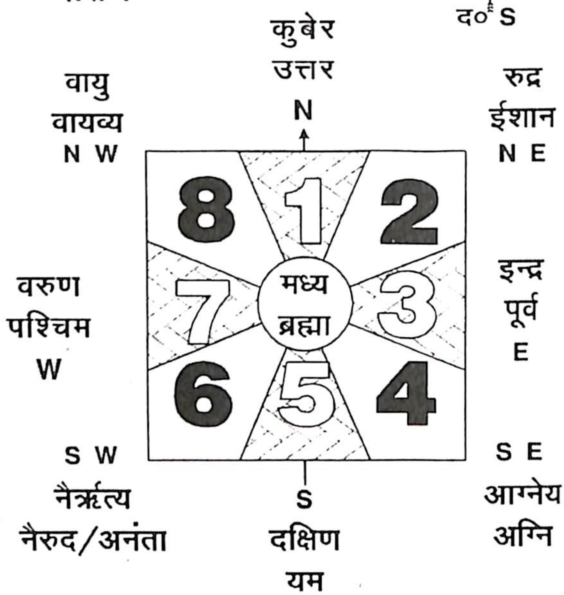

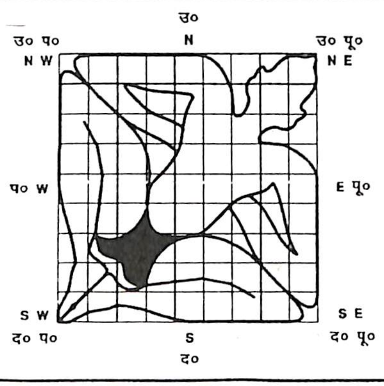

कर्णात्मक भूखण्ड में उत्तर-पश्चिम कोण न्यूनकोण, उत्तर-पूर्व व दक्षिण-पश्चिम कोण अधिक कोण और दक्षिण-पूर्व कोण समकोण हो तो यह स्थिति शुभ व भवन निर्माण के लिए उपयुक्त है।

उपर्युक्त सभी चित्र भूखण्ड विभाजन करते समय दिशा की परिकल्पना में सहायक हैं, इनका प्रयोग करना चाहिए।

दिशाओं का महत्त्व

भवन निर्माण में दिशाओं के महत्त्व को विस्मरण नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक दिशा सृष्टि निर्माण के विभिन्न तत्त्वों को सम्बोधित करती है तथा प्रत्येक दिशा विभिन्न देवताओं को समर्पित है।

(1) पूर्व दिशा **अग्नि तत्त्व** की परिचायक है और इसका देवता **इन्द्र** है।

(2) पश्चिम दिशा **वायु तत्त्व** की परिचायक है और इसका देवता **वरुण** है।

(3) उत्तर-दिशा **जल तत्त्व** का परिचायक है और इसका देवता **कुबेर** है।

(4) दक्षिण दिशा **पृथ्वी तत्त्व** की परिचायक है और इसका देवता **यम** है।

(5) उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण जल **तत्त्व का** परिचायक है और इसका देवता **रूद्र** है।

(6) उत्तर-पश्चिम (वायव्य) कोण **वायु तत्त्व** का परिचायक है और इसका देवता **वायु** है।

(7) दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) कोण **अग्नि तत्त्व** का परिचायक है और इसका देवता **अग्नि** है।

(8) दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) कोण **पृथ्वी तत्त्व** का परिचायक है और इसका देवता **अनंता या नैरुत** है।

दिशा फल विचार

- पूर्व दिशा पुरुषों के लिए उत्तम मानी गयी है।
- पश्चिम दिशा पुरुषों के लिए अधम मानी गयी है।
- उत्तर दिशा स्त्रियों के लिए उत्तम मानी गयी है।

भूखण्ड के पूर्व दिशा की ओर मार्ग हो तो श्रेष्ठ, पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तो अच्छा, उत्तर दिशा की ओर मार्ग हो तो उत्तम एवं दक्षिण की ओर मार्ग हो तो सामान्य होता है।

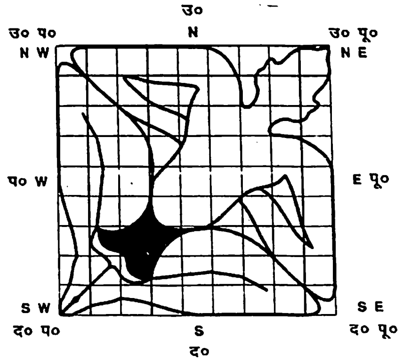

⌘ दक्षिण दिशा स्त्रियों के लिए अधम मानी गयी है।

⌘ ईशान दिशा शुभ और नैर्ऋत्य दिशा अशुभ मानी गयी है।

⌘ भूखण्ड के दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) कोण में भवन को स्थित करके पूर्व दिशा में सर्वाधिक खुला क्षेत्र छोड़ें, उससे कम खुला क्षेत्र उत्तर दिशा में छोड़ें एवं दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) दिशा में खुला स्थान न के बराबर छोड़ें। यह ज्ञान भूखण्डों में उपयोगितानुसार कमरों की स्थिति व खुला स्थान छोड़ने के लिए आवश्यक है।

उत्तर-दक्षिण ध्रुव की भूखण्ड में स्थिति

वास्तुशास्त्र में दिशा साधन करने की अनेक रीतियाँ हैं, परन्तु वर्तमान में चुम्बकीय दिक् सूचक यन्त्र से दिशा साधन शीघ्र हो जाता है। अतः आजकल प्राचीन रीतियों को व्यवहार में नहीं लाया जाता है। दिक् सूचक यन्त्र से प्रत्येक व्यक्ति सरलता से सही दिशा निर्धारित कर सकता है।

दिशा का निर्धारण करना बहुत आवश्यक है। भूखण्ड में उत्तर-दक्षिण ध्रुव का निर्धारण सर्वप्रथम किया जाता है। उत्तर-दक्षिण दिशा का ज्ञान हो जाने पर शेष दिशाएँ असानी से ज्ञात हो जाती है।

यह आवश्यक नहीं है कि भूखण्ड उत्तर-दक्षिण या पूर्व-पश्चिम दिशाओं में समानान्तर कोण पर आधारित हो। वस्तुतः व्यवहारिक रूप में भूखण्ड किसी भी दिशा या कोण पर स्थित हो सकता है। अतः कुतुबनुमा द्वारा भूखण्ड में दिशा की स्थिति ज्ञात कर लेनी चाहिए। बाद में भूखण्ड को आठ खण्डों में विभाजित कर लेना चाहिए।

यह जान लें कि उत्तर-दक्षिण चुम्बकीय ध्रुव की स्थिति भूखण्ड के सामने की दीवार या मार्ग के समानन्तर या लम्बवत् होनी चाहिए। जैसा चित्र में रेखांकित है वैसा ही होना चाहिए। (देखे चित्र—1 व 2) ऐसे भूखण्डों में नींद अच्छी आती है।

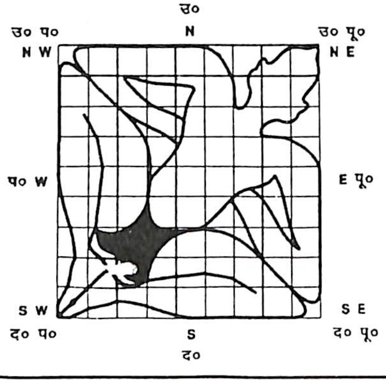

भूखण्ड के उत्तर-पूर्व दिशा की ओर मार्ग होने के कारण भूखण्ड श्रेष्ठ व सुख-समृद्धि व धनवृद्धि कारक है।

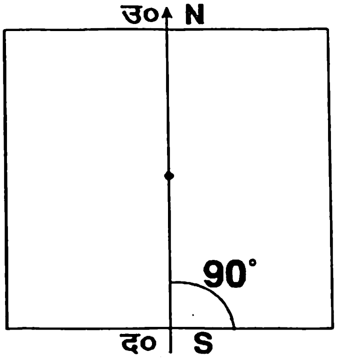

चित्र—1

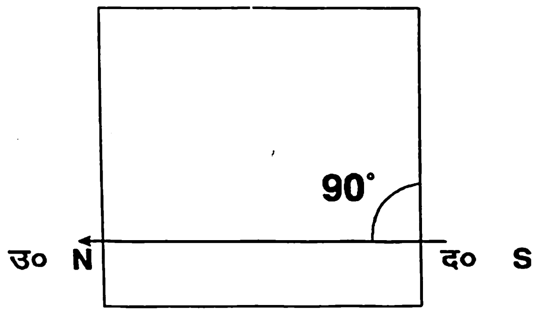

चित्र—2

भूखण्ड में उत्तर-दक्षिण दिशाओं (ध्रुवों) में विषम कोण अर्थात् असमान्तर कोण नहीं होना चाहिए, देखें—चित्र—3। यदि ऐसा हो तो भूखण्ड ग्रहण करने योग्य नहीं है। यदि भवन निर्माण करना ही है तो वास्तुविद् से वास्तु दोष का निराकरण करा लें अर्थात् वास्तु दोष शोधित करके ही निर्माण कार्य करें।

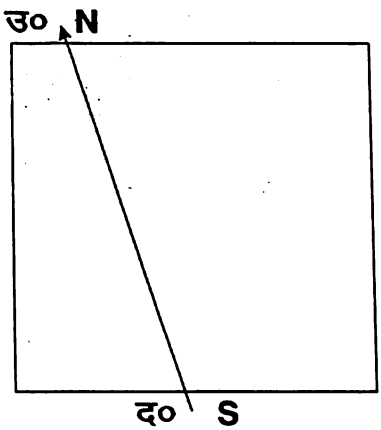

चित्र—3

भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग होने के कारण भूखण्ड सामान्य है, इस पर भवन निर्माण करना सम (न लाभ न हानि) है।

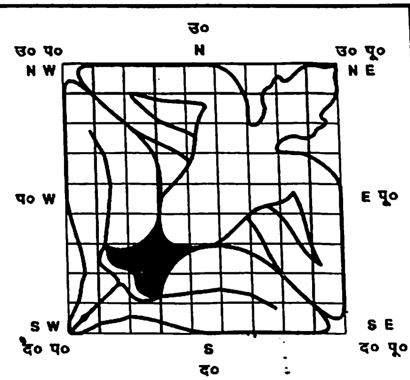

चित्र—3 में उत्तर-दक्षिण ध्रुव 90 अंश पर न हो पर एक ओर 90 अंश से कम और दूसरी ओर 90 अंश से अधिक के कोण पर स्थित है। नीचे लिखे सूत्र ध्यान में रखें—

1. यदि भूखण्ड की चारों भुजाएँ समकोण (90 अंश) पर स्थित हैं तो भूखण्ड उत्तम है।
2. यदि भूखण्ड की चारों भुजाएँ समकोण नहीं हैं तो उत्तर-पश्चिम की भुजाएँ 90 अंश या 90 अंश से अधिक कोण में स्थित होनी चाहिए।
3. दक्षिण-पूर्व में भूखण्ड की भुजाओं को 90 अंश का होना चाहिए।
4. उत्तर-पूर्व की भुजाएँ 90 अंश से अधिक नहीं होनी चाहिएं और यदि 90 अंश से कम हैं तो उपयुक्त हैं।

यदि भूखण्ड उपर्युक्त चारों स्थितियों में नहीं है और आकार से बड़ा है तो वास्तु के अनुरूप उसमें परिवर्तन करके प्रयोग में लाना चाहिए।

इस अध्याय में भूखण्ड में दिशा निर्धारण एवं उसको खण्ड में विभाजित करने की रीति बतलायी है। अब अगले अध्याय में भूखण्ड विस्तार अर्थात् भूखण्ड के कोणों की वृद्धि या ह्रास के अनुरुप शुभाशुभ फल बतायेंगे जिससे आपको भूखण्ड चयन करने में आसानी हो।

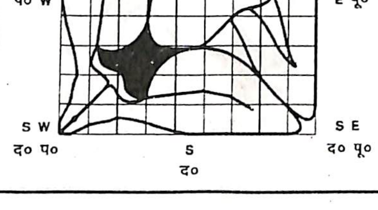

भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग होने के कारण भूखण्ड सामान्य है, इस पर भवन निर्माण करना सामान्य है।

6 भूखण्ड विस्तार एवं ह्रास विचार

भूखण्ड वर्गाकार या आयताकार ही श्रेष्ठ होता है। कभी-कभी भूखण्डों के कोणों में विस्तार या ह्रास (घटा हुआ) देखने को मिलता है जिसका अपना प्रभाव होता है। वस्तुतः भूखण्ड के कोणों के विस्तार या ह्रास का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस अध्याय में भूखण्डों के कोणों से होने वाले विस्तार या ह्रास के शुभाशुभ प्रभावों की चर्चा करेंगे। यह प्रभाव चित्रों द्वारा समझायेंगे जिसमें आप सरलता से समझ सकें। भूखण्ड चयन करते समय उनके कोणों की शुभाशुभ स्थिति का विश्लेषण करते हुए शुभ भूखण्ड को ही भवन निर्माण के लिए ग्रहण करना चाहिए।

भूखण्ड में ईशान कोण की वृद्धि

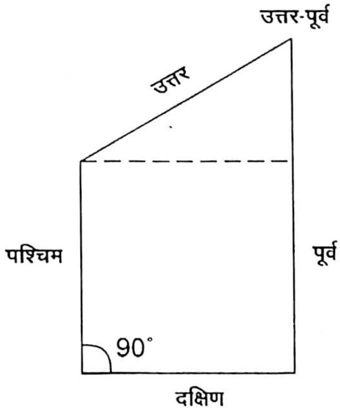

चित्र—1

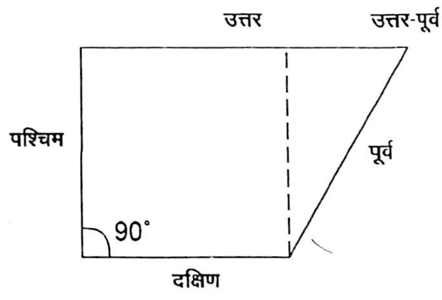

चित्र—2

भूखण्ड के दक्षिण व पूर्व दिशा की ओर मार्ग होने के कारण भूखण्ड अशुभ है। इस पर भवन निर्माण अनिष्ट व दरिद्रता कारक है।

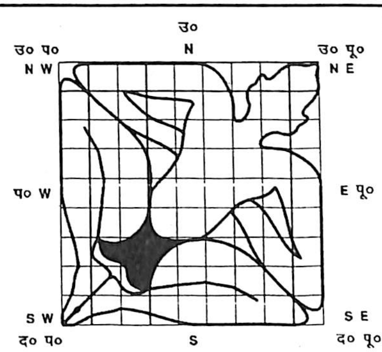

जिस भूखण्ड के ईशान कोण की वृद्धि हो अर्थात् उत्तर-पूर्व या पूर्व-उत्तर कोण में वृद्धि हो तो भूखण्ड श्रेष्ठ होता है। कहने का तात्पर्य कि उत्तर की ओर ईशान कोण की वृद्धि (देखें चित्र—1) और पूर्व की ओर ईशान कोण की वृद्धि (देखें चित्र—2) श्रेष्ठ है।

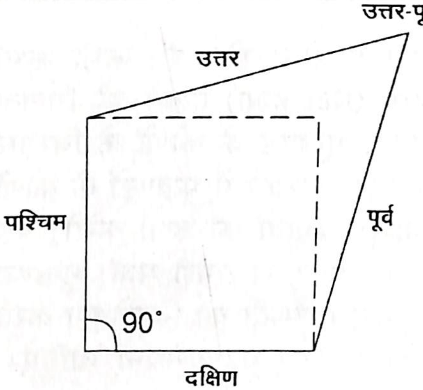

चित्र—3

यदि उत्तर या पूर्व दोनों ओर ईशान कोण में वृद्धि हो तो भी भूखण्ड श्रेष्ठ होता है (देखें चित्र—3)

भूखण्ड में आग्नेय कोण की वृद्धि

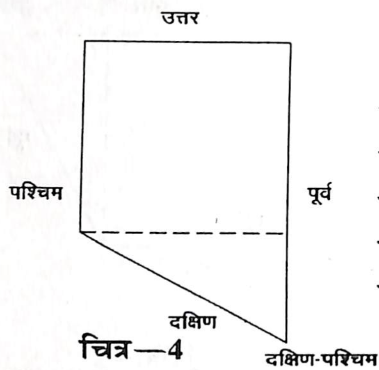

चित्र—4

जिस भूखण्ड के पूर्व से दक्षिण दिशा की ओर आग्नेय कोण में वृद्धि हो ऐसा भूखण्ड हानिकारक एवं राज्यभय देने वाला होता है। अतः ऐसे भवन पर निर्माण कार्य नहीं कराना चाहिए। (देखें चित्र—4)

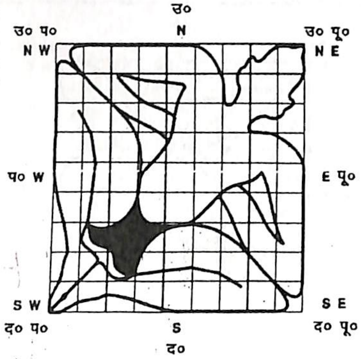

भूखण्ड के पूर्व व पश्चिम दोनों ओर मार्ग हो तो भूखण्ड सामान्य है। शुभाशुभ फल मिलने के कारण दोनों ओर द्वार तो बनाएँ पर निकासी एक द्वार से रखें।

यदि उपर्युक्त स्थिति में ही भूखण्ड में दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर आग्नेय कोण में वृद्धि हो तो यह भूखण्ड भी अशुभ होता है, इस पर भी निर्माण करना शुभ नहीं है। (देखें चित्र—5)

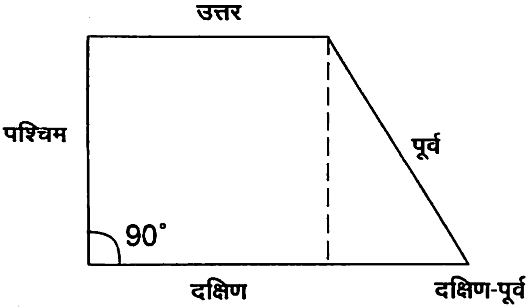

चित्र—5

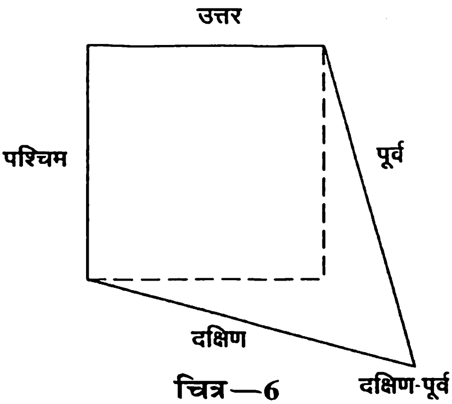

चित्र—6

यदि भूखण्ड पूर्व दक्षिण दोनों ओर से आग्नेय कोण की ओर बढ़ा हुआ है तो भी अशुभ है। इस पर भी भवन निर्माण नहीं करना चाहिए। (देखें चित्र—6)

भूखण्ड में नैऋत्य कोण की वृद्धि

यदि भूखण्ड दक्षिण दिशा की ओर नैऋत्य कोण में बढ़ा हुआ हो तो कष्टदायी व हानिकारक है। इस पर भवन निर्माण करना शुभ नहीं है। (देखें चित्र—7)

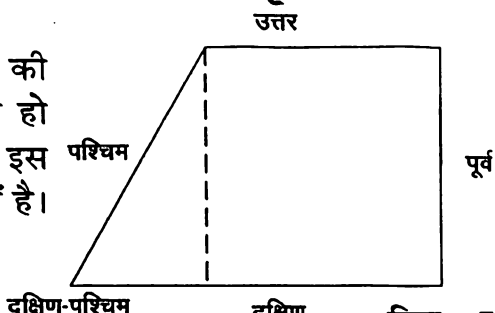

चित्र—7

भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण दोनों ओर मार्ग हो तो भूखण्ड शुभाशुभ मिश्रित फलदायी है। अतः भवन निर्माण करते समय दोनों ओर द्वार न रखें। भवन में एक द्वार से आना जाना रखें।

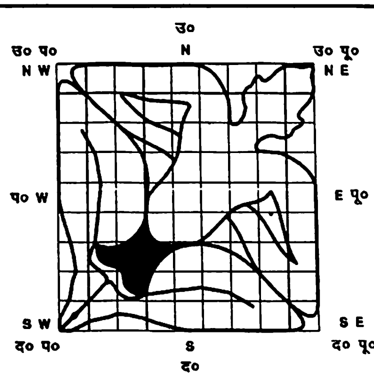

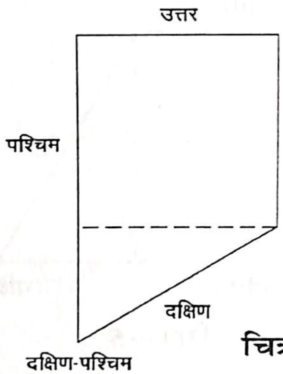

चित्र—8

यदि भूखण्ड पश्चिम दिशा की ओर नैर्ऋत्य कोण में बढ़ा हुआ हो तो। हानिप्रद व कष्टदायक होता है। इस पर भवन-निर्माण नहीं करना चाहिए। (देखें चित्र—8)

यदि भूखण्ड पश्चिम व दक्षिण दोनों दिशा में नैर्ऋत्य कोण की ओर बढ़ा हो तो अशुभ होता है। इस पर भवन-निर्माण शुभ नहीं होता है। (देखें चित्र—9)

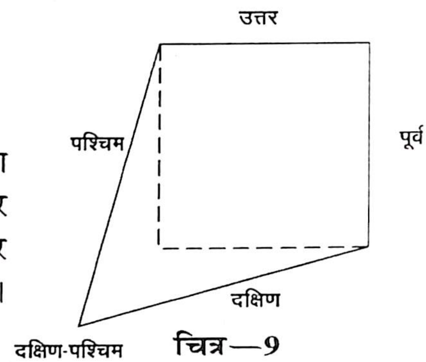

चित्र—9

भूखण्ड में वायव्य कोण की वृद्धि

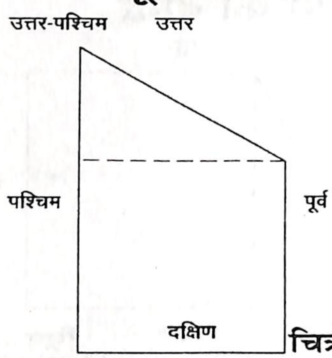

चित्र—10

यदि भूखण्ड पश्चिम दिशा की और वायव्य कोण में बढ़ा हो तो अशुभ एवं दुःखदायी है। इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है। (देखें चित्र—10)

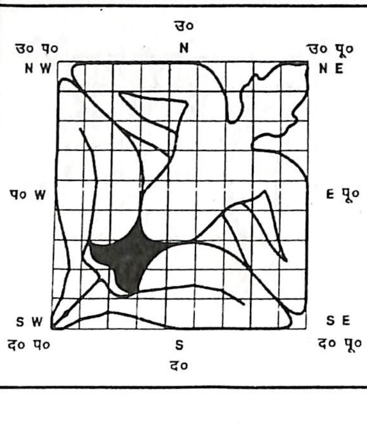

भूखण्ड के तीनों ओर मार्ग हो तो भूखण्ड सुरक्षा की दृष्टि कोण से ठीक न होने के कारण भवन बनाते समय सुरक्षा प्रबन्धों का विशेष ध्यान रखें। ऐसे भूखण्ड पर पूर्व, पश्चिम व उत्तर, पूर्व, पश्चिम व दक्षिण, उत्तर, दक्षिण व पश्चिम एवं पूर्व, उत्तर व दक्षिण की ओर मार्ग हो सकता है।

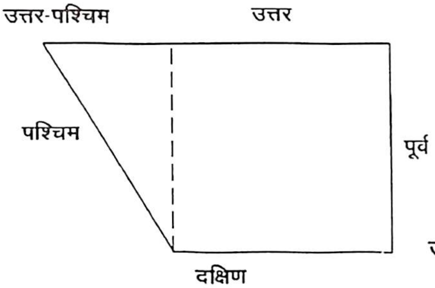

चित्र—11

यदि भूखण्ड उत्तर दिशा की ओर वायव्य कोण में बढ़ा हुआ हो तो मानसिक अशान्ति एवं हानिकारक होता है। इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है। (देखें चित्र—11)

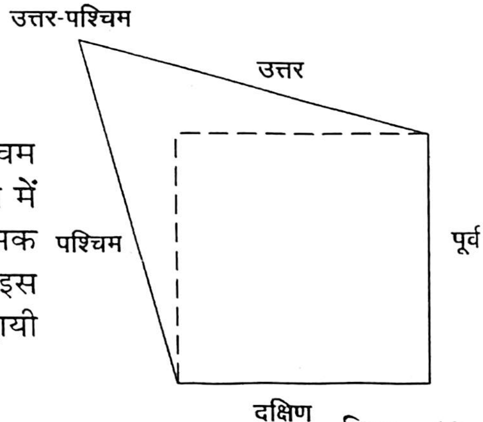

चित्र—12

यदि भूखण्ड उत्तर व पश्चिम दोनों दिशा की ओर वायव्य कोण में बढ़ा हुआ हो तो भी मानसिक अशान्ति एवं कष्टप्रद होता है। इस पर भवन निर्माण अशुभ फलदायी होता है। (देखें चित्र—12)

नैर्ऋत्य कोण में घटा भूखण्ड

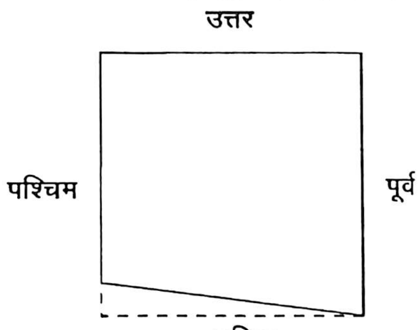

चित्र—13

यदि भूखण्ड नैर्ऋत्य कोण में दक्षिण दिशा की ओर घटा हो तो अशुभ होता है। इस पर भवन निर्माण अशुभ है। (देखें चित्र—13)

भूखण्ड के चारों ओर मार्ग होने पर धन की दृष्टि से अत्यन्त शुभ होता है। भूखण्ड के चारों ओर मार्ग हो और सभी दिशाएँ चौराहे के रूप में हों तो ऐसा भूखण्ड सम्पन्न बना देता है।

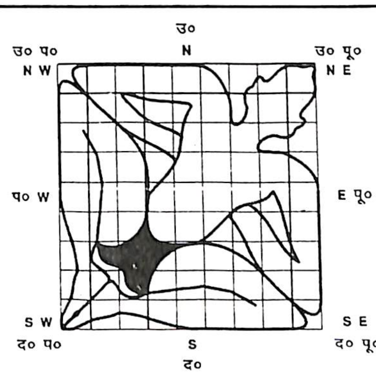

यदि भूखण्ड पश्चिम दिशा की ओर नैर्ऋत्य कोण में घटा हो तो भी अशुभ होता है। इस पर भवन निर्माण अशुभ है। (देखें चित्र—14)

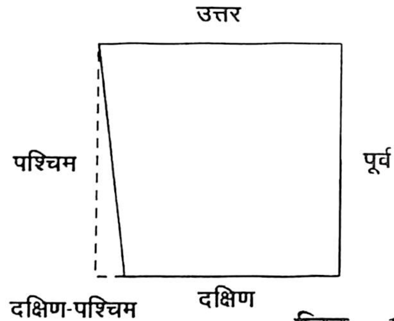

चित्र—14

यदि भूखण्ड पश्चिम व दक्षिण दोनों दिशा में नैर्ऋत्य कोण की ओर घटा हो तो भी अशुभ होता है। इस पर भवन निर्माण हानिकारक व कष्टदायी है। (देखें चित्र—15)

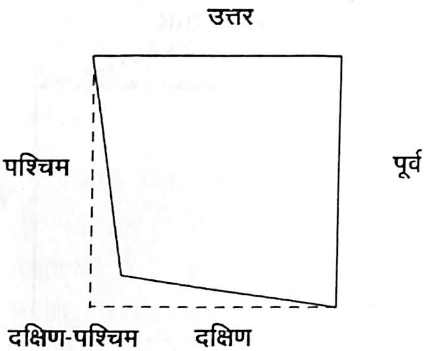

चित्र—15

वायव्य कोण में घटा भूखण्ड

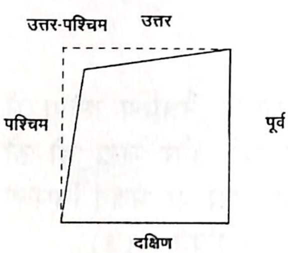

चित्र—16

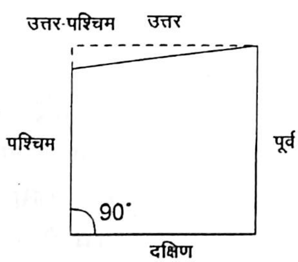

चित्र—17

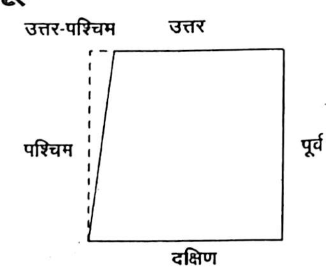

चित्र—18

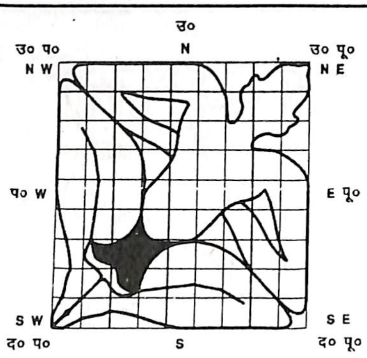

भूखण्डों के आसपास मन्दिर, देवालय, स्तम्भ, नाला, कीचड़ या अन्य वस्तु व दो मार्ग वाले संधि स्थल के कारण वेध दोष होता है। वेध दोष के कारण श्रेष्ठ भूखण्ड भी दोष यक्त हो जाता है।

यदि भूखण्ड उत्तर-पश्चिम दोनों दिशा में वायव्य कोण में घटा हो (देखें चित्र—16), यदि भूखण्ड उत्तर की ओर वायव्य कोण में घटा हो (देखें चित्र—17) और यदि पश्चिम दिशा की ओर वायव्य कोण में घटा हो (देखें चित्र—18) तो ये तीनों स्थितियाँ शुभ हैं। इन पर भवन निर्माण करना शुभफलदायी है।

ईशान कोण में घटा भूखण्ड

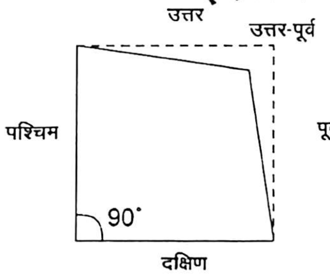

चित्र—19

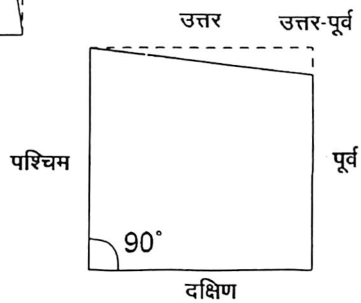

चित्र—20

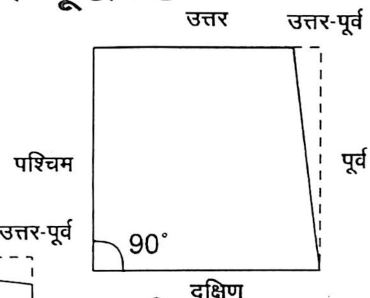

चित्र—21

यदि भूखण्ड उत्तर-पूर्व दोनों दिशा में ईशान कोण में घटा हो (देखें चित्र—19), यदि भूखण्ड उत्तर दिशा में ईशान कोण में घटा हो (देखें चित्र—20) और यदि भूखण्ड पूर्व दिशा में ईशान कोण में घटा हो (देखें चित्र—21) तो ये तीनों स्थितियाँ अशुभ हैं। इन पर भवन निर्माण करना आर्थिक क्षति व दुःख को बढ़ाता है।

उत्तर दिशा की ओर मार्ग हो व ईशान कोण से मार्ग वेध हो तो भूखण्ड दोषयुक्त नहीं यदि सम्मुख मार्ग वेध हो तो भवन निर्माण अशुभ होता है।

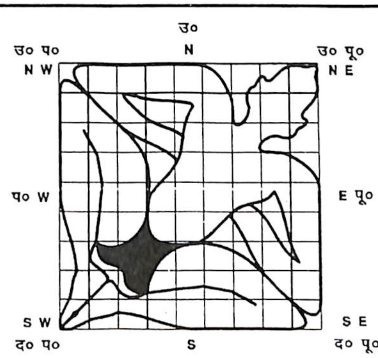

आग्नेय कोण में घटा भूखण्ड

यदि भूखण्ड पूर्व-दक्षिण दोनों दिशा में आग्नेय कोण में घटा हो (देखें चित्र—22), यदि भूखण्ड पूर्व दिशा में आग्नेय कोण में घटा हो (देखें चित्र—23) और यदि भूखण्ड दक्षिण दिशा में आग्नेय कोण में घटा हो (देखें चित्र—24) तो ये तीनों स्थितियाँ शुभ है। इन पर भवन निर्माण करना शुभफलप्रद है।

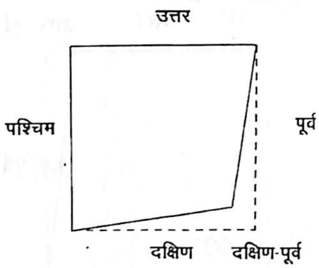

चित्र—22

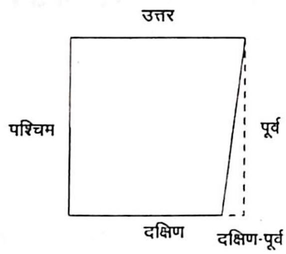

चित्र—23

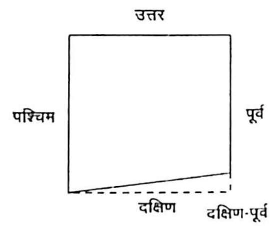

चित्र—24

कर्णात्मक स्थिति वाले भूखण्ड

कर्णात्मक स्थिति वाले भूखण्ड में दो कोण सामने के अधिक कोण अर्थात् 90 से अधिक, एक कोण 90 अंश का एवं एक कोण 90 अंश से कम हो तो ये भूखण्ड टेढ़े होते हुए भी शुभफलदायी होते हैं। इन पर भवन निर्माण शुभ है। इनकी चार स्थितियाँ बनती हैं, (देखें चित्र—25, 26, 27 व 28)।

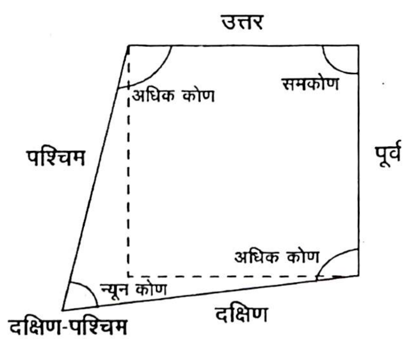

चित्र—25

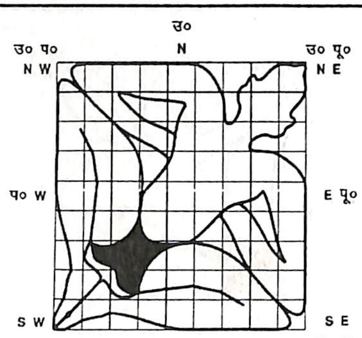

पूर्व दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें पूर्व दिशा से ही सम्मुख मार्ग वेध हो तो भूखण्ड वेध दोष युक्त नहीं माना जाता है। भवन बना सकते हैं।

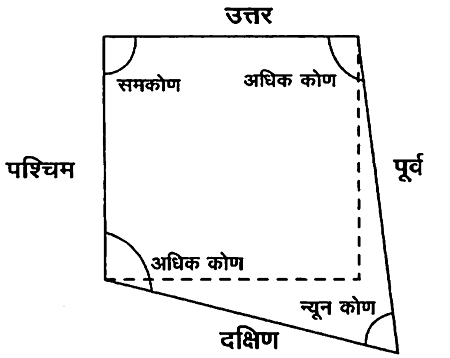

चित्र—26

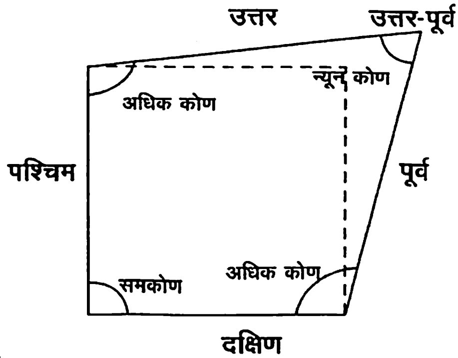

चित्र—27

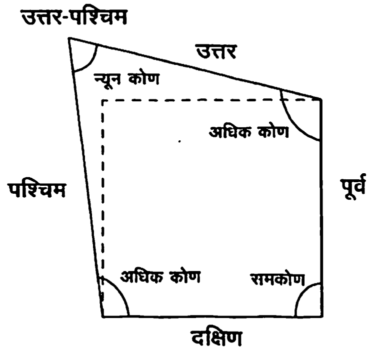

चित्र—28

इस अध्याय में भूखण्ड के विस्तार व ह्रास का वर्णन किया गया है। इसको समझकर भूखण्ड चयन करते समय व्यवहार में लाना चाहिए। अब अगले अध्याय में भूखण्ड की स्थिति संबंधी विचार करेंगे।

भूखण्ड के दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें दक्षिण दिशा से ही सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

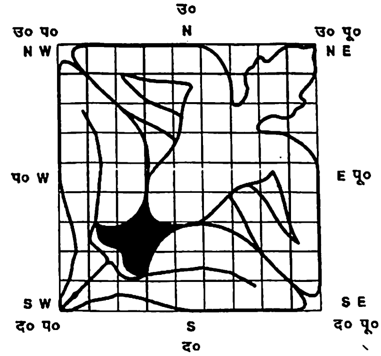

7 भूखण्ड स्थिति विचार

इस अध्याय में भूखण्ड की स्थिति का विचार करना बतलायेंगे। इस ज्ञान से आप भूखण्डों की स्थिति का विश्लेषण करके उत्तम भूखण्ड चयन कर सकेंगे।

भूखण्ड के एक ओर मार्ग

भूखण्ड के चारों ओर किसी एक दिशा में मार्ग हो तो चार प्रकार की स्थितियाँ बनेंगी जोकि निम्न हैं—

1. भूखण्ड के पूर्व की ओर मार्ग
2. भूखण्ड के पश्चिम की ओर मार्ग
3. भूखण्ड के उत्तर की ओर मार्ग
4. भूखण्ड के दक्षिण की ओर मार्ग

अब चारों की अलग-अलग स्थिति और शुभाशुभ फल बतलायेंगे।

1. भूखण्ड के पूर्व की ओर मार्ग

यदि भूखण्ड के पूर्व दिशा की ओर मार्ग स्थित हो (देखें चित्र—1) तो यह भूखण्ड श्रेष्ठ (Best Plot) होता है। इस पर भवन निर्माण करना शुभ फलदायी होता है।

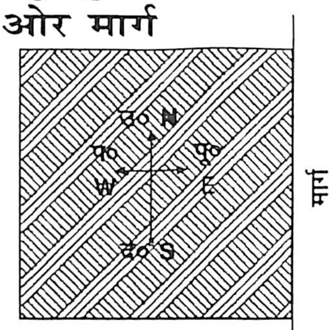

चित्र—1

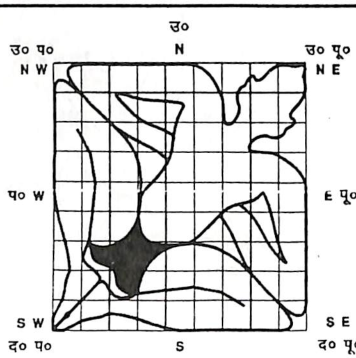

भूखण्ड के पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें पश्चिम दिशा से ही सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

2. भूखण्ड के पश्चिम की ओर मार्ग

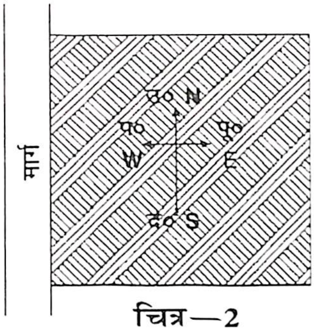

चित्र—2

यदि भूखण्ड के पश्चिम दिशा की ओर मार्ग स्थित हो (देखें चित्र—2) तो यह भूखण्ड अच्छा (Good Plot) होता हे। इस पर भवन निर्माण करना शुभफलदायी है।

3. भूखण्ड के उत्तर की ओर मार्ग

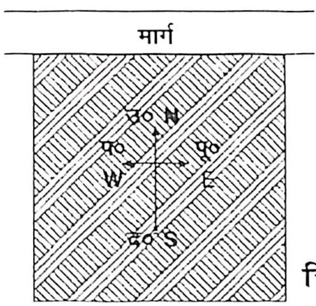

चित्र—3

यदि भूखण्ड के उत्तर दिशा की ओर मार्ग स्थित हो (देखें चित्र—3) तो यह भूखण्ड उत्तम (Better Plot) होता है। इस पर भवन निर्माण करना लाभप्रद होता है।

4. भूखण्ड के दक्षिण की ओर मार्ग

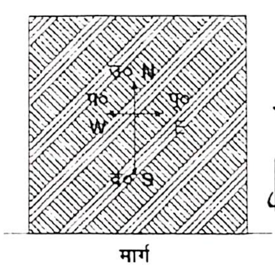

चित्र—4

यदि भूखण्ड के दक्षिण दिशा की ओर मार्ग स्थित हो तो (देखें चित्र—4) यह भूखण्ड सामान्य (Ordinary Plot) होता है। इस पर भवन निर्माण करना मिश्रित फलदायी अर्थात् शुभाशुभ प्रभाव होता है। दक्षिण दिशा में द्वार अशुभ माना जाता है।

अब दो दिशाओं में मार्ग होने पर एवं दोनों दिशाओं पर ही वेध होने वाले भूखण्ड भी अशुभ होने के कारण भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त हैं।

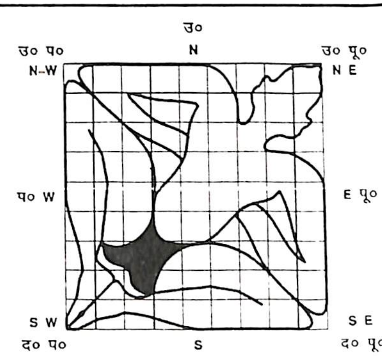

भूखण्ड के दोनों ओर मार्ग

भूखण्ड के चारों ओर किन्हीं दो दिशाओं में मार्ग हो तो अनेक स्थितियाँ बनती हैं जो निम्न प्रकार हैं—

1. भूखण्ड के उत्तर व पूर्व दिशा में मार्ग
2. भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा में मार्ग
3. भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा में मार्ग
4. भूखण्ड के दक्षिण व पूर्व दिशा में मार्ग
5. भूखण्ड के पूर्व एवं पश्चिम दोनों दिशाओं में मार्ग
6. भूखण्ड के उत्तर एवं दक्षिण दोनों दिशाओं में मार्ग

अब उपर्युक्त छहों स्थितियों का अलग-अलग फल बतायेंगे।

1. भूखण्ड के उत्तर व पूर्व दिशा में मार्ग

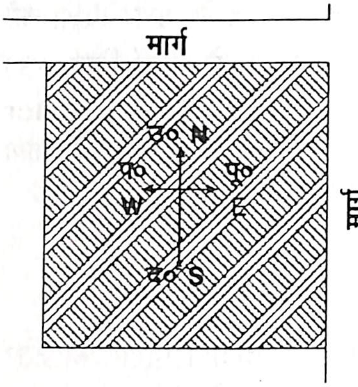

चित्र—5

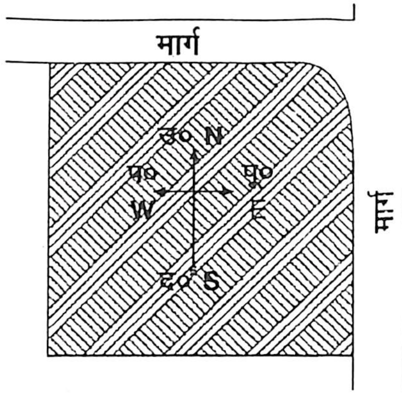

चित्र—6

यदि भूखण्ड के उत्तर व पूर्व दिशा की ओर मार्ग स्थित हो तो यह भूखण्ड श्रेष्ठ (Best Plot) है (देखें चित्र—5)। इस पर भवन निर्माण करना सुख-समृद्धि एवं धनकारक है।

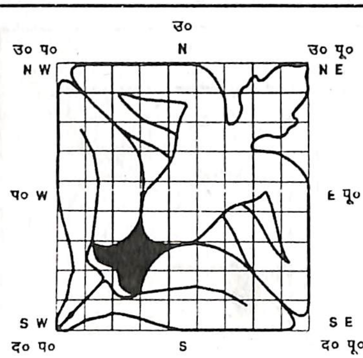

भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें दोनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

यदि भूखण्ड उत्तर दिशा से पूर्व दिशा की ओर ईशान कोण गोलाई होने पर भूखण्ड सामान्य होता है। (देखें चित्र—6)

2. भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा में मार्ग

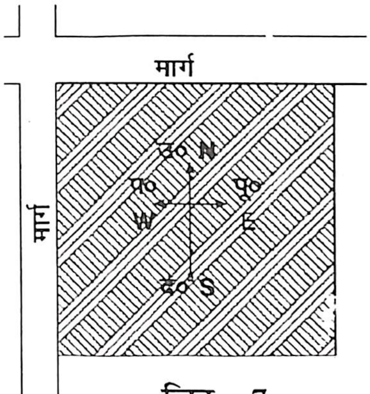

चित्र—7

यदि भूखण्ड के उत्तर व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तो यह भूखण्ड सामान्य (Normal) होता है (देखें चित्र—7)। इस पर भवन निर्माण करना न लाभ न हानि कारक है।

3. भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा में मार्ग

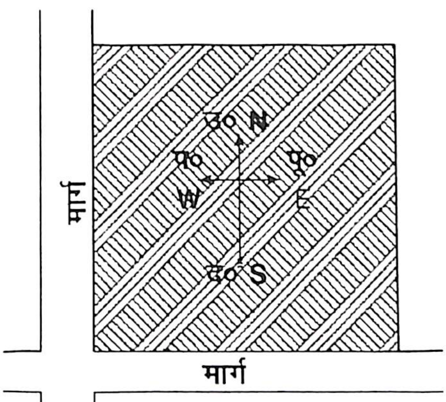

चित्र—8

यदि भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तो यह भूखण्ड सामान्य (Normal) होता है (देखें चित्र—8)। इस पर भवन निर्माण करना सामान्य फलदायी है।

भूखण्ड के पूर्व व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें दोनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है।

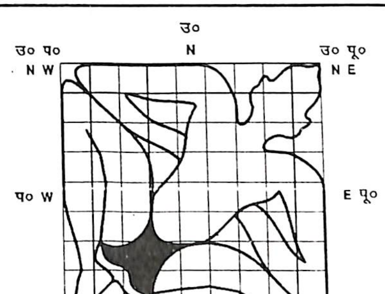

4. भूखण्ड के दक्षिण व पूर्व दिशा में मार्ग

यदि भूखण्ड के दक्षिण व पूर्व की दिशा की ओर मार्ग हो तो यह भूखण्ड अशुभ होता है (देखें चित्र—9)। इस पर भवन निर्माण करने से अनिष्ट होता है और भवन निर्माता दरिद्र हो जाता है।

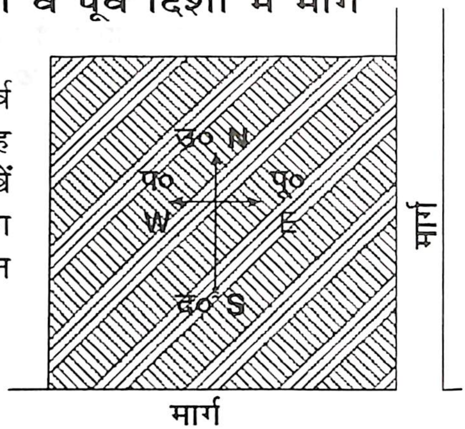

चित्र—9

5. भूखण्ड के पूर्व व पश्चिम दोनों दिशाओं में मार्ग

यदि भूखण्ड के पूर्व व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तो यह भूखण्ड सामान्य है (देखें चित्र—10)। इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करने पर मिश्रित फल अर्थात् शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल की अनुभूति होती है। इस प्रकार के भूखण्ड पर भवन बनाते समय दोनों दिशाओं में पड़ने वाले मार्गों की ओर द्वार बनाकर निकासी नहीं रखनी चाहिए।

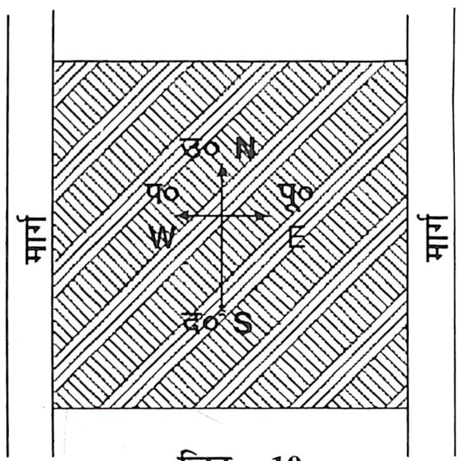

चित्र—10

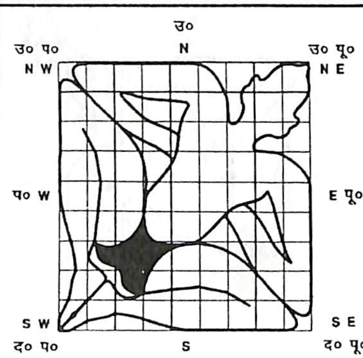

भूखण्ड के दक्षिण व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें दोनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है।

6. भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण दोनों दिशाओं में मार्ग

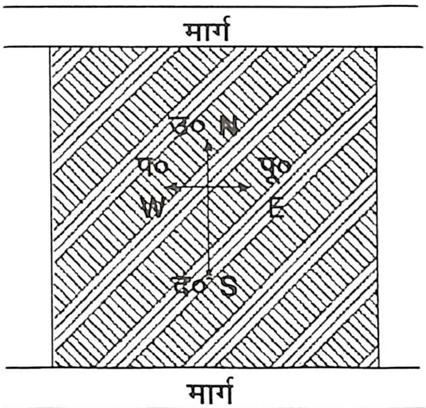

चित्र—11

यदि भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो तो यह भूखण्ड मिश्रित फलदायी है (देखें चित्र-11)। दोनों शुभाशुभ फल की अनुभूति होती है। दोनों दिशाओं में द्वार नहीं रखना चाहिए। भवन में आवागमन एक ओर द्वार बनाकर करना चाहिए। इसमें रहने वाला भवन स्वामी सर्वाधिक उन्नति नहीं कर पाता। सामान्य जीवन जीता है।

भूखण्ड के तीनों ओर मार्ग

भूखण्ड के तीन ओर किन्ही तीन दिशाओं में मार्ग हो तो चार स्थितियाँ बनती हैं जोकि निम्नलिखित हैं—

1. भूखण्ड के पूर्व, पश्चिम एवं उत्तर तीनों दिशाओं में मार्ग (चित्र—बारह)।
2. भूखण्ड के पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण तीनों दिशाओं में मार्ग (चित्र—तेरह)।
3. भूखण्ड के उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम तीनों दिशाओं में मार्ग (चित्र—चौदह)।
4. भूखण्ड के पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण तीनों दिशाओं में मार्ग (चित्र—पन्द्रह)।

भूखण्ड के पश्चिम व उत्तर दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें दोनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है।

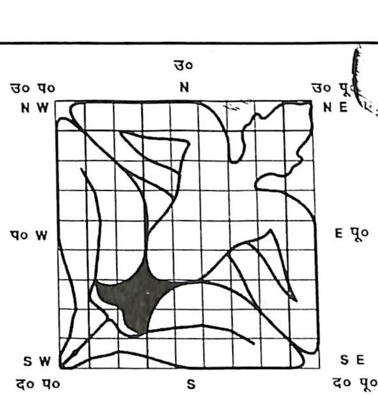

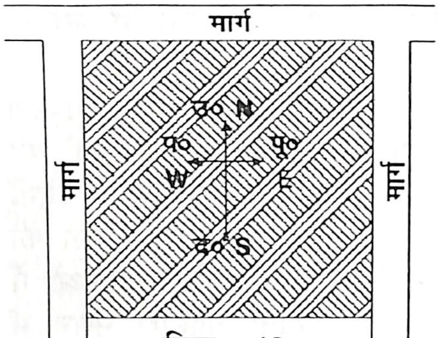

चित्र—12

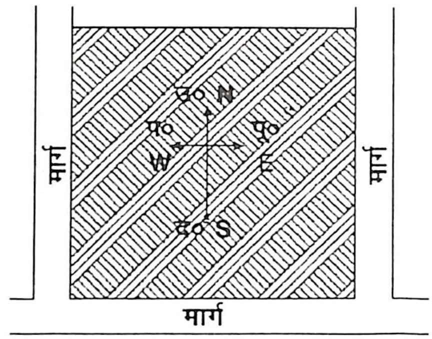

चित्र—13

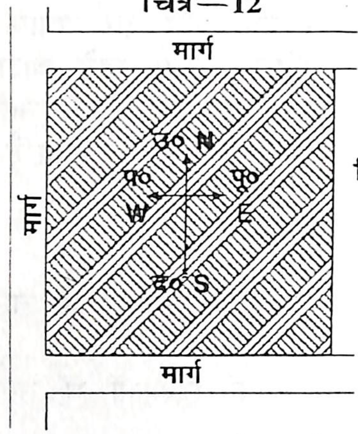

चित्र—14

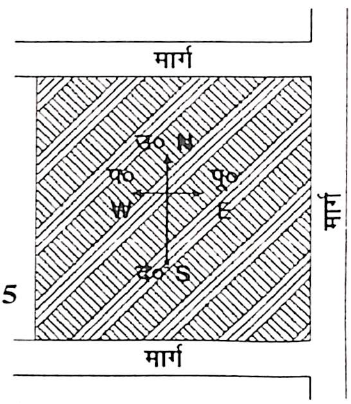

चित्र—15

प्रायः भूखण्ड के तीनों ओर मार्ग हो तो ऐसा भूखण्ड अच्छा नहीं माना जाता है। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण करते समय भवन का प्रारुप इस प्रकार रखना चाहिए जिससे असुरक्षा से बच सकें। यह जान ले भवन के तीनों ओर मार्ग हो और आवागमन हेतु स्वतन्त्र हो तो ऐसा भवन सुरक्षा की दृष्टि से अनुपयुक्त है और विपत्तियों को समय-असमय निमन्त्रण देता रहता है। वस्तुतः सुरक्षा की दृष्टि से विचार करके ही भवन निर्माण करना चाहिए।

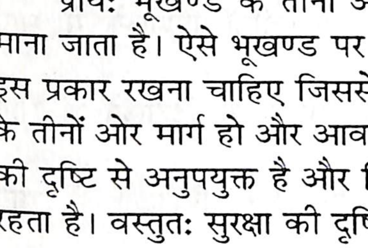

भूखण्ड के पूर्व, दक्षिण व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें तीनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण निषेध है।

भूखण्ड के चारों ओर मार्ग

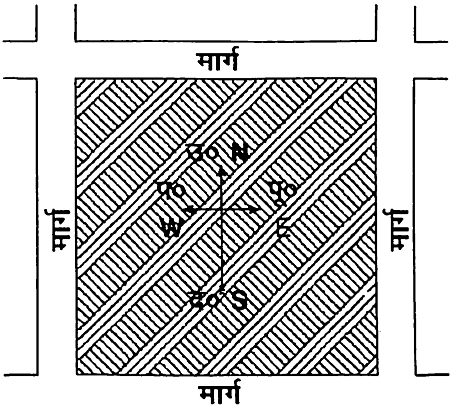

चित्र—16

यदि भूखण्ड के चारों ओर मार्ग हो तो ऐसा भूखण्ड धनागमन की दृष्टि से अत्यन्त शुभ होता है। यदि भूखण्ड के चारों ओर मार्ग हो और सभी दिशाएँ चौराहे के रूप में खुली हों तो ऐसा भूखण्ड भूस्वामी को सम्पन्न व धन-धान्य से परिपूर्ण कर देता है (देखें चित्र—सोलह)।

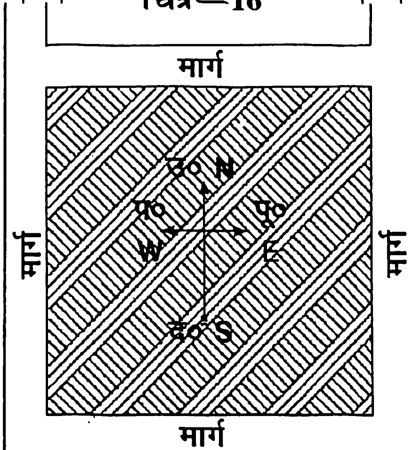

चित्र—17

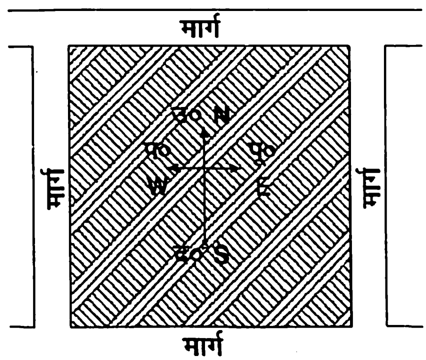

चित्र—18

यदि भूखण्ड के चारों ओर मार्ग हों तथा सभी मार्ग आवागमन के लिए खुलें हों तो ऐसा भूखण्ड भूस्वामी को समृद्ध व धनी बना देता है (देखें चित्र—सतरह व अठारह)।

भूखण्ड के पूर्व, उत्तर व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें तीनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण निषेध है।

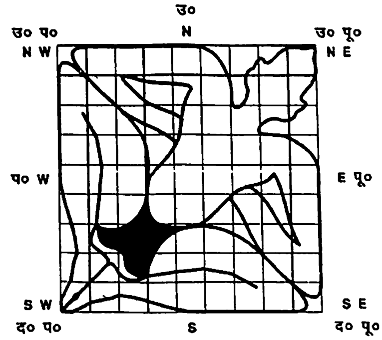

यह जान लें कि चारों ओर से मार्ग युक्त भूखण्ड धन-धान्य की दृष्टि से तो सर्वाधिक शुभ होता है। लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से आशंकाओं से घिरा रहता है और कभी भी संकट उपस्थित हो सकता है। अत: भवन निर्माण करते समय उसके प्रारूप में सुरक्षा प्रबन्ध पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

वेध दोष युक्त भूखण्ड

प्राय: भूखण्ड पर कई प्रकार के वेध दोष पाए जाते हैं। यह वेध भूखण्ड के पास मन्दिर, देवालय, स्तम्भ, नाला, कीचड़ या अन्य वस्तु एवं दो मार्ग के मिलने वाले संधि स्थल के कारण बनते हैं। कुछेक स्थितियों में भूखण्ड वेध दोष युक्त नहीं होते हैं। अब यहाँ पर आपको भूखण्डों के वेध दोष बतलायेंगे। वेध दोष के कारण श्रेष्ठ भूखण्ड भी दोष युक्त हो जाता है। सभी वेध दोष दोषपूर्ण होते हैं, परन्तु कुछ अपवाद भी होते हैं।

एक दिशा से वेध युक्त भूखण्ड

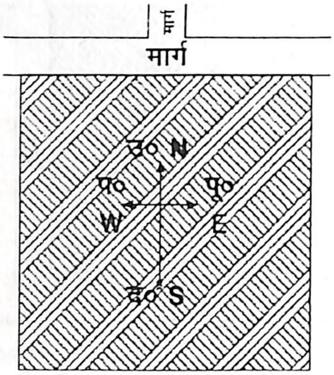

चित्र—19 (अ)

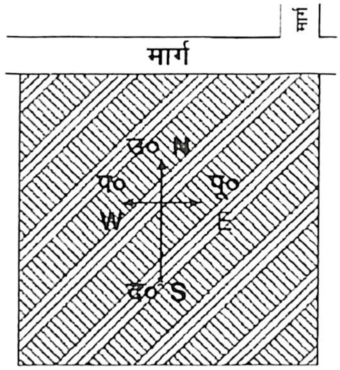

चित्र—19 (ब)

यदि भूखण्ड के उत्तर दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें उत्तर दिशा की ओर से ईशान कोण पर मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध होने पर

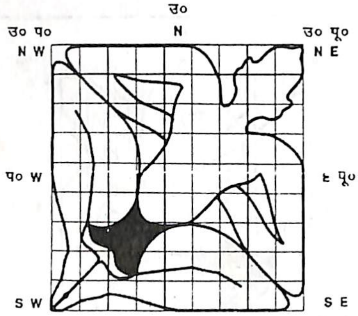

भूखण्ड के उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो तो उसमें तीनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण निषेध है।

भी दोषयुक्त नहीं माना जाता है। इस पर भवन निर्माण किया जा सकता है (देखें चित्र—उन्नीस 'ब')।

लेकिन ध्यान रखे यह वेध ईशान कोण पर हो तो शुभ है परन्तु यदि सम्मुख है तो अशुभ है (देखें चित्र—उन्नीस 'अ')। अशुभ स्थिति में निर्माण नहीं करना चाहिए।

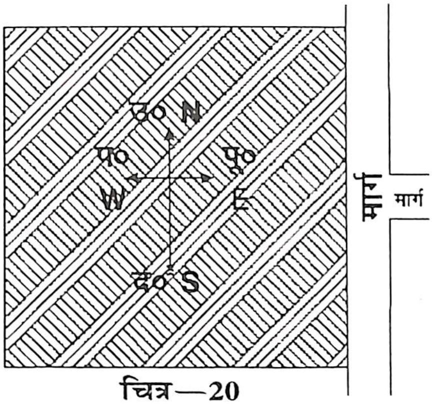

चित्र—20

यदि भूखण्ड के पूर्व दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें पूर्व दिशा की ओर से मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध होने पर भी वेध दोष युक्त नहीं माना जाता है। इस पर भवन निर्माण किया जा सकता है (देखें चित्र—बीस)।

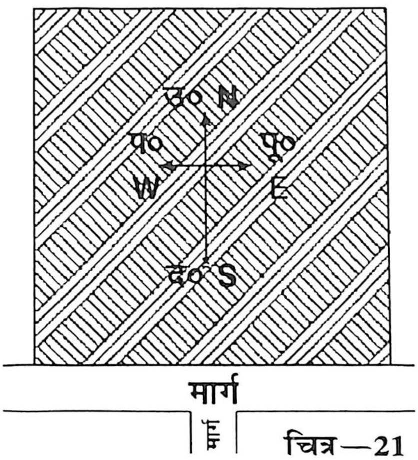

चित्र—21

यदि भूखण्ड के दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें दक्षिण दिशा की ओर से मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। इस पर भवन का निर्माण नहीं करना चाहिए (देखें चित्र—इक्कीस)।

भूखण्ड के उत्तर, पश्चिम व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो व उसमें तीनों दिशाओं पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण निषेध है।

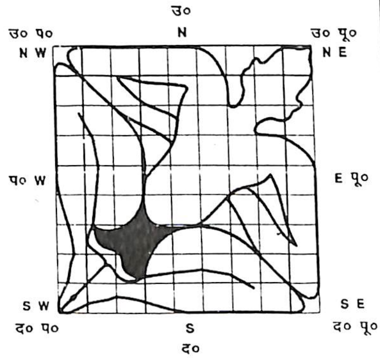

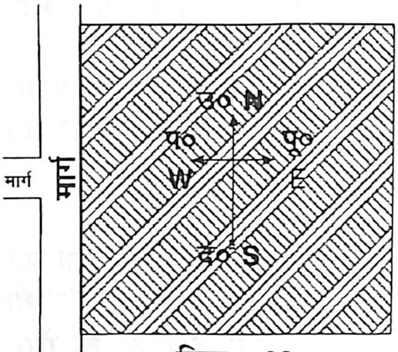

चित्र—22

यदि भूखण्ड के पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें पश्चिम दिशा की ओर से वेध होता है ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। ऐसे भूखण्ड पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

दो दिशा से वेधयुक्त भूखण्ड

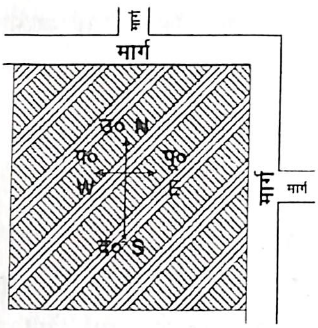

चित्र—23

यदि भूखण्ड के उत्तर दिशा व पूर्व दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें उत्तर व पूर्व दिशा की ओर से वेध हो (देखें चित्र—23) तो ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

यदि भूखण्ड के पूर्व दिशा व दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें पूर्व व दक्षिण दिशा की ओर से वेध हो (देखें चित्र—24) तो ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

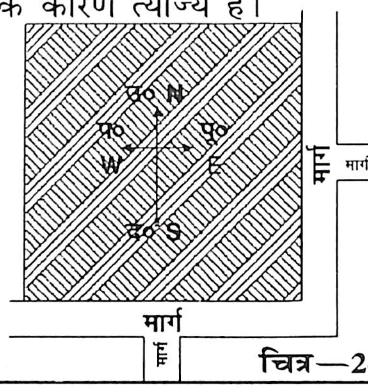

चित्र—24

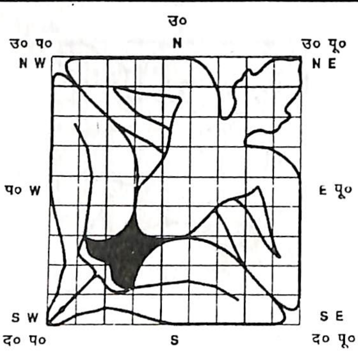

भूखण्ड के उत्तर व दक्षिण या पूर्व व पश्चिम दो विपरीत दिशाओं पर पड़ने वाले मार्गों पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस पर भी भवन निर्माण निषेध है।

यदि भूखण्ड के दक्षिण दिशा व पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें दक्षिण व पश्चिम दिशा की ओर से वेध हो (देखें चित्र—25) तो ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

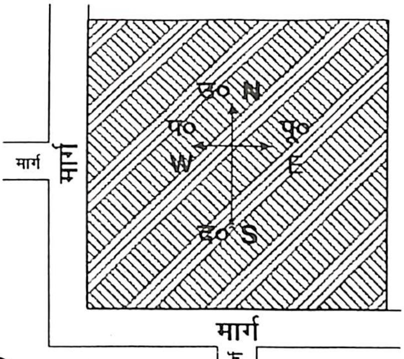

चित्र—25

यदि भूखण्ड के पश्चिम दिशा व उत्तर दिशा की ओर मार्ग हो तथा उसमें पश्चिम व उत्तर दिशा की ओर से वेध हो (देखें चित्र—26) तो ऐसा भूखण्ड वेध दोषयुक्त होता है। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

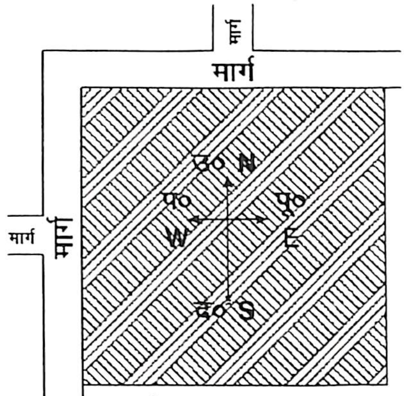

चित्र—26

तीन दिशाओं से वेध युक्त भूखण्ड

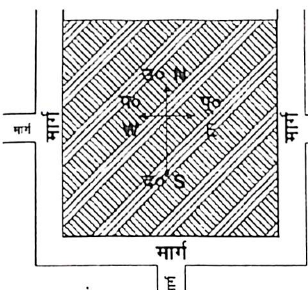

चित्र—27

यदि भूखण्ड के तीन ओर पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो और उस पर पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा की ओर से सम्मुख मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोषयुक्त होता है (देखें चित्र—27) यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

भूखण्ड के उत्तर, पूर्व, दक्षिण व पश्चिम दिशा में मार्ग हो एवं इन पर सम्मुख मार्ग वेध हो तो इस भूखण्ड पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

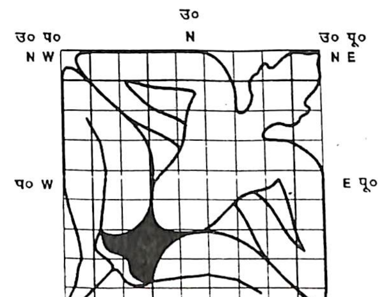

यदि भूखण्ड के तीन ओर पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम दिशा की ओर मार्ग हो और उस पर पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम दिशा की ओर से सम्मुख मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोषयुक्त होता है (देखें चित्र—28)। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

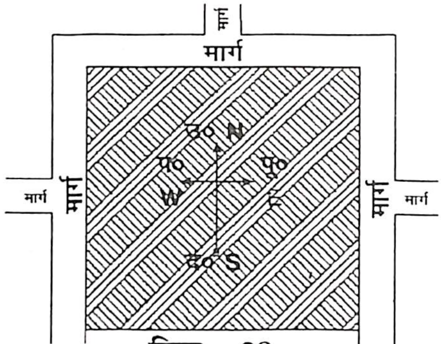

चित्र—28

यदि भूखण्ड के तीन ओर उत्तर, पूर्व एवं दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो उस पर उत्तर, पूर्व एवं दक्षिण दिशा की ओर से सम्मुख मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोषयुक्त होता है (देखें चित्र—29)। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

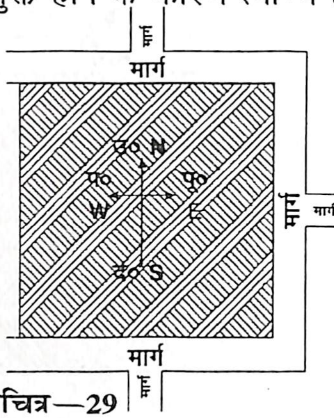

चित्र—29

यदि भूखण्ड के तीन ओर उत्तर पश्चिम एवं दक्षिण दिशा की ओर मार्ग हो उस पर उत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण दिशा की ओर से सम्मुख मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोषयुक्त होता है (देखें चित्र—30)। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

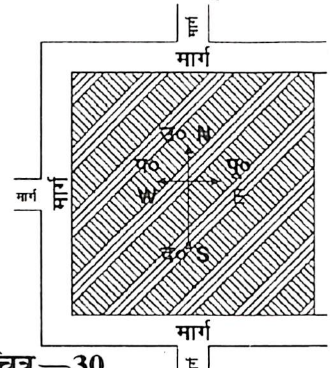

चित्र—30

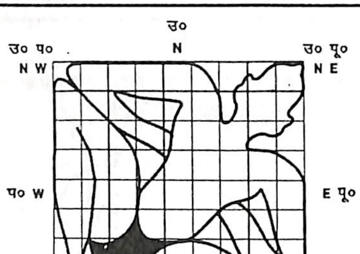

भूखण्ड के पूर्व में 'टी' की आकृति का मार्ग वेध हो तो इस पर भवन निर्माण करना अशुभ है।

दो विपरीत दिशाओं से वेध युक्त भूखण्ड

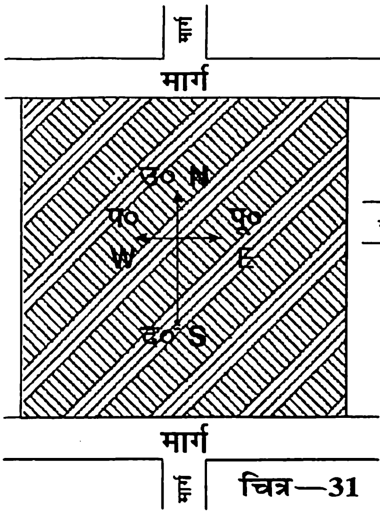

चित्र—31

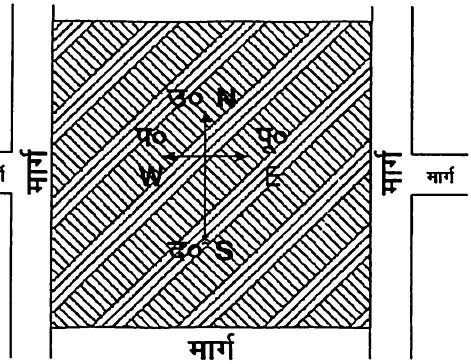

चित्र—32

यदि भूखण्ड के दो विपरीत दिशाओं में स्थित मार्ग में सम्मुख मार्ग वेध हो तो ऐसा भूखण्ड वेध दोष युक्त होता है। यह भवन निर्माण हेतु त्याज्य है। इस वेध की दो स्थितियाँ बनती हैं—एक उत्तर व दक्षिण दिशाओं में स्थित मार्ग पर सम्मुख मार्ग वेध (देखें चित्र—31)। एवं दूसरा पूर्व व पश्चिम दिशाओं में स्थित मार्ग पर सम्मुख मार्ग वेध (देखें चित्र—32)। दोनों स्थितियाँ भवन निर्माण हेतु अशुभ एवं त्याज्य हैं।

चारों दिशाओं से वेध युक्त भूखण्ड

यदि भूखण्ड के चारों ओर उत्तर, पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में मार्ग हो और उस पर चारों दिशा उत्तर, पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिम की ओर से सम्मुख मार्ग वेध हो (देखें चित्र—33) तो ऐसा भूखण्ड वेध

भूखण्ड बन्द मार्ग के पास स्थित हो तो अशुभ होने के कारण इस पर भी भवन निर्माण करना निषेध है।

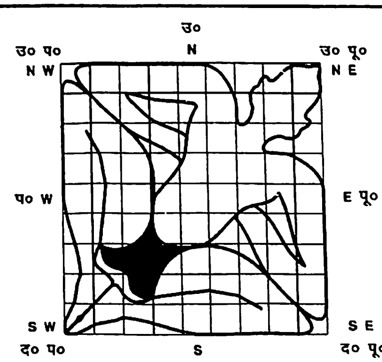

दोषयुक्त होता है। यह भूखण्ड भवन निर्माण हेतु अत्यन्त अशुभ है। इसका स्वामी सुरक्षित नहीं रहता है। इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

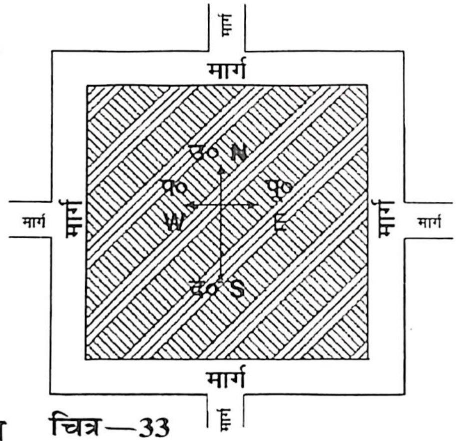

चित्र—33

पूर्व दिशा में 'टी' आकृति एवं बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड

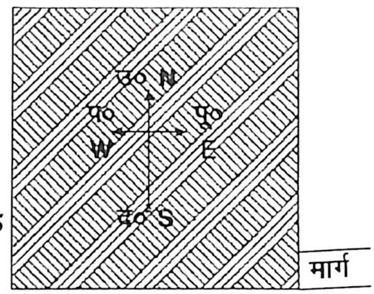

चित्र—35

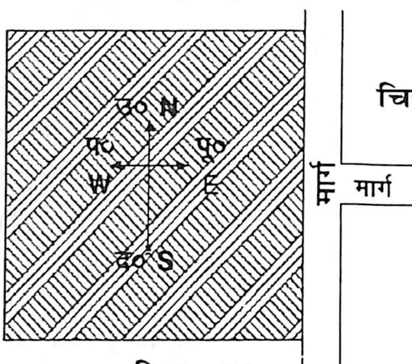

चित्र—34

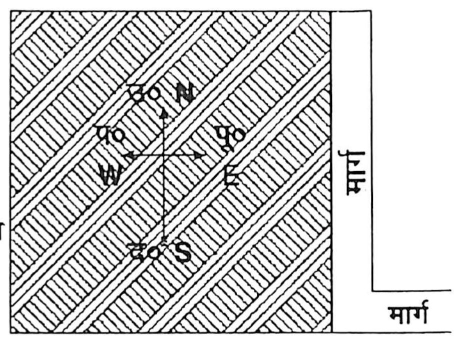

चित्र—35-अ

यदि किसी भूखण्ड के पूर्व में मार्ग हो और वह 'टी' की आकृति

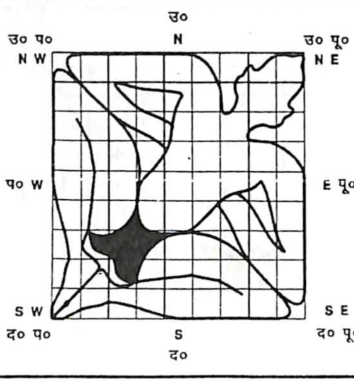

बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड या बन्द गली के सिरे पर स्थित भूखण्ड अशुभ होने के कारण भवन निर्माण हेतु अनुपयुक्त है।

बनाता हो तो ऐसा भूखण्ड अशुभ होता है (देखें चित्र—34) और भवन निर्माण के लिए अनुपयुक्त होने के कारण त्याज्य है।

यदि बन्द मार्ग के पास भूखण्ड स्थित हो (देखें चित्र—35 व 35–अ) तो उस पर भी भवन निर्माण करना अनुपयुक्त है। अशुभ होने के कारण इसे भी त्याज्य देना चाहिए।

बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड

प्राय: ऐसी स्थिति कम आती हैं। आवास विकास या समितियों की योजनाओं में आवासों या भूखण्डों में यह स्थिति पायी जाती है। इस प्रकार बन्द मार्ग पर स्थित भूखण्ड या बन्द गली के छोर पर स्थित भूखण्ड अशुभ होने के कारण भवन निर्माण हेतु त्याज्य है।

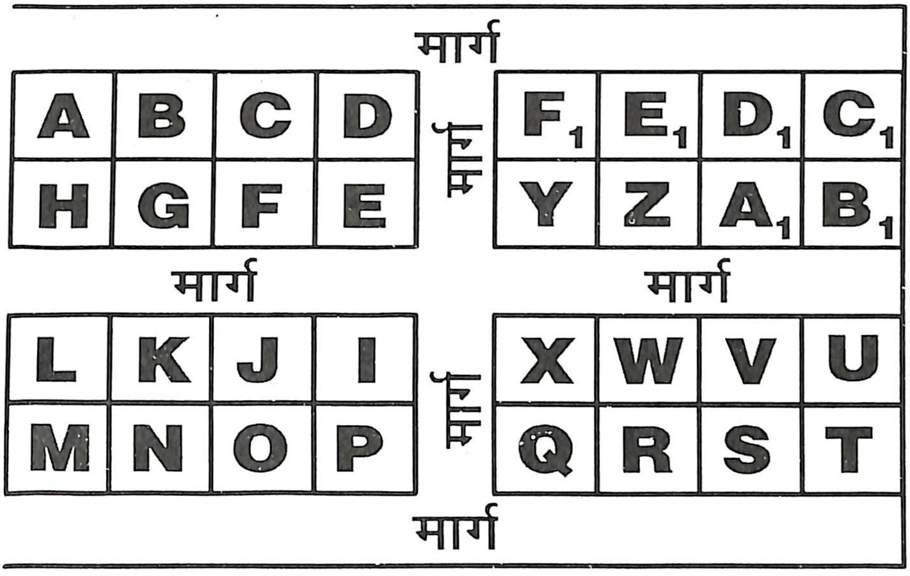

चित्र—36

भवन की ऊँचाई से दोगुनी दूरी तक भूखण्ड के आसपास या सामने मन्दिर या धर्मस्थल नहीं होना चाहिए। भवन के मुख्य द्वार के सम्मुख सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु, दुर्गा या शिव का मन्दिर नहीं होना चाहिए।

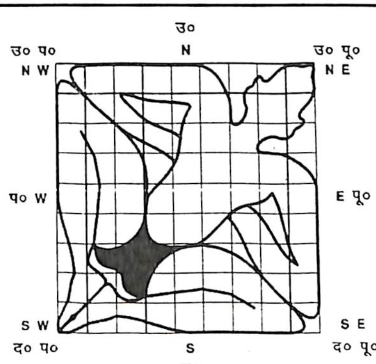

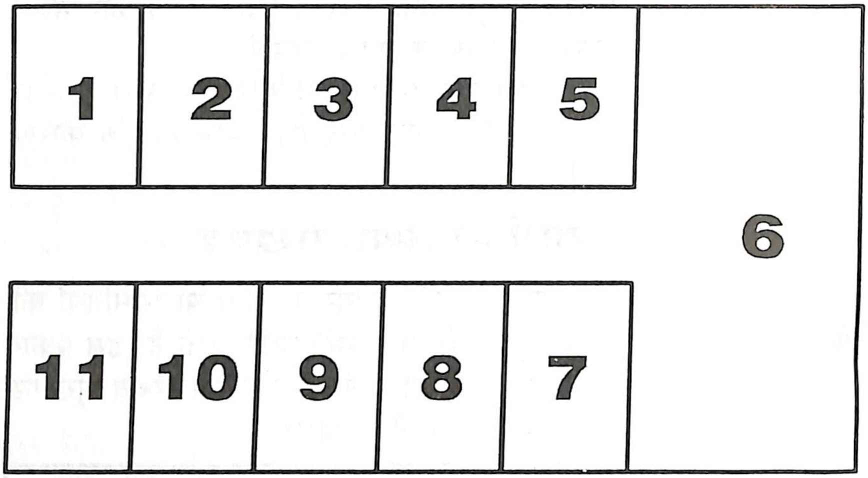

चित्र—37

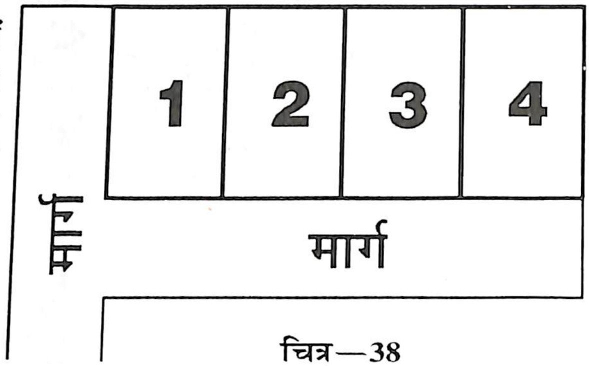

चित्र—38

चित्र—36 देखें इसमें भूखण्ड संख्या C_1, B_1, U एवं T जहाँ पर स्थित हैं वहाँ मार्ग बन्द है। इस प्रकार के कोने पर स्थित भूखण्ड अशुभ होते हैं।

चित्र 37 में भूखण्ड संख्या 5, 6 व 7 की स्थिति भी ऐसी है अर्थात् यह भी भवन निर्माण के लिए अशुभ होने के कारण त्याज्य है। चित्र 38 देखें इसमें दक्षिण की ओर मार्ग है तथा शेष सभी दिशाएँ बन्द हैं ऐसा भूखण्ड भी अशुभ एवं भवन निर्माण हेतु त्याज्य है।

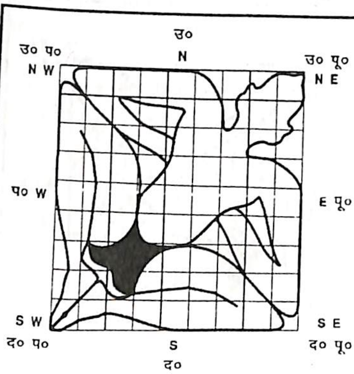

भवन के सम्मुख या पार्श्व में मन्दिर है तो उसकी छाया, भूखण्ड या भवन या नहीं पड़नी चाहिए। भवन के पार्श्व में जैन मन्दिर नहीं होना चाहिए।

अन्य प्रकार के वेध

अब कुछ अन्य प्रकार के वेधों की चर्चा करेंगे जोकि निम्नलिखित हैं—

1. **मन्दिर द्वारा वेध**—निर्मित भवन की ऊँचाई से दोगुनी दूरी तक भूखण्ड के आसपास या सामने मन्दिर या देवालय नहीं होना चाहिए।

   यदि भवन के सम्मुख (सामने) मंदिर है तो उसकी छाया मध्याह्न काल तक भूखण्ड या भवन पर नहीं पड़नी चाहिए।

   किसी भी भवन के मुख्य द्वार के सम्मुख सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु या शिव का मन्दिर नहीं होना चाहिए।

   जैन मन्दिर की छाया भवन के पीछे नहीं पड़नी चाहिए। भवन के समीप दुर्गा और चंडी का मन्दिर भी नहीं होना चाहिए।
2. भवन के समीप या मुख्य द्वार के सम्मुख कीचड़, पूर्व, उत्तर व ईशान कोण में बड़ी चट्टान का पत्थर या बिजली का स्तम्भ (खम्भा) नहीं होना चाहिए।
3. **नदी, तालाब, जलाशय द्वारा वेध**—भवन या भूखण्ड के निकट दक्षिण या पश्चिम दिशा के समानान्तर नदी, नहर, नाला, पानी की टंकी, जलाशय आदि नहीं होना चाहिए। लेकिन भवन के उत्तर या पूर्व दिशा में कोई नदी या नहर हो तो कोई हानि नहीं है, पर यह ध्यान रखें नदी या नहर या नाले का जल प्रवाह (बहाव) पश्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर की ओर हो। भवन या भूखण्ड के समीप ईशान एवं उत्तर के अतिरिक्त अन्य दिशाओं में जलाशय, कूप, हैंडपम्प आदि नहीं होना चाहिए। जलाशय की स्थिति के अनुसार फल इस प्रकार है—

भवन के निकट या मुख्यद्वार के सामने कीचड़, चट्टान, बिजली का खम्भा, नदी, तालाब, जलाशय आदि से वेध नहीं होना चाहिए।

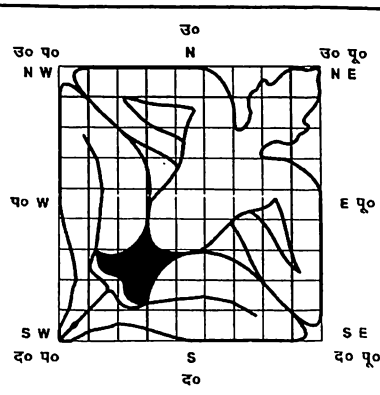

जलाशय की स्थिति दिशानुसार	फल
1. पूर्व में	पुत्र हानि
2. दक्षिण-पूर्व में (आग्नेय)	अग्निभय
3. दक्षिण में	शत्रुभय
4. दक्षिण-पश्चिम में (नैर्ऋत्य)	स्त्री कलह
5. पश्चिम में	स्त्री दुष्ट हो जाए
6. उत्तर-पश्चिम में (वायव्य)	निर्धनता
7. उत्तर में	धनप्रदा
8. उत्तर-पूर्व में (ईशान)	पुत्रवृद्धि

4. **वृक्ष द्वारा वेध**—भूखण्ड या भवन के समीप बड़े व घने वृक्ष नहीं होने चाहिएं। द्वार के सम्मुख या पूर्व या उत्तर की ओर तो कदापि नहीं होना चाहिएं। प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों के प्रवेश में बाधा पहुँचाने वाले घने वृक्ष तो कदापि नहीं होने चाहिएं। दक्षिण में पाकर, पश्चिम में वटवृक्ष, उत्तर में गूलर और पूर्व में पीपल अशुभ होते हैं। उत्तर में पाकर, पूर्व में वटवृक्ष, दक्षिण में गूलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष शुभ होता है।
5. **सूर्य की प्रकाश रश्मियों में बाधक कोई भी वस्तु भूखण्ड या भवन के समीप नहीं होनी चाहिए।** जो भवन, मठ या मन्दिर सूर्य रश्मियों से वंचित रहती है वह अशुभ होता है उसे त्याज्यना चाहिए। घर में स्थित कुआँ भी दूसरे व तीसरे प्रहर की छाया से वंचित रहना चाहिए।
6. **श्मशान, कब्रिस्तान या मकबरा से वेध**—भूखण्ड या भवन के पास, पीछे या सामने श्मशान, कब्रिस्तान या मकबरा नहीं होना चाहिए। ऐसे भूखण्ड में भवन निर्माण या भवन में वास वर्जित है।

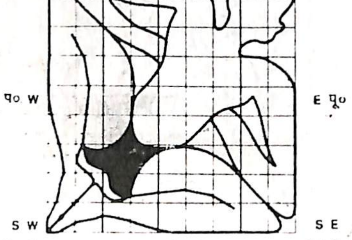

जलाशय पूर्व में पुत्रनाश, आग्नेय कोण में अग्निभय, दक्षिण में शत्रुभय, नैर्ऋत्य में स्त्री कलह, पश्चिम में स्त्री दुष्टा हो जाए, वायव्य में निर्धनता, उत्तर में धनप्रदा और ईशान कोण में पुत्रकारक होता है।

7. **द्वार वेध**—भूखण्ड या बने भवन के मुख्यद्वार के सम्मुख किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि भवन के मुख्य द्वार के सामने पेड़, वृक्ष, दीवार, कोना, खंभा, खाई, कुआँ, कीचड़, मन्दिर या मन्दिर की छाया, कोई कब्र, लम्बी गली या कोई अन्य बाधा नहीं होनी चाहिए, यदि है तो भूखण्ड या भवन अशुभ है और त्याज्य है।

इस अध्याय में भूखण्ड या भवन संबंधी स्थिति व उनके वेधों की चर्चा की है। अब अगले अध्याय में 'भूमि का शल्योद्वार कैसे हो' इसकी चर्चा सरल भाषा में समझायेंगे।

सूर्य की प्रकाश रश्मियों में बाधक कोई भी वस्तु भूखण्ड या भवन के निकट नहीं होनी चाहिए। अतः भवन के मुख्यद्वार के सामने पेड़, वृक्ष, दीवार, कोना, खंभा, खाई, कुआँ, कीचड़, धर्मस्थल, कब्र, लम्बी गली या कोई अन्य बाधा नहीं होनी चाहिए।

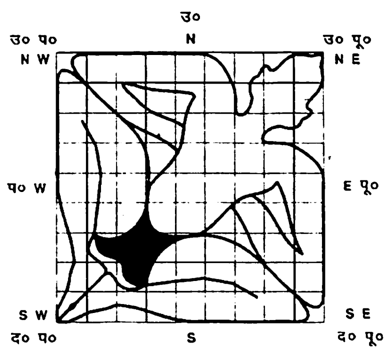

8

भूमि का शल्य शोधन

भवन निर्माण करने से पूर्व भूखण्ड का शल्य शोधन अर्थात् शल्योद्धार किया जाता है। शल्य से तात्पर्य भूमि के गर्भ (अन्दर) में किसी दोषपूर्ण वस्तु का होना है, जैसे कि पशु या मानव अस्थि, लोहा, पत्थर, लकड़ी, कोयला या अन्य धातु आदि। शल्य शोधन या भूमि की शुद्धि किए बिना भूखण्ड पर भवन निर्माण करने से भवन दूषित हो जाता है और उसमें रहने वाले अनेक प्रकार के कष्ट व पीड़ाओं से परेशान रहते हैं। आकस्मिक आपदा, धन हानि एवं मृत्यु तक का भय बना रहता है। भूखण्ड में दबे हुए पदार्थों के कारण भवन में शल्य दोष रहता है। अतः शल्य को भूखण्ड में से निकालकर ही भवन निर्माण करना चाहिए। शास्त्रों में शल्य निकालने की रीतियाँ दी गई हैं।

शल्य कैसे जानें ?

गृह निर्माण हेतु चयनित भूखण्ड को 9 भागों में विभाजित करें और उनमें अ, क, च, द, त, प, य, श को पूर्व, पूर्व-दक्षिण, दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम, पश्चिम-उत्तर, उत्तर, उत्तर-पूर्व में लिखें और मध्य में ह लिखें, देखें चित्र—एक।

अब भूस्वामी से कहें कि वह इष्टदेव का स्मरण करके ब्राह्मण किसी फूल का, क्षत्रिय किसी नदी का, वैश्य किसी देवता और अन्य जाति के लोग किसी फल के नाम का उच्चारण करें। अब फूल, नदी, देवता या फल का पहला अक्षर चक्र में देखें किस भाग पर हैं, जिस भाग में हो

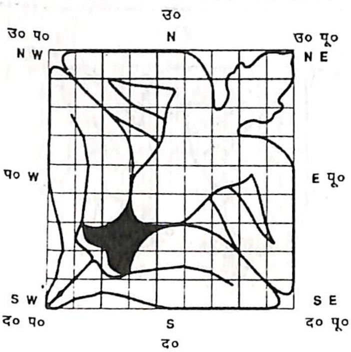

भूखण्ड या भवन के दक्षिण में पाकर, पश्चिम में वटवृक्ष, उत्तर में गूलर और पूर्व में पीपल का वृक्ष होना अशुभ है। उत्तर में पाकर, पूर्व में वटवृक्ष, दक्षिण में गूलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष होना शुभ है।

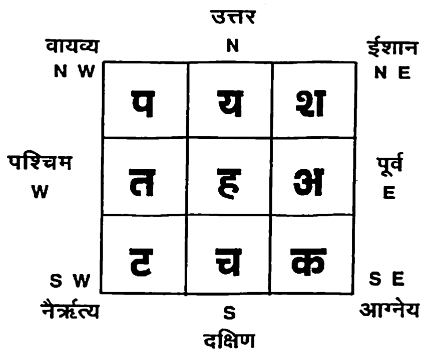

उसमें शल्य को समझे। शल्य की दिशा, शल्य की वस्तु, शल्य कितना नीचे और फल निम्न प्रकार समझें—

अक्षर	दिशा	शल्य की वस्तु	शल्य कितना नीचे	शल्य का फल
अ	पूर्व	मनुष्य की हड्डी	डेढ़ हाथ नीचे	मृत्युकारक
क	आग्नेय	गधे की हड्डी	दो हाथ नीचे	राजभय या दण्डकारक
च	दक्षिण	मनुष्य की हड्डी	कमर भर नीचे	रोग से मरणकारक
ट	नैर्ऋत्य	कुत्ते की हड्डी	डेढ़ हाथ नीचे	बालकों के लिए हानिकारक
त	पश्चिम	बच्चे की हड्डी	डेढ़ हाथ नीचे	भवन स्वामी घर में न रहे
प	वायव्य	भूसा/कोयला	चार हाथ नीचे	मित्रहानि
य	उत्तर	बालक की हड्डी	कमर भर नीचे	धनहानि
श	ईशान	गाय की हड्डी	डेढ़ हाथ नीचे	पशुनाश
ह	मध्य	मानव खोपड़ी, राख, लोहा	तीन हाथ नीचे	अत्यन्त कष्टदायी

टिप्पणी—यदि उपर्युक्त अक्षरों से अतिरिक्त प्रथम अक्षर हो तो भूमि में शल्य नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।

शल्य शोधन या भूमि की शुद्धि किए बिना भूखण्ड पर भवन निर्माण करने से भवन दूषित हो जाता है। उसमें रहने वाले परेशान, कष्ट, आकस्मिक आपदा, धनहानि व मृत्युभय से त्रस्त रहते हैं।

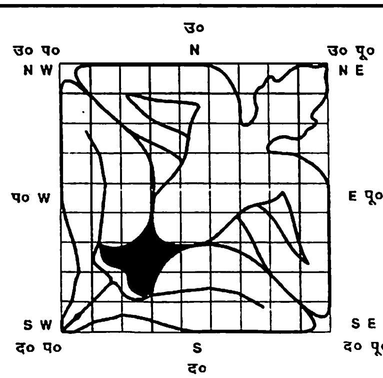

यदि भूमि में शल्यज्ञान करके खोदने पर शल्य मिले तो शल्य शोधन करना चाहिए।

शल्य शोधन कैसे करें ?

जिस स्थान पर शल्य हो उस स्थान पर एक पुरुष जितनी गहराई तक गड्ढा खोदकर उसमें से मिट्टी निकालकर फेंक दें और किसी कार्य में न लाएँ। उसके स्थान पर नयी शुद्ध मिट्टी भरने से शल्य शोधन हो जाता है।

शल्योद्वार या शल्य शोधन के उपरान्त भवन निर्माण करने से भूमि सम्बन्धी दोष नहीं रहता है। शल्य शोधन भवन बन जाने के बाद कर पाना सम्भव नहीं है।

शल्य शोधन करें या न करें ?

शल्य शोधन अवश्य हो। लेकिन शल्य ज्ञान की अनेक रीतियाँ हैं जो प्रचलित हैं। ये सब वर्तमान में व्यवहारिक नहीं लगती हैं। लेकिन सुविधा के लिए एक रीति ऊपर दे दी गई है।

यदि भूखण्ड में दस फुट से अधिक गहराई में शल्य हो तो उसका दोष नहीं होता है। सामान्यत: जिस भूखण्ड पर भवन निर्माण करना हो, उसमें भूस्वामी के बराबर गहराई तक खोदकर मिट्टी निकाल लें और पुन: नई मिट्टी भर दें। निकाली गई मिट्टी फेंक दें उसे किसी कार्य में नहीं लाना चाहिए। यह कर लेने पर भूखण्ड में दोष नहीं रहता है। उस पर भवन निर्माण करना उचित है।

इस अध्याय में भूमि का शल्य शोधन करना सरल ढंग से समझा दिया है। भवन निर्माण करने से पूर्व अवश्य करें। इससे शल्य दोष दूर हो जायेगा व भवन सुखमय होगा। अब अगले अध्याय में वास्तु पुरुष की चर्चा करेंगे।

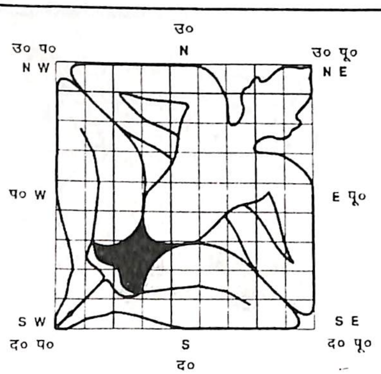

शल्य दस फुट से अधिक गहराई में हो तो उसका दोष नहीं रहता है। भूस्वामी के कद के बराबर गहराई तक भूखण्ड से मिट्टी खोदकर निकालें और पुन: नई मिट्टी से भर दें। निकाली गई मिट्टी प्रयोग में न लाकर फिंकवा देने पर शल्य दोष नहीं रहता है।

9 वास्तु पुरुष

इस अध्याय में वास्तु-पुरुष संबंधी ज्ञान की चर्चा करेंगे। वास्तु पुरुष का महत्त्व भवन निर्माण में हैं और इसे विभिन्न प्रकार से परिकल्पित किया जाता है।

वास्तु पुरुष की उत्पत्ति एवं परिचय

त्रेतायुग में एक महाभूत हुआ जिसने अपने सुप्त शरीर से समस्त भुवन को आच्छादित कर लिया। उसे देखकर इन्द्र और सभी देवता भयभीत होकर ब्रह्मा जी के पास गए और उनसे बोले—"प्रभु ! हम सब महाभूत से भयभीत हैं। आप बताएं हम सब कहाँ जाएं ?"

उनकी बात सुनकर ब्रह्माजी ने कहा—"हे देवगण ! भय मत करो। इस महाबली महाभूत को पकड़कर भूमि पर अधोमुख (मुँह के बल) गिरा दो और निर्भय हो जाओ।"

ब्रह्मा जी के कहने पर सभी देवताओं ने उस प्राणी को पकड़ा तथा अधोमुख करके पृथ्वी पर गिरा दिया। ब्रह्मा जी ने इस महाभूत को वास्तु पुरुष की संज्ञा दी।

एक दिन भाद्रपद मास को कृष्णपक्ष, तृतीया तिथि, दिन शनिवार, कृत्तिका नक्षत्र, व्यतीपात योग व विष्टि करण व कुलिक मुहूर्त में जन्मा महाभूत रूपी वास्तु पुरुष भयंकर शब्द करता हुआ ब्रह्माजी के पास पहुँचा और बोला—"हे प्रभु ! आपने इस सम्पूर्ण चराचर जगत् की रचना की है पर मुझ निरपराध को देवगण अत्यन्त पीड़ा देते हैं। मेरा भी कुछ सोचें।"

जब देवताओं ने वास्तुपुरुष को अधोमुख गिराया था तो उसका सिर ईशान कोण में एवं पैर नैर्ऋत्य कोण में थे। अधोमुख वास्तु पुरुष के शरीर पर देवों का स्थापन करते हैं। पूजा के समय वास्तु पुरुष की उत्तान देह का स्मरण करना चाहिए।

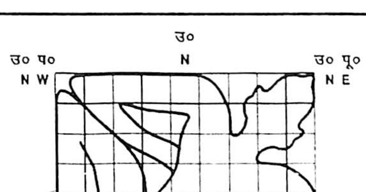

उसकी बात सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—"जो ग्राम, नगर, दुर्ग, शहर, भवन, जलाशय, धारा एवं किसी भी निर्माण कार्य में तुम्हारा पूजन नहीं करेगा वह दरिद्र और मृत्यु को प्राप्त होगा। उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा और तुम्हारा आहार होगा।" ऐसा कहकर ब्रह्माज़ी अन्तर्ध्यान हो गए।

वास्तु पुरुष को देवताओं ने अधोमुख रूप में गिराया था तो उसका सिर ईशान (उत्तर-पूर्व) कोण में एवं पैर नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में थे। वास्तु पुरुष भूमि पर शयन करते हुए है और सदैव भूमि में वास करता है। अधोमुख वास्तु पुरुष के शरीर में देवों का स्थापन किया जाता है। पूजा के समय वास्तु पुरुष की उत्तान देह का स्मरण करना चाहिए।

वास्तु पुरुष का भूखण्ड पर भवन निर्माण योजना में महत्त्व

वास्तु पुरुष का महत्त्व भवन निर्माण करते समय भूखण्ड पर निर्माण योजना से है। यह वास्तुकला की मूल परम्परा है। वास्तु पुरुष एक है। उसे भवन निर्माण की योजना बनाते समय विभिन्न प्रकार से परिकल्पित किया जाता है। वास्तु पुरुष का विभाजन भवन विशेष की योजनानुसार परिकल्पित किया जाता है।

वास्तु पुरुष की कल्पना करने पर पुरुषांगों की कल्पना स्वत: हो जाती है। जिस प्रकार मानव शरीर के विभिन्न अवयवों में मूर्धा (Cerebrum), शीर्ष, मुख, कटि, जानु, पाद, शिरा, अनुशिरा, केश, नाड़ी आदि होते हैं, उसी प्रकार वास्तु पुरुष में भी इनकी परिकल्पना होती है। वास्तु पुरुष के किस अंग (अवयव) पर कौन सा निवेश (निर्माण) निहित या अविहित है, यह ज्ञात है। जैसे मर्म अवयवों पर कोई निवेश उचित नहीं है, अत: वह त्याज्य है, इसलिए निर्माण योजना करते समय यह स्थान खुला रखा जाता है।

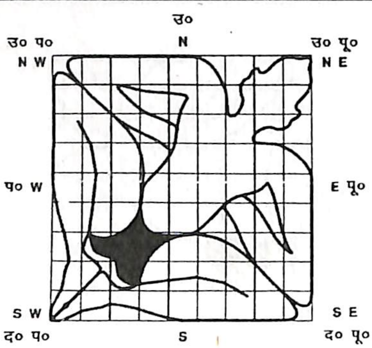

वास्तुपुरुष के मर्म अंगों पर कोई निर्माण नहीं करना चाहिए। निर्माण योजना का प्रारूप बनाते समय मर्म स्थानों को खुला रखा जाता है। गृहकर्म में 81 और मन्दिर व राजमहल में 64 कोष्ठक वास्तुमण्डल का निर्माण व पूजा की जाती है।

भूखण्ड में कौन सा भाग किस देवता विशेष के पद पर विन्यास है, यह सब ज्ञान वास्तु-विन्यास में किया जाता है। वास्तु चक्र में समस्त देवता सूर्य रश्मि जाल की परिभाषिक संज्ञाएं हैं जिन्हें भवन निर्माण में दिक्-सामुख्य के अनुकूल प्रतिष्ठित किया जाता है।

पद देवता विन्यास

जिस भूखण्ड में भवन निर्माण करना होता है उसे 81 या 64 पदों में विभाजित कर लिया जाता है और फिर भवन निर्माण हेतु पद देवता विन्यास किया जाता है। पद विन्यास के अनुरूप ही शिल्पी भवन निर्माण योजना की युक्तियाँ बनाते हैं।

गृहकर्म में 81 एवं मन्दिर व राजमहल संबंधी कार्य में 64 कोष्ठात्मक वास्तुमण्डल का निर्माण एवं पूजा का विधान है।

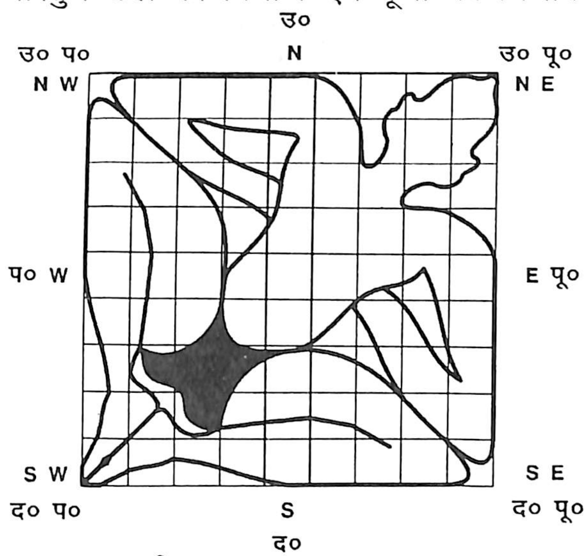

चित्र—1—वास्तुपुरुष

भवन निर्माण संबंधी किसी भी कार्य में जो वास्तु शान्ति या वास्तु पूजा नहीं करता है, वह शीघ्र ही दरिद्र और अनेक बाधाओं का सामना करते हुए मृत्यु को पाता है।

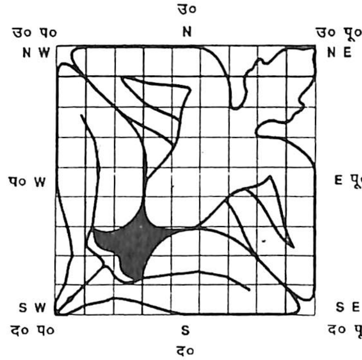

वास्तु पुरुष के मस्तक पर ब्रह्मा, कानों में पर्जन्य और दिति, गले में जल, कंधों पर जय और अदिति, स्तनों में अर्यमा-भूधर, हृदय में आपवत्स, इंद्रादि पंच देवता, दक्षिण बाहु में नागादि, वाम बाहु में सावित्र, सविता दोनों दक्षिण हाथ में हैं रूद्रादि दो देव वामहाथ में हैं, मैत्र ऊरु में, ब्रह्मा नाभि में तथा पृष्ठ में इन्द्र और लिंग में जय, दोनों जानु में अग्नि, रोग, पुषा और नंदिगणादि सात देवता गुल्फों में और पितृगण पैरों में हैं।

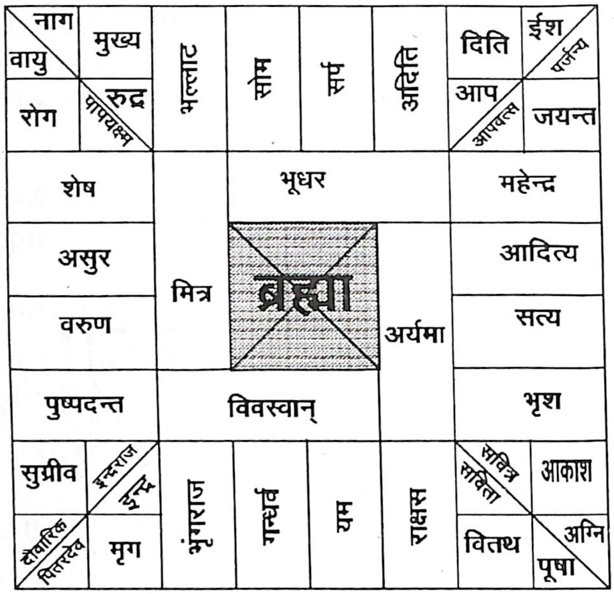

चित्र—2—वास्तुपुरुष मण्डल (64 कोष्ठक)

पूर्व में—1. ईश (शिखि), 2. पर्जन्य, 3. जयन्त, 4. इन्द्र (महेन्द्र), 5. सूर्य, 6. सत्य, 7. भृश, 8. आकाश, **दक्षिण में**—9. अग्नि, 10. पूषा, 11. वितथ, 12. ग्रहक्षत (राक्षस), 13. यम, 14. गन्धर्व, 15. भृंगराज, 16. मृग, 17. पितृदेव या नैरुत, **पश्चिम में**—18. दौवारिक, 19. सुग्रीव,

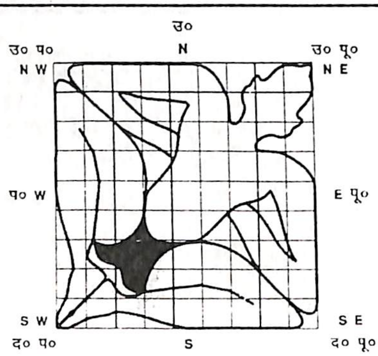

वर्तमान तिथि संख्या में चार जोड़कर योगफल में दो से गुणा करके गुणनफल में गृहस्वामी के नामाक्षर की संख्या जोड़कर 3 से भाग देने पर 1 शेष बचे तो वास्तुपुरुष स्वर्ग में, 2 शेष बचे तो पाताल में एवं 0 शेष बचे तो मृत्युलोक में होता है। स्वर्ग व पाताल में शुभ एवं मृत्युलोक में मृत्युकारक होता है।

20. पुष्पदन्त, 21. वरुण, 22. असुर, 23. शेष, 24. रोग और **उत्तर में**— 25. वायु, 26. नाग (अहिर्बुध्न), 27. मुख्य, 28. भल्लाट, 29. सोम, 30. सर्प, 31. अदिति, 32. दिति आदि 32 देवों को स्थापित करना चाहिए।

ईशान कोण में आप, आपवत्स, आग्नेय कोण में सवित्र–सविता, नैर्ऋत्य कोण में इन्द्र–इन्द्रराज, वायव्य कोण में रुद्र–पापयक्ष्म और मध्य के नौ पदों को ब्रह्मा का स्थान माना गया है। ब्रह्मा के उत्तर के तीन पदों में महीधर (पृथ्वीधर), दक्षिण के तीन पदों में विवस्वान्, पश्चिम के तीन पदों में मित्र और पूर्व के तीन पदों में अर्यमा नामक देवता स्थापित किए जाते हैं। इस पद विन्यास के आधार पर ही शिल्पी भवन निर्माण की योजना करते हैं।

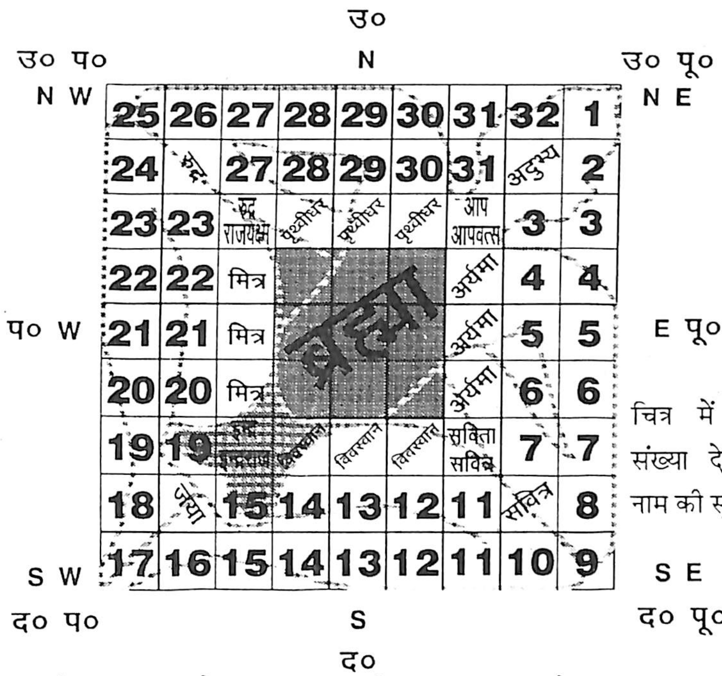

चित्र में अंकित संख्या देवता के नाम की सूचक हैं।

चित्र—3—देवता का पदविन्यास (81 कोष्ठक)

सिंह, कन्या, तुला राशि में सूर्य हो तो नैर्ऋत्य कोण में, वृश्चिक, धनु, मकर राशि का सूर्य हो तो वायव्य कोण में, कुंभ, मीन, मेष राशि में सूर्य हो तो ईशान कोण में और वृष, मिथुन, कर्क राशि में सूर्य हो तो आग्नेय कोण में वास्तु पूजा कल्याणकारी होती है।

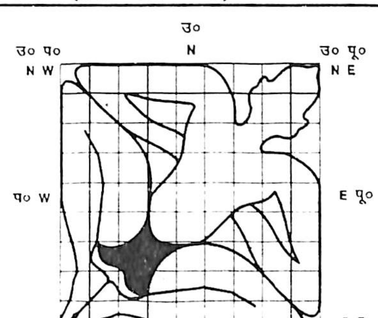

टिप्पणी—देवता के पद विन्यास में अंकित 1, 2, 3 आदि अंक देवता के नाम की क्रम संख्या है। 1 से तात्पर्य ईश, 2 से तात्पर्य पर्जन्य और 3 से तात्पर्य जयन्त है, इसी प्रकार अन्य अंकों के विषय में जानें।

वास्तु पुरुष का वास ज्ञान

वर्तमान तिथि संख्या में 4 जोड़कर 2 से गुणा करें और उसमें गृहस्वामी के नामाक्षर की संख्या जोड़कर 3 से भाग देने पर जो शेष बचे उसके अनुसार वास्तु पुरुष का वास समझें।

शेष	वास्तु पुरुष का वास
1	स्वर्ग
2	पाताल
0	मृत्युलोक

वास्तु पुरुष का वास स्वर्ग में हो तो लाभदायक, पाताल में वास हो तो लक्ष्मी अर्थात धन प्राप्ति और मृत्युलोक में वास होने पर वास्तु पुरुष के रहने पर मृत्यु भय या मृत्यु होती है।

वास्तु पुरुष के वास के शुभाशुभ ज्ञान के अनुसार गृह निर्माण कार्य प्रारम्भ करने का विचार करना चाहिए।

वास्तु पूजा विचार

गोचर के सूर्य से विचार करना चाहिए। सूर्य सिंह, कन्या, तुला राशि में हो तो नैर्ऋत्य कोण में, वृश्चिक, धनु, मकर राशि का सूर्य हो तो वायव्य कोण में, कुंभ, मीन, मेष, राशि में सूर्य हो तो ईशान कोण में और वृष, मिथुन कर्क राशि में सूर्य हो तो आग्नेय कोण में वास्तु पूजा करने से कल्याण होता हैं, ऐसा विद्वानों का कहना है।

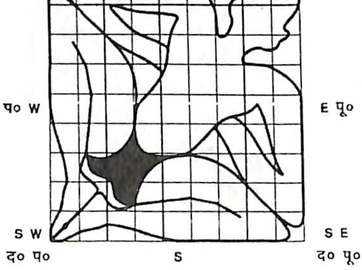

भवन निर्माण करते समय भूमि वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप चयन करके भूमि का शल्य शोधन करके निज आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर भवन का प्रारूप वास्तुविद् की सलाह से बनाना चाहिए।

भवन निर्माण करते समय गृहारंभ वास्तु शान्ति में वास्तु पूजा करें। शिलान्यास के लिए उपर्युक्त प्रकार से कोण का निश्चय करके पूजा करनी चाहिए।

इस अध्याय में वास्तु पुरुष का परिचय दे दिया गया है। यह उपयोगी ज्ञान वास्तुशास्त्र में महत्त्वपूर्ण है। इसको समय के अनुरूप उपयोग में लाना चाहिए। अब अगले अध्याय में भवन निर्माण योजना पर विचार करेंगे।

भवन का प्रारूप बनवाकर विद्वान ज्योतिषी से शुभ मुहूर्त निकलवाकर नींव खनन करके गृह निर्माण प्रारम्भ करना चाहिए। शिलान्यास व वास्तुशान्ति शास्त्रीय रीति से करके भवन बनाना चाहिए।

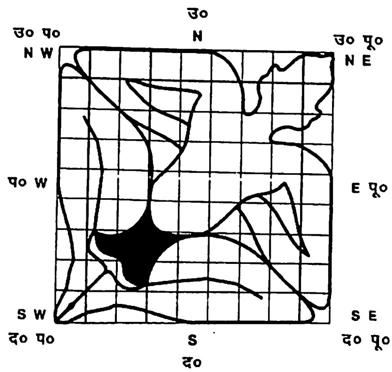

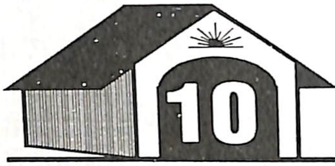

भवन निर्माण योजना और प्रारूप विचार

भूखण्ड का चयन व शोधन करने के पश्चात् भवन निर्माण कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए। भवन निर्माण योजना और प्रारूप बनाते समय किन उपयोगी वास्तु नियमों का ज्ञान होना चाहिए, इसकी चर्चा इस अध्याय में करेंगे।

भवन निर्माण हेतु अनमोल 31 सूत्र

1. भवन निर्माण करने से पूर्व भूमि का चयन वास्तु सिद्धान्तों के अनुसार करें।
2. भूमिचयन करके चयनित भूखण्ड का शल्य शोधन करें।
3. शल्य शोधन करके अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप भवन निर्माण का प्रारूप योग्य वास्तुविद् की सहायता से बनाएँ।
4. भवन का प्रारूप बन जाने के बाद गृह निर्माण हेतु शुभ मुहूर्त विद्वान ज्योतिषी से निकलवाकर ही भवन निर्माण करना प्रारम्भ करें।
5. **अधिक खुली जगह**—भूखण्ड पर भवन का निर्माण इस प्रकार करें कि चारों ओर समान स्थान छोड़े या उत्तर व पूर्व की ओर दक्षिण व पश्चिम से अधिक स्थान खाली या खुला रखें। देखें चित्र—1 व 2।

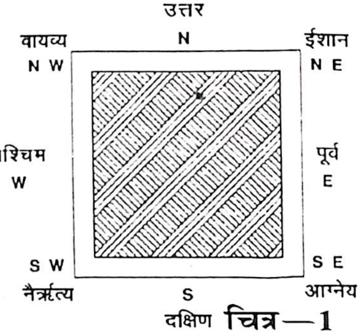

चित्र—1

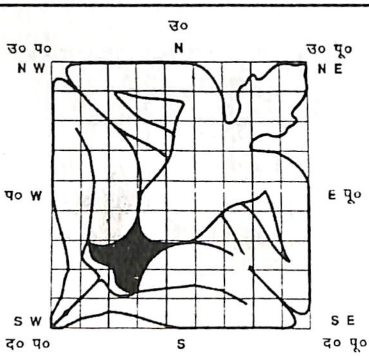

भूखण्ड पर भवन बनाते समय दक्षिण व पश्चिम दिशा की अपेक्षा उत्तर व पूर्व दिशा में सर्वाधिक खुला स्थान रखना चाहिए। ऐसा करने पर सूर्य प्रकाश भवन में सर्वाधिक रहता है।

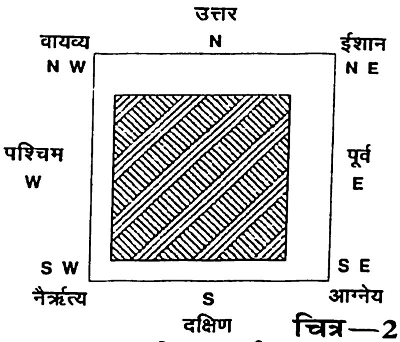

चित्र—2

चित्र-1 एवं चित्र-2 के अनुसार भूखण्ड के चारों ओर खुला स्थान या पूर्व व उत्तर दिशा में अधिक खुला स्थान व दक्षिण-पश्चिम दिशा में कम खुला स्थान छोड़ना भवन निर्माण के लिए उपयुक्त एवं ग्राह्य है। पूर्व में खुला स्थान रखने से सूर्य प्रकाश अधिक भवन में प्रवेश करेगा।

6. यदि निर्माण कार्य चरणबद्ध ढंग से करना है तो सर्वप्रथम पश्चिम या दक्षिण की ओर ही करना चाहिए। बाद में अन्य दिशाओं में बढ़ाना चाहिए।
7. यदि दो मन्जिला भवन बना रहे हैं तो पूर्व और उत्तर दिशा में भवन की ऊँचाई कम रखें।
8. भवन में खुली छत पूर्व एवं उत्तर दिशा में ही रखनी चाहिए।
9. उत्तर एवं पूर्व दिशा में दरवाजे एवं खिड़कियाँ अधिक रखनी चाहिएं तथा उन्हें सम संख्या में रखना चाहिए। द्वार व खिड़कियों की संख्या 2, 4, 6, 8 हो, 1, 3, 5, 7, 9 न हो और उनकी संख्या के अन्त में शून्य न हो अर्थात् 10, 20 आदि।
10. दक्षिण व पश्चिम दिशा में मोटी दीवारें बनानी चाहिए।
11. घर के मुख्य द्वार पर मंगल चिह्न बनाना चाहिए जैसे—स्वास्तिक या ॐ आदि।

12. भवन में कक्ष कहाँ-कहाँ बनाएँ ?

भवन निर्माण करते समय किस दिशा में कौन सा कक्ष निर्माण करें, यदि इसका ध्यान नहीं रखा जायेगा तो भवन वास्तु सिद्धान्तों के विपरीत

निर्माण कार्य सर्वप्रथम पश्चिम या दक्षिण दिशा की ओर करने के बाद अन्य दिशाओं में बढ़ाना चाहिए। दक्षिण व पश्चिम दिशा में मोटी दीवारें बनानी चाहिएं।

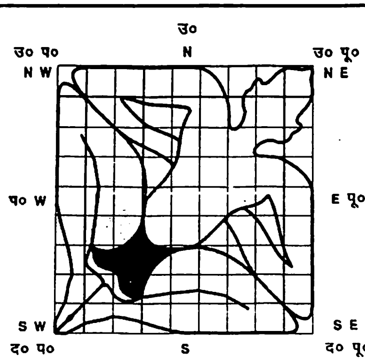

बनेगा और भवन का स्वामी विभिन्न कष्टों से परेशान रहेगा। प्रायः मनुष्य अपनी रुचि के अनुरूप भवनों के मानचित्र बनवाकर गृह निर्माण करता है। यदि वह वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप भवन का मानचित्र बनवाकर निर्माण कार्य करे तो भावी संभावित हानियों एवं कष्टों से बचा जा सकता है।

आजकल लोग भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के विपरीत अपनी इच्छानुरूप भवन निर्माण कर रहे हैं। अधिकांश भवन ऐसे मिल जायेंगे जिसमें रसोईघर मुख्यद्वार के पास बना मिलेगा, इस तरह से रसोईघर बनाने

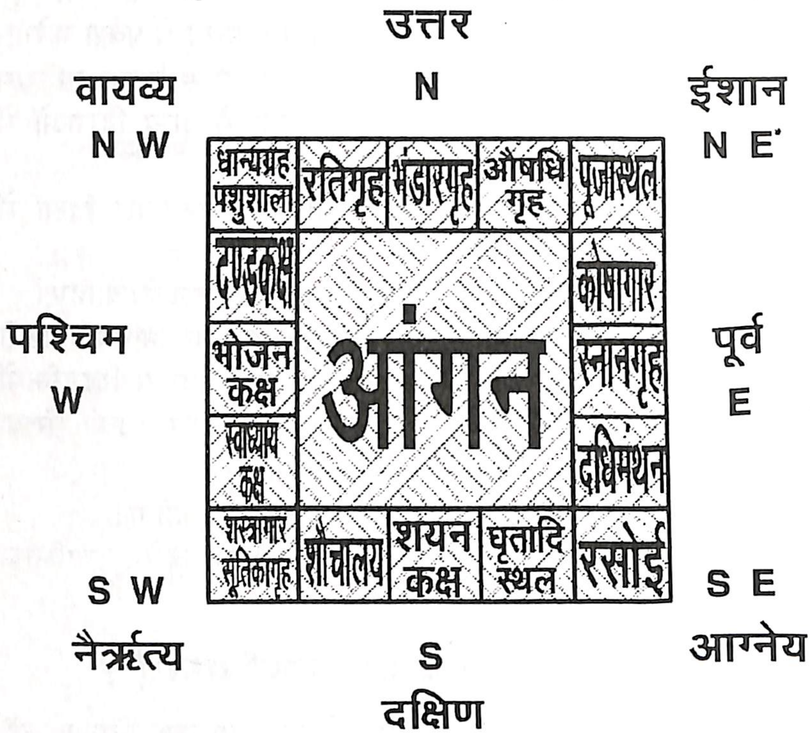

चित्र—3

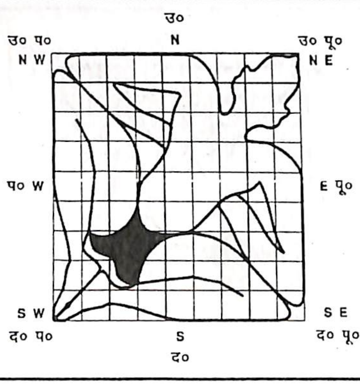

भवन में खुली छत पूर्व एवं उत्तर दिशा में रखनी चाहिए। दो मन्जिला भवन बनाते समय दक्षिण व पश्चिम की अपेक्षा पूर्व और उत्तर की ऊँचाई कम रखनी चाहिए।

का तो प्रचलन सा हो गया है। इसको यह कहकर ठीक बताते हैं कि गृहणी को रसोईघर से किसी भी व्यक्ति के आने-जाने का ज्ञान हो जाता है, वैसे भी स्त्रियों का रसोईघर में अधिक समय बीतता है। यह स्थिति अनुपयुक्त है और इससे बचना ही श्रेष्ठ है।

भारतीय वास्तुशास्त्र के ग्रन्थ विश्वकर्मा प्रकाश के अनुसार भूखण्ड के सोलह भाग करने चाहिएं और चित्र-3 के अनुसार दिशाओं का ध्यान रखते हुए कक्षों का निर्माण करना शुभ एवं श्रेष्ठ फलदायी है।

चित्र-3 में अनेक कक्ष दर्शाए गए हैं। आधुनिककाल में छोटे-छोटे भूखण्डों पर भवन निर्माण होता है। इसलिए चित्रानुसार कक्षों की व्यवस्था करना अत्यन्त कठिन है। आपके ज्ञान हेतु पूर्णत दर्शाया गया है। लेकिन आप अपनी सामान्य आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें संशोधन कर सकते हैं परन्तु मूल सिद्धान्तों की अनदेखी न करें।

आजकल शस्त्रागार, सूतिका गृह, दधिमंथन, पशुशाला, रतिगृह, दण्डकक्ष, औषधि गृह, घृतादि स्थान व्यवहार में रखना सम्भव नहीं है। वस्तुतः शस्त्रागार को घरेलू मशीनरी, औजार रखने, पशुशाला को बच्चों के लिए कमरा, दण्डकक्ष व रतिकक्ष को अतिथि का कक्ष या आसपास के कक्षों को मिलाकर बड़ा करके भवन निर्माण कर सकते हैं।

चित्र में स्नानगृह व शौचालय अलग-अलग दर्शाए गए हैं परन्तु स्थान सीमित होने के कारण सम्भव न हो और स्नानगृह व शौचालय साथ-साथ बनाने पड़ें तो दक्षिण-पश्चिम भाग में या वायव्य कोण में बनाने चाहिएं। पूर्व दिशा में शौचालय और स्नानगृह साथ-साथ कदापि नहीं बनाना चाहिए। यदि कोई विकल्प न मिले तो आग्नेय कोण में शौचालय बनाकर उसके साथ पूर्व की ओर स्नानगृह समायोजित कर लेना चाहिए। यह ध्यान रखें कि स्नानगृह व शौचालय नैर्ऋत्य व ईशान कोण में कदापि न बनाएँ। जहाँ तक सम्भव हो अलग-अलग बनाने चाहिएं।

भवन में उत्तर एवं पूर्व दिशा में दरवाजे व खिड़कियाँ अधिक रखने चाहिएं। दरवाजे व खिड़कियों की संख्या सम (2, 4, 6, 8) हो, विषम (1, 3, 5, 7) न हो तथा उनकी संख्या के अन्त में शून्य (10, 20, 30) न हो।

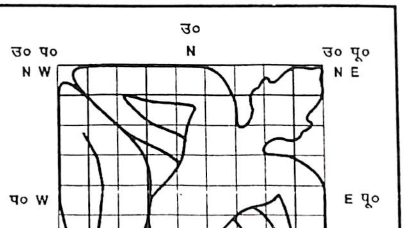

अब चित्रों द्वारा बतला रहे हैं कि भूखण्ड या भवन में कौन सा कक्ष कहाँ बनाएँ।

रसोईघर हेतु उपयुक्त स्थान

रसोईघर उत्तर, उत्तर-पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण दिशा में नहीं बनानी चाहिए अर्थात् चित्र-4 में जहाँ क्रॉस (✗) अंकित है वह स्थान रसोईघर के लिए अनुपयुक्त है। चित्र-4 में पूर्व या आग्नेय दिशा में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित है वहाँ रसोईघर बनाने का उपयुक्त स्थान है।

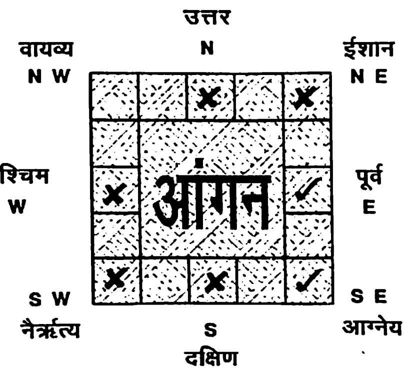

चित्र—4

भोजनालय हेतु उपयुक्त स्थान

उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) या चित्र-5 में जहाँ (✗) का चिह्न अंकित है वहाँ भोजनालय नहीं बनाना चाहिए क्योंकि यह स्थान इसके लिए अनुपयुक्त है। भोजनालय चित्र-5 में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित है वहाँ बनाना चाहिए, यह स्थान इसके लिए उपयुक्त है अर्थात् पूर्व या पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए।

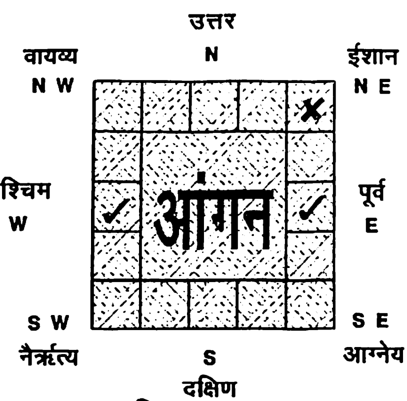

चित्र—5

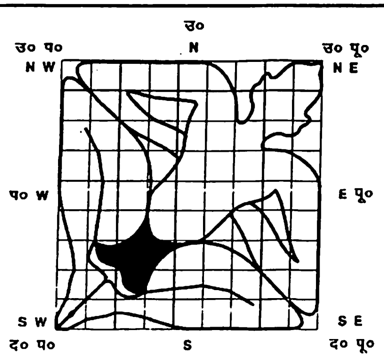

घर के मुख्य द्वार पर मंगल चिह्न बनाना चाहिए, जैसे—स्वास्तिक, ॐ, जुड़वाँ मीन, क्रास, कलश, गणेश, अर्धचन्द्र आदि।

भण्डारगृह हेतु उपयुक्त स्थान

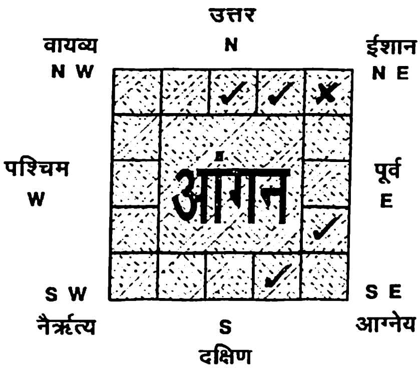

चित्र—6

चित्र-6 में जहाँ पर सही (✓) का चिह्न अंकित हैं वहाँ पर भण्डारगृह (Store) बनाना चाहिए। यह स्थान इसके लिए उपयुक्त है। ईशान कोण में कभी भी भण्डारगृह नहीं बनाना चाहिए। चित्र-6 में ईशान कोण में जहाँ क्रॉस (✗) का चिह्न अंकित हैं वहाँ भण्डारगृह नहीं बनाना चाहिए, यह स्थान अनुपयुक्त है।

पूजास्थल हेतु उपयुक्त स्थान

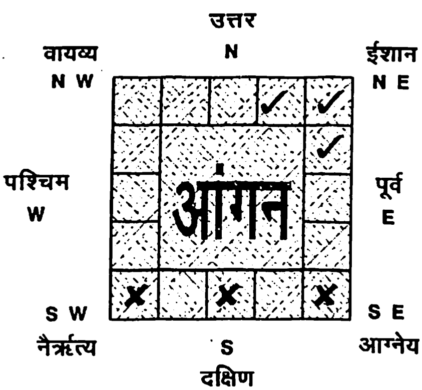

चित्र—7

चित्र-7 में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित हैं वहाँ पर अर्थात् ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में पूजास्थल बनाना उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर पूजास्थल बनाना अनुपयुक्त है। चित्र-7 में जहाँ क्रॉस (✗) का चिह्न अंकित हैं वहाँ पूजास्थल नहीं बनाना चाहिए, यह स्थान अनुपयुक्त है।

भवन में विभिन्न कक्ष वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप बनाने चाहिएं। जो वास्तु सिद्धान्तों की अनदेखी करता है वो विभिन्न बाधाओं व कष्टों से परेशान रहता है।

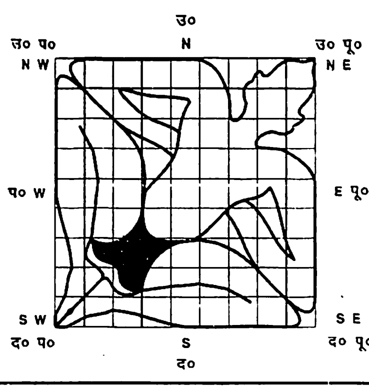

शौचालय हेतु उपयुक्त स्थान

चित्र में जहाँ क्रॉस (✗) का चिह्न अंकित हैं वहाँ पर शौचालय कदापि नहीं बनाना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि ईशान कोण, पूर्व व नैर्ऋत्य कोण में कदापि, शौचालय नहीं बनाना चाहिए क्योंकि यह स्थान अनुपयुक्त है। शौचालय चित्र-8 में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित हैं वहाँ बनाना चाहिए अर्थात् नैर्ऋत्य कोण एवं दक्षिण दिशा के मध्य या नैर्ऋत्य कोण एवं उत्तर दिशा के मध्य में बनाना चाहिए, यह स्थान शौचालय के लिए उपयुक्त है।

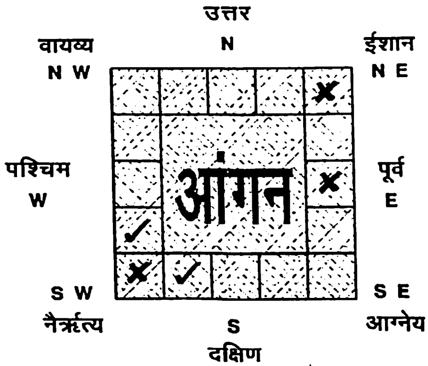

चित्र—8

स्नानगृह हेतु उपयुक्त स्थान

स्नानगृह हेतु ईशान एवं नैर्ऋत्य कोण की दिशाएँ अनुपयुक्त है, यहाँ पर कदापि नहीं बनाना चाहिए। नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य या नैर्ऋत्य कोण व उत्तर दिशा के मध्य एवं मतान्तर से पूर्व दिशा में स्नानगृह बनाना चाहिए क्योंकि यह दिशा उपयुक्त है। चित्र-1 में जहाँ पर सही (✓) का चिह्न है वहाँ स्नानगृह बनाना उपुयक्त और जहाँ क्रॉस (✗) का चिह्न अंकित हैं वहाँ स्नानगृह बनाना अनुपयुक्त है।

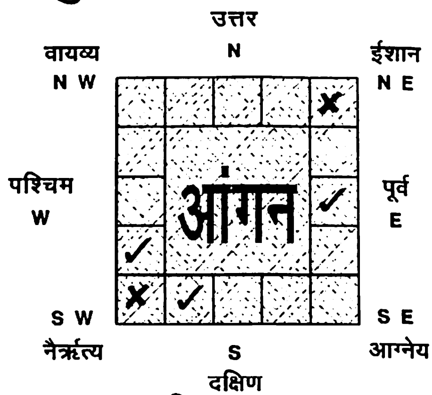

चित्र—9

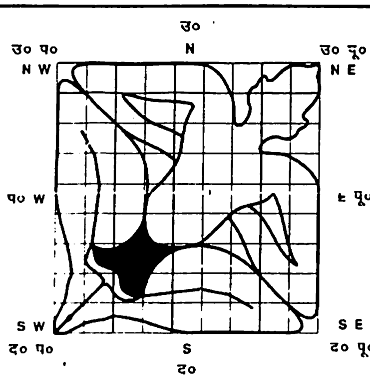

रसोईघर, उत्तर, ईशान, पश्चिम, नैर्ऋत्य एवं दक्षिण दिशा में नहीं बनानी चाहिए। रसोई सदैव आग्नेय या पूर्व दिशा में बनानी चाहिए।

शयनकक्ष हेतु उपयुक्त स्थान

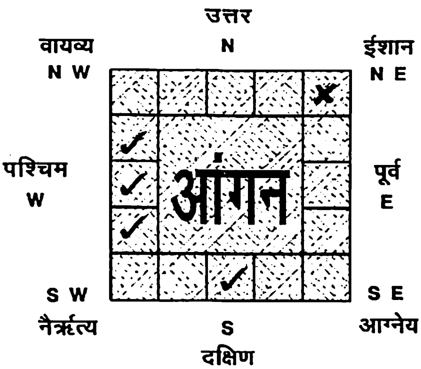

चित्र—10

चित्र-10 में जहाँ पर सही (✓) का चिह्न अंकित हैं वहाँ पर शयनकक्ष (Bed room) बनाना चाहिए, यह स्थान इसके लिए उपयुक्त है। ईशान कोण में कभी भी शयनकक्ष नहीं बनाना चाहिए। दक्षिण, पश्चिम व वायव्य कोण के मध्य एवं नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य का स्थान ही शयनकक्ष के लिए उपयुक्त है।

स्वाध्याय या अध्ययन कक्ष हेतु उपयुक्त स्थान

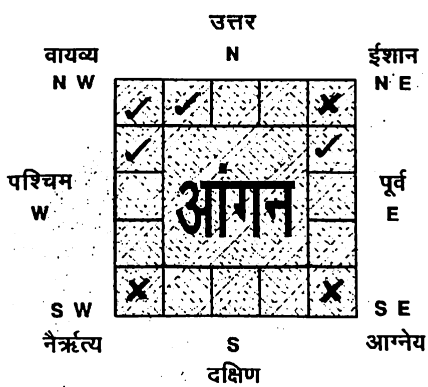

चित्र—11

वायव्य, नैर्ऋत्य कोण और पश्चिम दिशा के मध्य स्वाध्याय कक्ष (Study Room) बनाना उपयुक्त है। यह स्थान चित्र-11 में सही (✓) चिह्न से अंकित किया गया है। ईशान, आग्नेय और नैर्ऋत्य कोण में स्वाध्याय कक्ष कभी नहीं बनाना चाहिए क्योंकि यह स्थान अनुपयुक्त है, चित्र में यह स्थान क्रॉस (✗) चिह्न द्वारा अंकित किया गया है। ईशान कोण में पूर्व दिशा में पूजागृह के साथ अध्ययन कक्ष बनाना सर्वोत्तम है।

ईशान कोण में भोजनालय न बनाकर पूर्व या पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए क्योंकि यह स्थान उपयुक्त है।

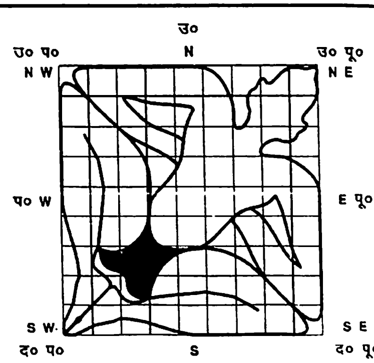

स्वागतकक्ष हेतु उपयुक्त स्थान

मेहमानों के लिए स्वागत कक्ष (Drawing room) वायव्य कोण या ईशान एवं पूर्व दिशा के मध्य में होना चाहिए। देखें चित्र–12, इसमें जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित हैं वहाँ स्वागत कक्ष बनाना चाहिए क्योंकि ये स्थान उपयुक्त है। ईशान, आग्नेय और नैर्ऋत्य कोण में कभी भी स्वागत कक्ष नहीं बनाना चाहिए (देखें चित्र–12 के वे स्थान जहाँ क्रॉस (✗) चिह्न अंकित हैं।

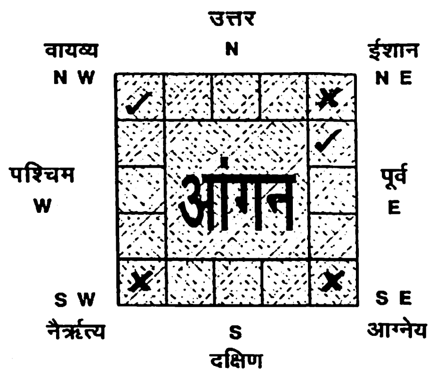

चित्र—12

पानी की टंकी हेतु उपयुक्त स्थान

पानी की टंकी छत पर बनानी हो तो वायव्य व उत्तर दिशा के मध्य या वायव्य व पश्चिम दिशा के मध्य बनाएँ, ये स्थान उपयुक्त हैं (देखें चित्र–13अ जहाँ सही (✗) का चिह्न अंकित हैं)। ईशान, आग्नेय और नैर्ऋत्य कोण में छत पर कदापि टंकी न बनवाएँ (देखें चित्र–13अ जहाँ क्रॉस (✗) चिह्न अंकित है।)

यदि पानी की टंकी भूमिगत

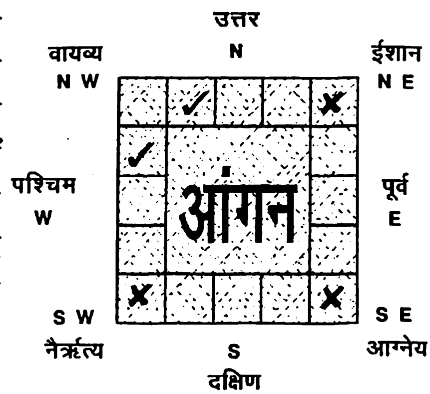

चित्र—13-अ

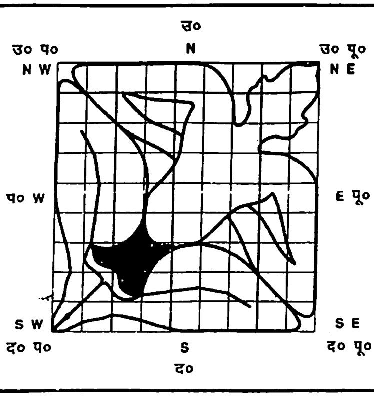

भण्डारगृह ईशान कोण में न बनाकर उत्तर, उत्तर व ईशान कोण के मध्य, पूर्व व आग्नेय कोण के मध्य या दक्षिण व आग्नेय कोण के मध्य बनाना चाहिए।

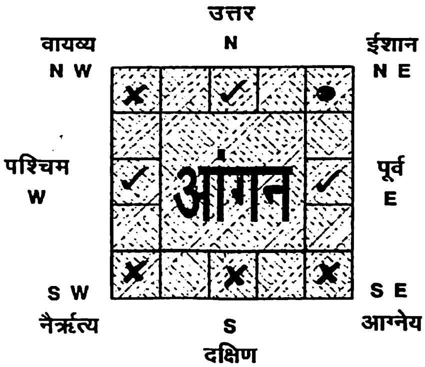

चित्र—13-ब

बनाना चाहते हैं तो वायव्य, नैर्ऋत्य, आग्नेय और दक्षिण दिशा में कदापि न बनवाएँ क्योंकि ये स्थान अनुपयुक्त है (देखें चित्र-13-ब) जहाँ क्रॉस (✘) चिह्न अंकित हैं। भूमिगत पानी की टंकी के लिए सर्वोत्तम स्थान ईशान कोण है (देखें चित्र-13-ब जहाँ बिन्दु (●) चिह्न अंकित हैं। उत्तर, पश्चिम व पूर्व दिशा में भूमिगत टंकी होनी उपयुक्त है (देखें चित्र-13ब जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित हैं।)

वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन के मानचित्र

अब आपकी सुविधा हेतु वास्तुशास्त्र के अनुसार बने मानचित्र दे रहे हैं। यह चार मानचित्र भूखण्ड से एक ओर मार्ग हो तो उसके अनुरूप बनाए गए हैं।

भूखण्ड के उत्तर दिशा में मार्ग हो तो उसके लिए वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार उपयुक्त मानचित्र बनाकर दे रहे हैं (देखें चित्र-14)।

भूखण्ड के दक्षिण दिशा में मार्ग हो तो उसके लिए वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप उपयुक्त मानचित्र बनाकर दे रहे हैं (देखें चित्र-15)।

भूखण्ड के पूर्व दिशा में मार्ग हो तो उसके लिए वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरुप उपयुक्त मानचित्र बनाकर दे रहे हैं (देखें चित्र-16)।

भूखण्ड के पश्चिम दिशा में मार्ग हो तो उसके लिए वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप उपयुक्त मानचित्र बनाकर दे रहे हैं (देखें चित्र-17)।

चयनित भूखण्ड पर भवन का प्रारूप तैयार करते समय वास्तु सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए। भूखण्ड के उत्तर में मार्ग हो तो पृ० 136 के चित्र-14, दक्षिण में मार्ग हो तो पृ०-137 के चित्र-15, पूर्व दिशा में मार्ग हो तो पृ०-138 के चित्र-16 और पश्चिम में मार्ग हो तो पृ०-139 के चित्र-17 से सहयोग लेना चाहिए।

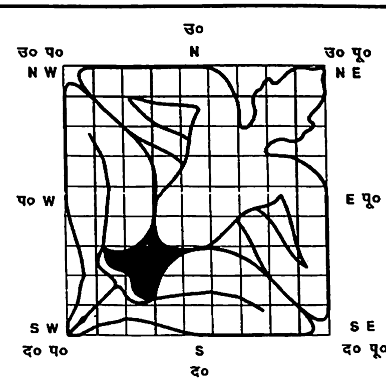

भूखण्ड के उत्तर दिशा में मार्ग हो तो उपयुक्त मानचित्र

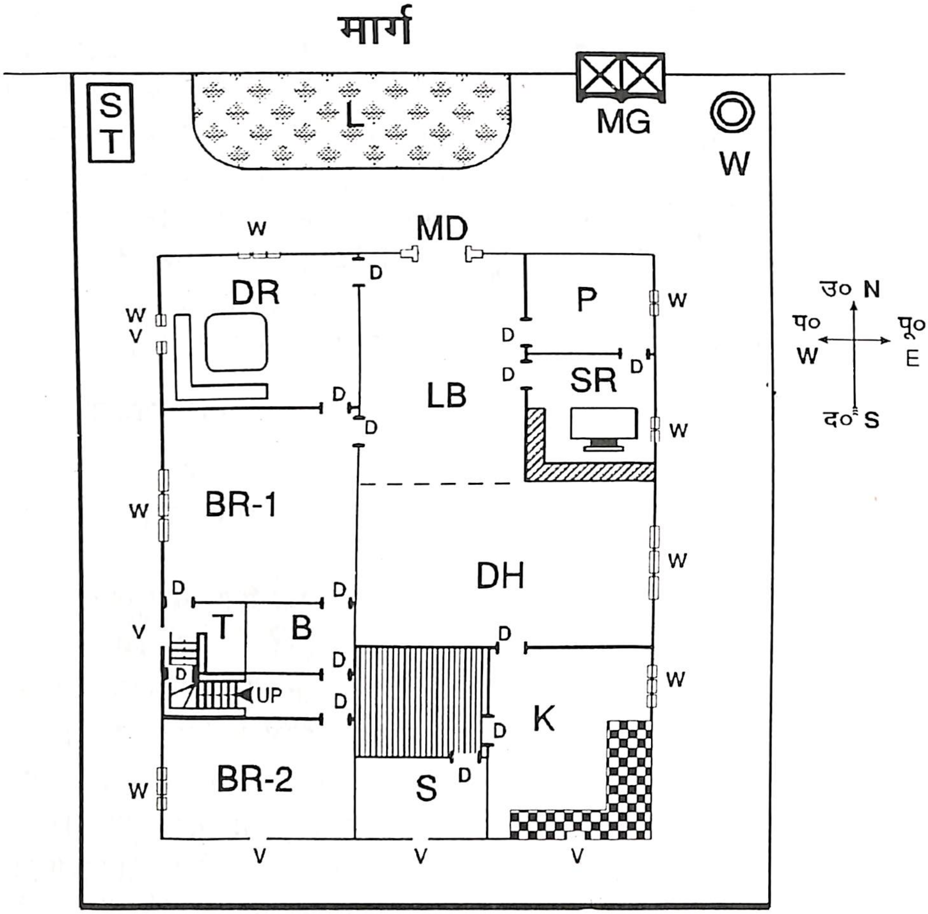

चित्र—14

1. L – लान या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG – मुख्यद्वार (Main Gate) उत्तर दिशा में, 3. MD – भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) उत्तर दिशा में, 4. P – पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR – अध्ययनकक्ष ईशान कोण में पूजास्थल के पास में, 6. LB – लॉबी पूजा स्थल व स्वागतकक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH – भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K – रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S – भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2 – शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B – शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR – स्वागतकक्ष वायव्य कोण में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST – सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D – द्वार, 15. V– रोशनदान (Ventilator) 16. W – खिड़की (Window) एवं 17. W – कुआं ईशान कोण में।

भूखण्ड के दक्षिण दिशा में मार्ग हो तो उपयुक्त मानचित्र

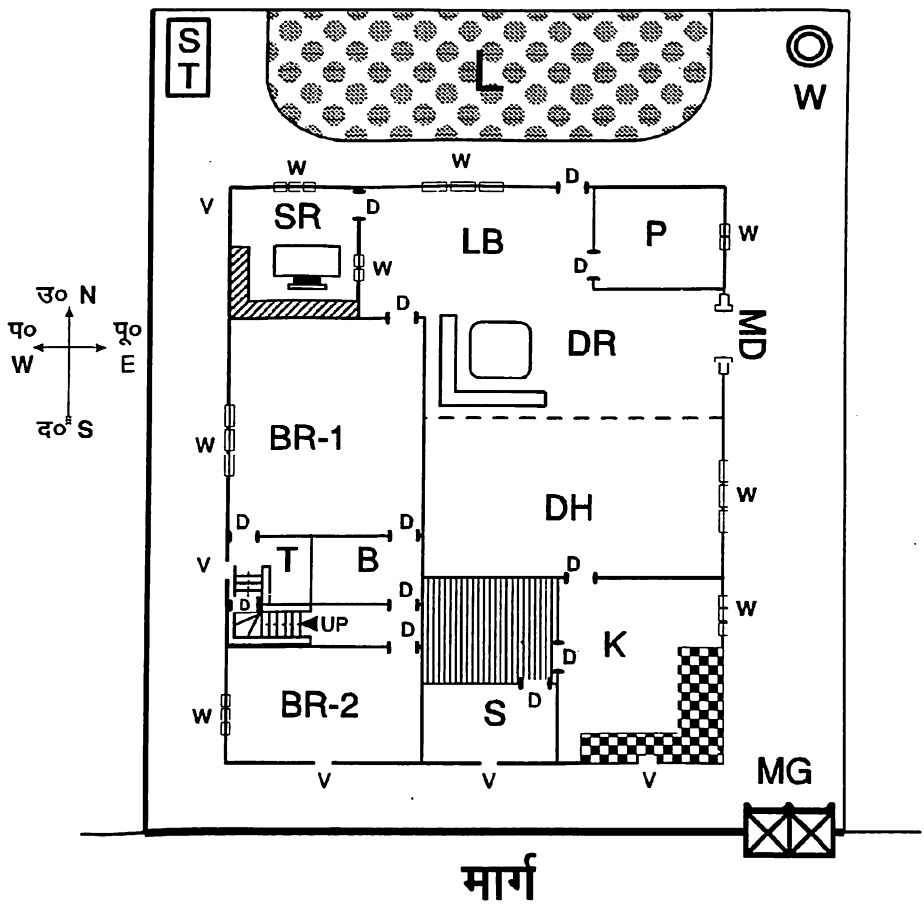

चित्र—15

1. L – लान या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG – मुख्यद्वार (Main Gate) दक्षिण दिशा में, 3. MD – भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पूर्व दिशा में पूजा स्थल के पास, 4. P – पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR – अध्ययनकक्ष वायव्य कोण में, 6. LB – लॉबी पूजा स्थल व अध्ययनकक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH – भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K – रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S – भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2 – शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B – शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR – स्वागतकक्ष उत्तर दिशा में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST – सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D – द्वार, 15. V – रोशनदान (Ventilator) 16. W – खिड़की (Window) एवं 17. W – कुआं ईशान कोण में।

भूखण्ड के पूर्व दिशा में मार्ग हो तो उपयुक्त मानचित्र

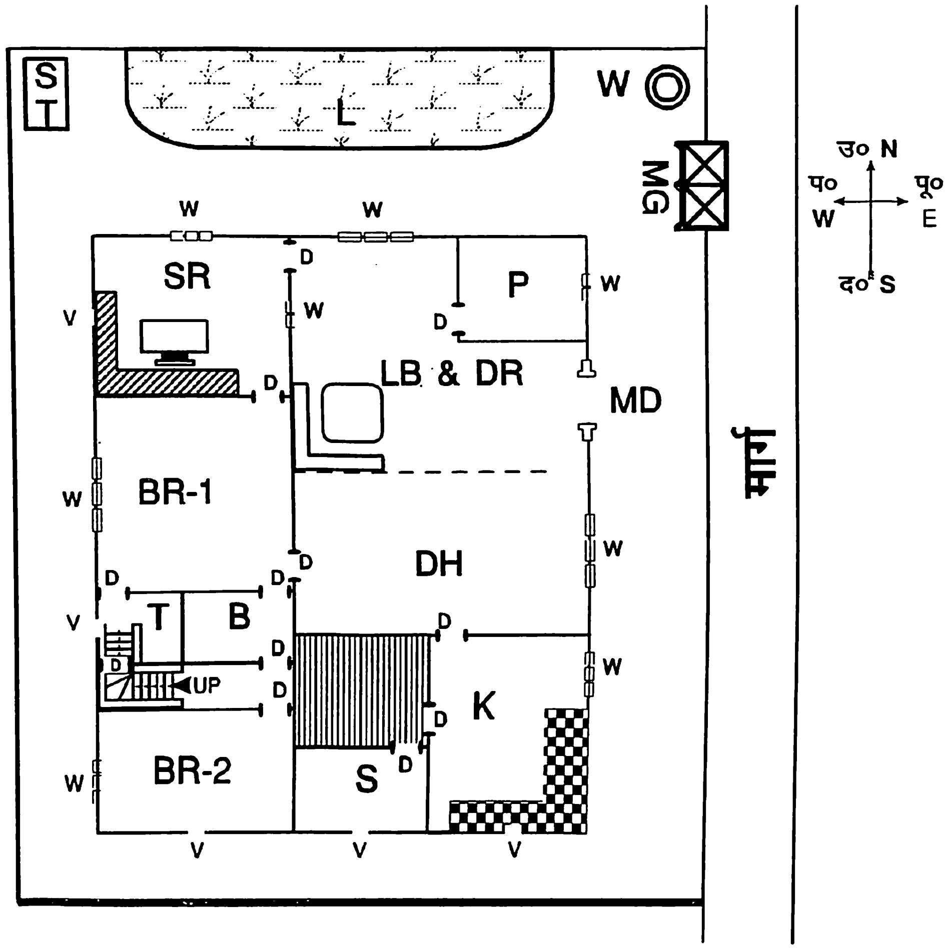

चित्र—16

1. L – लान या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG – मुख्यद्वार (Main Gate) पूर्व दिशा में, 3. MD – भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पूर्व दिशा में, 4. P – पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR – अध्ययनकक्ष वायव्य कोण में पूजास्थल के पास में, 6. DR & LB – स्वागतकक्ष एवं लॉबी पूजा स्थल व अध्ययनकक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH – भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K – रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S – भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2 – शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B – शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. ST – सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 13. D – द्वार, 14. V – रोशनदान (Ventilator) 15. W – खिड़की (Window) एवं 16. W – कुआं ईशान कोण में।

भूखण्ड के पश्चिम दिशा में मार्ग हो तो उपयुक्त मानचित्र

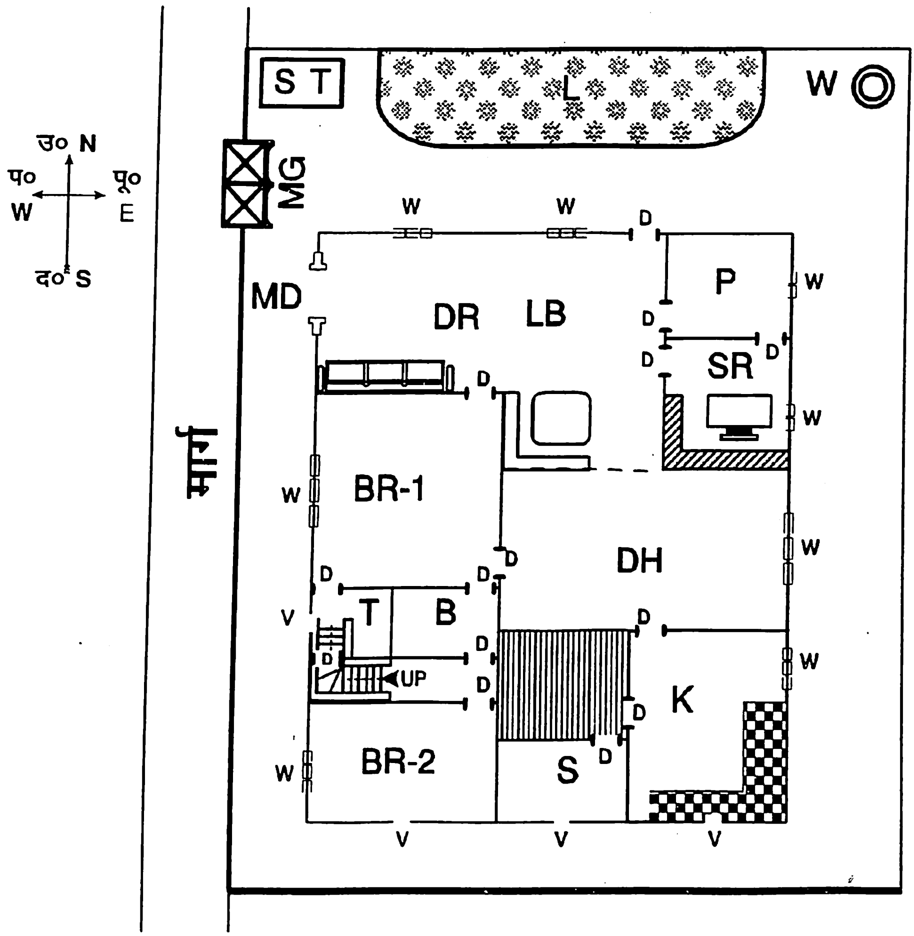

चित्र—17

1. L – लान या बगीचा उत्तर दिशा में, 2. MG – मुख्यद्वार (Main Gate) पश्चिम दिशा में, 3. MD – भवन का प्रवेश द्वार (Main Door) पश्चिम दिशा में, 4. P – पूजास्थल ईशान कोण में, 5. SR – अध्ययनकक्ष ईशान कोण में पूजास्थल के पास में, 6. LB – लॉबी पूजा स्थल व स्वागतकक्ष के मध्य उत्तर दिशा में, 7. DH – भोजनकक्ष पूर्व दिशा में रसोईघर के पास में, 8. K – रसोईघर आग्नेय कोण में, 9. S – भण्डारगृह (Store) रसोईघर के पास दक्षिण में, 10. BR_1 व BR_2 – शयनकक्ष पश्चिम व नैर्ऋत्य कोण में, 11. T & B – शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में एक साथ, 12. DR – स्वागतकक्ष वायव्य कोण में भवन के मुख्यद्वार के पास, 13. ST – सैप्टिक टैंक वायव्य कोण में, 14. D – द्वार, 15. V– रोशनदान (Ventilator) 16. W – खिड़की (Window) एवं 17. W – कुआं ईशान कोण में।

भवन में विभिन्न कक्षों के निर्माण का विवेचन

भवन बनाते समय आवास हेतु विभिन्न कक्ष बनाए जाते हैं। इन कक्षों को दिशा विशेष में ही बनाया जाता है, ऐसा क्यों किया जाता है और इससे क्या लाभ है अब इसकी चर्चा करेंगे।

1. स्नानघर (Bath Room)

स्नानघर, स्नानगृह, गुसलखाना, नैर्ऋत्य (पश्चिम-दक्षिण) कोण एवं दक्षिण दिशा के मध्य या नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में होना सर्वोत्तम है और मतान्तर से पूर्व में भी बना सकते हैं और पानी का बहाव उत्तर-पूर्व में रखें। गुसलखाने की उत्तरी या पूर्वी दीवार पर एग्जास्ट फैन (Exhaust Fan) लगाना चाहिए। गीजर आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) कोण में लगाना चाहिए। क्योंकि इसका संबंध अग्नि से है। ईशान व नैर्ऋत्य कोण में स्नानधर कभी न बनवाएँ।

2. शौचालय (Lovatory)

शौचालय सदैव नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य या नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य बनाना चाहिए। शौचालय में एग्जास्ट फैन (Exhaust Fan) की स्थिति उत्तरी या पूर्वी दीवार पर लगाएँ। पानी का बहाव (Water Flow) उत्तर-पूर्व में रखें। शौचालय में शौच करते समय आपका मुख दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर होनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि शौचालय की सीट इस प्रकार लगाएँ कि उस पर बैठते समय आपका मुख दक्षिण या पश्चिम की ओर ही। प्रयास करें शौचालय एवं स्नानगृह अलग-अलग बनाएँ। वैसे आधुनिक काल में दोनों को एक साथ संयुक्त रूप में बनाने का फैशन चल गया है। उत्तरी व पूर्वी दीवार के साथ शौचालय न बनाएँ।

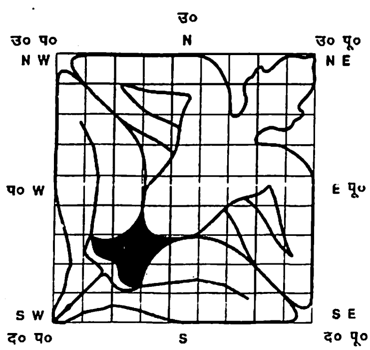

आंगन का प्रयोजन भवन को हवा व सूर्य प्रकाश से परिपूर्ण बनाने के लिए है। इन दोनों (प्रकाश व वायु) से भवन में वास करने वाले स्वस्थ व प्रसन्न रहते हैं।

3. आँगन (Court Yard)

भवन में आँगन (चौक) की महत्ता को विस्मरण नहीं किया जा सकता है। प्राचीन समय में तो भवन बिना आँगन के तो बनता ही नहीं था। आँगन का प्रयोजन भवन को हवादार एवं सूर्य-प्रकाश से युक्त बनाना है। इसके द्वारा भवन को सन्तुलित भी रखा जा सकता है। वर्तमान में भूमि की कमी के कारण भवनों में आँगन मध्य में तो विलुप्त होते जा रहे हैं। भवन का प्रारूप इस प्रकार बनाना चाहिए कि आँगन मध्य में हो या जगह कम हो तो भवन में खुला क्षेत्र इस प्रकार उत्तर या पूर्व की ओर रखें जिससे सूर्य का प्रकाश व ताप भवन में अधिकाधिक प्रवेश करे। ऐसा करने पर भवन में रहने वाले स्वस्थ व प्रसन्न रहते हैं। आँगन की लम्बाई-चौड़ाई के योग को 8 से गुणा करके 9 से भाग देने पर शेष जो बचे उसके अनुसार फल निम्न प्रकार समझे—देखें—'आँगन फल चक्रम्।'

आँगन फल चक्रम्

शेष	संज्ञा	फल
1	तस्कर	चोरी का भय
2	भाग्य	ऐश्वर्य
3	विलक्षण	बौद्धिक विकास
4	दाता	धर्म में रुचि
5	नृपति	राज्य-सम्मान
6	नपुंसक	स्त्री, पुत्रादि की हानि
7	धनी	धन लाभ
8	दरिद्र	धनराशि
9	भयदाता	चोर व शत्रु का भय

टिप्पणी—आँगन मध्य में ऊँचा और चारों ओर नीचा हो तो शुभ एवं मध्य में नीचा व चारों ओर ऊँचा सम्पत्ति नाश कारक है।

यदि आंगन की लम्बाई व चौड़ाई को जोड़कर 8 से गुणा करके 9 से विभाजित करने पर शेष 1, 6 या 9 बचे तो अशुभ एवं 2, 5, व 7 या 8 बचे तो शुभ होता है।

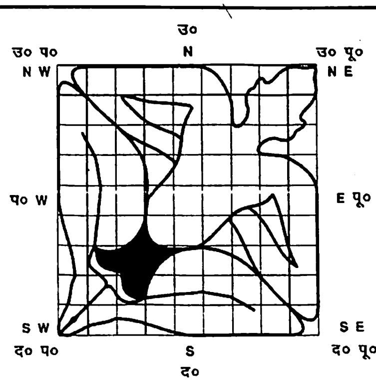

4. पशुशाला (Animal Shed)

आजकल मनुष्यों हेतु रहने की जगह नहीं मिल पाती तो पशु या गाय-भैंस पालना कहाँ संभव है। गौ पालन शास्त्र सम्मत है। इससे कई लाभ भी है। यदि गौ पालना संभव हो तो गौ-पालन करना चाहिए। गौशाला या पशुशाला भवन में उत्तर-पश्चिम (वायव्य कोण) में होनी चाहिए।

5. स्वागतकक्ष या बैठक (Drawing Room)

वर्तमान में भवन में स्वागतकक्ष का महत्त्व सर्वाधिक है। प्राचीनकाल में इसे बैठक के नाम से जाना जाता था। स्वागतकक्ष या बैठक में मसनद व तकिए या फर्नीचर दक्षिण और पश्चिम दिशाओं की ओर रखना चाहिए। स्वागतकक्ष या बैठक जहाँ तक संभव हो उत्तर और पूर्व की ओर खुली जगह अधिक रखनी चाहिए। स्वागतकक्ष भवन में वायव्य एवं ईशान और पूर्व दिशा के मध्य में बनाना चाहिए।

6. भोजनालय या भोजनकक्ष (Dining Room)

प्राचीनकाल में भोजन रसोईघर में ही खाया जाता था। आजकल भोजनकक्ष ड्राईंगरूम् का ही एक भाग बन गया है या अलग भी बनाया जाता है। डायनिंग टेबल ड्राइंगरूम के दक्षिण-पूर्व में रखनी चाहिए अथवा भोजन कक्ष में भी दक्षिण-पूर्व में रखनी चाहिए। भोजनालय या भोजन कक्ष भवन में पश्चिम या पूर्व दिशा में बनाना चाहिए।

7. रसोईघर एवं भण्डारगृह (Kitchen or Store)

भोजन बनाने के लिए रसोई की आवश्यकता होती है। भवन में रसोईघर आग्नेय कोण या पूर्व व आग्नेय कोण के मध्य या पूर्व में बनाना

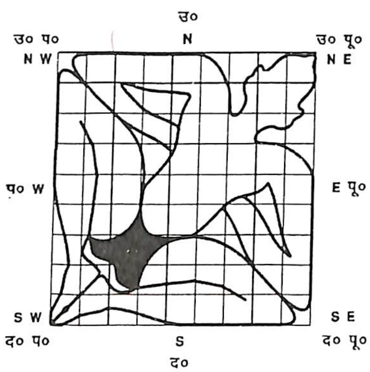

यह ध्यान रखें कि आंगन मध्य में ऊँचा और चारों ओर से नीचा हो तो शुभ एवं मध्य में नीचा व चारों ओर ऊँचा हो तो अशुभ होता है।

चाहिए। आग्नेय कोण सर्वश्रेष्ठ है। रसोई घर में चूल्हा या गैस आग्नेय कोण में रखें। ताजी हवा का पंखा (Fresh Air Fan) उत्तर और पूर्व दिशा में लगाएँ।

प्राचीनकाल में वर्ष भर के लिए अन्न संग्रह किया जाता था इसलिए भण्डारगृह अलग होते थे। जगह कम होने के कारण रसोईघर में खाद्यान्न रख लिया जाता है। खाद्यान्न रसोईघर में ईशान और आग्नेय कोण के मध्य पूर्वी दीवार के सहारे रखना चाहिए।

8. बालकनी (Balcony)

हवा, सूर्य प्रकाश एवं भवन के सौन्दर्य हेतु आवासीय भवनों में बालकानी का महत्त्व सर्वोपरि है। बालकनी भी एक प्रकार से भवन में खुले स्थान के रूप में मानी जाती है। बालकनी से प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों एवं प्राकृतिक हवा की प्राप्ति होती है। वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप बालकनी बनाई जा सकती है।

यदि पूर्वोन्मुख भूखण्ड है तो बालकनी उत्तर-पूर्व में उत्तर की ओर बनानी चाहिए। बालकनी उत्तर-पश्चिम में उत्तर की ओर कदापि न बनाएँ।

यदि पश्चिमोन्मुख भूखण्ड है तो बालकनी उत्तर-पश्चिम में पश्चिम की ओर बनानी चाहिए।

यदि उत्तरोन्मुख भूखण्ड है तो बालकनी उत्तर-पूर्व में उत्तर की ओर बनानी चाहिए।

यदि दक्षिणोन्मुख भूखण्ड है तो बालकनी दक्षिण-पूर्व में दक्षिण दिशा में बनाएँ।

बालकनी का स्थान भूखण्ड के मुख (Front) पर निर्भर है। लेकिन प्रयास यह होना चाहिए कि प्रातःकालीन सूर्य प्रकाश एवं प्राकृतिक हवा का प्रवेश भवन में होता रहे।

यदि ड्राइंगरूम को भोजनालय की तरह उपयोग में लाना है तो डायनिंग टेबल ड्राइंगरूम या भोजनकक्ष के दक्षिण-पूर्व में रखनी चाहिए। भोजन कक्ष पूर्व या पश्चिम दिशा में बना सकते हैं।

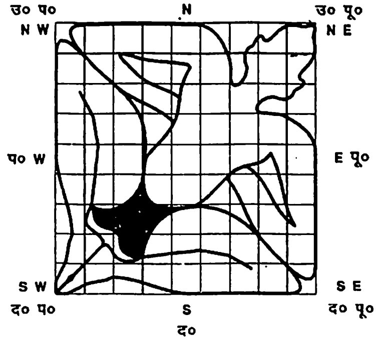

9. गैराज (Gargages)

वाहन (कार, गाड़ी) खड़ा करने के लिए गैराज की आवश्यकता होती है। फ्लैट, बंगला या बड़े घर (जिनके पास जगह अधिक है) में गैराज दक्षिण-पूर्व या उत्तर-पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। यह बात ध्यान में रखें कि गैराज में उत्तर और पूर्व की दीवार पर वजन कम होना चाहिए। वैसे तो आजकल जगह की तंगी होने के कारण भवन में गैराज होता ही नहीं है। ज्यादा जगह वाले ही इसे बना सकते हैं। गैराज का स्थान सर्वेन्ट क्वांटर के समीप उत्तम रहता है। यदि भूखण्ड पूर्वोन्मुख है तो दक्षिण-पूर्व दिशा में पूर्व की ओर, यदि भूखण्ड उत्तरोन्मुख है तो उत्तर-पश्चिम दिशा में उत्तर की ओर, यदि भूखण्ड पश्चिमोन्मुख है तो दक्षिण-पश्चिम दिशा में पश्चिम की ओर और यदि भूखण्ड दक्षिणोन्मुख हो तो दक्षिण-पश्चिम दिशा में पश्चिम की ओर गैराज बनाना चाहिए।

10. पोर्टिको (Portico)

पोर्टिको भवन के सौन्दर्य अथवा चहलकदमी करने के लिए भवन के सामने बनाया जाता है। आजकल जगह कम होने के कारण गैराज न हो तो पोर्टिको बनाकर उसके नीचे गाड़ी खड़ी करके काम चला लिया जाता है। पोर्टिको आवरित आँगन की तरह या चहलकदमी करने हेतु आवरित आँगन पोर्टिको की तरह प्रयुक्त होता है। पोर्टिको भवन के सौन्दर्य में भी चार चाँद लगाता है। पोर्टिको के निर्माण की योजना भूखण्ड के मुख (Front) पर निर्भर करती है। पोर्टिको की छत भवन की मुख्य छत से नीची होनी चाहिए।

यदि भूखण्ड दक्षिणोन्मुख हो तो दक्षिण-पूर्व की ओर दक्षिण दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए।

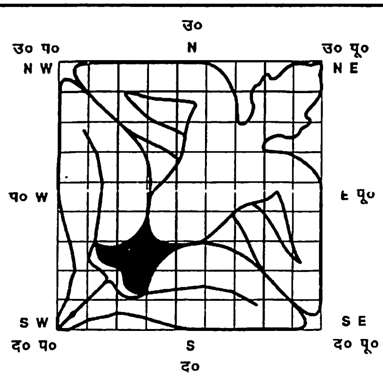

ताजी हवा का पंखा (Fresh Air Fan) उत्तर और पूर्व दिशा में लगाना चाहिए।

यदि भूखण्ड पश्चिमोन्मुख हो तो उत्तर-पश्चिम में पश्चिम दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए।

यदि भूखण्ड उत्तरोन्मुख हो तो उत्तर-पूर्व में उत्तर की ओर पोर्टिको बनाना चाहिए।

यदि भूखण्ड पूर्वोन्मुख हो तो उत्तर-पूर्व में पूर्व की ओर पोर्टिको बनाना चाहिए।

पोर्टिको भूखण्ड के अनुरूप सुविधानुसार बना सकते हैं।

11. मीटर बोर्ड, मेन स्विच व विद्युतकक्ष

(Meter Board, Main Switch & Electric Room)

अग्नि या विद्युत-शक्ति, मीटरबोर्ड, मेन स्विच, विद्युतकक्ष आदि भवन में दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा में लगाने चाहिएं। अग्नि कोण इसके लिए सदैव उत्तम रहता है।

12. सोपान या सीढ़ी (Stair case)

भवन में सीढ़ियाँ वास्तु नियमों के अनुरूप बनानी चाहिएं। सीढ़ियों का द्वार पूर्व या दक्षिण दिशा में होना शुभफलप्रद होता है। सीढ़ियाँ भवन के पार्श्व में दक्षिणी व पश्चिमी भाग के दायीं ओर हो तो उत्तम है। यदि सीढ़ियाँ घुमावदार बनानी हों तो उनका घुमाव सदैव पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर और उत्तर से पूर्व की ओर होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि चढ़ते समय सीढ़ियाँ हमेशा बायें से दायीं ओर मुड़नी चाहिए। अब चाहे घुमाव कितने भी हों (देखें चित्र-17)। सीढ़ियाँ हमेशा विषम संख्या में बनानी चाहिएं। सीढ़ियों की संख्या ऐसी हो कि उसे 3 से भाग दें तो 2 शेष रहे, जैसे 5, 11, 17, 23, 29 आदि की संख्या। सीढ़ियों के नीचे एवं ऊपर द्वार रखने चाहिएं। नीचे के दरवाजे से ऊपर का दरवाजा बारह भाग कम होना चाहिए। यदि किसी

यदि रसोईघर में अन्न संग्रह करना है तो ईशान व आग्नेय कोण के मध्य पूर्वी दीवार के पास रखना चाहिए। रसोई घर में चूल्हा या गैस आग्नेय कोण में रखनी चाहिए।

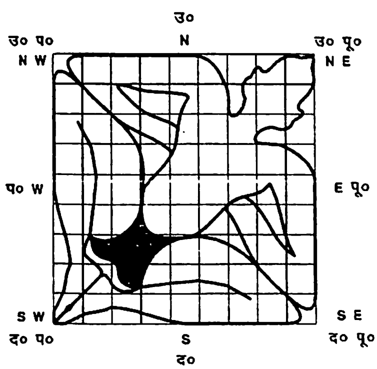

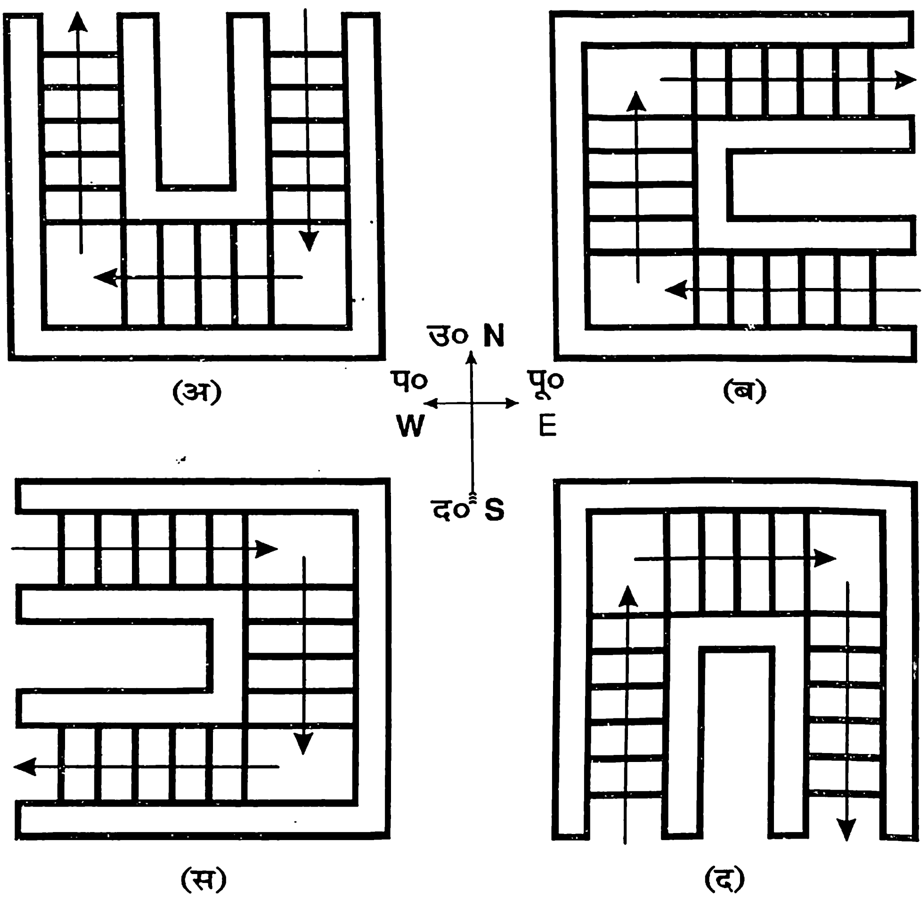

चित्र—18—सीढ़ियों का घुमाव

पुराने घर में सीढ़ियाँ उत्तर-पूर्व दिशा में बनी हों, तो उसके वास्तु दोष को समाप्त करने के लिए दक्षिण-पश्चिम दिशा में एक कमरा बनाना चाहिए।

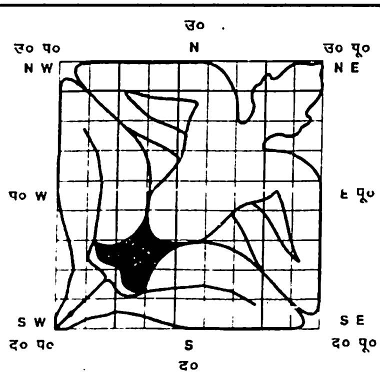

भवन में पूजा स्थल ईशान कोण में रखना चाहिए। पूजा करते समय व्यक्ति का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। पूजा स्थल ईशान व उत्तर के मध्य या ईशान या पूर्व के मध्य भी रख सकते हैं।

13. पूजागृह (Temple)

पूजास्थल, पूजागृह, पूजाकक्ष भवन का मुख्य अंग है। पूजन, भजन, कीर्तन, अध्ययन-अध्यापन सदैव ईशान कोण में होना चाहिए। पूजास्थल से बुद्धि शुद्ध होती है और मन पर शुद्ध संस्कार प्रभाव डालते हैं। पूजा करते समय व्यक्ति का मुख पूर्व में होना चाहिए। ईश्वर की मूर्ति का मुख पूर्व, पश्चिम व दक्षिण की ओर होना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कातिकिय का मुख पूर्व या पश्चिम की ओर होना चाहिए। गणेश, कुबेर, दुर्गा, भैरव, पोडश मातृका का मुख सदैव दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। हनुमान जी का मुख नैर्ऋत्य कोण की ओर होना चाहिए। पूजा-स्थल अन्य किसी कोण में बनाना उचित नहीं है। ज्ञान प्राप्ति के लिए पूजागृह में उत्तर-दिशा में बैठकर उत्तर की ओर मुख करके पूजा करनी चाहिए और धन प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा में पूर्व की ओर मुख करके पूजा करना उत्तम है।

14. नगदी (Cash), तिजोरी, गल्ला

उत्तर दिशा में कुबेर का वास होता है। अतः भवन में तिजोरी, गल्ला, नगदी आदि सदैव उत्तर दिशा में रखनी चाहिए। ऐसा करने पर धनवृद्धि होती है। गल्ले या तिजोरी में श्री या कुबेर यन्त्र भी रखें, ऐसा करने पर तिजोरी कभी खाली नहीं रहेगी।

15. अध्ययनकक्ष (Study Room)

अध्ययनकक्ष सदैव ईशान कोण में ही पूजागृह के साथ पूर्व दिशा में होना चाहिए। वायव्य और पश्चिम दिशा के मध्य या वायव्य व उत्तर के मध्य बना सकते हैं। ईशान कोण पूजागृह के पास सर्वोत्तम है।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय की मूर्ति का मुख पूर्व या पश्चिम में, गणेश, कुबेर, दुर्गा, भैरव, षोडश मातृका का मुख दक्षिण में, हनुमान जी का नैर्ऋत्य कोण में होना चाहिए।

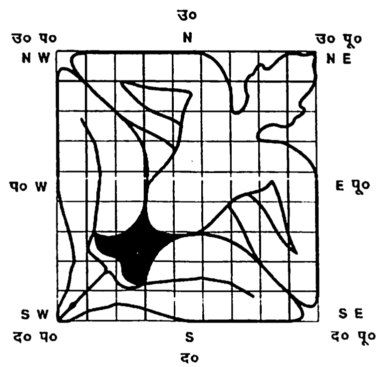

16. खुला स्थान (Open Space)

किसी भी भवन में खुले स्थान की महत्ता विस्मृत नहीं की जा सकती है। भूखण्ड में उत्तर, पूर्व तथा उत्तर-पूर्व (ईशान) में खुला स्थान अधिक रखना चाहिए। दक्षिण और पश्चिम में खुला स्थान कम होना चाहिए। इसी प्रकार भवन में बालकनी, बरामदा, पोर्टिको के रूप में उत्तर-पूर्व में खुला स्थान सर्वाधिक होना चाहिए ताकि उसमें रहने वाले सुख-समृद्धि पा सकें। टेरस (Terrace) व बरामदा (Verandah) खुले स्थान के अन्तर्गत आता है, अतएव सुख-समृद्धि हेतु उत्तर-पूर्व में ही निर्मित करना चाहिए।

पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में अधिक खुला स्थान रखने का कारण प्रातःकालीन सूर्य रश्मियाँ भवन में अधिकाधिक प्रवेश करें। दक्षिण व पश्चिम दिशा में कम खुली जगह रखनी चाहिए। यदि दो मन्जिला भवन है तो पूर्व एवं उत्तर दिशा की ओर भवन की ऊँचाई कम रखनी चाहिए। उत्तर व पूर्व दिशा में ही भवनों की छत खुली रखनी चाहिए। उत्तर-पूर्व में ही दरवाजे व खिड़कियाँ सर्वाधिक संख्या में होने चाहिएं। दरवाजे व खिड़कियाँ सम संख्या में होनी चाहिएं जैसे 2, 4, 6, 8 आदि। उनकी संख्या में अन्त पर शून्य न हो जैसे 10, 20 आदि। पश्चिम व दक्षिण दिशा में खिड़कियाँ कम रखनी चाहिए।

17. जल प्रवाह (Water Flow)

भवन निर्माण में जल के प्रवाह का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। भवन का समस्त जल प्रवाह पूर्व, वायव्य, उत्तर और ईशान कोण में रखना शुभ होता है। भवन का जल ईशान (उत्तर-पूर्व) या वायव्य (उत्तर-पश्चिम) कोण से घर से बाहर निकालना चाहिए। जल प्रवाह का फल इस प्रकार समझना चाहिए—देखें—'जलप्रवाह फल चक्रम्'।

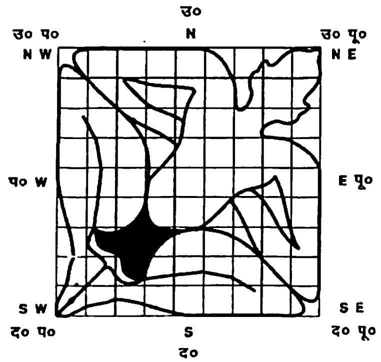

शौचालय नैर्ऋत्य व दक्षिण के मध्य या नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य होना चाहिए। शौच करते समय मुख दक्षिण या पश्चिम की ओर होना चाहिए। उत्तरी व पूर्वी दीवार के साथ शौचालय न बनाएँ।

जल प्रवाह फल चक्रम्

दिशा	फल	मतान्तर से दिशा	फल
पूर्व	शुभ फलप्रद	पूर्व	धनलाभ
आग्नेय	मृत्यु कारक	आग्नेय	धन हानि
दक्षिण	दरिद्रता	नैर्ऋत्य	रोग व भय कारण
नैर्ऋत्य	हानिकारक	नैर्ऋत्य	विवादकारक
पश्चिम	संतान सुख नाश	पश्चिम	पुत्र हानि
वायव्य	सुख कारक	वायव्य	बन्धु सुख
उत्तर	राज्य लाभ	उत्तर	सर्वसिद्धि
ईशान	धन लाभ	ईशान	सुख-सम्पत्ति

भवन के पूर्व दिशा में नाली या जल निकास करना शुभ उत्तर दिशा में धनलाभ, दक्षिण में रोग व पीड़ा एवं पश्चिम में धन हानिकारक है। जल का निकास ईशान, उत्तर और पूर्व दिशाओं में ही शुभ है, अन्य दिशाएँ अशुभ हैं। जल का निकास उत्तर-पूर्व या पूर्व-उत्तर में सर्वाधिक शुभ है।

18. शयनकक्ष (Bed Room)

घर के स्वामी का मुख्य शयनकक्ष दक्षिण या पश्चिम दिशा में होना चाहिए और पलंग दक्षिणी दीवार से लगा होना चाहिए जिससे सोते समय सिरहाना दक्षिण में और पैर उत्तर दिशा की ओर हो। यह जान लें कि मनुष्य का सिर उत्तरी ध्रुव है और पैर दक्षिणी ध्रुव है।

पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव और सिर के रूप में मनुष्य का उत्तरी ध्रुव ऊर्जा की एक धारा पूर्ण कर देता है। इसी प्रकार पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव और मनुष्य के पैरों का दक्षिणी ध्रुव भी ऊर्जा का दूसरी धारा पूर्ण करता है और चुम्बकीय तरंगों के प्रवेश में बाधा उत्पन्न नहीं होती है। ऐसा

स्नानघर व शौचालय अलग-अलग बनाएँ। नैर्ऋत्य व दक्षिण दिशा के मध्य या नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य बना सकते हैं। मतान्तर से पूर्व में भी बना सकते हैं। एग्जास्ट फैन उत्तरी या पूर्वी दीवार और गीजर आग्नेय कोण पर लगाना चाहिए।

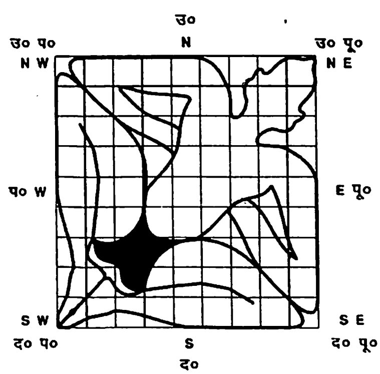

होने पर सोने वाले को शान्ति व गहरी नींद मिलती है जिससे बुद्धि ठीक रहती है। घर में भी सुख-समृद्धि व सम्पन्नता रहती है।

यदि दक्षिण दिशा में सिरहाना नहीं रख सकते तो दूसरे विकल्प के रूप में पलंग पश्चिमी दीवार के साथ रखकर सिरहाना पश्चिम की ओर रखना चाहिए। अन्य दिशाओं में पलंग और सिरहाना रखने से बुद्धि का संचालन ठीक से नहीं होता है।

19. तहखाना (Basment)

आजकल स्थान की कमी के कारण लोग भवन में तहखाना अथवा भूमिगत निर्माण करने लगे हैं। जैसा कि आपको पूर्व में बता चुके हैं कि उत्तर-पूर्व नीचा होना चाहिए तो तहखाना या भूमिगत निर्माण भी उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में बनाना चाहिए। अतः भूमिगत निर्माण दक्षिण, पश्चिम, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पूर्व दिशा में कदापि नहीं बनाना चाहिए, ऐसा करने पर आपदा एवं हानि का मुख देखना पड़ता है। भूखण्ड के मध्य में भूमिगत निर्माण या तहखाना नहीं बनाना चाहिए। इसी प्रकार भूमिगत पानी की टंकी भी उपर्युक्त निषेध दिशाओं में न बनाएँ।

20. दुछत्ती (Mezanine Floor)

वास्तु सिद्धान्त के अनुसार भवन के दक्षिण या पश्चिम दिशा के भाग को ऊँचा रखा जाता है। अतः दुछत्ती को दक्षिण या पश्चिम दिशा में ही रखना चाहिए।

21. सेवकों के गृह (Servant Quarter)

नौकरों या सेवकों के लिए घर दक्षिण-पूर्व या उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। लेकिन भवन बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उत्तर

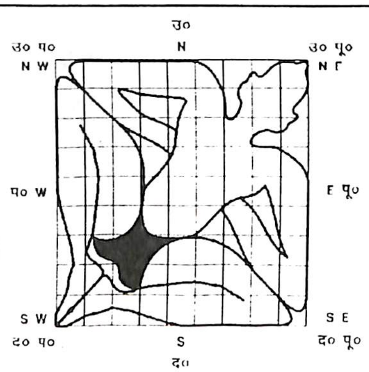

पश्चिम व वायव्य कोण के मध्य एवं नैर्ऋत्य व पश्चिम दिशा के मध्य शयनकक्ष बनाना उपयुक्त है। पलंग इस तरह बिछायें कि सोते समय पैर उत्तर या पूर्व की ओर हों।

और पूर्व दिशा की दीवारों पर वजन अधिक न हो। इस प्रकार निर्माण कराने से उसमें रहने वाले सेवक भी प्रसन्न रहते हैं।

22. कुआँ एवं ट्यूबवेल (Well & Tubewell)

भवन में कुआँ, ट्यूबवेल, हैंड पम्प ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में बनवाना चाहिए। प्रायः देखा गया है कि जिन भवनों में अन्य दिशाओं में कुआँ, टयूबवेल या हैंडपम्प था उनके स्वामियों को बहुत हानि उठानी पड़ी। कुआँ, टयूबवेल या हैंडपम्प की दिशा बदलने पर ही उन्हें लाभ हुआ।

23. खिड़कियाँ (Windows)

प्रायः द्वार के सामने खिड़कियाँ होनी चाहिएं जिससे चुम्बकीय चक्र पूर्ण हो सके। ऐसा करने पर गृह में सुख-शान्ति रहती है। खिड़कियों का निर्माण सन्धि भाग में नहीं होना चाहिए। पश्चिमी, पूर्वी और उत्तरी दीवारों पर खिड़कियों का निर्माण शुभ होता है। गृह में खिड़कियों का मुख्य लक्ष्य भवन में शुद्ध वायु के निरन्तर प्रवाह के लिए होता है। वायु प्रदूषण से बचने के लिए घर में जिन दिशाओं से शुद्ध वायु प्रवेश करती है उसके विपरीत दिशाओं में एग्जास्ट फैन लगाना चाहिए। खिड़कियों की संख्या सम होनी चाहिए।

24. मुख्यद्वार (Main Gate)

जब किसी द्वार से कोई प्रवेश करता है तो उसका तात्पर्य है कि वह एक नए वातावरण में जा रहा है। द्वार में प्रवेश करते समय द्वार से निकलती चुम्बकीय तरंगें बुद्धि को प्रभावित करती हैं। अतः प्रयास करना चाहिए कि द्वार उत्तर या पूर्व में ही हो। दक्षिण और पश्चिम में द्वार नहीं होना चाहिए।

भवन में जल प्रवाह (Water Flow) पूर्व, उत्तर, वायव्य या ईशान में होना चाहिए। जल प्रवाह आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम में कदापि नहीं होना चाहिए।

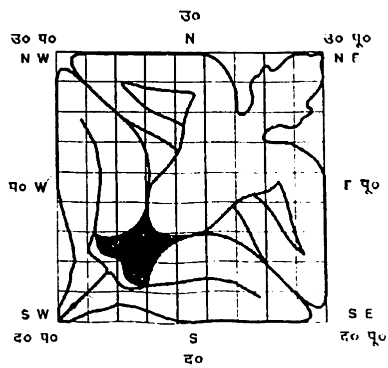

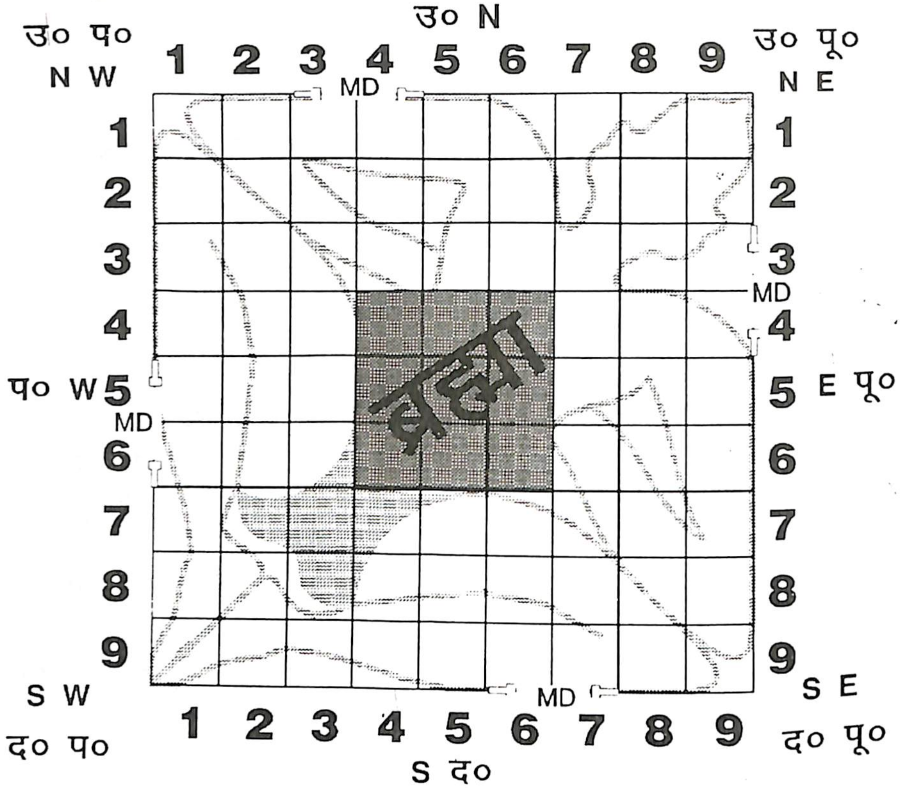

चित्र—19

भूखण्ड की चारों भुजाओं को नौ-नौ बराबर भागों में विभाजित करके मुख्यद्वार के समुचित स्थान का चयन करना चाहिए। मुख्य द्वार के चयन हेतु चित्र-19 दे रहे हैं, इसमें आप आसानी से समझ सकते हैं—

यदि भूखण्ड पूर्वोन्मुख हो तो मुख्यद्वार ईशान और पूर्व दिशा के मध्य चित्र-19 के अनुसार 3 व 4 भाग में बनाना चाहिए।

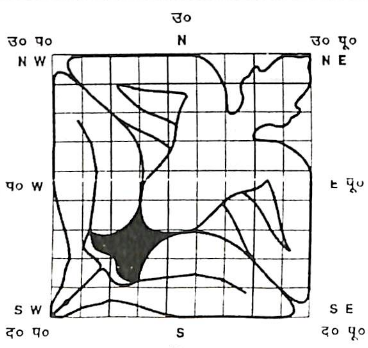

उत्तर या पूर्व दिशा में खुली छत रखनी चाहिए। दरवाजे व खिड़कियाँ सम संख्या में रखने चाहिएं 2, 4, 6, 8 आदि। संख्या के अन्त में शून्य नहीं आना चाहिए। दक्षिण व पश्चिम दिशा में खिड़कियाँ व द्वार कम रखें।

यदि भूखण्ड दक्षिणोन्मुख हो तो मुख्यद्वार आग्नेय और दक्षिण दिशा के मध्य चित्र-19 के अनुसार 6 व 7 भाग में बनाना चाहिए।

यदि भूखण्ड पश्चिमाभिमुख हो तो मुख्यद्वार नैर्ऋत्य और पश्चिम दिशा के मध्य चित्र-19 के अनुसार 5 व 6 भाग में बनाना चाहिए।

यदि भूखण्ड उत्तराभिमुख हो तो मुख्यद्वार वायव्य और उत्तर दिशा के मध्य चित्र-19 के अनुसार 3 व 4 भाग में होना चाहिए।

मुख्यद्वार की स्थापना अच्छे मुहूर्त में करनी चाहिए। प्रवेश द्वार अन्दर की ओर खुलना चाहिए और यदि दो पल्लों में हो तो उत्तम है। दरवाजा स्वतः खुलना व बन्द नहीं होना चाहिए। दरवाजे के खोलने व बन्द करने में आवाज नहीं होनी चाहिए। घर के मुख्य द्वार पर मंगल चिन्ह बनाना चाहिए।

मुख्यद्वार की दिशा का निर्माण वर्णों के अनुसार निम्न प्रकार होता है—

वर्ण	द्वार दिशा
ब्राह्मण	पश्चिम
क्षत्रिय	उत्तर
वैश्य	पूर्व
शूद्र	दक्षिण

गृह स्वामी की राशि के अनुसार द्वार दिशा निम्न प्रकार समझनी चाहिए—यदि राशि कर्क, वृश्चिक और मीन हो तो पूर्व दिशा में द्वार होना चाहिए, वृष, तुला, कुम्भ राशि हो तो पश्चिम दिशा में द्वार होना चाहिए, मेष, सिंह, धनु राशि हो तो उत्तर दिशा में द्वार होना चाहिए और मिथुन, कन्या, मकर राशि हो तो दक्षिण दिशा में द्वार होना चाहिए। यदि चारों दिशाओं में द्वार हो तो द्वार दोष नहीं होता है। देखें—राशि द्वार दिशा चक्रम्।

भवन में तिजोरी, गल्ला, नगदी आदि सदैव उत्तर दिशा में रखनी चाहिए। गल्ले या तिजोरी में श्री या कुबेर यन्त्र भी रखना चाहिए। चैक बुक व बैंक पास बुक भी उत्तर दिशा में अपने दायें हाथ में रखनी चाहिएं।

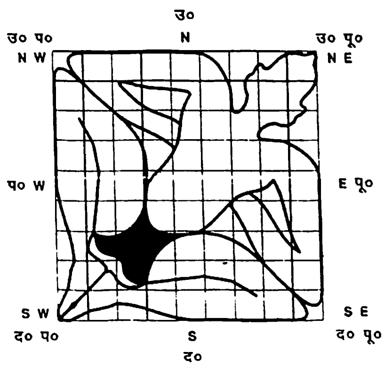

राशि द्वार चक्रम

गृह स्वामी की राशि	द्वार दिशा
कर्क, वश्चिक, मीन	पूर्व
वृष, तुला, कुंभ	पश्चिम
मेष, सिंह, धनु	उत्तर
मिथुन, कन्या, मकर	दक्षिण

मुख्यद्वार के अतिरिक्त अन्य द्वार एक शीर्ष में रखने चाहिए। दरवाजों की संख्या सम होनी चाहिए। एक के ऊपर दूसरा दरवाजा कदापि नहीं रखना चाहिए। यदि रखना पड़े तो ऊपरी द्वार की ऊँचाई कम रखें। दरवाजे और खिड़कियां उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक रखने चाहिएं। दक्षिण और पश्चिम दिशा में प्रयास करें कि दरवाजे रखने ही न पड़ें।

द्वारों की दिशाओं का परस्पर चार प्रकार का संबंध होता है—

1. उत्संग
2. सव्य
3. अपसव्य
4. पृष्ठभंग

जब बाहरी और भीतरी दरवाजे एक सीध में हो तो इस सम्बन्ध को **उत्संग** कहते हैं। यह संबंध सर्वोत्तम होता है।

जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे के दाहिनी ओर होता है तो यह सम्बन्ध **सव्य** होता। यह उत्तम माना जाता है।

जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे के बायीं ओर होता है तो इस सम्बन्ध को **अपसव्य** कहते हैं। यह सम्बन्ध अच्छा नहीं होता है।

जब बाहरी दरवाजा भीतरी दरवाजे की विपरीत दिशा में होता है तो यह सम्बन्ध **पृष्ठभंग** कहलाता है। यह सम्बन्ध भी अच्छा नहीं होता है।

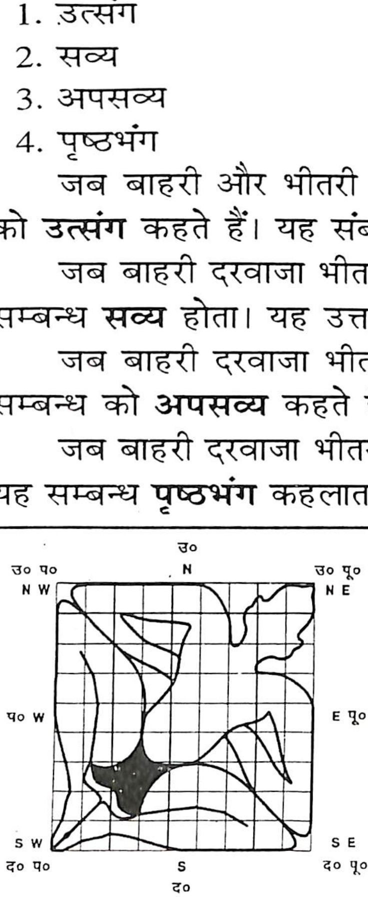

अध्ययनकक्ष ईशान कोण में पूजा गृह के साथ पूर्व दिशा में बनाना चाहिए। वायव्य व पश्चिम के मध्य या वायव्य व उत्तर के मध्य भी बना सकते हैं।

जब किसी द्वार के सामने कोई बाधा होती है तो उसे द्वार वेध कहते हैं। द्वार के सामने सीढ़ी, खम्बा आदि नहीं होना चाहिए।

25. सेप्टिक टैंक

उत्तर-पश्चिम (वायव्य) कोण में ही सेप्टिक टैंक बनाना चाहिए। इसके लिए वायव्य कोण सर्वोत्तम होती है।

26. भवन में वृक्ष

ऊँचे व घने वृक्ष दक्षिण, पश्चिम भाग में लगाने चाहिएं। पेड़ भवन में इस ढंग से लगाएँ और उनमें दूरी इतनी रखें कि प्रातः से तीसरे प्रहर (तीन बजे तक) भवन पर उनकी छाया न पड़े। पीपल का वृक्ष पश्चिम, बरगद का पूर्व, गूलर दक्षिण और कैथा का वृक्ष उत्तर में लगाना चाहिए। अन्य वृक्ष किसी भी दिशा में लाभदायक है।

27. ब्रह्मस्थान

भवन के केन्द्रीय स्थल को ब्रह्म स्थान कहते हैं। यह खुला होना चाहिए। इस पर छत, खम्बा आदि नहीं होना चाहिए। इसीलिए प्राचीन परम्परागत घरों में ब्रह्म स्थान में चौक या आंगन होता था।

28. भवन निर्माण करते समय नई भवन सामग्री ही प्रयोग में लानी चाहिए।
29. सूर्य की प्रातःकालीन किरणें एवं शुद्ध वायु से वंचित भवन कदापि अच्छा नहीं होता है।
30. ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) सर्वोत्तम एवं पवित्र माना जाता है। इस क्षेत्र को हर प्रकार से शुद्ध रखना चाहिए। इस क्षेत्र को खुला रख सकते हैं। यहाँ पर योग व ध्यान आदि पूर्वाभिमुख होकर कर

स्वागतकक्ष वायव्य, ईशान व पूर्व के मध्य बना सकते हैं। फर्नीचर दक्षिण और पश्चिम दिशाओं की ओर रखना चाहिए।

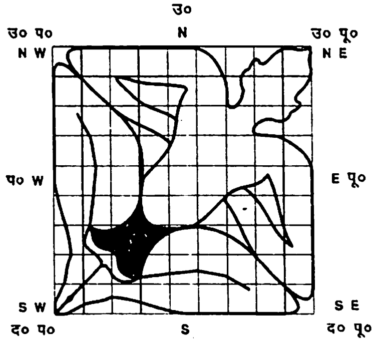

सकते हैं। इस क्षेत्र में पूजा स्थल भी स्थापित कर सकते हैं। इस क्षेत्र को अशुद्ध रखने से मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी एवं शारीरिक कष्ट रहता है।

31. दिशाओं का प्रभाव

वास्तु नियमों के अनुसार उपयुक्त दिशाओं में अनुकूल निर्माण करने पर सुख-समृद्धि व शान्ति रहती है जबकि प्रतिकूल दिशा में निर्माण करने पर विपरीत फल प्राप्त होता है।

उत्तर दिशा का प्रभाव—यह दिशा स्वास्थ्य के लिए अत्युत्तम है और व्यक्ति के बहुमुखी विकास में सहायक है। उत्तर दिशा की ओर मुख रखकर जल पीने से भी लाभ रहता है। इस दिशा कि ओर मुख करके ध्यान लगाने से भी एकाग्रता और ध्यान में कठिनाई नहीं आती है।

उत्तर-पूर्व (ईशान) दिशा का प्रभाव—ईशान कोण भी सुख-समृद्धि, एकाग्रता एवं स्वास्थ्य के उत्तरोत्तर विकास के लिए सर्वोत्तम है। इस दिशा की ओर मुख करके एवं बैठकर उपासना करने से फल शीघ्र मिलता है।

पूर्व दिशा का प्रभाव—पूर्व दिशा अनुकूल रहती है। इस दिशा में कार्य करने से सफलता, स्वास्थ्य, प्रसिद्धि व उन्नति अल्प प्रयासों से ही मिल जाती है।

दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा का प्रभाव—आग्नेय कोण में अग्नि संबंधी कार्य सफलतादायी होते हैं। यह दिशा भी बुद्धि को सन्तुलित एवं स्वास्थ्य को ठीक रखने में सहायक है।

दक्षिण दिशा का प्रभाव—यह दिशा सुरक्षा की दृष्टि से लाभप्रद है।

दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) दिशा का प्रभाव—यह दिशा स्वास्थ्यप्रद और बच्चों के लिए सुखकारक है।

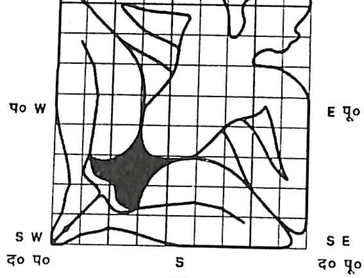

पानी की टंकी छत पर वायव्य व उत्तर दिशा के मध्य या वायव्य व पश्चिम दिशा के मध्य रखनी चाहिए।

पश्चिम दिशा का प्रभाव—यह दिशा सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक होती है।

उत्तर-पश्चिम (वायव्य) दिशा का प्रभाव—वायव्य कोण शत्रु पर विजय एवं मुकदमों में विजय दिलाता है या उनसे मुक्ति दिलाता है।

निष्कर्षतः कहने का तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त 31 सूत्रों के आधार पर भवन निर्माण से पूर्व उसकी सम्यक् योजना व प्रारूप बनाना चाहिए। तदोपरान्त शुभ मुहूर्त-के अनुसार निर्माण कार्य नियमानुसार प्रारम्भ करना चाहिए। सर्वप्रथम जहाँ तक सम्भव हो उत्तर-पूर्व क्षेत्र में भूमिगत जल संग्रह के लिए टंकी या नल, ट्यूबवेल आदि लगवाएँ। बाद में अन्य निर्माण कार्य करें। चारदीवारी (Boundry Wall) बनाते समय यह ध्यान रखें कि दक्षिण-पश्चिम दिशा की चारदीवारी उत्तर व पूर्व दिशा की अपेक्षा मोटी व ऊँची रखें। अब अगले अध्याय में गृहारम्भ मुहूर्त की चर्चा करेंगे।

भूमिगत पानी की टंकी उत्तर, पश्चिम व पूर्व दिशा में होनी चाहिए। सर्वोत्तम स्थान ईशान कोण है। नैर्ऋत्य, आग्नेय, वायव्य व दक्षिण दिशा में कदापि न रखें।

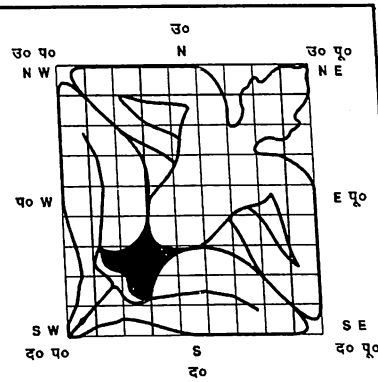

11 गृहारम्भ मुहूर्त विचार

वास्तुकर्म अर्थात् भवन निर्माण सम्बन्धी समस्त कार्यों हेतु मुहूर्त आदि का विचार करना वांछित है। भूलोक पर मानव को घर की महत्ता ज्ञात है, क्योंकि इसके बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती है। इसीलिए भूमिक्रय, नींव खनन और शिलान्यास, द्वार स्थापन, गृह निर्माण एवं गृह प्रवेश करते समय इससे संबंधी सभी शुभ मुहूर्तों को योग्य ज्योतिषी के द्वारा निकलवा लेना चाहिए। इस अध्ययन में सभी मुहूर्तों को ज्ञात करने की सरल रीतियाँ समझाएँगे। किन्तु अन्तिम निर्णय योग्य ज्योतिर्विद से सलाह लेकर ही करना चाहिए। आईए अब गृह निर्माण सम्बन्धी समस्त मुहूर्तों का ज्ञान प्राप्त करें।

भूमि क्रय-विक्रय करने का मुहूर्त

भवन हेतु भूमि क्रय करनी हो या विक्रय करके धन अर्जित करना हो तो इसके लिए शुभ तिथि वार नक्षत्र और लग्न निम्नरूपेण समझें—

1. **शुभ पक्ष**—कृष्ण व शुक्ल
2. **शुभ तिथि**—द्वितीय, पंचमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा (शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष)।
3. **शुभवार**—गुरुवार, शुक्रवार।
4. **शुभ नक्षत्र**—मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, मूला, रेवती।
5. **शुभ लग्न**—वृष, सिंह, वृश्चिक।

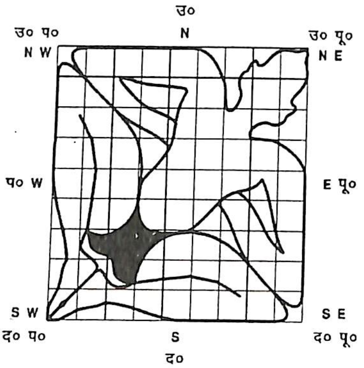

पशुशाला भवन में उत्तर-पश्चिम दिशा में रख सकते हैं। वैसे मनुष्यों हेतु जगह कम होने के कारण पशु पालन संभव नहीं है। यदि पालने पड़ें तो वायव्य कोण उपयोग में लाना चाहिए।

टिप्पणी—शुभ लग्न की कुण्डली में केन्द्र (1, 4, 7, 10) व त्रिकोण (5, 9) में शुभ ग्रह हों एवं 3, 6, 11वें भाव में पाप ग्रह हों तो शुभ है।

गृह निर्माण मुहूर्त

भवन निर्माण के लिए मुहूर्त निकालते समय यहाँ बतलायी गयी समस्त बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. **शुभ मास**—वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन मास गृह निर्माण के लिए शुभ हैं। मास का चयन द्वार मुख के अनुरूप करना चाहिए। **पूर्व और पश्चिम** में मुख्यद्वार रखना हो तो श्रावण, भाद्रपद, माघ और फाल्गुन मास चुनना चाहिए। यदि मुख्यद्वार **उत्तर या दक्षिण** दिशा में रखना हो तो वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक व मार्गशीष मास चुनना चाहिए। ज्येष्ठ, भाद्रपद, पौष और कार्तिक मास सामान्य रूप से ग्राह्य है।

2. **शुभ पक्ष**—गृह निर्माण में शुक्ल पक्ष ही ग्राह्य है। शुक्ल पक्ष श्रेष्ठ होता है। कृष्ण पक्ष में गृह निर्माण करने से चोरी का भय रहता है।

3. **शुभ तिथि**—द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी तिथियाँ शुभ हैं। प्रतिपदा, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी व अमावस्या तिथि नहीं होनी चाहिएं क्योंकि इनमें गृहारम्भ करने से दरिद्रता, धान्य व स्त्रीनाश एवं राजभय रहता है।

4. **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार।

5. **शुभ नक्षत्र**—रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा व रेवती।

6. **सूर्य**—मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशि का नहीं होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यही है कि मिथुन, कन्या धनु व मीन राशि की सूर्य सक्रान्ति न हो। सभी संक्रान्तियों में गृहराम्भ करने का फल 'संक्रान्ति फल चक्रम्' के अनुसार समझें।

हवा, सूर्य प्रकाश व सौन्दर्य हेतु भवन में बालकनी बनायी जाती है। बालकनी एक प्रकार से खुले स्थान के रूप में समझी जाती है।

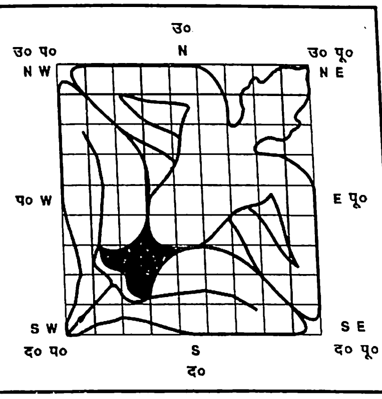

'संक्रान्ति फल चक्रम्'

सूर्य संक्रान्ति	अवधि (लगभग)	फल
मेष	14 अप्रैल से 13 मई	शुभ
वृष	14 मई से 13 जून	धनकारक
मिथुन	14 जून से 13 जुलाई	मृत्यु
कर्क	14 जुलाई से 13 अगस्त	शुभ
सिंह	14 अगस्त से 13 सितम्बर	सेवकों की वृद्धि
कन्या	14 सितम्बर से 13 अक्टूबर	रोग
तुला	14 अक्टूबर से 13 नवम्बर	सुख
वृश्चिक	14 नवम्बर से 13 दिसम्बर	धनवृद्धि
धनु	14 दिसम्बर से 13 जनवरी	हानि
मकर	14 जनवरी से 13 फरवरी	धन लाभ
कुंभ	14 फरवरी से 13 मार्च	रत्न लाभ
मीन	14 मार्च से 13 अप्रैल	भय

7. **शुभ लग्न**—चर राशि को छोड़कर स्थिर और द्विस्वभाव लग्न हो। वृष, सिंह या वृश्चिक स्थिर लग्न हो तो अच्छा है। छठा, आठवाँ और बारहवाँ भाव रिक्त होना चाहिए। 3, 6, 11वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित होने चाहिएं और केन्द्र (1, 4, 7, 10) व त्रिकोण (5, 9) में शुभ ग्रह हों। लग्न व दशम भाव भी बली हो।

8. **ध्यान रखें**—गृह निर्माण के समय गृहस्वामी की राशि से सूर्य, चन्द्र, गुरु व शुक्र बलवान होने चाहिए। सूर्य निर्बल होने पर स्वामी नाश, चन्द्र निर्बल होने पर स्त्रीनाश, गुरु निर्बल होने पर सुख नाश और शुक्र निर्बल होने पर द्रव्य नाश होता है। गृह स्वामी ब्राह्मण हो तो गुरु-शुक्र विशेष

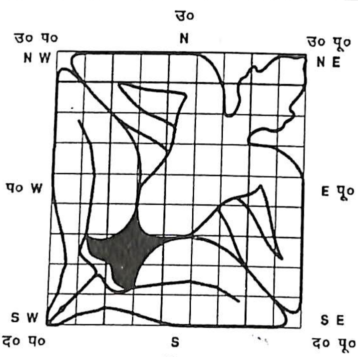

पूर्वोन्मुख भूखण्ड में ईशान कोण में पूर्व की ओर, पश्चिमोन्मुख में वायव्य कोण में पश्चिम की ओर, दक्षिणोन्मुख में आग्नेय कोण में दक्षिण की ओर एवं उत्तरोन्मुख में ईशान कोण में उत्तर की ओर बालकनी बनानी चाहिए।

बली होने चाहिएं, वैश्य हो तो चन्द्र-बुध विशेष बली होना चाहिएं और शुद्र हो तो शनि विशेष बली होना चाहिए।

9. विस्मरण न करें—गृहारम्भ के दिन भूमि शयन न हो। पंचक न हों। गृहारम्भ के समय वृष वास्तु विचार भी कर लेना चाहिए। गुरु व शुक्र अस्त नहीं होने चाहिएं। देव शयन भी न हों।

10. पंचक—पंचक दो प्रकार के होते हैं—नक्षत्र पंचक और बाण पंचक।

(i) **नक्षत्र पंचक**—धनिष्ठा से पाँच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती) में गृह निर्माण हेतु लकड़ी, तृण को काटकर संग्रह नहीं करना चाहिए। चन्द्रमा जब तक धनिष्ठा से पाँच (पंचक) नक्षत्र में और सूर्य मघा से पाँच नक्षत्र (मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा) में रहने पर गृह के लिए तृण और काष्ठ काटकर संग्रह नहीं करनी चाहिए।

(ii) **बाण पंचक**—जिस दिन जिस समय में स्पष्ट सूर्य के भुक्तांश में 6, 3, 1, 8, 4 जोड़कर योगफल में अलग-अलग 9 से भाग देने पर 5 शेष बच जाए तो उस दिन उक्त समय में क्रम से रोग, अग्नि, राजा, चोर और मृत्यु नामक बाण समझना चाहिए।

यह जान लें कि विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोर बाण, गृहारम्भ में अग्नि बाण और उपनयन में रोग बाण त्याज्य है।

अतः स्पष्ट सूर्य के गत अंश 2, 11, 20, 29 में से कोई हो तो उस समय में अग्नि बाण समझना चाहिए जोकि गृहारम्भ में त्याज्य है।

मृत्यु बाण के लिए सूर्य के भुक्तांश में 6, अग्नि बाण के लिए सूर्य के भुक्तांश में 3, राजा बाण के लिए सूर्य के भुक्तांश में 1, चोर बाण के लिए सूर्य के भुक्तांश में 8, और मृत्यु बाण के लिए सूर्य भुक्तांश में 4 जोड़कर 9 से भाग देने पर 5 शेष बचे तो उस समय में उक्त बाण होते हैं।

भवन में वाहन के लिए गैराज दक्षिण-पूर्व या उत्तर-पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। गैराज में उत्तर व पूर्व की दीवार पर भार कम रखना चाहिए। मार्गानुसार गैराज का स्थान बालकनी के अनुसार रखना चाहिए।

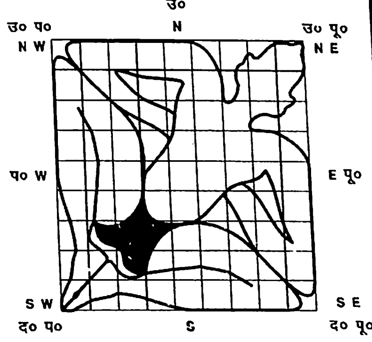

सूर्य भुक्तांश		अग्नि बाण हेतु जोड़ा				शेष
2	+	3	÷	9	=	5
11	+	3	÷	9	=	5
20	+	3	÷	9	=	5
29	+	3	÷	9	=	5

11. गृहारम्भ नक्षत्र विचार—गृह निर्माण का मुहूर्त विचार करते समय देखें कि सूर्य किस नक्षत्र में है जिस नक्षत्र में हो उससे सात नक्षत्र अशुभ, उससे अगले ग्यारह नक्षत्र शुभ एवं अगले दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। देखें—गृहारम्भ नक्षत्र चक्रम्

गृहारम्भ नक्षत्र चक्रम्

सूर्य नक्षत्र से	प्रथम सात नक्षत्र	अगले ग्यारह नक्षत्र	अगले दस नक्षत्र
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ

12. वृष वास्तु विचार—गृहारम्भ करते समय शुभाशुभ विचार करने के लिए बैल के आकार की परिकल्पना करके उसके प्रत्येक अंग पर सूर्य नक्षत्र से गिनकर नक्षत्र स्थापित करके विचार करें कि गृहारम्भ किस नक्षत्र में बनाना शुभ रहेगा।

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे तीन नक्षत्र सिर पर, इससे अगले चार नक्षत्र अगले पैरों पर, इससे अगले चार नक्षत्र पिछले पावों पर इससे अगले तीन नक्षत्र पीठ पर, इससे अगले चार नक्षत्र दायीं कुक्षि पर, इससे अगले तीन नक्षत्र पूंछ पर, इससे अगले चार नक्षत्र बायीं कुक्षि पर और इससे अगले तीन नक्षत्र मुख पर स्थापित करके प्रत्येक अंग स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने का फल निम्न प्रकार समझें—

- सिर स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से घर में आग लगती है।

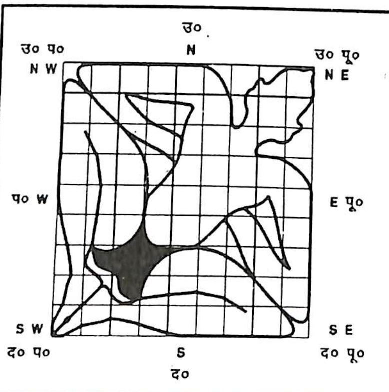

पोर्टिको भवन के सौन्दर्य व चहल-कदमी हेतु भवन के सामने बनाया जाता है। सामान्यत: आवरित आंगन पोर्टिको की तरह प्रयुक्त होता है।

- अगले पैरों में स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने में घर में शून्यता अर्थात् अभाव रहता है।
- पिछले पैरों में स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से धर में स्थिरता बनी रहती है।
- पीठ पर स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।
- दाहिनी कुक्षि स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से लाभ होता है।
- पूंछ स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से स्वामी का नाश होता है।
- बायीं कुक्षि स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से दरिद्रता रहती है।
- मुख स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से घर में सदैव रोग-पीड़ा और भय व्याप्त रहता है।

सरलता के लिए देखें—'वृष वास्तु चक्रम्'।

वृष वास्तु चक्रम्

वृषभ के अंग	नक्षत्र	फल
सिर	पहले 3 नक्षत्र	गृहदाह
अगले पैर	अगले 4 नक्षत्र	शून्यता
पिछले पैर	अगले 4 नक्षत्र	स्थिरता
पीठ	अगले 3 नक्षत्र	लक्ष्मी प्राप्ति
दायीं कुक्षि	अगले 4 नक्षत्र	लाभ
पूंछ	अगले 3 नक्षत्र	स्वामी नाश
बायीं कुक्षि	अगले 4 नक्षत्र	दरिद्रता
मुख	अगले 3 नक्षत्र	रोग, पीड़ा व भय

टिप्पणी—1. वृष वास्तु विचार में अभिजित नक्षत्र भी गिनना चाहिए।

पूर्वोन्मुख भूखण्ड में आग्नेय कोण में पूर्व की ओर, पश्चिमोन्मुख हो तो वायव्य कोण में पश्चिम की ओर, उत्तरोन्मुख हो तो ईशान कोण में उत्तर की ओर एवं दक्षिणोन्मुख हो तो आग्नेय कोण में दक्षिण की ओर पोर्टिको बनाना चाहिए।

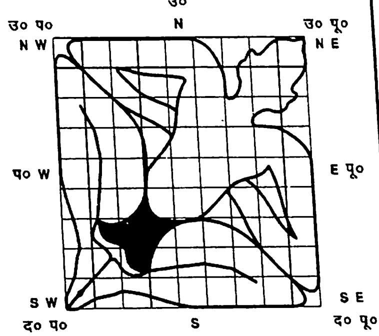

2. मानव आवश्यकता पड़ने पर अनुकूल परिस्थितियों के अनुसार किसी भी स्थान पर शुभ लग्न विचार करके गृहारम्भ कर सकता है। यह सत्य है कि जहाँ मन शुद्ध होता है वहाँ समस्त कार्यों में सदैव शुभ होता है। तिथि, नक्षत्रादि शुभ न मिलें तो मात्र लग्न शुद्धि करके कार्य करना चाहिए। जन्मराशि से 3, 6, 10, 11वीं राशि में से कोई लग्न राशि हो और लग्न से आठवें और बारहवें स्थान ग्रह रहित हों। लग्न में शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह स्थित हो और चन्द्रमा 3, 6, 10, 11वें भाव में हो तो कार्य सिद्धि होती है।
3. गृहारम्भ काल में यदि सूर्य निर्बल, अशुभ भाव में हो तो गृहस्वामी की मृत्यु होती है, चन्द्रमा निर्बल अस्त या अशुभ भाव में हो तो उसकी स्त्री की मृत्यु होती है, गुरु निर्बल अस्त या अशुभ भाव में हो तो सुख का नाश होता है और शुक्र ग्रह निर्बल, अस्त या अशुभ भाव में हो तो धन का नाश होता है।
4. गृहारम्भ करते समय चन्द्र नक्षत्र (जिस नक्षत्र में चन्द्र हो) घर (घर के नक्षत्र) के आगे पड़ता हो तो गृहस्वामी घर पर नहीं रह पाता और यदि घर के पीछे पड़ता हो तो घर में चोरी होती है।
5. **गृहायु**—(i) घर बनाते समय उस लग्न में, सूर्य 6 भाव में, बुध 7वें भाव में, शुक्र 4थे भाव में और शनि 3रे भाव में हो तो गृहायु 100 वर्ष होती है।

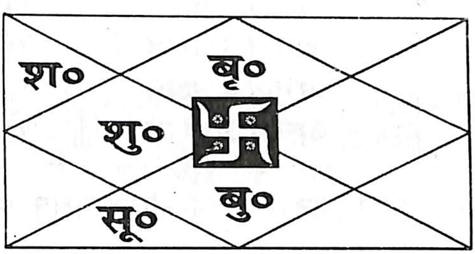

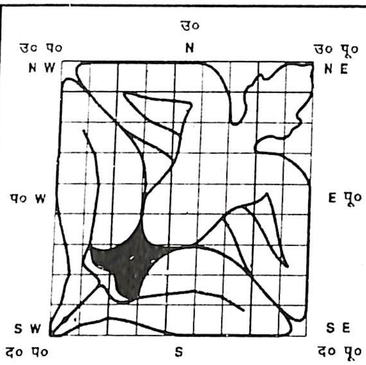

मीटर बोर्ड, मेनस्विच, विद्युतकक्ष या अग्नि से संबंधी कोई भी कार्य आग्नेय कोण में करना चाहिए। यह कोण सर्वोत्तम है।

(ii) यदि गृहारम्भ करते समय शुक्र लग्न में, सूर्य तीसरे भाव में, मंगल 6ठे भाव में और गुरु पाँचवें भाव में स्थित हो तो गृहायु 200 वर्ष होती है।

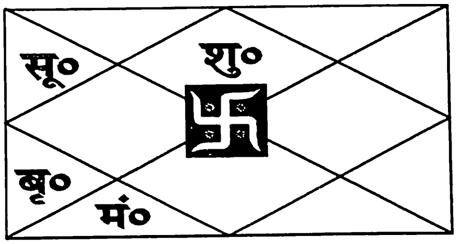

(iii) यदि गृहारम्भ करते समय शुक्र लग्न में, बुध 10वें भाव में, सूर्य 11वें भाव में और गुरु केन्द्र (1, 4, 7 या 10वें) में हो तो गृहायु 125 वर्ष होती है।

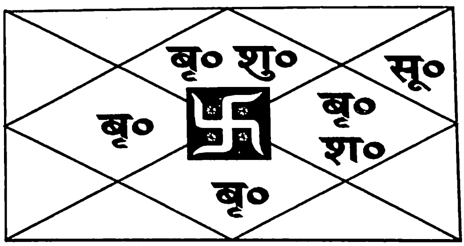

(iv) शुभ ग्रहों के योग होने पर गृहायु 100 वर्ष से अधिक और अशुभ ग्रहों के योग होने पर गृहायु एक-दो वर्ष से अधिक नहीं होती है अर्थात् वह शीघ्र नष्ट हो जाता है या स्वामी द्वारा बेच दिया जाता है।

13. **भूमि शयन विचार**—यह जान लें कि उपजाऊ भूमि जीवित और ऊषर भूमि मृत मानी जाती है। अब भूमि शयन के विषय में बताते हैं।

भवन में सीढ़ियां दक्षिण व पश्चिमी भाग में बनानी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव सदैव पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर और उत्तर से पूर्व की ओर होना चाहिए।

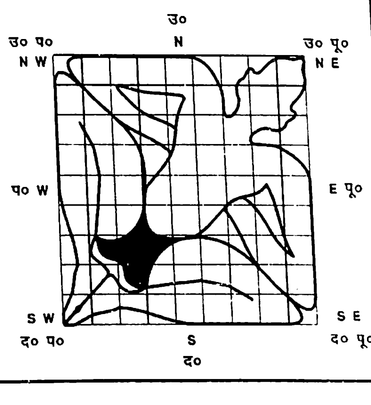

बताते हैं।

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे पाँचवें, सातवें, नौवें, बारहवें, उन्नीसवें और छब्बीसवें नक्षत्र में पृथ्वी शयन करती है।

जब भूमि शयन करती हो तो उसमें गृह, तड़ाग, वापी, कूप आदि का खनन नहीं करना चाहिए।

निष्कर्षतः गृहारम्भ के लिए शुभ मुहूर्त निकालकर ही भवन निर्माण का कार्य करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में भवन निर्माण करने से बाधाएँ नहीं आती हैं और समस्त कार्य सफलतापूर्वक होते हैं। प्रायः प्रत्यक्ष देखने में आता है कि शुभ मुहूर्त के अभाव में किए गए गृहारम्भ सम्बन्धी कार्य अपूर्ण रह जाते हैं या अनेक प्रकार के व्यवधान एवं आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस अध्याय में गृहारम्भ के शुभ मुहूर्त ज्ञात करने का सरल प्रकार बताया गया है। अब अगले अध्याय में शिलान्यास (नींव) खनन विचार सम्बन्धी उपयोगी जानकारी देंगे।

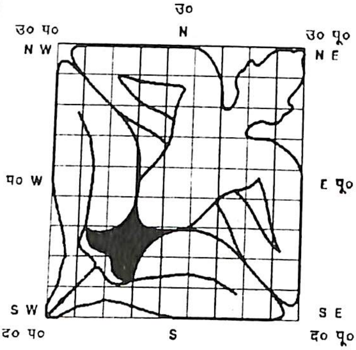

सीढ़ियाँ सदैव विषम संख्या में बनानी चाहिएं जैसे—5, 11, 17, 23, 29 आदि। सीढ़ियों की संख्या को 3 से भाग देने पर 2 शेष रहना चाहिए।

12 शिलान्यास विचार

शिलान्यास विचार के अन्तर्गत चयनित भूमि पर नींव खनन और भवन निर्माण का प्रारम्भ करते समय ईट (शिला) स्थापना की जाती है। शिलान्यास के पूर्व नींव खनन किया जाता है। अब नींव खनन और शिलान्यास संबंधी उपयोगी जानकारी इस अध्याय में देंगे।

नींव खनन कैसे करें ?

गृह निर्माण करते समय सर्वप्रथम भूमि में नींव के लिए खनन किया जाता है। नींव कहाँ से और कब खोदें, इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है। पिछले अध्याय में गृहारम्भ का मुहूर्त ज्ञात करना बता चुके हैं। गृहारम्भ के लिए एक शुभ मुहूर्त गृहस्वामी के नामानुसार ज्ञात कर लें। इसके बाद भूमि पर नींव खनन करने के लिए दिशादि का विचार इस प्रकार करें।

नींव खोदने (खनन) के समय दिशा ज्ञात करी जाती है। देवालय, जलाशय और गृहनिर्माण करते समय नींव खोदने के लिए दिशा का विचार निम्नवत् करें—

(क) भवन की नींव हेतु दिशा विचार—गृहारम्भ के चयनित मुहूर्त के दिन सूर्य जिस राशि पर हो उसके अनुसार राहु मुख और पुच्छ का ज्ञान करते हैं। राहु मुख से पृष्ठवर्ती दिशा से घर की नींव खोदनी प्रारम्भ करनी चाहिए।

यदि सूर्य सिंह, कन्या, तुला राशि पर हो तो राहु मुख ईशान कोण में और पुच्छ नैर्ऋत्य कोण में होगी (देखें चित्र-1)।

सीढ़ियों में दरवाजा रखना हो तो ऊपर नीचे रखना चाहिए। ऊपर का दरवाजा नीचे से 12 भाग कम होना चाहिए।

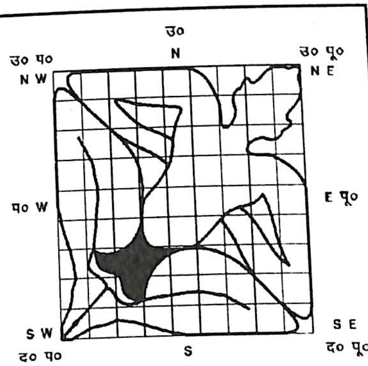

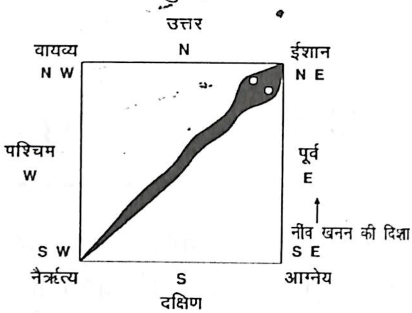

चित्र—1

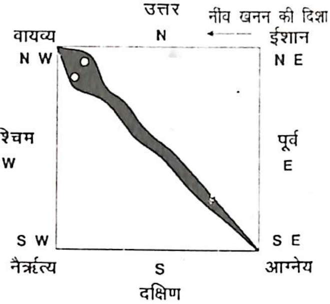

चित्र—2

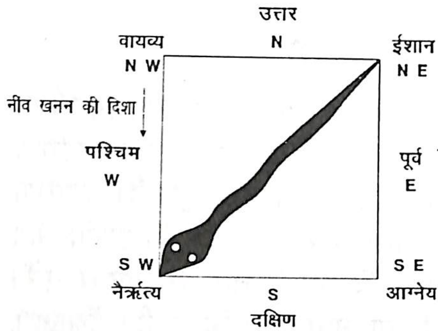

चित्र—3

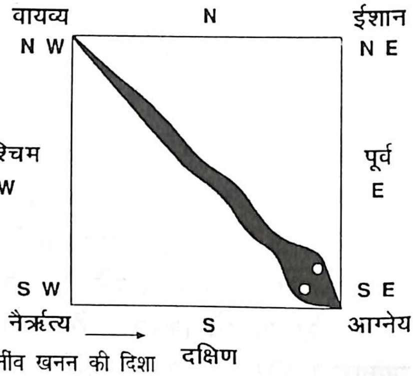

चित्र—4

यदि सूर्य वृश्चिक, धनु, मकर राशि पर हो तो राहु मुख वायव्य कोण में और पुच्छ आग्नेय कोण में होगी (देखें चित्र-2)।

यदि सूर्य कुम्भ, मीन, मेष राशि पर हो तो राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में होगा और पुच्छ ईशान कोण में होगी (देखें चित्र-3)।

यदि सूर्य वृष, मिथुन, कर्क राशि पर हो तो राहु मुख आग्नेय कोण में और पुच्छ वायव्य कोण में होगी (देखें चित्र-4)।

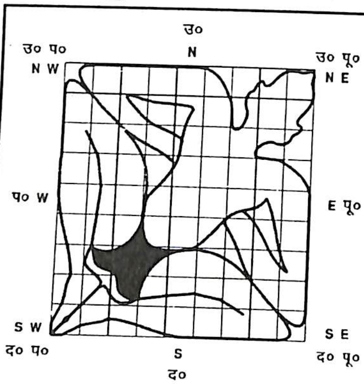

सीढ़ियाँ सदैव बाएँ से दाएँ घूमनी चाहिएं। पुराने घर में सीढ़ियाँ उत्तर-पूर्व में बनी हों तो दक्षिण-पश्चिम में एक कमरा अवश्य बनाना चाहिए।

राहु मुख ईशान में हो तो नींव खनन और शिलान्यास आग्नेय कोण में करना चाहिए। राहु मुख वायव्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास ईशान कोण में करना चाहिए। राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास वायव्य कोण से करना चाहिए। राहु मुख आग्नेय कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास नैर्ऋत्य कोण से करना चाहिए। **अतः नींव खनन और शिलान्यास राहु मुख के पृष्ठवर्ती दिशा से करना चाहिए।**

(ख) देवालाय (मंदिर) नींव हेतु दिशा विचार— देवालय हेतु चयनित मुहूर्त के दिन सूर्य जिस राशि पर हो उसके अनुसार राहु मुख और पुच्छ का ज्ञान करते हैं। राहु मुख से पृष्ठवृत्ती दिशा से नींव खनन व शिलान्यास करना चाहिए।

यदि सूर्य मीन, मेष, वृष राशि पर हो तो राहु मुख ईशान कोण में और पुच्छ नैर्ऋत्य कोण में होगी (देखें चित्र-1)। **राहु मुख ईशान में हो तो नींव खनन और शिलान्यास आग्नेय कोण में करना चाहिए।**

यदि सूर्य मिथुन, कर्क, सिंह राशि पर हो तो राहु मुख वायव्य कोण में और पुच्छ आग्नेय कोण में होगी (देखें चित्र-2)। **राहु मुख वायव्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास ईशान कोण में करना चाहिए।**

यदि सूर्य कन्या, तुला, वृश्चिक राशि पर हो तो राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में होगा और पुच्छ ईशान कोण में होगी (देखें चित्र-3)। **राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास वायव्य कोण से करना चाहिए।**

यदि सूर्य धनु, मकर, कुंभ राशि पर हो तो राहु मुख आग्नेय कोण में और पुच्छ वायव्य कोण में होगी (देखें चित्र-4)। **राहु मुख आग्नेय कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास नैर्ऋत्य कोण से करना चाहिए।**

(ग) कुएँ या जलाशय हेतु दिशा विचार—कुएँ या जलाशय हेतु चयनित मुहूर्त के दिन सूर्य जिस राशि पर हो उसके अनुसार राहु मुख

स्थान की कमी के कारण लोग भूमिगत निर्माण करने लगे हैं। भूमिगत निर्माण या तहखाना उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में बनाना चाहिए। भूखण्ड के मध्य में भी भूमिगत निर्माण नहीं करना चाहिए।

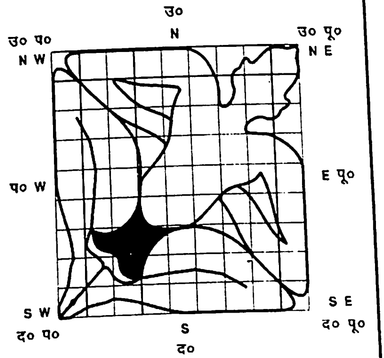

और पुच्छ का ज्ञान करते हैं। राहु मुख से पृष्ठवर्त्ती दिशा से नींव खनन व शिलान्यास करना चाहिए।

यदि सूर्य मकर, कुंभ, मीन राशि में हो तो राहु मुख ईशान कोण में और पुच्छ नैर्ऋत्य कोण में होगी (देखें चित्र-1)। **राहु मुख ईशान में हो तो नींव खनन और शिलान्यास आग्नेय कोण में करना चाहिए।**

यदि सूर्य, मेष, वृष, मिथुन राशि में हो तो राहु मुख वायव्य कोण और पुच्छ आग्नेय कोण में होगी (देखें चित्र-2)। **राहु मुख वायव्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास ईशान कोण में करना चाहिए।**

यदि सूर्य कर्क, सिंह, कन्या राशि में हो तो राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में और पुच्छ ईशान कोण में होगी (देखें चित्र-3)। **राहु मुख नैर्ऋत्य कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास वायव्य कोण से करना चाहिए।**

यदि सूर्य तुला, वृश्चिक, धनु राशि में हो तो राहु मुख आग्नेय कोण में और पुच्छ वायव्य कोण में होगी (देखें चित्र-4)। **राहु मुख आग्नेय कोण में हो तो नींव खनन और शिलान्यास नैर्ऋत्य कोण से करना चाहिए।**

संक्षेप में 'राहु मुख ज्ञान चक्रम्' बनाकर दें रहे हैं जिससे आप आसानी से राहु मुख एवं पृष्ठवर्ती दिशा ज्ञात कर सकते हैं—देखें -'राहु मुख ज्ञान चक्रम्।'

राहु मुख ज्ञान चक्रम्

वास्तु	देवालय	गृह	कुआँ	वास्तु
ईशान वायव्य नैर्ऋत्य आग्नेय	मीन, मेष, वृष मिथुन, कर्क, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक धनु, मकर, कुंभ	सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, धनु, मकर कुंभ, मीन, मेष वृष, मिथुन, कर्क	मकर, कुंभ, मीन मेष, वृष, मिथुन कर्क, सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक, धनु	आग्नेय ईशान वायव्य नैर्ऋत्य
राहु मुख दिशा	सूर्य राशि	सूर्य राशि	सूर्य राशि	पृष्ठवर्त्ती दिशा

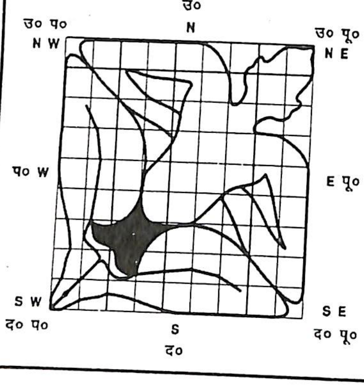

दुछत्ती भवन या कक्ष में दक्षिण या पश्चिम दिशा में बनानी चाहिए। दक्षिण व पश्चिम भाग ऊँचा रखना उत्तम है।

सर्प मुख विचार

भवन निर्माण करते समय राहु मुख के समान सर्प मुख का भी विचार कर लेना चाहिए। इसके लिए गृहारम्भ मुहूर्त जो चयन किया है उसमें देखें कि कौन सा मास है, उसके अनुसार सर्प मुख समझना चाहिए।

यदि भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक मास में से किसी में भवन निर्माण कर रहे हैं तो **सर्प मुख पूर्व दिशा** में होगा।

यदि फाल्गुन, चैत, वैशाख मास में से किसी में भवन निर्माण कर रहे हैं तो **सर्प मुख पश्चिम दिशा** में होगा।

यदि ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण मास में से किसी में भवन निर्माण कर रहे हैं तो **सर्प मुख उत्तर दिशा** में होगा।

यदि मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास में भवन निर्माण कर रहे हैं तो **सर्प मुख दक्षिण दिशा** में होगा।

यह जान लें कि सर्प के सिर में भवन निर्माण स्वामी नाश, पीठ पर निर्माण करने से सन्तान हानि, पूँछ पर भवन निर्माण करने से आर्थिक हानि और वक्षस्थल पर निर्माण करने से सुख-प्रसन्नता एवं सम्पन्नता कारक है।

शिलान्यास करते समय सर्प मुख का विचार करना चाहिए। शिलान्यास सर्प के वक्षस्थल पर करें।

भवन निर्माण और गृह प्रवेश के समय वास्तु पूजा अवश्य करनी चाहिए। वास्तु शान्ति एवं पूजा की चर्चा अलग अध्याय में करेंगे। अब अगले अध्याय में भवन निर्माण संबंधी अन्य मुहूर्तों की चर्चा करेंगे।

सेवकों के लिए घर उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में बनाने चाहिएं। यह प्रयास रखना चाहिए कि उत्तर और पूर्व की दीवारों पर भार कम हो।

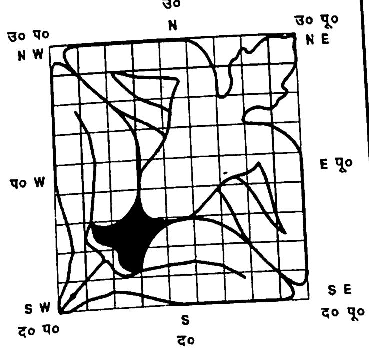

13

गृह निर्माण संबंधी अन्य मुहूर्त

इस अध्याय में गृह निर्माण संबंधी अन्य मुहूर्तों की चर्चा करेंगे। गृह निर्माण के अन्य मुहूर्तों के अन्तर्गत यहाँ गृहद्वार दिशा विचार, चौखट चढ़ाने का मुहूर्त, जलाशय या कूप खनन मुहूर्त, नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त, जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त, वास्तु शान्ति मुहूर्त, मन्दिर निर्माण मुहूर्त, देव प्रतिष्ठा मुहूर्त आदि की चर्चा करेंगे।

गृह द्वार दिशा विचार

भवन में यह अवश्य विचारना चाहिए कि गृह द्वार की दिशा कौन सी हो ? यह जान लें कि द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी एवं द्वादशी तिथि में बनाए गए द्वार शुभ होते हैं। द्वार सदैव शुक्ल पक्ष में ही बनवाने चाहिएं क्योंकि कृष्णपक्ष में द्वार बनवाने से अनिष्ट फल होता है और सदैव चोरी होने का भय रहता है।

गृह द्वार की दिशा पूर्व में रखनी हो तो पूर्णिमा से लेकर कृष्णपक्ष की अष्टमी तक की तिथियों में द्वार निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।

गृह द्वार की दिशा पश्चिम में रखनी हो तो अमावस्या से लेकर शुक्लपक्ष की अष्टमी तक की तिथियों में द्वार निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।

गृह द्वार की दिशा उत्तर में रखनी हो तो कृष्णपक्ष की नवमी से लेकर चतुर्दशी तक की तिथियों में द्वार निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।

गृह द्वार की दिशा दक्षिण में रखनी हो तो शुक्लपक्ष की नवमी

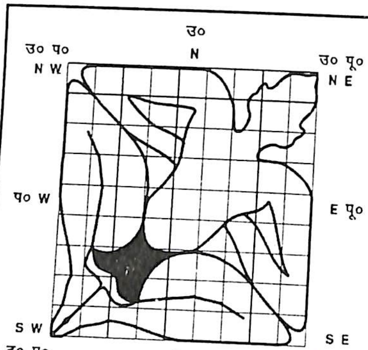

कुआँ या ट्यूबवैल ईशान कोण में बनाना चाहिए। अन्य दिशाओं में बनाना अशुभ है।

से लेकर शुक्ल चर्तुदशी तक की तिथियों में द्वार निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।

गृह स्वामी की राशि के अनुसार द्वार की दिशा निर्धारित करनी चाहिए। यदि गृहस्वामी की राशि, कर्क, वृश्चिक व मीन हो तो द्वार दिशा पूर्व में, वृष, तुला व कुंभ राशि हो तो द्वार दिशा पश्चिम में मेष, सिंह व धनु राशि हो तो द्वार दिशा उत्तर में एवं मिथुन, कन्या एवं मकर राशि हो तो द्वार दिशा दक्षिण में रखनी चाहिए। देखें 'राशि से द्वार दिशा ज्ञान चक्रम्'।

राशि से द्वार दिशा ज्ञान चक्रम्

गृह स्वामी की राशि	द्वार दिशा
कर्क, वृश्चिक, मीन	**पूर्व**
वृष, तुला, कुंभ	**पश्चिम**
मेष, सिंह, धनु	**उत्तर**
मिथुन, कन्या, मकर	**दक्षिण**

ब्राह्मणों के लिए पूर्व दिशा, क्षत्रियों के लिए उत्तर दिशा, वैश्यों के लिए दक्षिण दिशा एवं शूद्रों के लिए पश्चिम दिशा में द्वार मुख रखना शुभ है। घर में चारों दिशाओं में द्वार हो तो द्वार दोष नहीं रहता है।

सूर्य राशि द्वारा गृह द्वार दिशा ज्ञान

सूर्य राशि के अनुसार भी गृह द्वार की स्थिति ज्ञात की जा सकती है। कुम्भ राशि के सूर्य में फाल्गुन माह में, कर्क और सिंह राशि के सूर्य में श्रावण माह में तथा मकर राशि के सूर्य में पौष मास में गृहारम्भ करना चाहिए और उसका द्वार पूर्व या पश्चिम दिशा में रखना चाहिए।

खिड़कियाँ द्वार के सामने बनानी चाहिएं। दो दीवारों के सन्धि भाग में खिड़की नहीं बनानी चाहिए। पश्चिमी, पूर्वी और उत्तरी दीवारों पर खिड़कियाँ बनाना शुभ है।

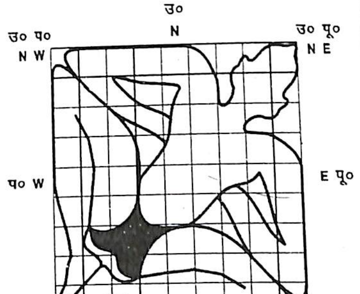

मेष और वृष राशि के सूर्य में वैशाख मास में, तुला-वृश्चिक राशि के सूर्य में अगहन मास में गृहारम्भ करना चाहिए और द्वार उत्तर या दक्षिण दिशा में रखना चाहिए।

द्वार स्थापना या चौखट चढ़ाने का मुहूर्त

द्वार स्थापन या चौखट चढ़ाने का मुहूर्त विचारते समय सूर्य नक्षत्र से द्वार शाखा चक्र, शुभ नक्षत्र, तिथि, वारादि का विचार करके मुहूर्त ज्ञात करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में द्वार स्थापना करने से शुभ एवं अरिष्टनाश होता है।

1. शुभ नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद। शुभाशुभ नक्षत्र विचार करते समय नक्षत्र द्वार चक्र भी सूर्य नक्षत्र से ज्ञात करना चाहिए।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे प्रथम चार नक्षत्र सिर पर, अगले आठ नक्षत्र कोणों (दोनों पर), अगले आठ नक्षत्र बाजुओं पर, अगले तीन नक्षत्र देहली पर एवं अगले चार नक्षत्र मध्य में रहते हैं। देखें—चित्र—द्वार चक्रम् एवं सारिणी 'नक्षत्र द्वार चक्रम्'।

सिर पर नक्षत्र हो तो लक्ष्मी वास करे, कोनों (कोण) पर नक्षत्र हो तो घर में उजाड़ हो, बाजुओं में नक्षत्र हो तो सुख होता है, देहली में नक्षत्र हो तो स्वामी नाश एवं मध्य में नक्षत्र हो तो सुख-सम्पत्ति कारक होता है।

सरलता के लिए देखें—'नक्षत्र द्वार चक्रम्'।

वास्तु पुरुष अंग	सिर	कोण	बाजु	देहली	मध्य
सूर्य नक्षत्र से	चार नक्षत्र	अगले 8 नक्षत्र	अगले 8 नक्षत्र	अगले 3 नक्षत्र	अगले 4 नक्षत्र
फल	लक्ष्मी वास	घर में उजाड़	सुख	स्वामीनाश	सुख-सम्पत्ति कारक

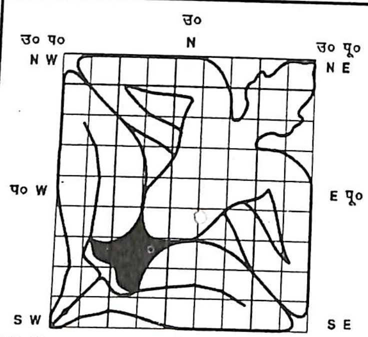

वायु के प्रदूषण से बचने के लिए जिन दिशाओं से घर में शुद्ध वायु आती है उनके विपरीत दिशाओं में एग्जास्ट फैन या रोशनदान लगाने चाहिएं।

2. **शुभ तिथि**—5, 7, 8, 9वीं तिथि शुक्लपक्ष की होनी चाहिए। प्रतिपदा में द्वार स्थापन से दुःख, तृतीया में द्वार स्थापन से रोग, चतुर्थी में द्वार स्थापन से कुल नाश, षष्ठी में द्वार स्थापन से धनहानि और दशमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या में द्वार स्थापना करने से शत्रु-वृद्धि होती है।

3. **शुभवार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार शुभ होते हैं।

4. **शुभलग्न**—शुभलग्न भी गृह आरम्भ मुहूर्तों की तरह ज्ञात कर लेना चाहिए।

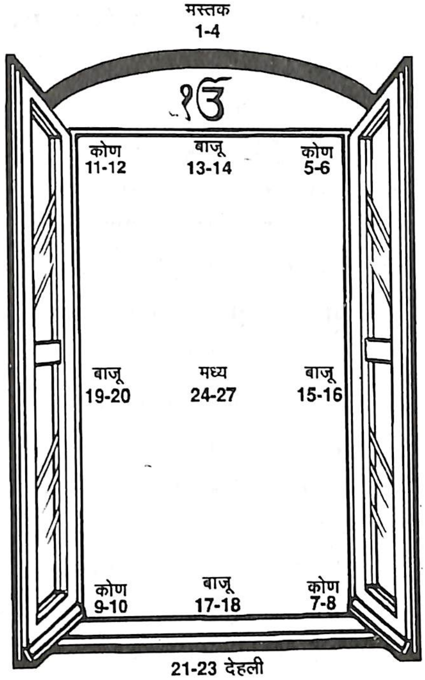

चित्र—द्वार चक्रम

आजकल देहली स्थापना की परम्परा समाप्त हो गयी है और लकड़ी की चौखट के नीचे देहली का प्रयोग बहुत कम हो गया है। केवल दायें-बायें तथा ऊपरी भागों में चौखट का प्रयोग कर किवाड़ों का फर्श से 1 से 1.5 सूत ऊँचा रखकर 6, 9 या 12 ईंच के फर्श को देहली के स्थान पर बनाया जाने लगा है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

घर नूतन हो या जीर्ण उसमें घर का स्वामी सपरिवार प्रवेश करके वास करता है। भवन निर्माण के बाद उसमें प्रवेश करना भी वास्तुशास्त्र

प्रयास करना चाहिए कि मुख्य भवन में प्रवेश हेतु द्वार उत्तर या पूर्व में ही हों। दक्षिण या पश्चिम में द्वार नहीं हो।

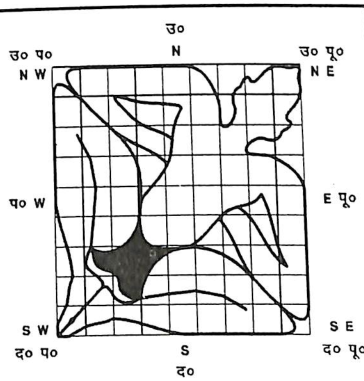

से सम्बन्धित है। इसके लिए शुभ समय का निर्धारण किया जाता है। शुभ समय में किए गए कार्य सफलतादायी होते हैं। प्रायः दो प्रकार का गृह प्रवेश होता है—

1. नूतन गृह प्रवेश—भू-चयन के उपरान्त उस पर नया भवन निर्माण करके जब रहने के लिए प्रवेश किया जाता है तो उसे नूतन गृह प्रवेश कहते हैं। नूतन गृह प्रवेश हेतु शुभ नक्षत्र, वार, तिथि और लग्न निम्न प्रकार समझने चाहिएँ—

(i) **शुभ नक्षत्र**—उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा एवं रेवती नक्षत्र शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी व त्रयोदशी तिथियाँ शुभ हैं।

(iii) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार।

(iv) **शुभ लग्न**—वृष, सिंह, वृश्चिक व कुंभ राशि का लग्न उत्तम है। मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशि का लग्न मध्यम है। लग्नेश बली, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह और 3, 6, 10, व 11वें भाव में पाप ग्रह होने चाहिएं।

यह ध्यान रखें—गृह प्रवेश के समय सूर्य वाम भाग में हो तो शुभ होता है। लग्न से **8, 9, 10 व 12वें भाव में** सूर्य हो तो पूर्व मुख के द्वार वाले भवन में **5, 6, 7, 8, 9वें भाव में** सूर्य हो तो दक्षिण मुख के द्वार वाले भवन में **4, 5, 6ठे भाव में** सूर्य हो तो पश्चिम मुख के द्वार वाले भवन में और **11, 12, 1, 2 व 3रे** भाव में सूर्य हो तो उत्तर मुख के द्वार वाले भवन में रवि वाम भाग में होता है। देखें अगले पृष्ठ पर चित्र—सूर्य वास चक्रम्।

यदि गृहारम्भ करते समय वास्तु पुरुष का पूजन नहीं किया हो तो सविधि गृह प्रवेश करते समय वास्तु शान्ति के लिए यज्ञादि करके एवं

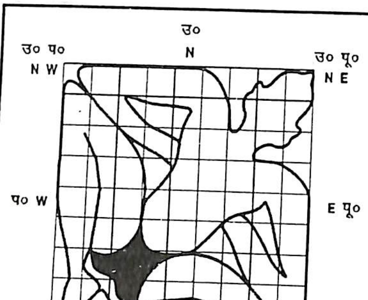

चारों भुजाओं को नौ-नौ भागों में बाँटकर मुख्यद्वार के लिए स्थान चयन करना चाहिए। मुख्यद्वार की स्थापना शुभ मुहूर्त में करनी चाहिए।

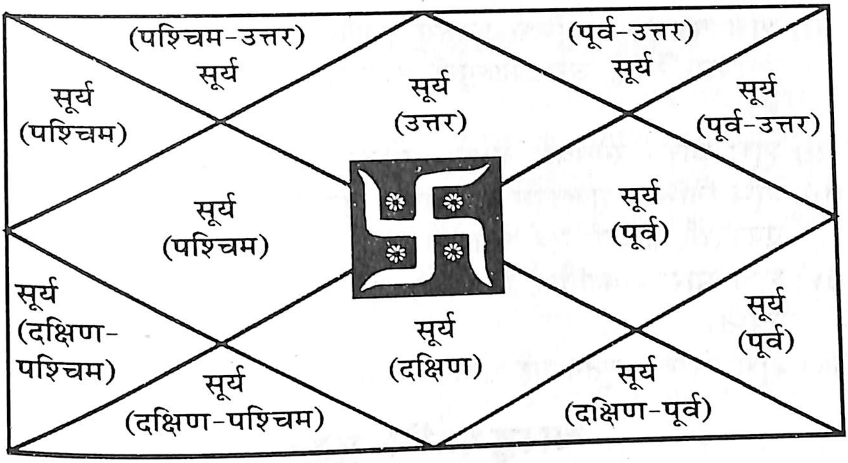

चित्र—सूर्य वास चक्रम्

ब्राह्मणों, मित्रों व परिजनों को भोज देना चाहिए। गृह प्रवेश के समय भद्रा सम्मुख या वामस्थ नहीं होनी चाहिए। नए भवन में तुलसी का पौधा स्थापित करना चाहिए। शुभ मुहूर्त में सपरिवार व परिजनों के साथ मंगलगान करते हुए वन्दनावार व मालादि से सजे घर में शंख, बैंड व मंगल ध्वनि करते हुए प्रवेश करना चाहिए। बिना द्वार व छत रहित, वास्तु शान्ति के बिना व ब्राह्मण भोजन कराए बिना गृह प्रवेश पूर्णतः वर्जित है।

2. **जीर्णोद्धार गृह प्रवेश**—क्षतिग्रस्त गृह का जीर्णोद्धार करके गृह प्रवेश करके जीर्णोद्धार गृह प्रवेश कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आंधी, तूफान या किसी अन्य कारण से घर के टूट जाने पर उसी स्थान पर उसकी मरम्मत करायी गयी हो या दूसरा घर बनाया हो या पुराने मकान में विस्तार किया गया हो तो उसके लिए शुभ मुहूर्त चयन करते समय शुभतथ्यों का निम्न प्रकार चयन करें—

द्वार दो पल्लों के ही शुभ हैं। द्वार स्वतः खुलना व बन्द नहीं होना चाहिए और खोलने व बन्द करने में आवाज नहीं होनी चाहिए। द्वार पर मंगल चिह्न लगाना चाहिए।

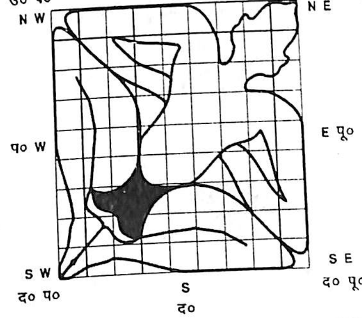

(i) **शुभ नक्षत्र**—शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, धनिष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाप्रपद नक्षत्र शुभ हैं।

(ii) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार एवं शनिवार।

(iii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी एवं त्रयोदशी।

(iv) **शुभ मास**—कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ।

(v) **शुभ लग्न**—नूतन गृह प्रवेश की तरह समझें।

वास्तु शान्ति मुहूर्त

गृह प्रवेश से पूर्व वास्तु शान्ति अर्थात् यज्ञादि धार्मिक कार्य अवश्य कराने चाहिएं। मंगलाचरण सहित वाद्य ध्वनि करते हुए कुलदेव की पूजा व अग्रजों का सम्मान करके व ब्राह्मणों को प्रसन्न करके गृह प्रवेश करना चाहिए।

गृह प्रवेश के पूर्व वास्तु शान्ति कराकर ही गृह प्रवेश करना चाहिए। इसके लिए शुभ नक्षत्र वार एवं तिथि अधोलिखित हैं—

(i) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की द्वितीय, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी एवं त्रयोदशी।

(iii) **शुभ नक्षत्र**—अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाति, अनुराधा एवं मघा।

(iv) **अन्य विचार**—चन्द्रबल, लग्न शुद्धि एवं भद्रादि का विचार कर लेना चाहिए।

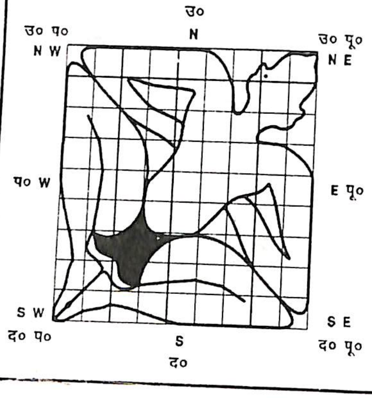

पूर्वाभिमुख भूखण्ड में मुख्यद्वार ईशान ओर पूर्व दिशा के मध्य ईशान से 3 व 4 भाग पर बनाना शुभ है।

कुआँ या नलकूप खुदवाने का मुहूर्त

जल जीवनाधार है। कविवर रहीम ने भी कहा है—'रहिमन पानी राखिये बिना पानी सब सून'। जल के बिना जीवन निरर्थक है उसमें कोई गति ही नहीं होती है। हमारे शरीर में और भूमि पर सर्वाधिक जल ही है। नदियों, समुद्र व अन्य साधनों के अतिरिक्त व्यक्तिगत या सामूहिक कुआँ या नलकूप खुदवाकर अपनी आवश्यकता अनुरूप जल प्राप्त किया जाता है।

कुआँ या नलकूप खुदवाने के लिए शुभ मुहूर्त का चयन कर लेना चाहिए। शुभ तिथि, वार व नक्षत्र निम्न प्रकार हैं—

(i) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 व पूर्णिमा तिथि शुभ हैं।

(iii) **शुभ नक्षत्र**—हस्त, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा-भाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा व पूर्वाषाढ़ा।

उपरोक्त शुभ तिथि, वार व नक्षत्र में नलकूप व कुआँ खुदवाना चाहिए। शुभ हो रहा या चौघड़िया मुहूर्त का भी प्रयोग करना चाहिए। भूमि शयन नहीं होनी चाहिए। क्षय पाप, अधिक मास, भद्रा या कुयोग नहीं हो। इस कार्य से पूर्व चन्द्र राशि द्वारा जल प्रभाव भी जानना चाहिए देखें—'चन्द्र राशि जल प्रभाव चक्रम्'। बहुजल राशि में कुआँ या नलकूप खुदवाना चाहिए।

राशियाँ	जल प्रमाण
4, 10, 12	बहुजल
2, 11	अर्द्धजल
7, 8	अल्पजल
1, 3, 5, 6, 9	निर्जल

पश्चिमाभिमुख भूखण्ड में मुख्यद्वार नैर्ऋत्य और पश्चिम दिशा के मध्य वायव्य से 5 व 6 भाग पर बनाना शुभ है।

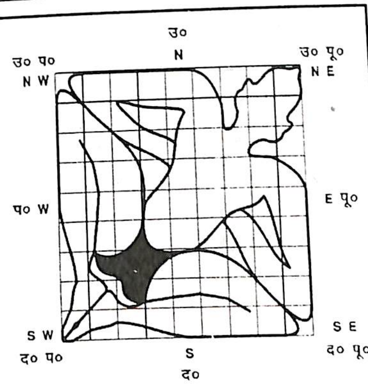

देवालय (मन्दिर) निर्माण मुहूर्त

सभी सम्प्रदाय के अनुयायी ईश्वर की पूजा हेतु कोई न कोई धर्म स्थल रखते हैं। वास्तु के अनुसार पूजा स्थल या धर्म स्थल ईशान कोण में होना चाहिए। उसमें स्थापित मूर्ति उत्तर या पूर्व में होनी चाहिए। विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कातिकिय का पूर्व या पश्चिम मुख में स्थापना करना चाहिए। ब्रह्मा का मुख किसी भी दिशा में रख सकते हैं। नवग्रह, चामुण्डा, भालूगण, कुबेर, गणेश, भैरव की स्थापना दक्षिण मुख तथा हनुमान जी का नैर्ऋत्य मुख स्थापना करना चाहिए। अब देवालय निर्माण मण्डम निर्माण व देव प्रतिष्ठा का मुहूर्त ज्ञात करना बताते हैं।

देवालय निर्माण मुहूर्त हेतु शुभ मास, वार, तिथि, नक्षत्र एवं लग्न अधोलिखित समझें—

(i) **शुभ मास**—माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष व पौष मास शुभ हैं।

(ii) **शुभ वार**—रवि, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार शुभ हैं।

(iii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की 2, 3, 5, 7, 11, 12 व 13वीं तिथि शुभ हैं।

(iv) **शुभ नक्षत्र**—पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा व रोहिणी नक्षत्र शुभ हैं।

(v) **शुभ लग्न**—गृहारम्भ मुहूर्त की तरह चयन करने चाहिए।

देवालय का मण्डप निर्माण मुहूर्त

देवालय का मण्डप बनाने के लिए वार, तिथि, नक्षत्र निम्नलिखित शुभ मानने चाहिएं—

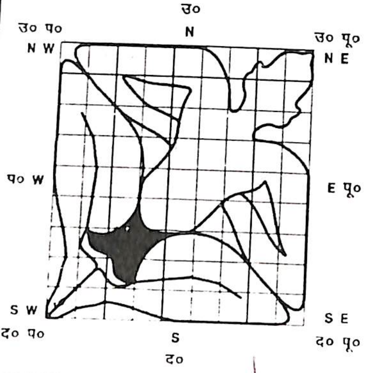

उत्तराभिमुख भूखण्ड में मुख्यद्वार वायव्य और उत्तर दिशा के मध्य वायव्य से 3 व 4 भाग पर बनाना शुभ है।

(i) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—2, 5, 7, 11, 12, 13 तिथियाँ शुभ हैं। पक्ष शुक्ल होना चाहिए।

(iii) **शुभ नक्षत्र**—मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र शुभ हैं।

प्रतिमा निर्माण मुहूर्त

प्रतिमा निर्माण के लिए शुभ वार, नक्षत्र व तिथि निम्नवत् समझने चाहिएं—

(i) **शुभ वार**—सोमवार, गुरुवार, व शुक्रवार शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—2,3, 5, 7, 11, 13वीं तिथि शुभ हैं। शुक्लपक्ष होना चाहिए।

(iii) **शुभ नक्षत्र**—पुष्य, रोहिणी, श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्ताराभाद्रपद, हस्त, मृगशिरा, रेवती व अनुराधा नक्षत्र शुभ हैं।

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त के लिए शुभवार, तिथि, नक्षत्र व लग्न निम्न प्रकार समझने चाहिएं—

(i) **शुभ वार**—सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार शुभ हैं।

(ii) **शुभ तिथि**—शुक्लपक्ष की 1, 2, 5, 10, 13, 15वीं तिथि शुभ है। मतान्तर से कृष्णपक्ष की 1, 2, 5वीं तिथि भी शुभ है।

(iii) **शुभ नक्षत्र**—पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा. उत्तराभाद्रपद, हस्त, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, मूला, श्रवण, धनिष्ठा व पुनर्वसु नक्षत्र शुभ हैं।

दक्षिणाभिमुख भूखण्ड में मुख्यद्वार आग्नेय और दक्षिण दिशा के मध्य नैर्ऋत्य से 6 व 7 भाग पर बनाना शुभ है।

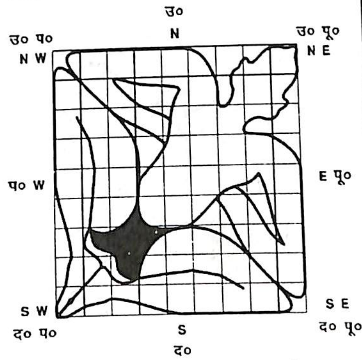

इसके अतिरिक्त उत्तरायण के सूर्य में गुरु, शुक्र और मंगल भी बली होना चाहिए।

(iv) **लग्न वृद्धि**—स्थिर व द्विस्वभाव लग्न हो केन्द्र व त्रिकोण में शुभ ग्रह एवं 3, 6, 11वें पाप ग्रह हों। अष्टम में कोई पाप ग्रह न हो।

देवशयन, मलमास, गुरु-शुक्र अस्त व निर्बल चन्द्र कदापि नहीं होना चाहिए। शिवलिंग स्थापना के लिए शिववास भी देख लेना चाहिए। शिववास के लिए वर्तमान तिथि को दुगना करके 5 जोड़ दें और फिर 7 से भाग दें जो शेष बचे उसके अनुसार शिववास व फल समझना चाहिए—

शेष	शिववास	फल
0	श्मशान	मृत्यु
1	केलाश	सुखलाभ
2	गौरी के साथ	धनलाभ
3	वृषभ पर	सिद्धिदायक
4	सभा में	पीड़ादायक
5	भोजन पर	दुःखदायी
6	रमण में	कष्टकारी

इस अध्याय में गृह निर्माण संबंधी विभिन्न मुहूर्तों की चर्चा की गई है। अब अगले अध्याय में वास्तु कला की वैज्ञानिकता संबंधी जानकारी देंगे जो बहूपयोगी होगी।

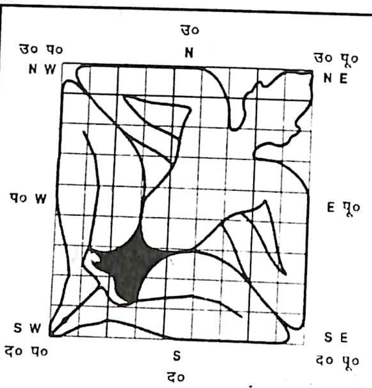

वर्णानुसार ब्राह्मण के लिए पश्चिम में, क्षत्रिय के लिए उत्तर में, वैश्य के लिए पूर्व में और शूद्र के लिए दक्षिण में द्वार शुभ होता है।

14 वास्तुकला की वैज्ञानिकता

वास्तुकला का जितना धार्मिक महत्त्व है उतना ही वैज्ञानिक आधार भी है, इसीलिए आज वास्तुकला की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो रहा है। यह शास्त्र अत्यन्त प्राचीन है। इसके नियम बहुत सूक्ष्म अध्ययन और अनुभवों के आधार पर बनाए गए हैं। इन नियमों का अनुकरण करने मात्र से सुख-शान्ति और सम्पन्नता का मार्ग प्रशस्त होता है। हमारे पूर्वजों द्वारा प्रतिपादित वास्तुकला के सिद्धान्त उनके अध्ययन, अनुसंधान और अनुभवों के प्रकाश स्तम्भ है। इनकी सत्यता और व्यवहारिकता आज के आधुनिक युग में स्वतः सिद्ध होती जा रही है।

वास्तुकला के नियमों का प्रतिपादन करते समय कई महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा गया है। सूर्य, चन्द्र और वायु से प्राप्त ऊर्जा के अतिरिक्त अन्य ग्रहों द्वारा पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों को भी ध्यान में रखा गया है।

भवन नगर की इकाई है जिसके समूह से नगर व ग्राम आदि बनते हैं। यदि हम ग्राम व नगर की इकाई को प्राकृतिक व्यवस्था के अनुकूल बना लें तो प्राकृतिक प्रदूषण से स्वयं को बचा सकते हैं। वास्तुकला के सिद्धान्त भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप बनाए गए हैं और यह ध्यान रखा गया है कि प्राकृतिक स्त्रोतों द्वारा लोक कल्याण हेतु ऊर्जा का समुचित ढंग से ग्रहण करते हुए भवन में इनका उपयोग किस प्रकार किया जा सके। वस्तुतः प्राकृतिक स्त्रोतों से सूक्ष्म से सूक्ष्मतम शक्ति को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने के लिए ऐसे वास्तु नियमों का प्रतिपादन किया गया है जिससे इनका सर्वाधिक उपयोग किया जा सके।

गृहस्वामी की राशि कर्क, वृश्चिक, मीन हो तो पूर्व में द्वार, वृष, तुला, कुंभ राशि हो तो पश्चिम में द्वार, मेष, सिंह, धनु राशि हो तो उत्तर में द्वार एवं मिथुन, कन्या, मकर राशि हो तो दक्षिण में द्वार होना चाहिए।

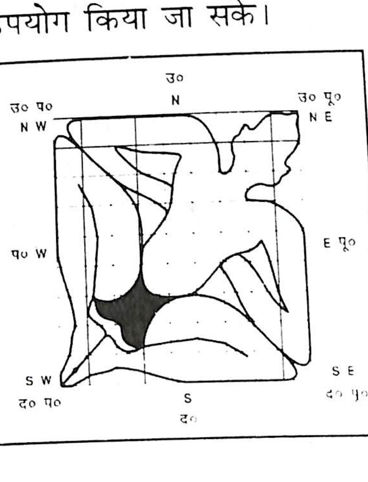

हम सूर्य के ताप और चन्द्रमा की शीतलता से प्रभावित होते हैं। यहाँ तक सौरमण्डल के समस्त ग्रह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और इनसे भूमण्डल भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। सौरमण्डल की स्थिति पर विचार करें तो ज्ञात होता है कि पृथ्वी से जल 100 गुना अधिक है, जल से अग्नि 100 गुना अधिक है, अग्नि से वायु 100 गुनी है और वायु से आकाश 100 गुना है जिसके गर्भ में सौरमण्डल स्थित है। सूर्य ताप से ही पृथ्वी पर जीवन व प्रकाश सम्भव हो पा रहा है।

चुम्बकीय तरंगों तथा सूर्य रश्मियों का प्रभाव

भवन निर्माण में दिशाओं के निर्धारण में या निर्माण योजना में उत्तरी ध्रुव से आने वाली चुम्बकीय तरंगों तथा पूर्व से आने वाली सूर्य रश्मियों से लाभ उठाने का विचार निहित है। भवन का निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि इन चुम्बकीय तरंगों और सूर्य रश्मियों के प्रवाह में कोई बाधा न आए।

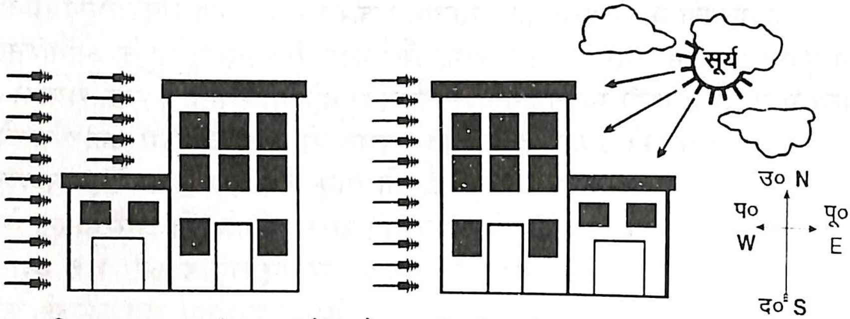

चित्र—चुम्बकीय तरंगों और सूर्य रश्मियों का भवन पर प्रभाव

अतः स्पष्ट है कि मानव शरीर एवं मस्तिष्क पर उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव से प्रवाहित होने वाली चुम्बकीय तरंगों एवं प्राण वायु के प्रवाह का प्रभाव पड़ता है। इसी तरह पूर्व से उदित सूर्य की प्रातःकालीन रश्मियों

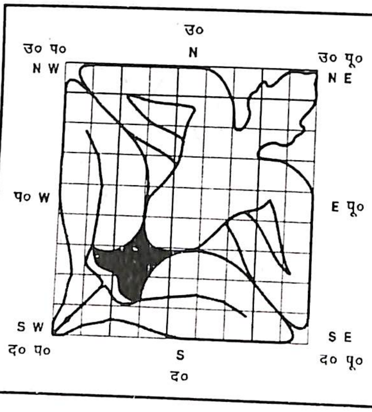

सभी द्वार एक शीर्ष में रखने चाहिएं। द्वार की संख्या सम होनी चाहिए। एक द्वार के ऊपर दूसरा द्वार न रखें, यदि रखना पड़े तो ऊपरी द्वार की ऊँचाई कम रखें।

में समाहित ऊर्जा जो अल्ट्रा वायलेट किरणों के माध्यम से हमारे मन, मस्तिष्क एवं शरीर को प्रभावित करके आवश्यक ऊर्जा, विटामिन्स डी एवं ए को पहुँचाती है। भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग ऊँचा होने के कारण सूर्य की इन्फ्रारेड व कास्मिक किरणों से रक्षा होती है।

वास्तु में पंच तत्त्वों की महत्ता

भूमि—भूमि में कोणों, ढलाव, मार्गों, दिशाओं आदि पर विशेष ध्यान रखा जाता है। भूमि दक्षिण-पश्चिम की ओर ऊँची होनी चाहिए। पूर्व से पश्चिम की ओर लम्बा भवन सूर्य वेधी होता है और उत्तर-दक्षिण में लम्बा भवन चन्द्रवेधी होता है। चन्द्रवेधी भवन शुभ और धनकारक होता है। बाग-बगीचे हेतु सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों भवन उपयुक्त माने गए हैं। देवालय निर्माण में सूर्य और चन्द्रवेध का विचार नहीं किया जाता है।

जल—जल के प्रवाह के विषय में यह ध्यान रखा जाता है कि भवन का समस्त जल उत्तर-पूर्व दिशा में गिरे। कुआँ, ट्यूबवेल, स्विमिंग पूल आदि उत्तर-पूर्व में रहना चाहिए। स्नानगृह का जल भी उत्तर-पूर्व में जाना चाहिए। उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण जल के लिए सर्वथा उपयुक्त होता है। शुद्ध साफ जल उत्तर-पूर्व में और सैप्टिक टैंक और सीवर लाइन का प्रवाह या स्थापना उत्तर-पश्चिम में होनी चाहिए।

अग्नि—अग्नि की दिशा दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) है। भवन में रसोईघर, अग्नि स्थान, गीजर, विद्युत मीटर आदि इसी कोण में रखने चाहिएं। इसका दूसरा विकल्प उत्तर-पश्चिम (वायव्य) कोण भी है क्योंकि अग्नि का इस कोण से सीधा सम्पर्क है।

वायु—वायु की भवन में महत्ता सर्वविदित है क्योंकि इसमें वास करने वाले लोगों का जीवनाधार वायु है। यदि इनको निरन्तर शुद्ध वायु (प्राण वायु) मिलती रहे तो वे स्वस्थ रह सकते हैं। यह तभी सम्भव है

दरवाजे एवं खिड़कियाँ उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक रखें। प्रयास करें दक्षिण और पश्चिम में खिड़कियाँ-दरवाजे रखने ही न पड़ें और रखें तो कम ही रखें।

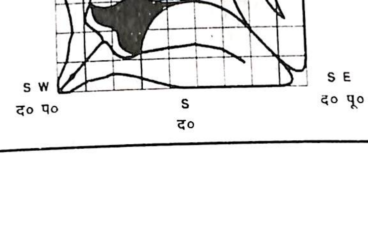

जब भवन में निरन्तर शुद्ध वायु का प्रवाह होता रहे। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखकर ही वास्तुशास्त्र का यह सिद्धान्त बना कि पूर्व दिशा एवं उत्तर दिशा का भाग सर्वाधिक खुला रहे तथा सतह नीची रहे जिससे प्रातःकाल से सूर्य का प्रकाश एवं शुद्ध वायु निरन्तर प्राप्त होती रहे। भवन में उत्तर-पूर्व दिशा में वायु के सभी साधन दरवाजों, खिड़कियों, रोशनदान, कूलर, ए.सी., रूम कूलर, बरामदा, बालकनी आदि रखने चाहिएं।

आकाश—आकाश का तात्पर्य भवन में आँगन से है। भूखण्ड का मध्य भाग ब्रह्मा का स्थान माना गया है जिसे वास्तुशास्त्रानुसार खुला रखा जाता है। खुले आकाश से नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रभाव निर्बाध रूप से प्राप्त होता रहता है। भवन में आँगन रखने से खुला आकाश तो मिलता ही है और सूर्य की किरणें व हवा का आवागमन भी सम्यक ढंग से होता है जिससे भवन में वास करने वालों को भी लाभ होता है। दक्षिण-पश्चिम में भवन ऊँचा रखा जाता है, ऐसा करने से दोपहर बाद की सूर्य की हानिकारक रश्मियों से रक्षा होती है और वर्षा ऋतु में पश्चिम की ओर से प्रवाहित होने वाली हानिकारक वायु से भी रक्षा होती है। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में आकाश तत्त्व की प्रधानता है उसी प्रकार भवन में भी इसकी महत्ता को विस्मृत नहीं कर सकते हैं।

वास्तुशास्त्र में दिक् सामुख्य की महत्ता

भवन में दिक् सामुख्य (Orientation) की सर्वाधिक महत्ता है। वास्तुशास्त्र में पूर्व दिशा को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है और पृथ्वी पर सूर्योदय व सूर्यास्त से इसका संकेत मिलता है। सूर्योदय से पूर्व और सूर्योस्त से पश्चिम दिशा का बोध होता है। प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों में अल्ट्रा वायल्ट रश्मियों का बाहुल्य रहता है, मध्याह्न में सूर्य रश्मियाँ रेडियोधर्मिता से ग्रस्त रहती हैं और सूर्यास्त के समय की इन्फ्रारेड व कॉस्मिक किरणें होती है। सूर्य की प्रातःकालीन रश्मियों से लाभ एवं मध्याह्न व सूर्यास्तकालीन रश्मियों के कुप्रभाव से बचने

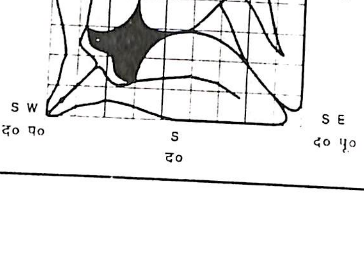

बाहरी द्वार व भीतरी द्वार एक सीध में हों तो यह उत्संग संबंध होता है जोकि शुभ है।

के लिए ही पूर्व व उत्तर दिशा को महत्ता दी गयी है। इसीलिए पूर्व व उत्तर दिशा को खुला रखा जाता है। भवन का उत्तर-पूर्व दिशा का भाग नीचा रखा जाता है जबकि दक्षिण-पश्चिम का भाग ऊँचा रखा जाता है। पूर्व-उत्तर भाग में खिड़कियों पर दरवाजे आदि रखे जाते हैं और दक्षिण-पश्चिम भाग में दरवाजे व खिड़कियाँ कम रखी जाती हैं जिससे सूर्य रश्मियों से लाभ व भवन में प्रकाश एवं शुद्ध वायु का आवागमन भली-भांति होता रहे।

भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग ऊँचा क्यों ?

दक्षिण-पश्चिम भाग में भवन को ऊँचा बनाया जाता है। इस दिशा की दीवारें भी मोटी बनायी जाती हैं। सीढ़ी आदि का भार भी इसी ओर रखा जाता है। इस ओ़र भारी सामान का स्टोर आदि भी रखा जाता है। उसके पार्श्व में भी यह तथ्य है—पृथ्वी जब सूर्य की परिक्रमा दक्षिणी दिशा में करती है तो वह एक विशेष कोणीय स्थिति में रहती है, ऐसे में इस ओर अधिक भार रखने से सन्तुलन आता है। इस ओर सूर्यताप अधिक होने से इससे भी बचा जा सकता है। इस और गर्मियों में ठण्डक एवं सर्दियों में गर्मी का आभास भी किया जा सकता है जिसका लाभ समयानुरूप आसानी से उठाया जा सकता है।

दक्षिण-पश्चिम में खिड़की-दरवाजे कम क्यों ?

भवन के दक्षिण-पश्चिम भाग में कम खिड़की, दरवाजे और छोटे इसीलिए रखे जाते हैं क्योंकि इस क्षेत्र के कमरों में या भवन के इस भाग में गर्मियों में ठण्डक एवं सर्दियों में गर्मी रहती है। दक्षिण-पश्चिम में जो खुली जगह रहती है उससे बॉऊन्ड्री वाल एवं भवन की दीवार के मध्य जो ताप युक्त वायु छोटी खिड़कियों व रोशनदानों से भवन में प्रवेश करती है तो हवा दबाव के कारण कम ताप की रहती है। जिससे गर्मियों में ठण्डक रहती है और वातावरण को शुद्ध करने में भी सहायता मिलती है।

बाहरी द्वार भीतरी द्वार के बायीं ओर होता है तो इस संबंध को अपसव्य कहते है जोकि अशुभ है।

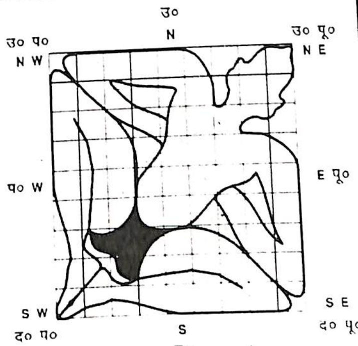

आग्नेय कोण में रसोईघर क्यों ?

भवन के आग्नेय कोण में रसोईघर रखने के पार्श्व में यही कारण है कि इस ओर सूर्य रश्मियों व शुद्ध वायु का बाहुल्य रहता है। पृथ्वी, सूर्य की परिक्रमा दक्षिणायन की ओर करती है। इसीलिए इस कोण में सूर्य की अल्ट्रा वायलेट रश्मियाँ अधिक प्राप्त होती है। इनसे रसोईघर में रखे खाद्य पदार्थ शुद्ध रहते हैं और सूर्यताप के कारण ही पश्चिमी दीवार की नमी से रक्षा के कारण उत्पन्न हानिकारक कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं।

उत्तर-पूर्व में जल-स्त्रोत और पूजा स्थल क्यों ?

वास्तुशास्त्र के अनुसार वायव्य कोण (ईशान) में दैनिक उपयोग में आने वाले जल के स्त्रोत को रखने का विधान है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि इस ओर सूर्यताप अधिक होने के कारण पानी में प्रदूषण जल्दी नहीं होता है और शुद्धजल प्राप्त होता है।

पूजा स्थल ईशान कोण में होने का कारण यही है कि पूजा के समय शरीर पर अल्प वस्त्र रहते हैं और सूर्य रश्मियों का लाभ हमें भरपूर मिलता है। उत्तरी क्षेत्र से आने वाली पृथ्वी की चुम्बकीय ऊर्जा की अनुकूलता भी प्राप्त होती है। इस क्षेत्र को पवित्र भी माना जाता है और अन्तरिक्ष से भी कुछ आलौकिक शक्तियाँ प्राप्त होती है। इसी कारण मन्दिरों व पूजा स्थलों के द्वार इसी ओर होते हैं तथा इस क्षेत्र को सर्वाधिक खुला भी रखा जाता है।

दक्षिण दिशा में सिरहाना क्यों ?

इसका वैज्ञानिक कारण भी मानव पर पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव है। चुम्बकीय क्षेत्र उत्तर से दक्षिण की ओर रहता है और मनुष्य के अन्दर भी चुम्बकीय क्षेत्र सिर से पैर की ओर होता है। मनुष्य के सिर को उत्तरी व पैरों को

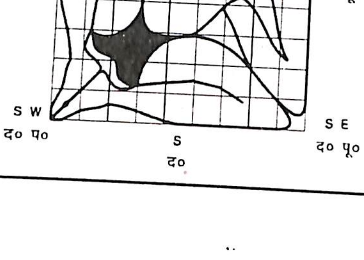

बाहरी द्वार भीतरी द्वार के दायीं ओर हो तो यह संबंध सव्य होता है जोकि शुभ है।

दक्षिणी ध्रुव माना गया है। यदि हम सिरहाना उत्तर की ओर रखते हैं तो पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव मनुष्य के उत्तरी ध्रुव से चुम्बकीय प्रभाव को अस्वीकार करेगा जिससे शरीर में रक्त संचार के लिए अनुकूल चुम्बकीय तरंगों का क्षेत्र नहीं मिल सकेगा, फलस्वरूप मनो–मस्तिष्क तनाव के कारण अस्थिर रहेगा, शान्ति सहित गहन निद्रा भी नहीं आयेगी और जिसका दुष्परिणाम शारीरिक अस्वस्थता के रूप में मिलेगा। इसी कारण सिरहाना दक्षिण दिशा में रखा जाता है। ऐसा करने पर मनो–मस्तिष्क तनाव रहित और नींद भी शान्ति सहित गहरी आती है।

उत्तर क्षेत्र धन कारक क्यों ?

वास्तुशास्त्र में चुम्बकीय उत्तर क्षेत्र कुबेर का स्थान माना जाता है जोकि धन वृद्धि कारक है। यह भी सलाह दी जाती है कि जब भी कोई व्यापारिक वार्त्ता या परामर्श में भाग लें तो सर्वाधिक उचित व लाभप्रद यही होगा कि मुख उत्तर की ओर हो। वैज्ञानिक कारण यही है कि इस ओर चुम्बकीय तरंगे विद्यमान रहती है जिससे मस्तिष्क की कोशिकाएँ सक्रिय रहती हैं और शुद्ध वायु के कारण भी अधिक आक्सीजन मिलती हैं जो मस्तिष्क को सक्रिय करके स्मरण शक्ति बढ़ाती है। सक्रियता और स्मरण शक्ति व्यापारिक उन्नति और कार्यों में सफलता देने में सक्षम है। यदि आप व्यापारिक कार्यों को करते हैं तो उत्तर दिशा की ओर मुख रखें तथा केश बाक्स और अन्य महत्त्वपूर्ण कागज चैक–बुक आदि दाहिनी ओर रखें।

भवन के चहुँ ओर खुला स्थान क्यों ?

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूखण्ड के चारों ओर खुला स्थान इस प्रकार छोड़ा जाता है कि पूर्व में सबसे अधिक खुला, उससे कम उत्तर में खुला तथा उत्तर से कम दक्षिण भाग में खुला और दक्षिण से कम पश्चिम दिशा में खुला स्थान छोड़ा जाता है।

बाहरी द्वार भीतरी द्वार की विपरीत दिशा में होता है तो यह संबंध पृष्ठभंग होता है जोकि अशुभ है।

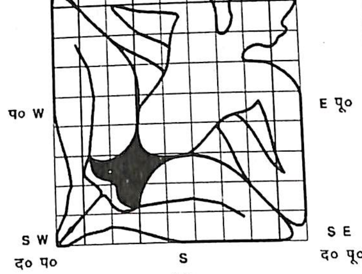

भवन के चारों ओर खुला स्थान छोड़ने से सभी दिशाओं से वायु का आवागमन (आना-जाना) सम्यक् ढंग से होता है जिससे पर्यावरण शुद्ध रहता है और गर्मियों में भवन ठंडा एवं सर्दी में गर्म रहता है। वायुमण्डल में अन्य गैसों के अनुपात में ऑक्सीजन भी कम मात्रा में होती है। वायुमण्डल में नाइट्रोजन लगभग 78 प्रतिशत और ऑक्सीजन 21% होती है और शेष गैस 1 प्रतिशत होती है। यदि चारों ओर खुला स्थान रहेगा तो चारों ओर से सर्वाधिक वायु मिलेगी जिससे प्राण वायु ऑक्सीजन एवं चुम्बकीय ऊर्जा भी सर्वाधिक मिलेगी।

अव्यक्त लौकिक ऊर्जा एवं शक्ति का उपयोग

वास्तुशास्त्र के समस्त नियम इस प्रकार बनाए गए हैं कि व्यक्त ऊर्जा एवं शक्ति के साथ-साथ ब्रह्माण्ड की अव्यक्त ऊर्जाएं एवं शक्ति का भी भरपूर उपायों भूस्वामी को प्राप्त हो सके। ब्रह्माण्ड में अदृश्य व अव्यक्त लौकिक ऊर्जा एवं शक्तियाँ है जिन्हें हम न तो प्रत्यक्ष देख सकते हैं और न महसूस कर सकते हैं, किन्तु इनका प्रभाव दीर्घकाल तक रहता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जीवित मनुष्य के चहुँ और प्रत्येक समय एक विशेष चुम्बकीय क्षेत्र रहता है जिसे जैविक विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र (BEMF) कहते हैं। यह बीस प्रकार का होता है, इसमें से चार प्रकार मानव के लिए उपयोगी हैं। इसका भरपूर लाभ पाने के लिए वास्तु नियम बनाया गया है कि पूर्व-उत्तर भाग खुला एवं नींचा बनाया जाए। वैज्ञानिकों ने तो आधुनिक यन्त्रों से इस तथ्य को जाना, पर हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने बिना किसी यन्त्र के अपने दिव्य ज्ञान से वायुमण्डल की छिपी शक्तियों को जान लिया था।

तुलसी के पौधे को आँगन में लगाने का महत्त्व

प्राचीनकाल से तुलसी के पौधे को आँगन में लगाकर प्रतिदिन उसे

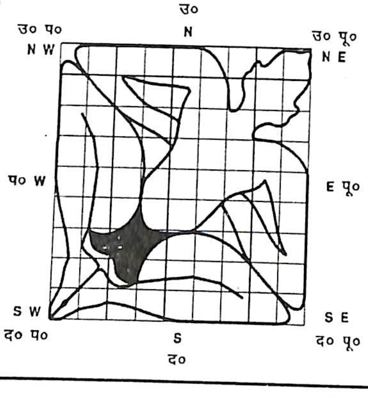

सेप्टिक टैंक उत्तर-दक्षिण (वायव्य) कोण में बनाना सर्वोत्तम है।

पूजने का प्रचलन चला आ रहा है। मन्दिर में तुलसीयुक्त जल प्रसाद के रूप में पान किया जाता है।

तुलसी के पौधे के औषधीय गुणों की चर्चा अनेक ग्रन्थ करते हैं। तुलसी (Holy Basil) को ऑसीमुम सांक्टुम् (Ocimum sanctum Linn) वनस्पतिक नाम से जाना जाता है। तुलसी का पौधा सर्वत्र सुलभ एवं प्रसिद्ध है। तुलसी दो प्रकार की होती है—सफेद व काली। इसकी पत्तियाँ सुगन्धित होती हैं। इसमें पीताभहरति वर्ण का उत्पत् तैल पाया जाता है जो शुद्ध होने पर क्रिस्टलीय हो जाता है इसे तुलसी कर्पूर (Basil Camphor) कहते हैं। वायुमण्डल में हवा के प्रवाह से प्रदूषण दूर होता है और कोई तुलसी के पौधे के पास होता है तो उसे शुद्ध वायु प्राप्त होती है। तुलसी के पौधे से मच्छरों का प्रवेश भी कम होता है। तुलसी का प्रयोग वात, कफ, ज्वर, खांसी, वमन एवं हृदय रोग में होता है। इन्हीं गुणों के कारण घर में तुलसी सहज उपलब्ध हो सके इसीलिए प्राचीनकाल से इसे धार्मिक मान्यता प्रदान की गई है। इसके पाँच पत्ते प्रतिदिन खाने से त्रिदोष (कफ, पित्त व वायु) को नियन्त्रित करके सम किया जा सकता है।

हमारे पूर्वजों ने अनेक बातों को धार्मिक मान्यता इसलिए दी जिससे जनसामान्य उसे अपनाता रहे और इसके प्रचुर लाभ को प्राप्त कर सके। तुलसी का रोपण आँगन में लगाने का विधान है। कम जगह हो तो गमले में भी लगा सकते हैं।

वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिकता इसके सभी सिद्धान्तों में निहित है। इनसे भरपूर लाभ उठाने के लिए इनको अपनाकर अपने भवन को निर्मित करें। यदि आपने वास्तु सिद्धान्तों को अपनाकर भवन बनाया तो आप व्यक्त और अव्यक्त ऊर्जाओं का भरपूर लाभ उठाते हुए सुखी, शान्त और समृद्ध हो सकेंगे। अब अगले अध्याय में वास्तुशास्त्र की धार्मिक दृष्टि से चर्चा करेंगे।

घने वृक्ष भवन के अहाते में दक्षिण व पश्चिम दिशा में लगाने चाहिएं। वृक्षों की छाया तीसरे प्रहर तक मुख्य भवन पर नहीं पड़नी चाहिए।

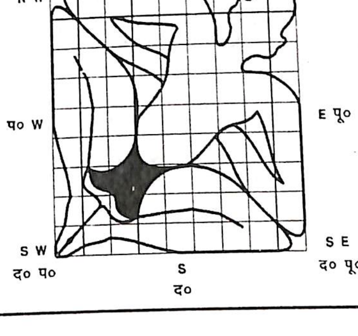

15 वास्तुशास्त्र की धार्मिकता और धार्मिक वास्तु

वास्तुकला का विकास भारतीय जीवन शैली के कला पक्ष पर प्रकाश डालता है। प्राचीन ग्रन्थों में चौंसठ कलाओं के सीखने की परम्परा भी विद्यमान है। वैसे भी कला का जन्म मनोरंजन से नहीं अपितु धर्म एवं दर्शन से हुआ है। धर्म वही है जिससे समस्त मानव जाति की सांसारिक और आध्यात्मिक उन्नति हो। यह जान लें कोई भी कला व विज्ञान जिसमें अध्यात्म लेशमात्र भी नहीं है तो वह नितान्त कोरी, शुष्क और निरर्थक है। विज्ञान व कोई भी कला जब धर्म या अध्यात्म से जुड़ जाती है तो उसकी मूल प्रेरणा मानव कल्याण होता है। भावना शुद्ध न हो तो विज्ञान विध्वंसात्मक रूप ग्रहण कर सकता है और कला समाज में भटकाव ला सकती है।

धर्म प्रत्येक कार्य में निहित है !

हमारे देश में धर्म हर कर्म से जुड़ा है। हमने स्थापत्य (वास्तु) में भी निराकार ब्रह्म के साकार रूप को प्रतिष्ठित कर दिया है। ब्रह्माण्ड की पूर्ण शक्ति का आवाह्न कर लिया है। वास्तुपुरुष के आधार पर हमने वास्तु-ब्रह्म को स्थापत्य से भौतिक विज्ञान में प्रतिष्ठित कर दिया है। मूलतः भारतीयों का विज्ञान और दर्शन दोनों धर्म से प्रभावित हैं। इसीलिए वास्तु-निर्माण एक धार्मिक कृत्य माना जाता है। भूमि पूजन से लेकर गृह-प्रवेश तक के प्रत्येक कार्य को धर्म अर्थात् धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत किया गया है। इसके पार्श्व में मूल कारण यही है—इसे धर्म

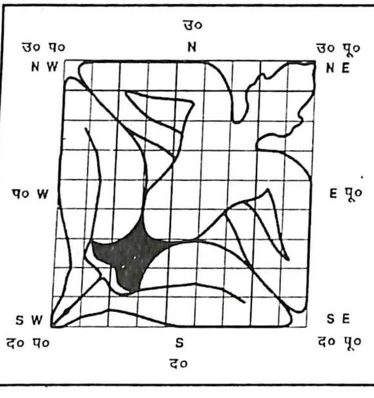

भूखण्ड का मध्य भाग ब्रह्म स्थान होता है, इसे खुला ही रखना चाहिए। भवन के मध्य में आंगन रखना सर्वोत्तम है।

से इसीलिए जोड़ा गया है कि जन साधारण वास्तु सिद्धान्तों का भली-भाँति पालन करें। वस्तुतः वास्तुशास्त्र अन्ततः जनकल्याण ही करता है और उसका लक्ष्य सभी को सुखी एवं समृद्ध बनाना है।

हमारा भवन से मन्दिर जैसा सम्बन्ध है !

भूखण्ड चयन, शोधन और भवन निर्माण के लिए वास्तु पुरुष की कल्पना करके भूखण्ड को 81 पदों में विभक्त करके देवताओं का पद-विन्यास करते हैं। 81 पदों में प्रतिष्ठित देवताओं को साकार ब्रह्मा से जोड़ा जाता है। मध्य में ब्रह्म स्थान ही होता है। अतः भूखण्ड और भवन से मन्दिर सदृश सम्बन्ध हो जाता है। इसीलिए शुभ मुहूर्त में वास्तु पूजा व शान्ति के बाद ही भवन निर्माण करके मंगलमय वातावरण एवं शुभमुहूर्त में गृह प्रवेश करते हैं।

सभी धार्मिक कार्यों का वैज्ञानिक आधार यह है कि समस्त परिवार की भवन के प्रति जो आस्था जागृत हो जाती है, वह सदैव बनी रहती है। वैसे भी भवन का निर्माण स्थिरता, सुख-शान्ति एवं सुरक्षा के लिए किया जाता है।

सूर्य देव का पूजन हम वास्तु-पुरुष में विभिन्न देवताओं के रूप में करते हैं। इसके पार्श्व में भी यही तथ्य है कि सूर्य से सर्वाधिक लाभ पा सकें। सूर्य को आरोग्य का देवता माना जाता है और इसी से पृथ्वी पर प्रकाश और जीवन बना हुआ है। इसकी चर्चा हम विस्तार से अध्याय नौ में कर चुके हैं।

वास्तु से धार्मिक कृत्यों को जोड़कर हम अपना साकार ब्रह्मा से सम्बन्ध स्थापित करके भवन को मन्दिर सदृश मानकर पूजा, आराधना एवं साधना हेतु उसी में उपयुक्त स्थान प्राप्त करते हैं जिससे हमें सुख-समृद्धि एवं आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

धार्मिक वास्तु और ईशान कोण

जब मानव को आश्रय या निवास के अतिरिक्त पूजा-अर्चना के लिए

सूर्य प्रकाश व शुद्ध वायु से वंचित भवन कदापि शुभ नहीं होता है।

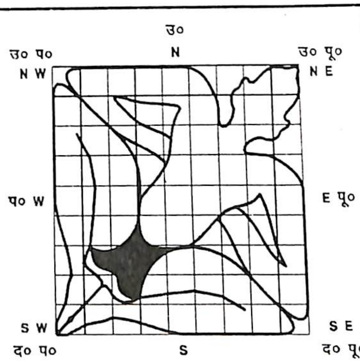

भी भवनों की आवश्यकता पड़ी तो धार्मिक वास्तु प्रचलन में आया। उपासना स्थलों का निर्माण वैदिक काल से ही हो रहा है। प्राचीन ग्रन्थों में यज्ञ वेदी और यज्ञशालाओं के अनेक विवरण मिलते हैं।

मन्दिर को ही धार्मिक वास्तु कहा जाता है। भारतीय इसे वास्तु विकास की मुकुट मणि मानते हैं। इसका विकास मूर्तिपूजा अर्थात् साकार ईश्वर पूजा की भावना से हुआ है।

मानव मस्तिष्क शरीर का सबसे संवेदनशील अंग है। ईशान कोण में अर्चना के समय चुम्बकीय तरंगे एवं उत्तर की ओर से प्राप्त होने वाली शुद्ध वायु से हमें अनुकूल ऊर्जा प्राप्त होती है जिनसे अनुकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे में घर पर ही उपयुक्त स्थान प्राप्त हो जाता है जिससे हमें एकाग्रता और आत्मिक शान्ति प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

धार्मिक वास्तु का विकास

भारतीय धार्मिक वास्तु का इतिहास अत्यन्त रोचक है। प्राचीन साहित्य में मन्दिरों के निर्माण सम्बन्धी अनेक उल्लेख मिलते हैं। पुरातत्त्वीय अवशेषों में मन्दिरों के स्वरूप प्राचीन मूर्तियों, सिक्कों, मुद्राओं आदि में देखने को मिलते हैं। इनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में मन्दिरों का स्वरूप साधारण होता था। प्रकृत भूमि से कुछ ऊँचे स्थान पर प्रतिमा स्थापित की जाती थी। उसके चारों ओर वेदिका का निर्माण होता था। कालान्तर में वेदिका ऊपर से आच्छादित होने लगी। मथुरा, विदिशा, मध्यमिका आदि अनेक प्राचीन नगरों तथा जैन तीर्थंकरों, यक्षों तथा नागों के प्रारम्भिक मन्दिर का स्वरूप उक्त मन्दिरों जैसा था।

प्रारम्भिक मन्दिरों के आकार-प्रकार के लिए मानव-शरीर, वृक्ष तथा पर्वत-शिखर प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। आध्यात्मिक व अधिभौतिक दृष्टि से मन्दिरों के मूल रूप में इन स्रोतों का प्रभाव भारतीय परम्परा में मिलता है। कालान्तर

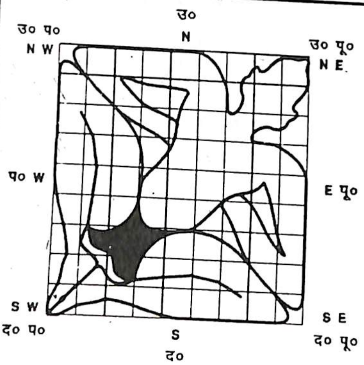

ईशान कोण को पवित्र माना जाता है। वस्तुतः इस भाग को खुला एवं शुद्ध रखना चाहिए।

में कलात्मक अभिरूचि में अभिवृद्धि के साथ-साथ मन्दिर वास्तु का स्वरूप भी संवर्द्धित होता गया। मूर्ति-स्थापना के स्थल पर गर्भगृह को परिवेष्टित करने के अतिरिक्त उसके बाहर चहुँ ओर प्रदक्षिणा-पथ की उद्भावना हुई। गर्भगृह के बाहर आच्छादित प्रवेशद्वार या मुख-मण्डप का निर्माण होने लगा। गुप्तकाल तक तो धार्मिक वास्तु अत्यन्त विकसित हो गया था जिसके आधार पर मन्दिर के विभिन्न अंग-उपांग निर्धारित हुए। धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर शिखर तथा बाहर मण्डप, अर्द्धमण्डप, महा-मण्डप आदि का विधान हुआ। ईसवी की छठी शताब्दी से मुगलकाल तक भारत के विभिन्न भागों में विविध धर्मों से सम्बन्धित मन्दिरों का निर्माण हुआ। काल तथा स्थान भेद के कारण इन मन्दिरों की शैलियों में भेद-प्रभेद होने स्वाभाविक थे।

मन्दिर-निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री और कारीगरों के भी वर्णन मानसार, शिल्परत्न, काश्यप शिल्प, शुक्रनीति और रूप मण्डन आदि में मिलते हैं। मन्दिर देव-स्थल होने के कारण साधारण भवनों की अपेक्षा उनके सौंदर्य व दृढ़ता पर अधिक ध्यान रखा गया जिससे वे चिर-स्थायी रहें।

धार्मिक वास्तु में दिशा निर्धारण की उपयोगिता

वास्तुशास्त्र में चार दिशाओं और चार कोणों का अपना महत्त्व है। पूर्व से उदित होने वाले सूर्य देव की उपासना की अपनी विशेष महत्ता है। सूर्य रश्मियों की जीवनदायनी ऊर्जा का भरपूर लाभ उठाने के लिए पूर्व दिशा की प्रधानता को स्वीकार किया गया है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही जीवनदायी तत्त्वों को खोज लिया था जिस पर आज का विज्ञान अपनी मोहर लगा रहा है। दिशाओं की महत्ता हम दसवें अध्याय में समझा चुके हैं। यहाँ पर दिशाओं के देवता बता रहे हैं जिसे समरांगण सूत्रधार ने विस्तार से कहा है। मन्दिर बनाते समय इस ज्ञान को उपयोग में लाना चाहिए देखें—दिशा देवता चक्रम्।

उत्तर दिशा स्वास्थ्य के लिए शुभ है। इस ओर मुख करके जल पीना लाभदायक है। उत्तराभिमुख बैठकर ध्यान व पूजा करनी सिद्धिदायक होती है।

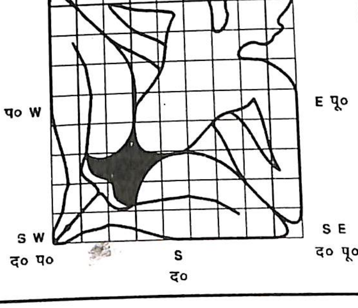

दिशा देवता चक्रम्

दिशा	स्वामी	निवास स्थान
पूर्व	इन्द्र	विष्णु, सूर्य, इन्द्र
पश्चिम	वरूण	विश्वकर्मा, सागर, नदियाँ वरूण
उत्तर	कुबेर	विशाख, स्कन्द, सोम, कुबेर
दक्षिण	यम	गणेश, मृतकायें, भूत-प्रेत, यमराज
आग्नेय	मारूति	सनत कुमार, सावित्री, हनुमान
नैर्ऋत्य	राक्षस	भद्रकाली, पितृगण
वायव्य	शनि	शनि, कात्यानी
ईशान	शंकर	महेश, लक्ष्मी, अग्नि

ईशान कोण में पूजा स्थल सर्वाधिक उपयुक्त है। उपर्युक्त दिशा चक्र के अनुसार भी देवताओं के पूजा स्थाल बना सकते हैं। किन्तु प्रयास करना चाहिए कि मूर्ति का मुख पूर्व, पश्चिम या दक्षिण की ओर हो। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकिय एवं जिन की मूर्तियों का मुख पूर्व या पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए। गणेश, कुबेर और षोडश मातृका की मूर्तियों का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए। हनुमान जी की मूर्ति का मुख नैर्ऋत्य कोण में होना चाहिए।

मूर्ति किस प्रकार की बनायी जाए इसकी विस्तृत जानकारी के लिए शुक्राचार्य की शुक्रनीति और सूत्रधार मण्डन विरचित 'रूप मण्डन' का अध्ययन करना चाहिए। मन्दिर निर्माण का मुहूर्त, देव प्रतिष्ठादि मुहूर्त ज्ञात करना पिछले अध्यायों में बता चुके हैं।

इस अध्याय में धार्मिक वास्तु और वास्तुशास्त्र की धार्मिकता पर संक्षिप्त चर्चा कर दी गई है जिसका समयनुसार लाभ उठाना चाहिए। अब अगले अध्याय में वास्तु के विभिन्न मांगलिक चिन्हों की चर्चा करेंगे।

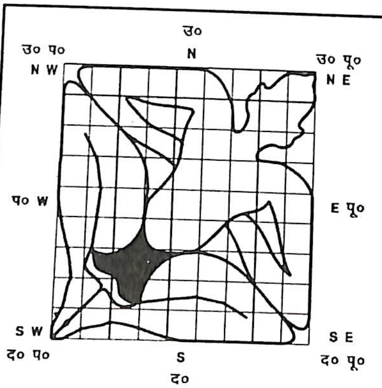

ईशान कोण शुभ व सुख-समृद्धि, एकाग्रता एवं स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। इसका भरपूर प्रयोग करें।

16 वास्तु और मांगलिक चिह्न

धर्म प्रधान देश भारत की धार्मिक भावना लोककल्याण की भावना से ओत-प्रोत है। यहाँ समस्त कार्य धार्मिक भावना से ओत-प्रोत होते हैं। भारतीय जीवन षोडश संस्कारों में विभाजित करके धर्म से जोड़ दिया गया है। हम किसी भी व्यवसाय या आजीविका के साधन से जुड़े हुए हों, इन धार्मिक कृत्यों को श्रद्धा व आदर सहित अपनाते हैं। उनकी इस आस्था को नास्तिक अंधविश्वास कहते हैं जबकि समय आने पर वे भी इन कृत्यों को करते हैं। इन सभी कृत्यों के पार्श्व में कुछ न कुछ वैज्ञानिकता, या अवयक्त ऊर्जा या आलौकिकता का रहस्य छिपा है, अब चाहे हम इसके विषय में न जानते हों। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने कठिन तप व कठोर साधना से जिन अलौकिक शक्तियों को प्राप्त किया और जनकल्याण की भावना से धार्मिक-आस्था के रूप में अपनाने को कहा। अब वास्तु संबंधी कुछ मांगलिक चिह्नों की चर्चा करेंगे जिन्हें हम आम जीवन में गृह निर्माण करते समय प्रयोग में लाते हैं।

अलौकिक मांगलिक चिह्न स्वास्तिक

स्वास्तिक (卐) को मांगलिक चिह्न के रूप में हम कई शताब्दियों से प्रयोग कर रहे हैं। इसका प्रयोग निर्विघ्न कार्य समाप्ति के लिए किया जाता है। शुभ कार्यों का प्रतीक स्वास्तिक भवन में मुख्य द्वार के दोनों ओर इसलिए बनाया जाता है जिससे उसकी अनिष्टकारक दृष्टि से रक्षा हो सके और भवन में सुख-समृद्धि का बाहुल्य रहे।

पूर्व दिशा शुभ लाभ व अल्प प्रयासों से उन्नति कराने वाली होती है। वस्तुतः इस ओर उन्नति पाने वाले कार्य करें।

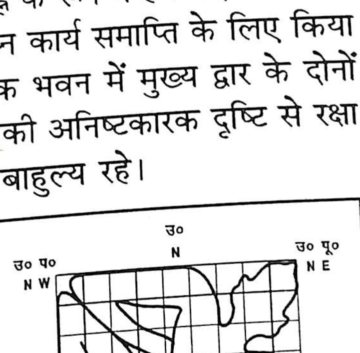

स्वस्ति अर्थात कुशल-क्षेम, शुभकामना, कल्याण, आशीर्वाद, पुण्य, पाप प्रक्षालन, दान स्वीकार के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। 'स्वास्तिक' एक प्रतीक चिह्न है जो मांगलिक माना जाता है। इसका आकार इस प्रकार है (卐)। इसका शाब्दिक अर्थ है—जो स्वस्ति अथवा क्षेम का कथन करता है। स्वस्ति का अर्थ ऊपर बता चुके हैं। यह गणेश जी का लिप्यात्मक स्वरूप है।

स्वास्तिक दो रेखाओं द्वारा बनाया जाता है। दोनों रेखाओं को मध्य में समकोण स्थिति में विभाजित करके, दोनों रेखाओं के सिरों पर बायीं ओर से दाहिनी ओर समकोण बनाती रेखाओं को आगे इस प्रकार बढ़ाते हैं कि वह आगे की रेखा को छूने से पूर्व रुक जाएं।

स्वास्तिक को किसी भी स्थिति में रखें उसकी रचना एक सी रहेगी। स्वास्तिक के सिरों पर निर्मित समकोण पर मुड़ी हुई रेखाएँ अन्तहीन बतायी गई है जिसका कोई स्पर्श या सन्धि बिन्दु नहीं है क्योंकि ब्रह्माण्ड अनन्त है। स्वास्तिक सृष्टि चक्र के गूढ़ रहस्य का द्योतक है। स्वास्तिक में निहित अलौकिक शक्ति के कारण यह धार्मिक आस्था का प्रतीक बना।

स्वास्तिक चक्र की गतिशीलता बाएँ से दाएँ को अपनायी गई है, अतः उसी सिद्धान्त पर घड़ी की दिशा निर्धारित की गई है। पृथ्वी को गति देने वाली ऊर्जा का प्रमुख स्रोत उत्तरायण से दक्षिणायान की ओर होता है। वास्तु में उत्तर दिशा का अत्यन्त महत्त्व है और इस ओर भवन को खुला रखा जाता है जिससे चुम्बकीय ऊर्जा एवं अन्य अलौकिक शक्तियों को भवन में संजोया जा सके। ईसाइयों का क्रास चिह्न (✝) भी स्वास्तिक का एक अंग है। वास्तु में स्वास्तिक चिह्न को भवनों में द्वारों पर एवं मंगल पर्वों पर भवनों की दीवारों पर अंकित किया जाता है। आकाश से पृथ्वी तक ब्रह्माण्ड के चतुर्भुजी आकार, धन (+) के चिह्न की भांति का स्वास्तिक चारों दिशाओं का प्रतीक है और जब इस चिह्न

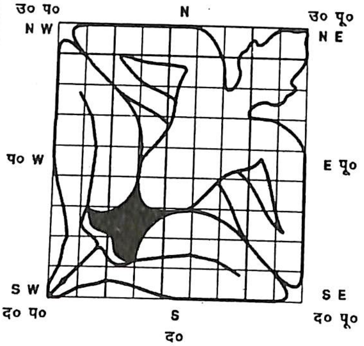

दक्षिण दिशा सुरक्षा की दृष्टि से उत्तम है। सुरक्षा संबंधी प्रबन्ध इस ओर करने चाहिएं।

में चार भुजाएँ दक्षिणवर्ती होकर जुड़ जाती है तो सूर्य की प्रतीक बन जाती है क्योंकि सूर्योदय व सूर्यास्त की गणना भी दक्षिणवर्ती गति से ज्ञात होती है। स्वास्तिक का प्रयोग दिशापति देवों (अग्नि, इन्द्र, वरुण व सोम) की पूजा हेतु भी प्रयोग होता है।

मंगल चिह्न ओ३म् (ॐ)

'ॐ' शब्द ब्रह्म का प्रतीक है और भवनों में मंगल चिह्न के रूप में प्रयुक्त होता है। यह ॐ ही ब्रह्म है जो इसके रहस्य को जान लेता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। 'ॐ' सम्पूर्ण ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, प्रणव मन्त्र और अपरिमित शक्ति का प्रतीक है। यह एक ऐसा शब्द है जिसको देखने एवं आचरण करने मात्र से मन एकाग्रता की ओर तत्पर हो जाता है और शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। वस्तुतः 'ॐ' की स्थापना भवन के सामने उपयुक्त स्थान पर अवश्य करनी चाहिए।

शुभ मंगल कलश

जल से परिपूर्ण एवं आम्रपत्र, पुष्प व नारियल से ढका शुभ मंगल कलश वैदिककाल से ही शुभता, समृद्धि एवं सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है। सृष्टि का उद्भव जल से हुआ है। अतः ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का प्रतीक जल है। आम सदाबहार वृक्ष है और उसके पल्लव (पत्ते) सृजन के पश्चात् जीवन की निरन्तरता के बोधक है इसलिए इनसे मंगल कलश की पूर्णता होती है। मृत्योपरान्त जीवन के प्रतीक घट (खोपड़ी) को फोड़ दिया जाता है। घर को भी मंगल घट की संज्ञा दी गई है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में मंगल

आग्नेय कोण अग्नि संबंधी कार्यों को सफलता के साथ करने के लिए उत्तम है।

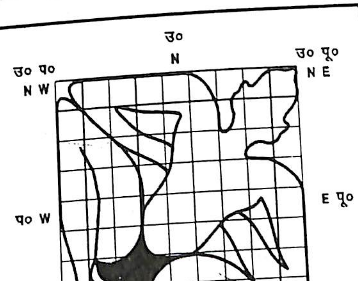

कलश की अर्चना की जाती है। वस्तुतः भवन निर्माण के बाद शुभ मंगल कलश की स्थापना व पूजा मांगलिक चिह्न के रूप में की जाती है।

मांगलिक चिह्न मीन

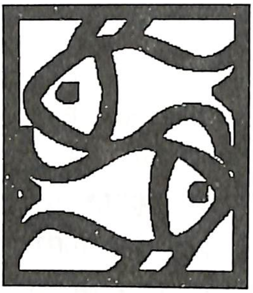

मीन सच्चे प्रेम की प्रतीक है। यात्रारम्भ से पूर्व मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का शुभ शकुन माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की परम्परा है। भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछली के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना निहित है कि यदि मत्स्य के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होते हैं तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जाएं। पौराणिक मान्यता के अनुसार भी विष्णु भगवान का प्रथम अवतार मत्स्य ही है व प्रलय के समय मीन ने ही मनु व सृष्टि की रक्षा नख के रूप में की। यह कामदेव की ध्वजा का भी प्रतीक है। स्त्रियों के कर्णाभूषणों में मत्स्य कुंडलों के पहनने की परम्परा भी है। मीन युग्म को भवन के बाहर मुख्य द्वार पर मांगलिक चिह्न के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है। इसे करने से कोई हानि नहीं है।

मांगलिक चिह्न पंचागुलक हाथ

मांगलिक चिह्न पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश, विवाह व पुत्र जन्म के अवसर पर हल्दी व चावल की पीठी से पीठ पर लगाने की परम्परा है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्व की द्योतक है। पंचमहाभूत से ही सृष्टि का सृजन हुआ है। मृतक को जलाने के बाद भी ये पाँचों अंगुलियाँ नष्ट नहीं होती हैं जो समूल तत्त्वों की निरन्तरता अनश्वरता का प्रतीक है।

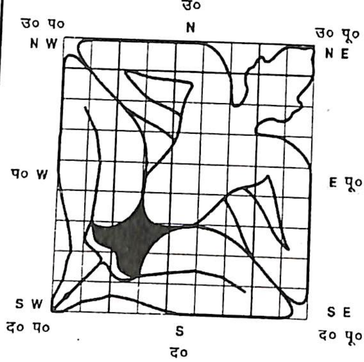

नैर्ऋत्य कोण बच्चों के लिए स्वास्थ्य और सुखप्रद है। इस दिशा को बच्चों के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।

हाथ कर्म का प्रतीक है। देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं से ही विभिन्न मनोदशाओं को संकेत रूप में बताया जाता है। भवन में हाथ को मांगलिक चिह्न के रूप में स्थापित करके समृद्धि, पंचमहाभूतों व कर्म की महत्ता को दर्शाया जाता है।

ईसाईयों का शुभ प्रतीक चिह्न क्रास (✝) और मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक <Λ५ व अर्ध चन्द्र (☪) एवं सिक्खों का एक ओंकार (ੴ) हैं। इन मांगलिक चिह्नों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ एवं समृद्धि के द्योतक हैं।

भवन में चित्र स्थापना

वास्तुविदों ने भवन स्वामी की आस्था, सामाजिक एवं वैयक्तिक विचारों के अनुकूल भवन में चित्र स्थापना के नियम भी बनाए हैं। सभी प्रकार की प्याऊ, आश्रम, दुकान, देवालय या द्वार पर चित्र चित्रित किए जाते हैं। रामायण और महाभारत के युद्ध के चित्र, इन्द्रजाल के समान काल्पनिक व झूठे चित्र, जंगल, पर्वतों, असुरों, भयानक व दीनता युक्त, रूदन करते हुए व नग्न चित्र अपने भवन, कक्ष या शयनकक्ष में नहीं लगाने चाहिए क्योंकि ये अशुभ होते हैं। सूअर, शेर, गीदड़, सर्प, गधा, उल्लू, कबूतर, कौवा, कुत्ता, खरगोश, मृग, बगुला आदि पशु-पक्षियों के चित्र भी नहीं लगाने चाहिएं क्योंकि ये भी अशुभ हैं।

सामान्यत: महाभारत के चित्र मठ-मन्दिर व राजप्रसाद में लगा सकते हैं। निन्दित व विवादस्पद चित्र जो चिन्तों उत्पन्न करें नहीं लगाने चाहिएं। कुल देवता, क्रीड़ा करते बालक व हंस, सुन्दर पत्रलता व इष्टदेव और मन को लुभावने वाले चित्र जो शान्ति व प्रसन्नता प्रदान करें लगाए जा सकते हैं।

इस अध्याय में शुभ मांगलिक चिह्नों व चित्र स्थापन की चर्चा की गई है। अब अगले अध्याय में वास्तु के विभिन्न प्रयोगों की चर्चा करेंगे।

पश्चिम दिशा सामाजिक प्रतिष्ठा के दृष्टिकोण से उत्तम होती है। अत: सामाजिक कार्य इस ओर करने चाहिएं।

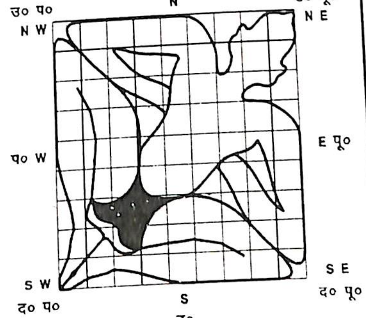

17 वास्तु के विभिन्न प्रयोग

वास्तु शास्त्र के मूल सिद्धान्तों का प्रयोग विभिन्न वास्तु निर्माणों में होता है। अब वास्तु संबंधी विभिन्न प्रयोगों की चर्चा करेंगे। इस अनमोल ज्ञान को आप भली-भांति अवसरानुकूल प्रयोग में लायेंगे तो सुख-सम्पन्नता एवं सफलता निस्संकोच आपकी सहचारी बनने को तत्पर रहेगी।

नगर नियोजन में वास्तु प्रयोग

सुव्यवस्थित व सुनियोजित नगर नियोजन (Town Planning) अर्थात् नगर बसाने का कार्य प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। भारतीय धार्मिक व ऐतिहासिक ग्रन्थों में ऐसे अनेक नगरों का उल्लेख मिलता है जैसे—हस्तिनापुर, द्वारिका, अयोध्या, पाटिलपुत्र, श्रावस्ती, उज्जयिनी आदि।

अब अधिकांश नगरों को व्यवस्थित ढंग से नियोजित किया जा रहा है। यदि नगर-नियोजन की योजना के समय वास्तु सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए इनका भरपूर प्रयोग किया जाए तो हम थोड़े प्रयास से ही लाभान्वित हो सकते हैं। नगर नियोजन की संक्षिप्त ज्ञान यहाँ दे रहे हैं, शेष सभी सिद्धान्त जो अन्यत्र बता चुके हैं को भी प्रयोग में अवश्य लाएँ।

- **पूर्व दिशा में**—व्यापारी, शिल्पकार, प्रधान, कारीगर।
- **पूर्व-उत्तर दिशा में**—आचार्य, पुरोहित, यज्ञस्थान, जलस्थान, तालाब, कुआँ, बावड़ी।
- **उत्तर-पूर्व दिशा में**—राजकीय कोष, गौशाला या पशुशाला, डेरी आदि।

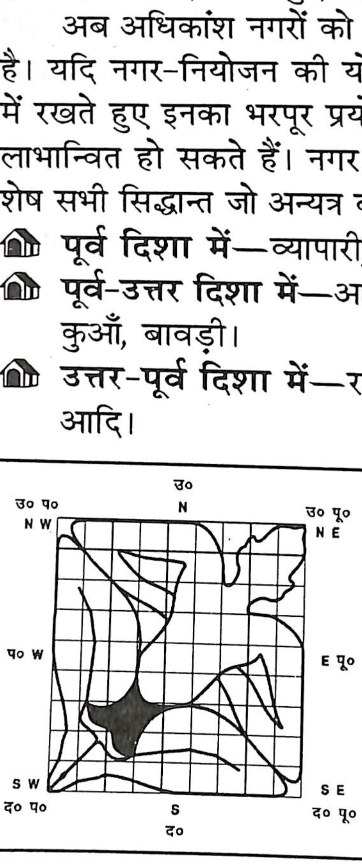

वायव्य कोण वायु संबंधी कार्यों के लिए शुभ, शत्रु, मुकदमों आदि से मुक्ति दिलाने में सहायक है।

- **उत्तर दिशा में**—नगर देवता का मन्दिर, यन्त्रशाला, जौहरी, सुनार, ब्राह्मण।
- **पश्चिमोत्तर दिशा में**—वाहन, यान व रथशाला।
- **उत्तर-पश्चिम दिशा में**—अस्पताल, बाजार, औषधालय।
- **पश्चिम दिशा में**—लघु उद्योग, कारीगर, लौहार, चमड़े के कारखाने, जुलाहा, सेवक आदि।
- **दक्षिण-पश्चिम दिशा में**—वनौषधि भण्डार, शस्त्रागार आदि।
- **पश्चिम-दक्षिण दिशा में**—पशुशाला एवं फैक्ट्री आदि।
- **दक्षिण दिशा में**—प्रशासनिक अधिकारी (नगरध्यक्ष, थानाध्यक्ष, व्यापाराध्यक्ष, सेनापति), सुरा एवं मांस के व्यापारी, मनोरंजन स्थल, वेश्याएँ, नाटय्शाला, चित्रशाला आदि।
- **पूर्व-दक्षिण दिशा में**—राजकीय भोजनशाला, गजशाला आदि।
- **दक्षिण-पूर्व दिशा में**—राजकोष, लेखपाल, कर्मशालाएँ।

उपर्युक्त ज्ञान को आप वर्तमान युग के अनुरूप आवश्यकतानुसार ढालकर नगर नियोजन कर सकते हैं।

आवासीय भवनों में वास्तु प्रयोग

प्राय: देखा गया है कि लोग वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप आवास या फ्लैट नहीं बना पाते हैं। कई बार इच्छानुसार आवास या भूखण्ड उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में जो भी स्थान उपलब्ध हो उसमें अधिकाधिक वास्तु सिद्धान्तों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। अधिकाधिक वास्तु सिद्धान्तों को अपनाने के लिए एक संक्षिप्त रूप रेखा बनाकर दे रहे हैं जिसका उपयोग अवश्य करें।

सदैव प्रयोग में लाएँ!

1. प्रयास करें कि आवास हेतु वर्गाकार या आयताकार भूखण्ड मिले।

भूमि क्रय करते समय या भूमि विक्रय करते समय शुभ मुहूर्त निकलवाकर ही क्रय-विक्रय करना लाभप्रद होता है।

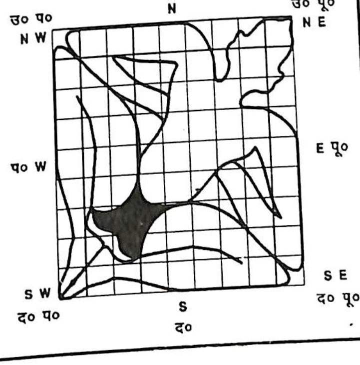

2. भूखण्ड में उत्तर-पूर्व दिशाएँ अवनत और दक्षिण-पश्चिम दिशाएँ उन्नत होनी चाहिए।
3. उत्तर, उत्तर-पूर्व (ईशान) व पूर्व दिशा में दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम व पश्चिम दिशा की अपेक्षा अधिक खुली जगह होनी चाहिए।
4. कुआँ ट्यूबवैल सदैव उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में ही खुदवाना चाहिए।
5. रसोईघर आग्नेय कोण में बनवाएँ।
6. उत्तर-पूर्व का खुला स्थान लान, बगीचा, पोर्टिको, बालकनी आदि के लिए प्रयोग कर सकते हैं।
7. पार्किंग हेतु उत्तर-पश्चिम स्थान प्रयोग में लाएँ।
8. शयनकक्ष में पलंग का सिरहाना दक्षिण दिशा की ओर ही रखें।

यदि आप अपना आवास मार्गानुसार पूर्वाभिमुख बना रहे हैं तो—वास्तु सिद्धान्तों को अधिक से अधिक प्रयोग में लाएँ। पूर्व में मार्ग वाले नक्शे से सहयोग लें, देखें पृष्ठ 138। मुख्यद्वार पूर्व की ओर रखें, पूजागृह ईशान कोण में, रसोईघर आग्नेय कोण में, शयन कक्ष दक्षिण-पश्चिम व उत्तर-पश्चिम में रखें, कुआँ या ट्यूबवैल ईशान कोण में उत्तर की ओर रखें।

यदि आप अपना आवास मार्गानुसार पश्चिमाभिमुख बना रहे हैं तो—वास्तु सिद्धान्तों को अधिकाधिक व्यवहार में लाएँ। पश्चिम में मार्ग वाले नक्शे से सहयोग लें, देखें पृ०139। मुख्यद्वार पश्चिम की ओर रखें, पूजा स्थल ईशान कोण में बनाएँ, शयनकक्ष दक्षिण- पश्चिम दिशा में, खुली जगह एवं दरवाजे व खिड़कियाँ पूर्व में रखें।

यदि आप अपना आवास मार्गानुसार उत्तराभिमुख बना रहे हैं तो—वास्तु सिद्धान्तों को अधिकाधिक प्रयोग में लाएँ। उत्तर में मार्ग वाले नक्शे से सहयोग लें, देखें पृ० 136। मुख्य द्वार उत्तर में पूर्व की

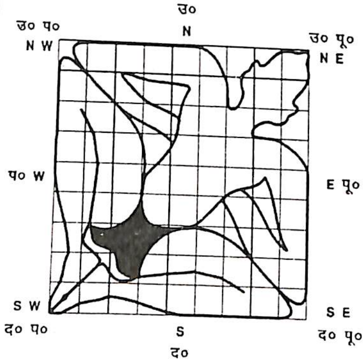

गृहनिर्माण करते समय भी योग्य ज्योतिर्विद से शुभ मुहूर्त निकलवा लेना चाहिए। शुभ मास, वार, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, सूर्य राशि एवं शुभ लग्न चयन करके ही निर्माण कार्य का शुभारम्भ करना चाहिए।

ओर रखें, कुआँ या ट्यूबवैल ईशान कोण में मुख्यद्वार से थोड़ा हटकर बनाएँ। शौचालय व स्नानगृह उत्तर-पश्चिम दिशा में शयनकक्ष के पास पश्चिम दिशा में बनाएँ।

यदि आप अपना आवास मार्गानुसार दक्षिणाभिमुख बना रहे हैं तो—वास्तु सिद्धान्तों को अधिकाधिक व्यवहार में लाएँ। दक्षिण में मार्ग वाले नक्शे से सहयोग लें, देखें पृ० 137। मुख्यद्वार पूर्व की ओर रखें। पूर्व में खुला स्थान रखें व ऊँचाई भी कम रखें, कुआँ, नल, टयूबवैल ईशान कोण में पूर्व की ओर रखें, पूजा स्थल ईशान कोण में बनाएँ, शयन कक्ष दक्षिण-पश्चिम में बनाएँ, उत्तर-पूर्व अधिक ऊँचा न रखें।

भूखण्ड किसी भी दिशा या उप-दिशा में उपलब्ध हो सकता है। उपलब्ध भूखण्ड की स्थिति दिशा सूचक यन्त्र से ज्ञात कर लेनी चाहिए। दिशा सूचक यन्त्र बाजार में 20 रु० से 300 रु० तक काम चलाऊ मिल जाता है। भूखण्ड किस दिशा में स्थित है इसके ज्ञान के बाद वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप भवन निर्माण या आवास बनाना चाहिए।

समूह आवासीय योजना में वास्तु प्रयोग

आजकल नगरों व महानगरों में आवास की समस्या विकट होती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिए 'आवास विकास परिषद्' या समितियाँ या राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाओं के अन्तर्गत सामान्य लोगों के निवास हेतु योजनाबद्ध ढंग से कालोनी या मौहल्ले आदि में समूह आवास योजना (Group Housing) के अन्तर्गत आवास बनाकर या भूखण्ड उपलब्ध करा रही है। यदि समूह आवास योजनाओं में भी वास्तु सिद्धान्तों को व्यवहार में लाया जाए तो सुख-शान्ति व समृद्धि पाकर लाभान्वित हो सकते हैं। इन योजनाओं में आवास निम्न रूप में बनाए जाते हैं—

भवन बनाते समय भूमि शयन न हो, पंचक न हों, शुक्र व गुरु अस्त न हों, एवं देवशयन भी नहीं हों। गृहारमभ के समय वृष वास्तु का भी विचार कर लेना चाहिए। अग्निबाण पंचक भी नहीं होना चाहिए।

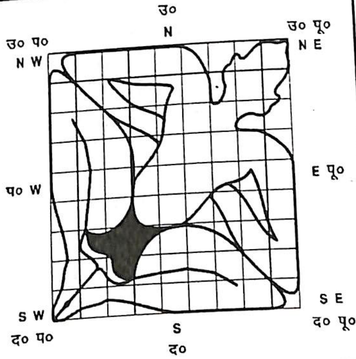

1. कई आवास एक साथ बनाना।
2. बहु मंजिले आवास।
3. दो-दो आवास एक स्थान पर जिनमें एक दीवार दो आवासों में प्रयुक्त होती है।

समूह आवास योजनाओं में भूखण्ड के अनुरूप व्यापारिक दृष्टि से भवनों का निर्माण शीघ्रता से और अधिकाधिक भूमि को उपयोग में लाया जाता है। ऐसा करने पर वास्तुनियमों की उपेक्षा होती है। इस उपेक्षा से बचने के लिए निम्नलिखित बातों को सदैव स्मरण रखें और योजना बनाते समय इनका पालन करें—

1. कालोनी या समूह आवास योजना का मानचित्र इस प्रकार बनाया जाए कि सभी भूखण्ड उत्तर-दक्षिण में समकोण रेखा पर स्थित्त हों।
2. अधिकांश भूखण्डों का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में रखने का प्रयास करना चाहिए।
3. आवश्यकतानुसार भूमि का शोधन भी कर लेना चाहिए।
4. यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्षा ऋतु में जल का बहाव उत्तर-पूर्व की ओर हो।
5. पूरी कालोनी के लिए सामूहिक कुआँ, भूमिगत जल संसाधन, पानी की टंकी आदि उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ही बनानी चाहिए।
6. प्रयास करें कि निर्मित अवासों का आकार भी चौकोर ही हो।
7. आवासों की स्थिति इस प्रकार से रखे या उत्तर-पूर्व दिशा का भाग खुला रखें जिससे प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों व शुद्ध वायु का लाभ प्रत्येक गृहस्वामी को हो सके।
8. कालोनी में सड़कों का निर्माण उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम में ही करें।
9. जंहाँ तक सम्भव हो सके साझी दीवार (Common Wall) पर

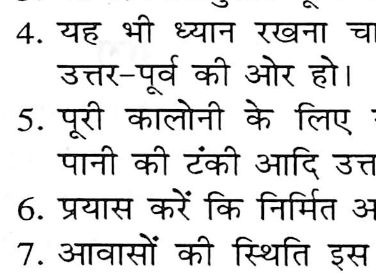

नींव खनन शुभ मुहूर्त में राहुमुख के पृष्ठवर्ती दिशा से करनी चाहिए। राहु मुख और पुच्छ का ज्ञान मुहूर्त के दिन गोचर सूर्य की रशि से होता है।

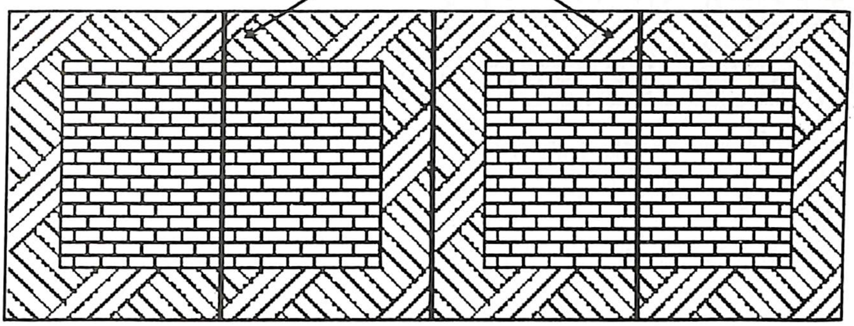

चित्र—1—वास्तु के विपरीत जुड़वाँ आवास

आवास न बनाएँ क्योंकि इस प्रकार के आवासों में वास्तु नियमों का पालन नहीं हो पाता है। जुड़वाँ मकान कभी नहीं बनाने चाहिएं। प्रत्येक मकान वास्तु के अनुकूल होना चाहिए। अत: एक दूसरे से लगते हुए भूखण्डों पर आवासों की दीवारें परस्पर मिलती हुई नहीं बनानी चाहिए।

10. विद्युत व्यवस्था के लिए मेन स्विच बोर्ड, मीटर एवं जनरेटर आदि आग्नेय दिशा में लगाएँ।
11. भवन उत्तर-पूर्व भाग में नीचा एवं दक्षिण-पश्चिम भाग में ऊँचा होना चाहिए।
12. कालोनी में भूखण्डों पर निर्माण हेतु उपयुक्त स्थान इस प्रकार समझें देखें—अगले पृष्ठ पर चित्र 2 (अ) व 2 (ब)।
13. भूखण्डों के मध्य में रखे जाने वाले मार्ग की चौड़ाई कालोनी में बनने वाले आवासों की औसत ऊँचाई से दो गुना रखनी चाहिए।

शिलान्यास के समय राहु मुख के साथ-साथ सर्प मुख का भी विचार कर लेना चाहिए। सर्प के सिर, पीठ व पुच्छ पर निर्माण करना अशुभ है। वक्षस्थल पर भवन निर्माण करना शुभ है।

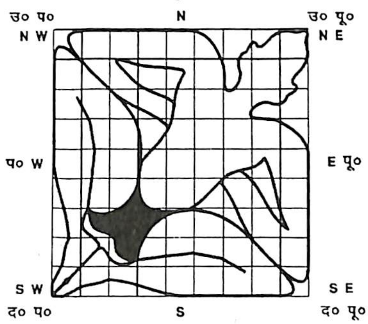

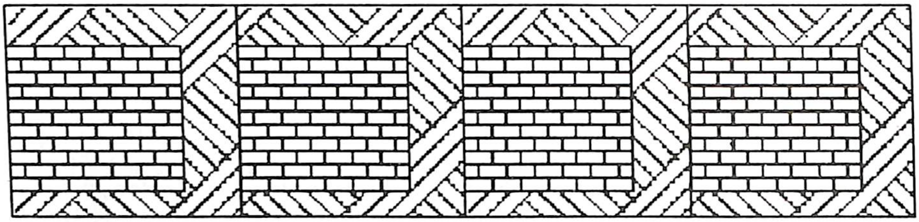

चित्र—2 (अ)—भूखण्ड पर निर्माण हेतु उपयुक्त स्थान

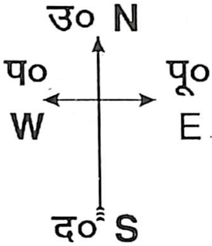

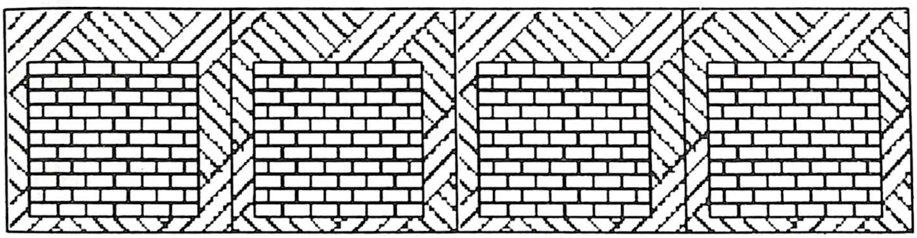

चित्र—2 (ब)—भूखण्ड पर निर्माण हेतु उपयुक्त स्थान

14. कालोनी में बगीचे आदि हरियाली क्षेत्र हेतु उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व क्षेत्र में निर्धारित करना चाहिए।
15. एक बड़े भूखण्ड को भूखण्डों में बाँटकर आदर्श मानचित्र वास्तु के अनुरूप दे रहे हैं जिसमें सहयोग लेना चाहिए। देखें अगले पृष्ठ पर चित्र-3 एक कालोनी का आदर्श मानचित्र।

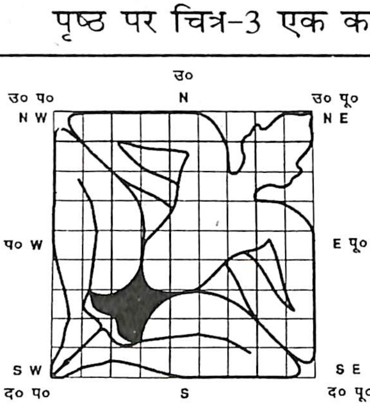

गृहद्वार की दिशा निश्चित करके शुभ मुहूर्त में चौखट या द्वार स्थापना करनी चाहिए। सूर्य नक्षत्र से भी विचार करना चाहिए। इस विचार हेतु पुस्तक का 13वाँ अध्याय पढ़ना चाहिए।

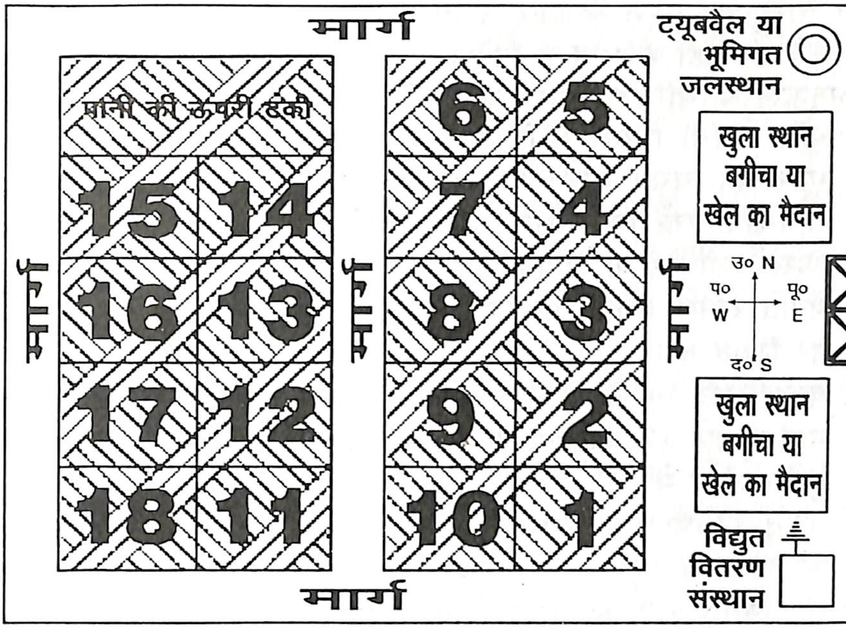

चित्र—3—एक कालोनी का आदर्श मानचित्र।

बहुमन्जिले भवनों में वास्तु प्रयोग

जनसंख्या वृद्धि व शहरी क्षेत्र में भूमि की कमी के कारण महानगरों में बहुमन्जिले भवन आवास समस्या के समाधान का एकमात्र विकल्प बन गए है। वर्तमान युग की मांग के अनुसार इनका निर्माण आवश्यक भी है। बहुमन्जिले भवन में वास्तु नियमों को अपनाना सहज नहीं है क्योंकि इनमें स्थान निश्चित होता है और सामान्य सुविधाएँ एक दूसरे से सम्बन्धित होती है। लेकिन फिर भी वास्तु नियमों को भूमि अधिग्रहण, शोधन से लेकर निर्माण तक अधिकाधिक प्रयोग में लाने से बहुमन्जिला

नूतन या जीर्ण गृह प्रवेश भी मुहूर्त निकालकर करना चाहिए। बिना शुभ समय के गृहप्रवेश उचित नहीं है अधूरे गृह में प्रवेश दुःखदायक है।

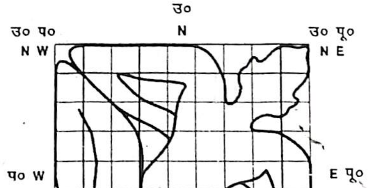

भवन वास्तुदोष रहित बनाकर उसमें रहने वाले सुख-शांति व समृद्धि पा सकते हैं। यहाँ कुछ दिशा-निर्देश दे रहे हैं जिन्हें ग्रहण करने में वास्तु के अनुकूल बहुमन्जिला भवन बनाने में सहायता मिलेगी।

- भूमि संबंधी नियम सभी जगह एक समान प्रयुक्त होते हैं। अत: भूमि का चयन उन्हीं के अनुरूप करें। भूखण्ड चयन में यह सावधानी रखें कि दक्षिण-पश्चिम कोण समकोण (90 अंश) हो जिससे चौकोर या आयताकार भवन बन सके। भवन का मानचित्र बनाते समय ध्यान रखें कि भूखण्ड उत्तर-दक्षिण समकोण रेखा पर स्थित हो।
- बहुमन्जिले भवनों वाली कालोनी में उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में मार्ग बनाएँ एवं कालोनी के दो मुख्यद्वार बनाएँ—एक पूर्व में और दूसरा उत्तर में।
- वास्तु नियमानुसार प्रथम तल की अपेक्षा अन्यों ऊपरी तलों की ऊँचाई नीचे के तल से 12वाँ हिस्सा कम होनी चाहिए लेकिन यह नियम 4 से 6 मन्जिल तक भवनों में चल सकता है।
- प्रथम तल (First Floor) के आवासों से ऊपरी मन्जिलों के आवासों की ऊँचाई कम रखें, लेकिन सभी भवनों में सभी मन्जिलों को कम या ऊँचा नहीं किया जा सकता। अत: सबसे ऊपर वाली मन्जिल की ऊँचाई थोड़ी कम रखें।
- जिस भूखण्ड पर बहुमन्जिला भवन बनाना हो उसका उत्तर-पूर्व का ढलान नीचा (अवनत) जबकि दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र का ढलान ऊँचा (उन्नत) हो।
- भवन का निर्माण चारों दिशा में खुला स्थान छोड़कर करें। दक्षिण व पश्चिम दिशा में कम खुला स्थान छोड़ें जबकि उत्तर-पूर्व दिशा में अधिक खुला स्थान रखें।

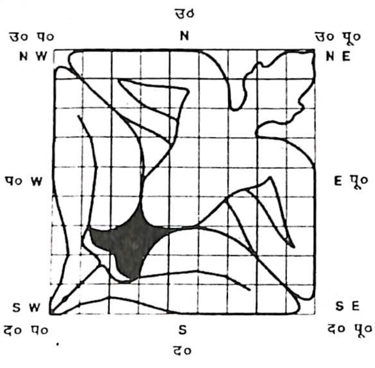

गृह प्रवेश से पूर्व वास्तुशान्ति करानी चाहिए। गृह प्रवेश के समय कुलदेव की पूजा, अग्रजों का सम्मान एवं ब्राह्मणों व परिजनों को भोजन कराना चाहिए। मंगल ध्वनि के साथ गृह प्रवेश करना चाहिए।

- सामान्यत: बहुत अधिक ऊँचा भवन बनाने का निर्देश वास्तु शास्त्र में नहीं है।
- भूमिगत जल या ट्यूबवैल ईशान कोण में एवं छत पर पानी की टंकी वायव्य कोण में ही रखनी चाहिए।
- फ्लैटस का प्रारूप बनाते समय बालकनी उत्तर या पूर्व दिशा में ही रखनी चाहिए। फ्लैटस के प्रवेश द्वार पूर्व या उत्तर दिशा में रखने का प्रयास करना चाहिए। दक्षिण व पश्चिम दिशा को प्रवेश द्वार के लिए त्याज्य देना चाहिए।
- भवन का उत्तर-पूर्व क्षेत्र वाहन पार्किंग हेतु रखें अर्थात् पार्किंग स्थल बनायें।
- ऊपरी मन्जिलों का इस प्रकार निर्माण करें कि प्रात:कालीन सूर्य रश्मियाँ फ्लैटस में सर्वाधिक प्रवेश करें और वायु प्रवेश किसी भी फ्लैटस में अवरुद्ध न हो।
- फ्लैटस में सामान्य घर के वास्तु नियमों के अनुरूप रसोईघर, स्नानगृह और शौचालय बनाना चाहिए।
- भूमिगत निर्माण तहखाने के रूप में करना हो तो उत्तर या पूर्वी क्षेत्र में ही बनायें। दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र में कदापि न बनाएँ।
- फ्लैट्स में विभिन्न कक्षों का निर्माण सामान्य भवनों के वास्तु नियमों के अनुरूप रखें।

व्यावसायिक केन्द्र में वास्तु प्रयोग

किसी भी व्यावसायिक केन्द्र (Shopping or Commercial Complex) को विकसित करने के लिए भूमि चयन से निर्माण तक के सभी कार्यो में वास्तु नियमों का ध्यान रखना चाहिए। यदि भूमि वास्तु नियमानुसार शुद्ध नहीं है तो सर्वप्रथम उसका वास्तुदोष दूर करें। यदि

मन्दिर बनाते समय मुहूर्त चयन करें। प्रतिमा व देव प्रतिष्ठा के लिए भी मुहूर्त विचारें। बिना शुभ समय के मन्दिर या पूजा स्थल नहीं बनाना चाहिए। मन्दिर में भी धार्मिक वास्तु सूत्रों का भी प्रयोग करना चाहिए।

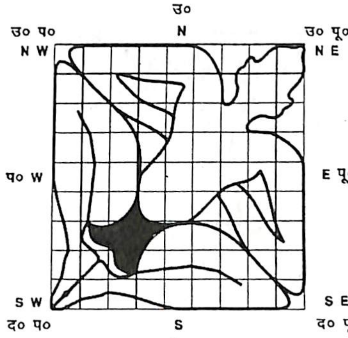

भूखण्ड उत्तर–पूर्व क्षेत्र में बढ़ा हुआ है तो अच्छा है। प्रयास यह करें कि दुकानों के द्वार उत्तर या पूर्व की ओर रहें। भूखण्ड में उत्तर–पूर्व क्षेत्र में सर्वाधिक खुला स्थान रखें और बाग–बगीचा या हरियाली आदि की व्यवस्था रखें।

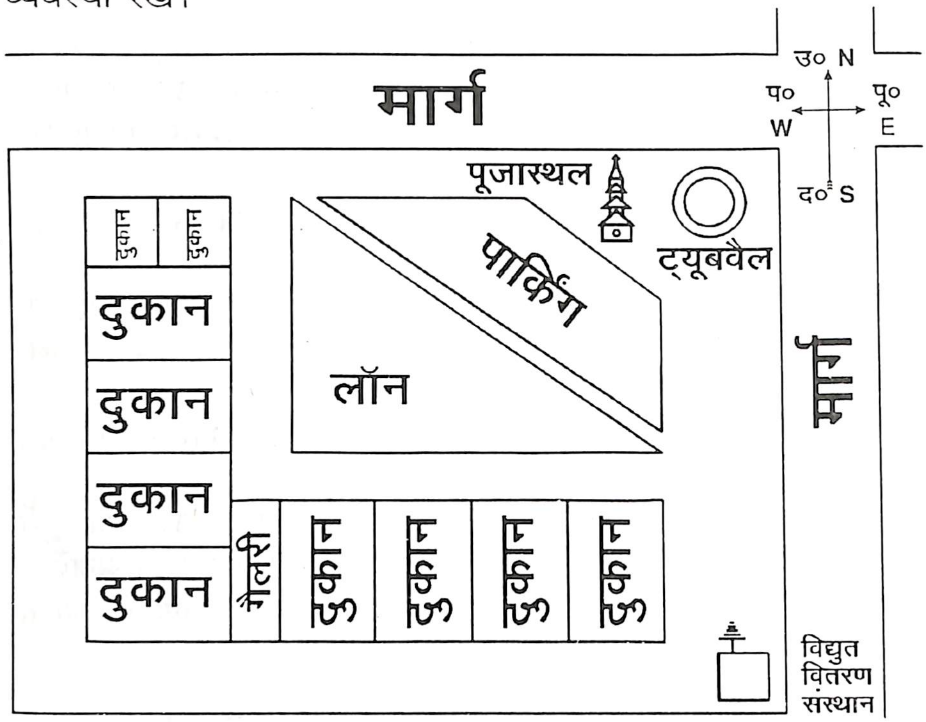

चित्र—4—'व्यावसायिक केन्द्र का प्रारूप'

हर एक स्थान में पूर्व–उत्तराभिमुख भूखण्ड उपलब्ध नहीं होते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो भी मानचित्र इस प्रकार बनाएँ कि उत्तर व पूर्व का स्थान अधिकाधिक खाली रखें। व्यावसायिक केन्द्र में पानी की व्यवस्था

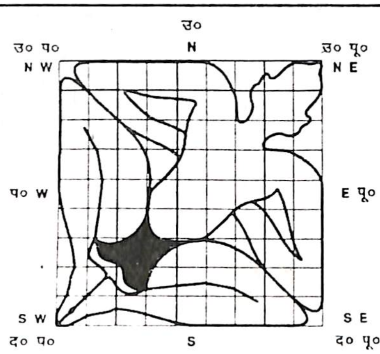

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त हमारे पूर्वजों के अध्ययन, अनुसंधान और अनुभवों के प्रकाश स्तम्भ हैं। इनकी सत्यता, व्यवहारिकता और वैज्ञानिकता आज स्वतः सिद्ध हो रही है।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में करनी चाहिए। ऊपरी टंकी वायव्य कोण में बनानी चाहिए। विद्युत व जनरेटर आदि का प्रबन्ध आग्नेय कोण में करना चाहिए। स्टोर दक्षिण-पश्चिम में रखें। यदि दुछत्ती दुकान में बनानी है तो दक्षिण-पश्चिम दिशा में ही बनाएँ। उत्तर-पूर्व में मन्दिर या पूजा स्थल बनाएँ। शौचालय दक्षिण भाग में रखें। बालकनी उत्तर या पूर्व में ही बनाएँ।

व्यावसायिक केन्द्र की दुकानों में भी वास्तु नियमों का पालन करना चाहिए। दुकान के उत्तर-पूर्व क्षेत्र को पूजा-स्थल के रूप में रखें। इस स्थान को शुद्ध रखें। यहाँ पीने का पानी भी रखें। इस क्षेत्र को अधिकाधिक खुला रखें और शुद्ध रखें। अलमारी या फर्नीचर दुकान के दक्षिण-पश्चिम भाग में बनाएँ। बिक्री का माल दक्षिण, पश्चिम व उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में रखें। दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में दुकान का स्वामी बैठने की व्यवस्था करें। केन्द्र भाग को यथा सम्भव खाली रखे। दुकान में बिजली का मीटर, मेनस्विच आग्नेय कोण में स्थापित करें। यहाँ व्यवसायिक केन्द्र हेतु वास्तु नियम के अनुरूप एक मानचित्र बनाकर दे रहे हैं, देखें चित्र-4 'व्यावसायिक केन्द्र का प्रारूप'।

रेस्तराँ, जलपान गृह एवं होटल में वास्तु-प्रयोग

अन्य व्यापारिक भवनों की भांति रेस्तरों, जलपान गृह, भोजनालय या होटल की स्थापना के लिए पूर्व में कहे गए सभी वास्तु नियमों को व्यवहार में लाने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार के व्यापारिक भवनों में दो महत्त्वपूर्ण स्थान होते हैं—एक तो भोजन बनाने का स्थल और दूसरा उन्हें ठहराने या खिलाने का स्थल। खाना बनाने के लिए पाकशाला या रसोई दक्षिण-पूर्व कोण अर्थात् आग्नेय कोण में बनानी चाहिए। जलपान गृह या होटल हेतु बालकनी सदैव उत्तर या पूर्व दिशा में रखनी चाहिए। खाद्य पदार्थ के भण्डारण या स्टोर हेतु सदैव दक्षिण और पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य कोण) दिशा का उपयोग करना चाहिए। शौचालय

वास्तु सिद्धान्तों का मुख्य लक्ष्य प्राकृतिक व्यक्त और अव्यक्त ऊर्जाओं से लाभ प्राप्त करना है। वास्तु सिद्धान्त प्राकृतिक प्रदूषण से भी रक्षा करते हैं।

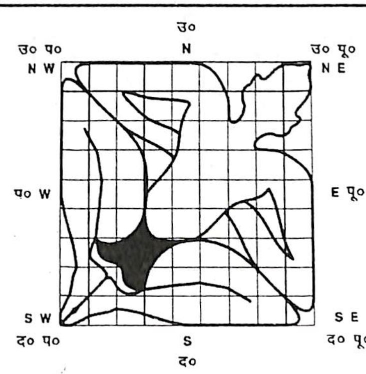

व स्नानगृहों को उत्तर-पश्चिम में बनाएँ। एयर कंडीशनर पश्चिम दिशा में रखना चाहिए। विद्युत, जनरेटर, ट्रांसफार्मर की दिशा आग्नेय ही रखनी चाहिए। वाश-बेसिन पश्चिम दिशा में रखना चाहिए। मुख्यद्वार पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में रखना चाहिए। दक्षिण की ओर मुख्यद्वार कदापि नहीं होना चाहिए। केश बाक्स सदैव उत्तर दिशा में रखें। स्विमिंग पूल, तालाब आदि उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में निर्मित कराने चाहिएं। दुछत्ती होटल में बनानी पड़े तो सदैव पश्चिम या दक्षिण दीवार के सहारे बनाएँ।

होटल का उत्तर-पूर्व दिशा का क्षेत्र खाली रखने का प्रयास करें या वहाँ पर आगन्तुक या स्वागत कक्ष बनाएँ। होटल के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में कमरों का निर्माण नहीं करना चाहिए। इस ओर बालकनी बना सकते हैं। बड़े होटल में पार्टी कक्ष या सम्मेलन कक्ष बनाना हो तो उत्तर-पश्चिम की दिशा सर्वश्रेष्ठ है। होटल का उत्तर-पूर्व क्षेत्र बालकानी के रूप में प्रयुक्त करें और पश्चिमी-दक्षिणी दिशा का भाग आवास हेतु कमरे बना सकते हैं जिसमें आगन्तुक रह सकते हैं। मुख्य भवन के चारों ओर खाली स्थान रखना चाहिए। उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पश्चिम-दक्षिण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक स्थान खुला रखना चाहिए।

सिनेमा हाल में वास्तु-प्रयोग

सिनेमा हाल भी व्यापारिक स्थल है। इसमें भी वास्तु नियमों को अपनाकर लाभ उठाया जा सकता है। प्राय: यह देखा गया है कि सिनेमा हॉल के निर्माण में काफी समय और धन का व्यय होता है। बाद में यह भरोसा नहीं कि सिनेमा हाल बिना बाधा के चल ही जाए। बहुत से सिनेमा हाल कुछ समय बाद हानि के कारण बन्द भी हो जाते हैं। सिनेमा हाल का निर्माण करते समय वास्तु सलाहकार से सलाह लेनी चाहिए। बाद में भी कभी कोई निर्माण कार्य करना हो तो भी वास्तुविद् से अवश्य सलाह लें।

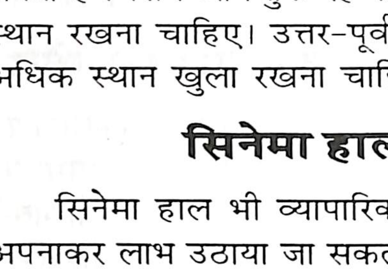

वास्तु सलाह वास्तुविद् से लेकर वास्तुदोष दूर करके ही भवन बनाना चाहिए। भवन बना बनाया है तो उसके भी वास्तुदोष दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

सिनेमा हाल का प्रारूप निर्धारित करते समय वास्तु नियमों का पालन करना चाहिए। इसके लिए किसी योग्य वास्तुविद् से सलाह लेनी चाहिए। सिनेमा हाल बनाते समय निम्नलिखित सूत्रों को ध्यान में रखें और यथा समय प्रयोग में लाएँ—

- वास्तु नियमों के अनुरूप ही सिनेमा हॉल के लिए भूखण्ड चयन करें। यदि उपलब्ध भूखण्ड वास्तु नियमों के अनुकूल नहीं है तो उसे पहले वास्तु दोष से मुक्त कर लें तभी कोई स्थायी निर्माण कराएँ।
- निर्माण कार्य करते समय पूर्व-उत्तर में अधिक खुला स्थान रखे जबकि दक्षिण पश्चिम भाग में कम खुला स्थान छोड़े।
- भूखण्ड आयताकार या वर्गाकार हो। उसके अधिक कोण न निकले हुए हों। यदि भूखण्ड का उत्तर-पूर्व कोना बढ़ा हुआ है तो भूखण्ड श्रेष्ठ है।
- भूखण्ड में सिनेमा हॉल के लिए साइकिल स्टैण्ड व पार्किंग स्थल उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ही बनाएँ।
- पानी का ढाल उत्तर-पूर्व में ही रखें।
- सिनेमा हॉल के स्वामी या प्रबन्धक को उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके बैठना चाहिए।
- सिनेमा हॉल की टिकट खिड़की (Ticket Window) उत्तर या उत्तर-पूर्व में रखनी चाहिए। कैश बाक्स भी इसी दिशा में दायीं ओर रखना चाहिए।
- सिनेमा हॉल में दुकानें बनानी हों तो प्रयास करना चाहिए कि उनका मुख पूर्व या उत्तर की ओर हो।
- पीने के पानी की व्यवस्था उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में रखनी चाहिए।

वास्तु निर्माण करते समय पंचमहाभूत (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश) की महत्ता को विस्मृत नहीं करना चाहिए। पंचमहाभूतों से लाभ पाने के लिए ही वास्तु सिद्धान्त बनाए गए हैं।

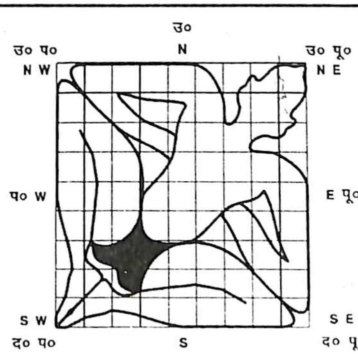

- सिनेमा हॉल में बिजली के मेन स्विच, जेनरेटर आदि की दिशा आग्नेय ही रखनी चाहिए।
- सिनेमा हॉल में जीने का प्रवेश पश्चिम की ओर से दक्षिण की ओर रखें और उनका शटर भी इसी दिशाओं की ओर हो तो अच्छा है।
- सिनेमा हॉल का पर्दा (Screen) दक्षिण दिशा में रख सकते हैं। प्रोजेक्टर उत्तर दिशा में रख सकते हैं।
- सिनेमा हॉल में उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पूजा-स्थल भी बनाना चाहिए।
- उत्तर-पूर्व दिशा की ओर सौन्दर्य के लिए बागीचा या फौव्वारा लगा सकते हैं। मुख्य द्वार भी उत्तर या पूर्व की ओर रखना चाहिए।
- शौचालय व मूत्रालय दक्षिण या पश्चिम क्षेत्र में बनाएँ।
- कैन्टीन दक्षिण-पूर्व दिशा में रखें।

औद्योगिक प्रतिष्ठान में वास्तु प्रयोग

फैक्ट्री या औद्योगिक प्रतिष्ठान में भी वास्तु नियमों को उसी प्रकार अपनाना चाहिए जिस प्रकार आवासीय निर्माण में प्रयोग में लाते हैं। भूमि व वास्तु के मुख्य नियम सभी वास्तु प्रयोगों में समान रूप से लागू होते हैं।

वैसे भी फैक्ट्री या उद्योग का निर्माण आर्थिक समृद्धि के लिए किया जाता। उद्योग या फैक्ट्री के लिए शेरमुख भूमि उत्तम मानी जाती है। उद्योग या फैक्ट्री के भूखण्ड पर मुख्य द्वार उत्तर-पूर्व, पूर्व या उत्तर दिशा में रखना चाहिए।

- यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रतिष्ठान का उत्तर-पूर्व भाग दक्षिण-पश्चिम भाग से नीचा रहे।
- यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कच्चामाल दक्षिण-पश्चिम दिशा में हो और अन्तिम तैयार माल उत्तर-पूर्व में आना चाहिए।

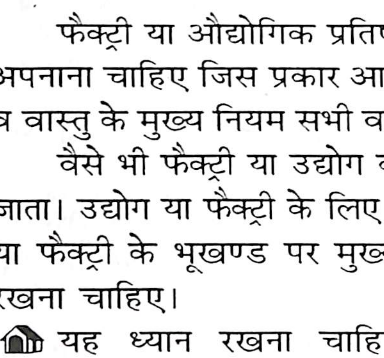

भूमि चयन परीक्षा करके करें, जलस्त्रोत उत्तर-पूर्व और शुद्ध जलप्रवाह उत्तर-पूर्व और सैप्टिक टैंक का अशुद्ध जलप्रवाह उत्तर-पश्चिम में होना चाहिए।

- कर्मचारियों के लिए दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पश्चिम दिशा को चुनना चाहिए।
- शौचालय या मूत्रालाय हेतु उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पूर्व दिशा को चुनना चाहिए।
- पार्किंग हेतु उत्तर-पश्चिम दिशा प्रयोग में लानी चाहिएं।
- प्रशासकीय कमरे उत्तर-पूर्व की ओर होने चाहिए।
- फैक्ट्री की भूमि दक्षिण-पश्चिम में ऊँची एवं उत्तर-पूर्व में नीची होनी चाहिए।
- फैक्ट्री में गार्ड या सिक्योरटी आफिस उत्तर दिशा में मुख्य मार्ग के उत्तर-पश्चिम कोण में होना चाहिए।
- फैक्ट्री का स्टोर दक्षिण-पश्चिम दिशा में होना चाहिए।
- फैक्ट्री का पावर हाऊस, बायलर, जेनरेटर या अग्नि संबंधी कार्य दक्षिण-पूर्व या दक्षिण या पूर्व में रखना चाहिए। आग्नेय दिशा सर्वश्रेष्ठ है।
- पानी का समस्त प्रबन्ध या ट्यूबवैल ईशान कोण में रखना चाहिए।
- ओवर हैड टैंक उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थापित करें।
- तैयार माल उत्तर-पश्चिम, उत्तर या पूर्व या पूर्व-उत्तर क्षेत्र में रहे। कच्चा माल पश्चिमी क्षेत्र में रखें। कच्चे माल का उत्पादन दक्षिण-पश्चिम से प्रारम्भ होकर उत्तर-पूर्व की ओर निकासी हो।
- भारी मशीनरी दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थापित करनी चाहिए।
- फैक्ट्री के फर्श का ढलान दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होना चाहिए।
- फैक्ट्री में मन्दिर ईशान कोण में रखें।
- फैक्ट्री में पानी का बहाव उत्तर-पूर्व की ओर रखें।

अग्नि संबंधी सभी कार्य आग्नेय कोण में करने चाहिए। अतः रसोईघर, अग्नि स्थान, गीजर, विद्युतमीटर, मोटर आदि इसी कोण में रखने चाहिएं। इसका विकल्प वायव्य कोण है।

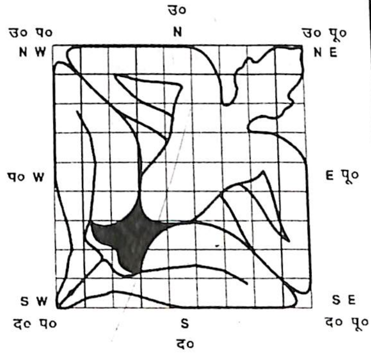

- तौल, नाप या धर्मकांटा हेतु उत्तर–पश्चिम क्षेत्र प्रयोग में लाएँ।
- स्वागत कक्ष उत्तर–पूर्व क्षेत्र में रखें। गैस्ट हाऊस भी इसी दिशा में बना सकते हैं।

औद्योगिक प्रतिष्ठान में कौन सी वस्तु, किस दिशा में करें इसकी जानकारी सचित्र बतायेंगे जिससे आपकी समझ में आ सके।

मशीनरी कहाँ स्थापित करें ?

चित्र–5 में जहाँ क्रास (✗) का चिह्न है वहाँ भारी मशीनरी स्थापित नहीं करनी चाहिए। जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित है वहाँ भारी मशीनरी स्थापित करनी चाहिए। अतः भारी मशीनरी दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण पश्चिम दिशा में होनी चाहिए।

✗	✗	✗
✓	✗	✗
✓	✓	✗

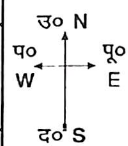

चित्र—5

बॉयलर, विद्युत, आग, ऊर्जा, भट्टी, हीटर संबंधी कार्य कहाँ करें ?

बॉयलर, विद्युत, आग, भट्टी, हीटर संबंधी कार्य आग्नेय, पूर्व या दक्षिण दिशा में होने चाहिएं। देखें चित्र–6 में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित है। जहाँ क्रास (✗) अंकित हैं वहाँ ये कार्य नहीं करने चाहिएं।

✗	✗	✗
✗	✗	✓
✗	✓	✓

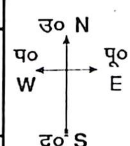

चित्र—6

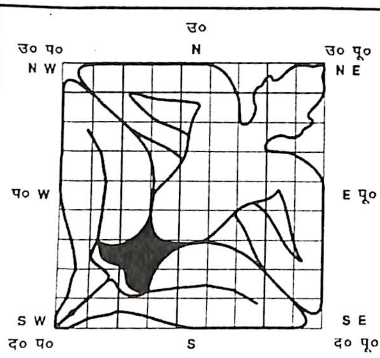

वायु के भरपूर लाभ के लिए पूर्व एवं उत्तर दिशा को सर्वाधिक खुला रखना चाहिए। वायु के सभी साधन भवन में उत्तर-पूर्व दिशा में रखने चाहिएं, जैसे—दरवाजे, खिड़कियाँ, रोशनदान, कूलर, ए.सी, बरामदा, बालकनी आदि।

तैयार माल कहाँ रखें ?

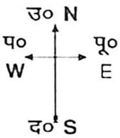

चित्र—7

✓	✓	✓
✗	✗	✓
✗	✗	✗

तैयार माल (Finished Goods) वायव्य या उत्तर या ईशान कोण या पूर्व में बने स्टोर में बिक्री हेतु संग्रह करें। चित्र-7 में जहाँ सही (✓) का चिह्न है वहाँ तैयार माल रखें और जहाँ क्रास (✗) का चिह्न अंकित हैं वहाँ तैयार माल कदापि न रखें।

कच्चा माल कहाँ रखें ?

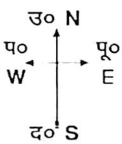

चित्र—8

✗	✗	✗
✗	✗	✗
✓	✗	✗

कच्चा माल दक्षिण-पश्चिम दिशा में बने स्टोर में रखना चाहिए। अतः नैर्ऋत्य कोण में कच्चा माल रखें। चित्र-8 में जहाँ (✓) का चिह्न अंकित है वहाँ कच्चा माल रखें और जहाँ क्रास (✗) चिह्न है वहाँ कदापि न रखें।

प्रशासकीय कार्यालय कहाँ रखें ?

प्रशासनिक कार्यालय एकाउण्ट आफिस उत्तर या पूर्व या उत्तर-पूर्व दिशा में रखना चाहिए। चित्र-9 में जहाँ सही (✓) का चिह्न अंकित है वहाँ प्रशासनिक व एकाउण्ट कार्यालय रखें और जहाँ क्रास (✗) का चिह्न अंकित है वहाँ कदापि न रखें।

यह सदैव ध्यान रखें—भवन का दक्षिण पश्चिम भाग ऊँचा रखें और इस ओर खिड़की-दरवाजे कम रखें।

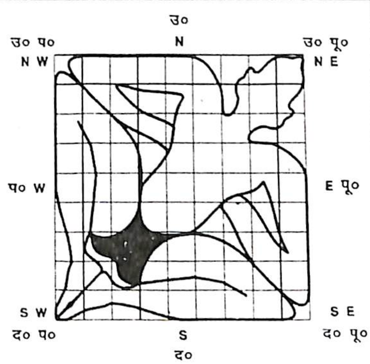

✗	✓	✓
✗	✗	✓
✗	✗	✗

चित्र—9

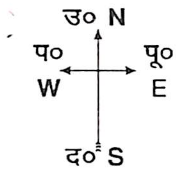

✓	✗	✓
✗	✗	✓
✓	✗	✗

चित्र—10

समय पालक या सिक्योरिटी कार्यालय कहाँ रखें ?

समय पालक या सिक्योरिटी कार्यालय मुख्य द्वार के बाएँ या दाएँ रखना चाहिए। मुख्य द्वार में प्रवेश करते समय दायीं ओर हो तो श्रेष्ठ है। मुख्य द्वार उत्तर में हो तो वायव्य कोण में रखें। मुख्य द्वार पश्चिम में हो तो भी वायव्य कोण में ही रखें। मुख्य द्वार दक्षिण में हो तो आग्नेय कोण में पूर्व की ओर बनाएँ। मुख्यद्वार पूर्व में हो तो ईशान कोण की ओर रखें। देखें चित्र-10।

इस अध्याय में वास्तु के विभिन्न प्रयोगों की चर्चा की गई है। इस ज्ञान का समयानुरूप प्रयोग करके लाभ उठाना चाहिए। अब अगले अध्याय में वास्तु दोष का समाधान बतलायेंगे।

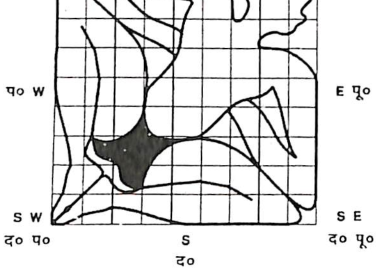

दक्षिण दिशा में सिरहाना रखकर पलंग बिछाना चाहिए, उत्तर क्षेत्र धनदायी होता है और भवन के चारों ओर सम्भव हो तो खुला स्थान रखना चाहिए।

18 वास्तु दोष निवारण

कभी-कभी मनुष्य अज्ञानतावश ऐसा निर्माण करा बैठता है जिससे उसमें वास्तु दोष रह जाता है। वास्तुशास्त्र से अनभिज्ञ लोग जब वास्तु दोष ग्रस्त हो जाते हैं तो उन्हें उसके निवारण के लिए क्या करना चाहिए यह बतलाते हैं।

1. वास्तुविद् से वास्तु सलाह लेकर जिन वास्तु नियमों को प्रयोग में लाकर जो परिवर्तन निर्माण कार्य में कर सकते हैं उसे यथा सामर्थ्य कराना चाहिए।
2. इसके अतिरिक्त वास्तु दोष निवारण हेतु अपनी दैनिक दिनचर्या में भी परिवर्तन लाना चाहिएं और निम्नलिखित बातों का पालन करना चाहिए—
   - जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।
   - जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
   - जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
   - जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।
   - सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर स्वास्तिक, ॐ, मीन, क्रास, ∠∧५ एवं ੴ आदि मांगलिक चिह्न मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।

आंगन में तुलसी का पौधा लगाना चाहिए। आंगन न हो तो गमलों में लगाकर रखना चाहिए।

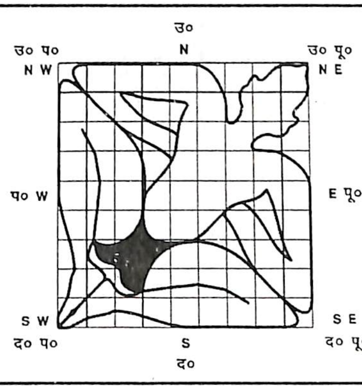

- यदि ट्यूबवैल उत्तर-पूर्व में नहीं है तो अवश्य लगवाएँ।
- यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उसे उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
- यदि पूर्व-उत्तर दिशा का भाग ऊँचा हो तो दक्षिण-पश्चिम भाग में कोई निर्माण कार्य करा दें जिससे पूर्व-उत्तर दिशा का भाग नीचा हो जाए।
- यदि भवन के सामने का उत्तर-पूर्व दिशा का फर्श दक्षिण-पश्चिम में बने फर्श से ऊँचा हो तो दक्षिण-पश्चिम दिशा के फर्श को ऊँचा करें। ऐसा नहीं कर सकते तो पश्चिम दिशा के कोने में एक प्लेट फार्म बनाएं।
- दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआँ या टयूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में टयूबवैल या कुआँ खुदवाएँ। अन्य दिशा के कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द कर दें अथवा उत्तर-पूर्व में एक ओर टयूबवैल या कुआँ लगवाएँ जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।
- दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियाँ हो तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
- **यदि भूखण्ड शेरदाह (शेर मुख) हो तो उसके दोष को दूर करने के लिए क्या करें ?** जिस ओर से भवन में जाने के लिए प्रवेश द्वार हो उस ओर भूखण्ड की चौड़ाई अधिक ओर पीछे की ओर चौड़ाई कम हो तो उसे शेरदाह भूखण्ड कहते हैं। यह भूखण्ड व्यापारिक दृष्टिकोण से ठीक है, किन्तु आवास हेतु धन, सुख व शान्ति में बाधक है। इसका वास्तु दोष दूर करने के लिए दोनों ओर की चौड़ाई बराबर करनी होगी। यदि पीछे की ओर की चौड़ाई सामने से अधिक कर

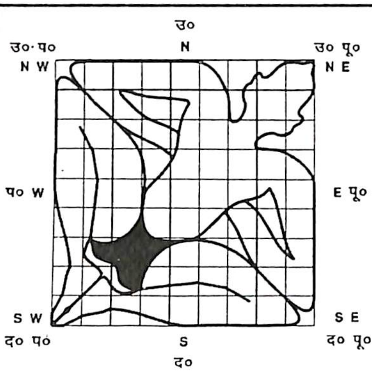

धर्म प्रत्येक कार्य में निहित है। विज्ञान और कोई भी कला जब धर्म या अध्यात्म से जुड़ जाती है तो उसकी मूल प्रेरणा मानव कल्याण होता है। भावना शुद्ध न हो तो कला भटकाव लाती है और विज्ञान विध्वंसात्मक रूप ग्रहण कर लेता है।

पानी संभव हो तो भूखण्ड गोमुख हो जायेगा जोकि भवन के लिए शुभ है।

- **यदि भवन में जल का बहाव गलत दिशा में हो या पानी की सप्लाई ठीक दिशा से न हो तो क्या करें ?** इस वास्तु दोष को दूर करने के लिए उत्तर-पूर्व दिशा में भूमिगत जल की टंकी बनवाकर उसी से पानी की सप्लाई भवन में करें। ऐसा करने से जल का गलत दिशा के बहाव का दोष दूर हो जायेगा।
- **यदि व्यापार में हानि हो रही तो देखें कि दुकान या आफिस में क्या वास्तु दोष है।** दुकान या आफिस में देखें कि उत्तर-पूर्व में खाली स्थान अधिक है या नहीं। नहीं है तो खाली करें। आफिस या दुकान में दक्षिण और पश्चिम दिशा में अधिक सामान अलमारी, फर्नीचर व रिकार्ड आदि रखें और अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें। ऐसा बदलाव करके आप आश्चर्यजनक परिवर्तन देखकर अचंकित हो जायेंगे।
- **टी. वी. एन्टीना और वास्तु दोष**—यदि भवन आगे से ऊँचा और पीछे से नीचा हो। कहने का तात्पर्य यह है कि भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग नीचा हो तो ऊँचा करने के अन्य साधनों में दक्षिण-पश्चिम कोण में काफी ऊँचा टी. वी. एन्टीना लगाकर उस वास्तु दोष को दूर कर सकते हैं।
- **किराये के मकान में वास्तु प्रयोग**—किराए के मकान में गृहस्वामी की स्वीकृति के बिना कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। प्राय: देखा गया है कि वास्तु-नियमों के अनुकूल बने भवन में किराएदार सुखी एवं सम्पन्न होता है। भवन का उत्तर-पूर्व का भाग अधिक खाली रखें। दक्षिण-पश्चिम दिशा

वास्तु से धर्म को जोड़कर हम साकार ब्रह्मा से संबंध जोड़कर भवन को मन्दिर सदृश मानकर पूजा व साधना हेतु उपयुक्त स्थान पाते हैं जिसमें सुख-समृद्धि व आत्मिक शान्ति मिले।

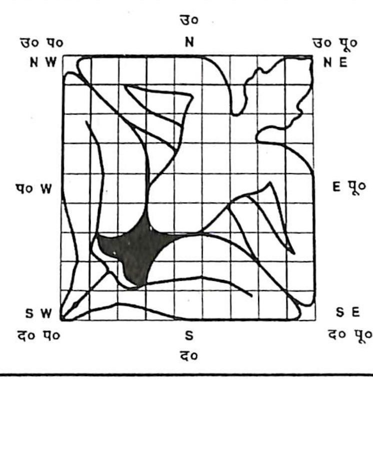

के भाग में अधिक भार या सामान रखें। पानी की सप्लाई उत्तर-पूर्व से लें। शयनकक्ष में पलंग का सिरहाना दक्षिण दिशा में रखें और सोते समय सिर दक्षिण दिशा में व पैर उत्तर दिशा में रखें। यदि ऐसा न हो तो पश्चिम दिशा में सिरहाना व सिर कर सकते हैं। भोजन दक्षिण-पूर्व की ओर मुख करके करें। पूजास्थल उत्तर-पूर्व दिशा में स्थापित कर लें यदि अन्य दिशा में हो तो पानी ग्रहण करते समय मुख ईशान (उत्तर-पूर्व) कोण की ओर रखें।

वास्तुविद् या वास्तु सलाहकार से सलाह लेकर वास्तु दोष का निवारण करना चाहिए। दिशा के उचित निर्धारण के बिना वास्तु दोष दूर कर पाना सम्भव नहीं है।

इस अध्याय में विभिन्न वास्तु दोष निर्धारण की चर्चा की गई है। अब अगले अध्याय में शिलान्यास रीति एवं वास्तुशान्ति की चर्चा करेंगे।

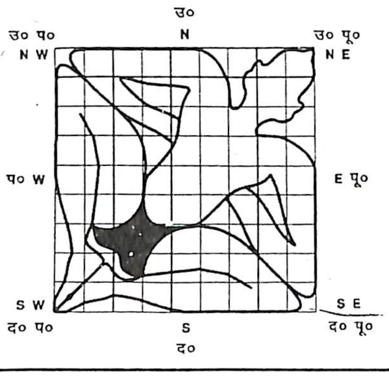

स्वास्तिक, ॐ, मंगल कलश, जुड़वाँ मीन, पंचागुलक हाथ, ੴ, ✝, ۷۸٦ व अर्धचन्द्र आदि शुभ चिह्न मुख्यद्वार पर लगाने से सुख-शान्ति व समृद्धि होती है।

19 शिलान्यास एवं वास्तु शान्ति विचार

इस अध्याय में भवन निर्माण से पूर्व नींव पूजन एवं शिलान्यास किया जाता है। इसके अतिरिक्त गृहप्रवेश के समय वास्तु पूजा एवं वास्तु शान्ति की जाती है। इस अध्याय में दोनों प्रकार के पूजन सरल ढंग से बतायेंगे।

नींव व शिलान्यास पूजन की सरल रीति

नींव व शिलान्यास पूजन हेतु आवश्यक सामग्री एकत्र कर लें। पुरोहित या पंडित आपको पूजन सामग्री के विषय में बता देगा। सामान्यतः निम्नलिखित पूजन सामग्री की आवश्यकता पड़ती है—

1. रोड़ी 2 रु० की, 2. कलई 2 रु० की, 3. धूपबत्ती 1 पैकट, 4. कर्पूर 1 पैकट, 5. नवग्रह के रंग की पुड़िया, 6. पुष्प व माला, 7. पान-सुपारी 5-5, 8. बताशे 250 ग्राम, 9. पाँच फल 10. लड्डू 250 ग्राम, 11. सिन्दूर 12. घी का दीपक एक, 13. बत्ती के लिए रुई, 14. चावल, 15. गेहूं का आटा चौक पूजने के लिए, 16. एक ताँबे का छोटा लोटा, 17. ताँबे की कटोरी लोटे को ढकने के लिए, 18. खैर की खूंटी चार अंगुल, 19. 250 ग्राम कच्चा दूध, 20. सोने का सांप व चांदी का कछुआ, 21. पंचरत्नी (सोना, चांदी, ताँबा, मूंगा, पीतल का एक-एक टुकड़ा), 22. सेतुआ 250 ग्राम, 23. संवार (नदी, तालाब में मिलने वाली घास), 24. दूब घास, 25. गोबर, 26. मिट्टी का कुल्हड़ व प्याला (कसोरा), 27. आम के पत्ते, 28. 5 नई ईटें, 29. सीमेण्ट, रेत आदि,

सुव्यवस्थित व सुनियोजित नगर नियोजन हेतु सभी वास्तु सिद्धान्तों को प्रयोग में लाने का प्रयास करना चाहिए जिससे नगरवासी सुखी व समृद्ध रहें।

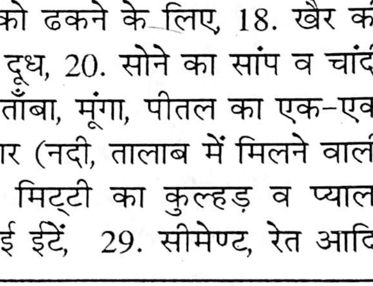

30. मिस्त्री की कन्नी, वसूली धोकर रक्षासूत्र बाँधकर रखें। इसकी पूजा भी होगी एवं 31. शुद्ध जल व गंगा जल।

यजमान नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करके पुर्वाभिमुख बैठकर पूजन प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम कुशा से अपने ऊपर जल छिड़ककर मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्धि करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ग्रन्थि बन्धन

यदि यजमान शिलान्यास व नींव पूजन में सपत्नीक (पत्नी सहित) बैठे तो निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ग्रन्थि बन्धन (गठजोड़ा) करें।

ॐ यदाबध्नन दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बन्धामि शत शारदायायुष्यञ्जरदष्टियर्थासम्।।

अर्थात् यह गठजोड़ा या बन्धन दीर्घायु और धन-धान्य कारक हो। इसके बाद आचमन करें

जल पात्र से दाहिनी हथेली में जल लेकर तीन बार पान करें और प्रत्येक बार अधोलिखित मन्त्र का उच्चरण करें—

प्रथम बार — ॐ केशवाय नमः (आचमन करें)
दूसरी बार — ॐ नारायणाय नमः (आचमन करें)
तीसरी बार — ॐ माधवाय नमः (आचमन करें)

तीन बार जल का आचमन करके अधोलिखित मन्त्र कहते हुए अपना हाथ जल से शुद्ध करें—

ॐ हृषिकेशाय नमः

(अब दीप प्रज्जवलित करें)

भो दीप देवस्पस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिर भव।।

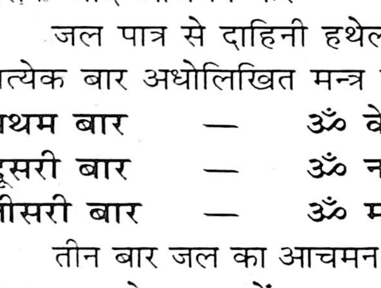

भवन बनाते समय इन सूत्रों को सदैव प्रयोग में लाएँ। इनको भली-भांति प्रयोग में लायेंगे तो सुख-शान्तिदायक भवन बनाने में सफल होंगे। अगले नौ सूत्र अवश्य प्रयोग में लाने चाहिएं।

अर्थात् हे दीप ! आप मेरे कर्म के साक्षी हो और कर्म समाप्ति तक प्रज्जवलित रहें।

उपर्युक्त कर्मों को करने के बाद उपासना से पूर्व संकल्प करें। संकल्प से पूर्व वैदिक मन्त्र द्वारा प्रभु से प्रार्थना करें। प्रार्थना हेतु अधोलिखित मन्त्र उपयोग में ला सकते हैं—

ॐ यज्ञाग्रतो दूरमुदैति देवं तदुसुप्तस्य तथैवेति।
दूरंगमं ज्योतिषां, ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अर्थात् हे ज्योति स्वरूप मेरे मन में शुभ और अच्छे संकल्प उत्पन्न करें।

ॐ शन्नो मित्रः शं वरूणः शन्नो भवत्यांम।
शन्न इन्द्रो बृहस्पति शन्नो विष्णुरूक्रमः।।

अर्थात् सूर्य, वरुण, चन्द्रमा, इन्द्र, बृहस्पति और विष्णु कल्याण करें।

यह ध्यान रखें कि संकल्प द्वारा साधक (उपासना) अपनी इच्छा अभिव्यक्त करता है। यदि यजमान के लिए पुरोहित पूजन कराये तो संकल्प का और अधिक महत्त्व हो जाता है। जहाँ-जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ सम्बन्धित शब्द बोलें अर्थात् जो भी यजमान से सम्बन्धित हो। दाहिने हाथ में कुश-अक्षत-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करें—

हरिः ॐ तत् सत् विष्णु-विष्णु-विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त मानस्य-श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे-श्रीश्वेत वाराह कल्पेवैवस्वत मन्वन्तरे-अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायने सूर्ये यथा ऋतौ च महामांगल्यप्रदे मासे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे यथा नक्षत्रे यथा-यथा राशि स्थितेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्न मुहूर्त योग करणन्वितायाम् एवं ग्रह गुण विशेषण

आवास हेतु वर्गाकार या आयताकार भूखण्ड ही चयन करना चाहिए। ये क्रमशः सर्वोत्तम व उत्तम होते हैं।

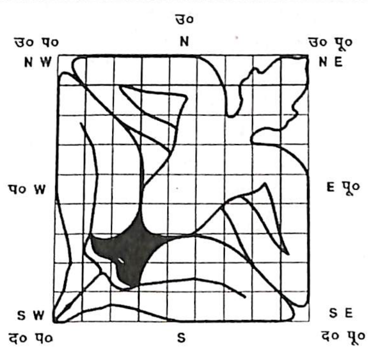

विशिष्टायां शुभ पुण्य पर्वणि श्रुतिस्मृति-पुराणोक्त-फलावाप्तये (अमुक) गोत्रः (अमुक) नामाऽहम् मम एतत् स्थानाधि करणक निर्विघ्न पूर्वक चिरकालवास-सुख-सौमनस्य नैरुज्य दीर्घायुष्ट वलपुष्टि पुत्र-पौत्र धन-धान्य पश्वादि प्राप्तिकामनया गृहारम्भ करिष्ये। तदंगत्वेन गौरी-गणपत्यादि देवतादीनां पूजनं तथा च भूमिपूजनं-शिलापूजनं-नाग पूजनादिकं च करिष्ये।।

संकल्प पढ़ कर हाथ का कुश-अक्षत आदि सामने भूमि पर छोड़ दे।

भूमिपूजन व कलश स्थापना करें

यथाविधि गौर-गणेश-कलश-नवग्रह-षोडशमातृका पूजन करें। (कलश प्रतिष्ठा पद्धति से यह पूजन कराया जा सकता है) इसके बाद—नाग-कच्छप आदि की पूजा क्रमशः निम्न प्रकार से करें—

नाग-कच्छप पूजन करें

नवग्रह से उत्तर पूर्व (ईशान कोण में) रोड़ी या हल्दी से अष्टदल कमल बनाकर एक तांबे का लोटा स्थापित करें। लोटे के गले में रक्षा सूत्र (कलावा) लपेट दें। लोटे के भीतर सोने का सांप तथा चांदी का कछुआ रख दे। अक्षत लेकर कच्छप तथा नाग का आवाह्न करें—

ॐ वास्तोस्पते प्रति जानीह्यस्मान्-स्वावेषा अनमीवो भवानः।
यत्वे महे पतितन्नायुष सुशन्नो भवद् द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवी मनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्।
तस्मै देवा अधिब्रवन् नयञ्च ब्रह्मणस्पतिः।।

ॐ कूर्मायनमः।।

ॐ खड्गो वैष्वदैवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते।

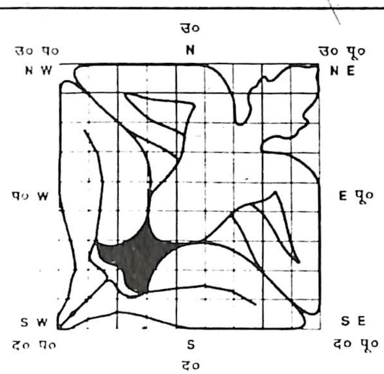

भूखण्ड में उत्तर व पूर्व दिशाएँ अवनत (नीची) और दक्षिण-पश्चिम दिशाएँ उन्नत (ऊँची) होनी चाहिएं। टी. वी. एन्टीना दक्षिण पश्चिम कोण में ऊँचा करके लगाएँ।

रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिद्ध ७ँ हो मारुतः कृकलासः
पिप्पका शकुनिस्ते शख्याय विष्वेषां देवानां पृषतः।।
ॐ वाराहायनमः।।

ॐ मनोजूतिर्जषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन् तनो
त्वरिष्टं यज्ञ ७ँ समिमन्दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

अक्षत लोटे में छोड़ दें। यथाविधि कच्छप और नाग की पूजा करें। लोटे में पंचरत्नी छोड़ दें। एक कटोरी में घी-लावा-दूध-दूब (सेवार) लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ सर्वलक्षण सम्पन्न सर्वेश कमलाधिप।
अर्धम् गृहाण देवेश विष्णुरूप नमोऽस्तुते।।
हिमकुन्द प्रतीकाश नागानन्त महाफणीन्।
शंखचूड़ महापद्म गृहाणार्धम् नमोऽस्तुते।।

कटोरी का दूध-लावा आदि लोटे के भीतर छोड़ दें। अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

ॐ वास्तोष्पतिम् जगद्देवं सर्व सिद्धि विधायकम्।
स्थापयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्।।
देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल तल वासिनम्।
शान्तिकर्तार मीशानं तं वास्तुं प्रणतोऽस्म्यहम्।।
कूर्मदेवं नमस्तुभ्यं सर्वकामफलप्रद।
गृहेऽस्मिन् स्थिरोभूत्वा मम स्वस्तिकरो भव।।
त्रिविक्रमाया मित विक्रमाय महावराहाय सुरोत्तमाय।
श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।।

अक्षत फूल लोटे पर चढ़ा दें। और उसका मुख तांबे की कटोरी से बन्द कर दे।

उत्तर, उत्तर-पूर्व व पूर्व दिशा में दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम व पश्चिम दिशा की अपेक्षा अधिक खुली जगह होनी चाहिए।

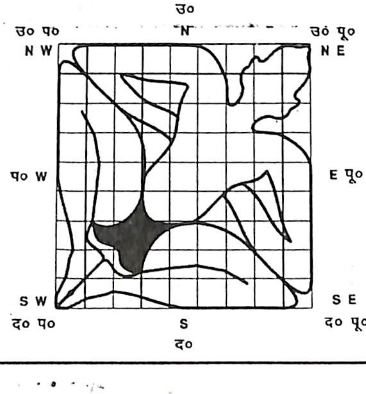

ईंट की पूजा करें

पाँच नयी ईंट धोकर सामने अलग–अलग रखें। बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से 2–2 दाना अक्षत पांचों ईंटों पर छोड़कर आवाह्न करें—

ॐ नन्दे नन्दय वाशिष्टे वसुभिः प्रजया सह।
समुद्र परिवारे त्वं देवि गर्भम् समाश्रय।
ॐ भूभुर्वः स्वः नन्दायै नमः। नन्दामावाहयामि।।

ॐ सर्ववीज समायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते।
भद्रे काश्यप दायादे कुरु भद्रां मतिं मम।
ॐ भूभुर्वः स्वः भद्रायैनमः। भद्रामावाहयामि।।

ॐ प्रजापति सुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
जये सुरुचिरे देवि वाशिष्ठे रम्यतामिह।
ॐ भूभुर्वः स्वः जयायैनमः। जयामावाहयामि।।

ॐ पूजिते परमाचार्यैः गन्धमाल्यैरलंकृते।
सुभगे सुप्रभे रिक्ते गृहे काश्यपि रम्यताम्।
ॐ भूभुर्वः स्वः रिक्तायै नमः। रिक्तामावाहयामि।।

ॐ एकान्ते सर्वभूतेशे पर्वतासन मण्डिते।
भवभूतिकरे देवि गृहे पूर्णेतु रम्यताम्।
ॐ भूभुर्वः स्वः पूर्णायै नमः। पूर्णामावाहायामि।।

(हाथ जोड़कर प्रार्थना करे)

ॐ देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
कुटुम्बादिक तुष्ट्यर्थम् धनधान्य करी भव।।
अव्यङ्गे चाक्षते पूर्णे मुने रंगिरसः सुते।
इष्टके त्वं प्रयच्छेष्टं प्रतिष्ठां कारयाम्यहम्।।

(हाथ का अक्षत 5 ईंटों पर छोड़ दें)

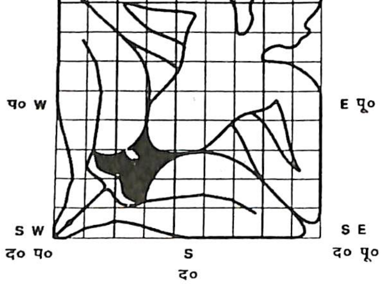

भूमिगत निर्माण उत्तर व पूर्व दिशा में करना चाहिए। दक्षिण व पश्चिम में कभी नहीं करना चाहिए।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्।
तनो त्वरिष्टं यज्ञ ং समिमन् दधातु।
विश्वेदेवा स इह मादयन् ता मोम् प्रतिष्ठ।।
ॐ भूभुर्वः स्वः इष्टकान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

(कुशा से 5 ईंटों पर गंगाजल छिड़कें)

नन्दा पर—

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति।
व्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वनाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा।
जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य बीरो जायताम् निकामे।
निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमों नः कल्पताम्।।

भद्रा पर—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर् यजत्राः।
स्थिरै रंगैस् तुष्टुवा ং सस्तनू भिर् व्यशे महि देवहितं यदायुः।।

जया पर—

ॐ जातवेदसे सु न वामसौ ममरातीयतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः।।

रिक्ता पर—

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा।
स्वाहा-धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।

पूर्णा पर—

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ং शतक्रतोः।।

ईंट पर स्वास्तिक बना दें और पाँचों ईंट का पूजन कर दें। ईंट के ऊपर कपड़ा बिछाकर या रक्षासूत्र (कलावा) रखकर फिर से ईंट के ऊपर अक्षत छिड़ककर ब्रह्मा, विष्णु आदि की पूजा करे व मन्त्र पढ़ते रहें।

कुआँ, ट्यूबवैल व हैंडपम्प सदैव ईशान कोण में ही खुदवाना चाहिए। अन्य दिशा में खुदवाना अशुभ है। ट्यूबवैल उत्तर-पूर्व में नहीं हैं तो अवश्य लगाएँ। अन्य दिशा में हो तो उसे बन्द करवा दें।

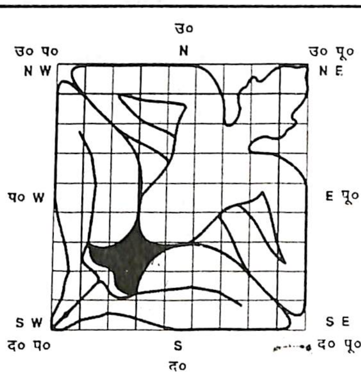

1. ॐ ब्रह्मणे नमः। 2. ॐ विष्णवे नमः। 3. ॐ रुद्राय नमः। 4. ॐ ईश्वराय नमः। 5. ॐ सदाशिवाय नमः।।

पूजा करके हाथ में जल लेकर छोड़ दें और हाथ जोड़ लें—

अनेन पूजनेन देवाः प्रीयन्तां न मम।
क्षेमकर्तारः पुष्टिकर्तारः वरदा भवन्तु।।

स्थलपूजन करें

जिस स्थान पर नींव रखनी हो, उस स्थान पर कुशा या आम्र पल्लव से जल छिड़कें—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे।
योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः।।
उशतीरिव मातरः।
तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपोजन यथा च नः।।

अक्षत लेकर भूमि की प्रार्थना करे—

ॐ आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
उद्धृतासि वराहेण सशैल वन कानने।।
कूर्मपृष्ठोपरिस्थां च शुक्लवर्णां चतुर्भुजाम्।
शंखपद्मधरां चक्र शूलयुक्तां धरां भजे।।
ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म सप्रथाः।

अक्षत भूमि पर छोड़कर भूमि की पूजा करें। तीन बार जल छोड़ें। गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-जल-पान-सुपारी-पैसा चढ़ा दें। एक कटोरी में जल-गन्ध-अक्षत-फूल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ पृथिवी ब्रह्म दत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता।

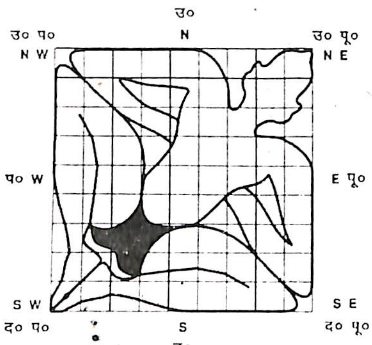

रसोईघर व अग्नि संबंधी सभी कार्य आग्नेय कोण में ही करने चाहिएं।

गृहाणार्घमिमं देवि प्रसन्ना वरदा भव।।
वसुधे हेम गर्भासि शेषस्योपरि शायिनि।
तव पृष्ठे वसाम्येतत् गृहणार्धम् धरित्रि मे।।

यह पढ़कर कटोरी का जल आदि भूमि पर चढ़ा दें। अक्षतः-पुष्प लेकर प्रार्थना करें—

ॐ उपचाराणि मांस्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्तया गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः।।
ब्रह्मणानिर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दं वै श्रवणेन च।।
देवेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनवृद्धिकरीभव।।
यथाचलो गिरिर्मेरु रावास मचलं कुरु।
आरोपितं गृहाधारं तथा त्वमचलाभव।
क्षेमकर्त्री तुष्टिकर्त्री पुष्टिकर्त्री वरदात्रीभव।

एक खैर की खूंटी लेकर अपने सामने रखें और प्रार्थना करें—

ॐ यथा चलो गुरुर्मेरु रावा समचलं मम।
आरोपितं गृह स्तंभं तथा त्व मचलं कुरु।।

कन्नी-वसूली की पूजा करें

मिस्त्री (राजगीर) से कन्नी-वसूली लेकर गंगाजल से धोकर उसमें रक्षासूत्र (कलावा) बांधकर अपने सामने रखें। अक्षत लेकर प्रार्थना करें—

ॐ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषा स्युश्च यदुद्भवाः।
नाशयत्व हितान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते।।

कन्नी-वसूली की पूजा करके, प्रार्थना करें—

ॐ त्वष्ट्रा त्वम् निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया।
पूजितोऽसि खनित्रि त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम्।।

उत्तर व पूर्व दिशा को खुला स्थान, लान, बगीचा, पोर्टिको, बालकनी आदि के लिए प्रयोग में ला सकते हैं।

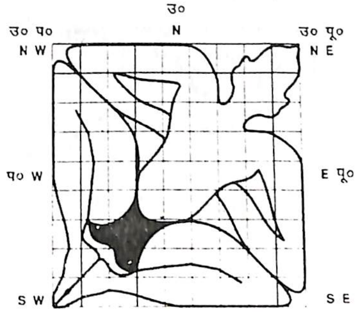

मिस्त्री-राजगीर को तिलक लगा दें—

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातार मिन्द्र मकृणो रवध्यम्।
तस्मै विशः समन मन्त पूर्वीरय मुग्रो विहव्यो यथाऽसत्।।

मिस्त्री को नेग देकर आज्ञा मांगें और फिर कन्नी वसूली का प्रयोग करें। मिस्त्री से आज्ञा प्राप्त होने पर—पूजा की हुई जमीन पर बीचो-बीच खैर की खूंटी गाड़ दें। खूंटी बिल्कुल जमीन के भीतर चली जाय। इस खूंटी के ऊपर—तांबे का ढका हुआ लोटा ज्यों का त्यों उठाकर रख दें। कटोरी के ऊपर भी लावा-सेतुवा-सेवार (जो नदी तालाब में घास होती है) रख दें। चूना-सीमेन्ट आदि से लोटे को ढंककर उसी के ऊपर पांचों ईंट जिसकी पूजा की गई है, की चिनाई कर दें। ईंट कम पड़े तो और 5 ईंट या 7 ईंट आवश्यकतानुसार लेकर चूना-सीमेन्ट से मजबूत जोड़ दें जिससे लोटा बाहर न निकल सके। बाद में ईंट के ऊपर सीमेन्ट लगाकर चौकोर चबूतरा बनाकर उसके ऊपर रोड़ी से स्वस्तिक बना दें। बाद में अक्षत और फूल हाथ में लेकर प्रार्थना करें—

ॐ स्थिरोभव वीड्वंग आशुर्भव वार्ज्यवन्।
पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहणः।।
नन्दे त्वं नन्दिनीपुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्।
वेश्मनि त्विह संविष्ठा यावच्चन्द्रार्क तारकाः।।
आयुः कामं श्रियं देहि देववासिनि नन्दिनि।
अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या सदा वेश्मनि यत्नतः।।
भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि।
आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदाभाव।।
गर्गगोत्र समुद्भूतां त्रिनेत्रां च चतुर्भजाम्।
गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य जयां चारु विलोचनाम्।।
रिक्ते त्वं रिक्त दोषघ्ने सिद्धिमुक्तिप्रदे शुभे।

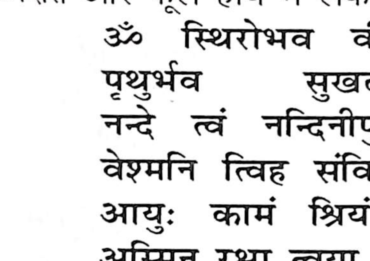

पार्किंग हेतु उत्तर-पश्चिम स्थान प्रयोग में लाना चाहिए।

सर्वदा सर्व दोषध्वि तिष्ठास्मिन् विश्वरुपिणि।।
पूर्णे त्वं सर्वदा पूर्णान् लोकांश्च कुरु काश्यपि।
आयुर्दा कामदा देवि धनदा सुतदा तथा।।
गृहधारा वास्तुमयी वास्तुदीपेन संयुता।
त्वामृते नास्ति जगता माधारश्च जगत् प्रिये।।

फूल इटों पर चढ़ाकर कर्पूर से आरती करें—

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत।।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरपाद् घोरात् दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।

ब्राह्मण को अधोलिखित मन्त्र से तिलक लगाकर दक्षिणा संकल्प करते हुए दक्षिणा दें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करोषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।

अद्य विशेषण विशिष्टयां शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नामाऽहम् कृतैतत् शिलान्यास कर्मणः दक्षिणां गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रद दे।

ब्राह्मण लेकर कहे—स्वस्ति।

भूयसी दान—गरीबों को बांटने के लिए कुछ रुपया पैसा लेकर संकल्प करें—

अद्य कृतैतत् शिलान्यास कर्मणः तन्मध्ये न्यूनानिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीं दक्षिणां दीना नाथेभ्यो ब्रह्माणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

शयनकक्ष में पलंग का सिरहाना दक्षिण दिशा की ओर ही रखें। ऐसा करने पर नींद अच्छी आती है।

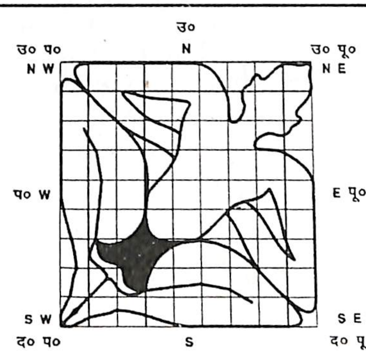

यथाशक्ति गोदान-स्वर्णदान आदि कर सकें तो करें और अब पुरोहित यजमान को तिलक करे—

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्‌गणः।
तिलकंतु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।
ॐ येन बद्धोबली राजा दानवेन्द्रो महावलः।
तेन त्वां प्रतिवघ्नामि रक्षे माचल माचल।।

विसर्जन—फूल लेकर हाथ जोड़ें—

ॐ यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
तेहनांक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
प्रमादात् कुर्वतां कम प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
सर्व परिपूर्ण कामः विष्णुम् स्मरेत्।
श्री विष्णुः ! श्री विष्णुः ! श्री विष्णुः।।

यजमान को फल-फूल और अक्षत निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दें

ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव।।

गृहस्वामी जिस आसन पर बैठा है, उसके नीचे जल छोड़कर उस जल को माथे से लगाकर व आसन से उठकर ब्राह्मणों एवं बड़े-बूढ़ों के चरण-स्पर्श करे।

वास्तु शान्ति विधि

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप भवन निर्माण करके उसमें रहने जाने से पूर्व वास्तु शान्ति करानी चाहिए और शुभमुहूर्त में गृह प्रवेश करना

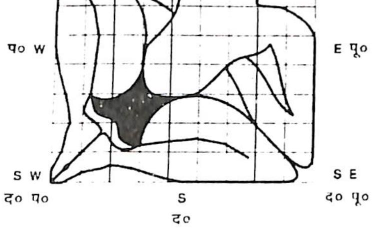

समूह आवासीय योजना में मानचित्र इस प्रकार बनाएँ कि भूखण्ड उत्तर-दक्षिण में समकोण रेखा पर स्थित हों।

शुभफलप्रद रहता है। वास्तु पूजा के बिना भवन में रहने पर बाधाएँ, कष्ट व अशान्ति रहती है।

गृह प्रवेश के दिन से पूर्व शुभ दिन में गृहस्वामी को सपत्नीक पूर्व या उत्तराभिमुख शुभासन पर पूजा सामग्री सहित बैठकर सर्वप्रथम स्वयं की शुद्धि करनी चाहिए।

इसके लिए तांबे या चांदी के लोटे से थोड़ा शुद्ध जल अपने बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दाहिने हाथ से अंगूठा, मध्यमा और अनामिका जोड़कर, बायें हाथ की हंथेली पर रखे जल को अपने ऊपर छिड़के। जल छिड़कते समय अधोलिखित मन्त्र को पढ़े—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स ब्रह्माभ्यन्तारः शुचिः।।

(अब आसन शुद्धि करें)

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुनां धृता।
त्वं च धारय यां देवि पवित्रं कुरु चरणनम्।।

आसन शुद्धि के बाद पत्नी को दाहिने हाथ पर बिठाना चाहिए। मांगलिक तिलक करके पति-पत्नी का ग्रन्थि बन्धन करें—

ॐ यदाबध्नन दाक्षायण्य हिरण्यॐशतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बन्धामि शतं शारदायायुष्य जरदष्टि यर्थासम्।।

(इसके बाद आचमन करें)

तीन बार जल से आचमन करें—

प्रथम बार — ॐ केशवाय नमः (आचमन करें)
दूसरी बार — ॐ नारायणाय नमः (आचमन करें)
तीसरी बार — ॐ माधवाय नमः (आचमन करें)

आचमन के बाद निम्नलिखित मन्त्र बोलकर हाथ शुद्ध करें—

ॐ हृषिकेशाय नमः

समूह आवासीय योजना में अधिकांश भूखण्डों का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में रखने का प्रयास करना चाहिए।

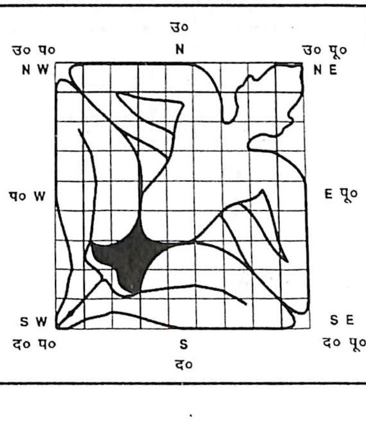

यक्षकर्ता यज्ञरक्षार्थ घी का दीप प्रज्वलित कर कलश के दक्षिण भाग में चावलों पर रखकर प्रार्थना करे।

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावस्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

सङ्कल्पः

यज्ञकर्त्ता हाथ में पुष्प, अक्षत, कुशा, द्रव्य, सुपारी एवं जल लेकर संकल्प पढ़ने के बाद गणेश जी के निकट पृथ्वी पर रख दे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य नारायणस्य सुखशयनास्पद-श्रीशेषमहाफणीसहस्त्रमण्डलो-द्धृतायां वसुन्धरायां श्रीमाद्बरञ्चिद्वितीये परार्द्धे सप्तकल्पानां मध्ये श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कळियुगे कळिप्रथमचरण जम्बूद्वीप भारतवर्षे भरतखण्डे बौद्धावतारे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गत (अमुक) देशे पुण्य (अमुक) क्षेत्रे (अमुक) ग्रामे विक्रमसंवत्सरे (अमुक) संख्यके शालिवाहनशाके (अमुक) संख्यके (अमुक) नाम्नि संवत्सरे (अमुक) अयने (अमुक) ऋतौ (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नक्षत्रे (अमुक) गोत्रात्पन्नः (अमुक) नामाऽहं मम कायिक-वाचिक-मानसिक-ज्ञाताऽज्ञात सकळदोष परिहारार्थं तथा च सर्वपापक्षयपूर्वकमारोग्य दीर्घायुर्विपुळ धन-धान्य पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि स्थिर लक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टपूर्वकमेतद्वास्तुस्थिरतासिद्धिपूर्वककमेतद् गृहाधिकरण काष्ठशल्यमेदिनीदोष नानाविध जीवहिंसादिजन्य सकल दोषपरिहारार्थपूर्वक सर्वारिष्टोपशमनार्थम् एतद्गृहाधिकर्णक सकुटुम्ब-सपरिवारं मत्कर्तृकाचिरकाल

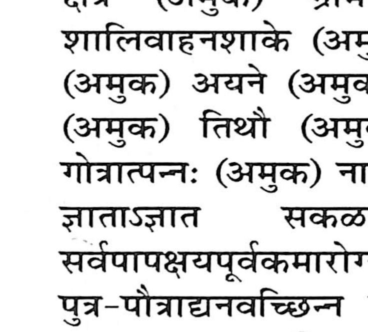

समूह आवासीय योजना के लिए भूमि का परीक्षण, शोधन करा लेना चाहिए और उन्नत-अवनत विचार व कोणों से बचने के लिए वर्गाकार या आयताकार भूखण्ड काटें।

निवाससिद्धये सग्रहमख-शालाकर्मपूर्वकं वास्तुशान्त्याख्यं कर्माऽहं करिष्ये। तथा च गणपतिपूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणं वह्निस्थापनं पूजनं च करिष्ये।

दिग्रक्षा-विधानम्

यज्ञकर्ता एक दोने में पीली सरसों अथवा चावल, द्रव्य और तीन ताग का कलावा, पीला रंगा हुआ कच्चा सूत लेकर बाँयें हाथ में रखे और दाहिने हाथ से ढँक दे और फिर नीचे लिखे मन्त्र को आचार्य बोले—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्।।
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्।।
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्र महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।।
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनीं चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनि नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्।।
वशिष्ठं मुनिशार्दूळं विश्वामित्रं च गोभिळम्।
व्यासं मुनि मनस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम्।।
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।।

नीचे लिखे मन्त्रों से दशों दिशाओं में पीली सरसों या चावल को छिड़कें—

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेयां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।

समूह आवासीय योजना में भवनों की साझी दीवार न रखें। उत्तर-पूर्व का भाग अधिक खुला व नीचा रखें।

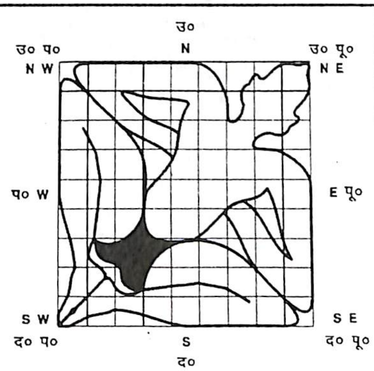

उत्तरे श्रीपतिः रक्षेत् ईशने तु महेश्वरः।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वोऽधोऽनन्तश्च रक्षतु।
एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।
यदत्र संस्थितं भूत स्थानमाश्रित्य सर्वदा।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः।।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तुः शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।

बाद में उक्त दोने को गणेश जी के निकट रख दे। उक्त कलावे को हवन करने के बाद आचार्य यज्ञकर्ता के दायें हाथ में तथा उसकी पत्नी के बायें हाथ में बाँध दे।

स्वस्तिवाचनम्

आचार्य यज्ञकर्ता के हाथ में अक्षत दे दे। पूजाकर्ता बायें हाथ पर अक्षत को रखकर दक्षिण हाथ से प्रत्येक शान्तिपाठ के अन्त में गणेश जी पर अक्षत छोड़े।

ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाऽस्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातृ।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वेनो देवा अवसागमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गस्तुष्टुवाꣳस सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो सन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

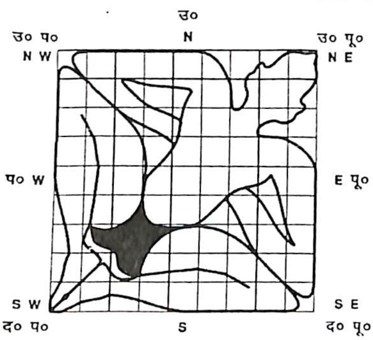

कालोनी में सड़कों का निर्माण उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम में ही करना चाहिए।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदिर्जनित्वम्।। दीर्घायु त्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजोत्वाय। सहसा अथो जीव शरदः शतम्।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। सुशान्तिर्भवतु।

किसी भी उपासना से पूर्व गणेश जी का स्मरण कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए आवश्यक है। इसलिए गणेश उपासना करें। आइये अब गणेश उपासना की चर्चा करें।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।। धूम्रके तुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

भाव यही है कि एक दन्त गजकर्णधारी लम्बोदर आप विघ्न हरने वाले हो। आपका नाम उच्चारण अनिष्टनाशक है।

(अब उपासना श्रद्धा सहित करें !)

ॐ गणपतये नमः।

आसनं समर्पयामि। (आसन दें।)

पाद्यं समर्पयामि। (पाद्य अर्पित करें।)

अर्घ्यं समर्पयामि (अर्घ्य समर्पित करें)

आचमनीयं समर्पयामि। (आचमन हेतु जल समर्पित करें।)

जल व्यवस्था हेतु ईशान कोण, ऊपरी टंकी हेतु वायव्य कोण व भूमिगत टंकी के लिए उत्तर-पूर्व क्षेत्र चुनना चाहिए।

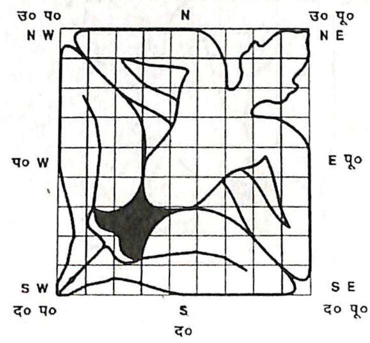

स्नानं समर्पयामि। (स्नान हेतु जल समर्पित करें।)
गन्धं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य से तिलक करें।)
धूपं-दीपं दर्शयामि। (धूप दीप अर्पण करें।)
नैवेद्यं समर्पयामि। (प्रसाद चढ़ाएँ।)
आचमनीयं समर्पयामि। (आचमन हेतु जल समर्पित करें।)
दक्षिणा समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ाएँ।)
नमस्करोमि। (नमस्कार करें।)

गणेश उपासना के बाद कलशस्थापनम् सम्बन्धी उपासना करें। अब कलश स्थपना की रीति बतायेंगे।

कलशस्थापनम्

चन्दनादि से अष्टदलकमल बनाकर, उस पर धान रख कर कलश स्थापन करें।

भूमि स्पर्श करें—

विश्वाधारासि धरणी शेषनागोपरि स्थिरता।
घृता चादिवराहेण सर्वकामफलप्रदा।।

कलश स्पर्श करें—

हेमरूपादि सम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम्।
कलशं धौतकल्माषं छिद्रवर्णविवर्जितम्।।

कलश में जल भरें—

जीवन सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकम्
बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम्।।

सूत्र लपेटें—

सूत्रं कार्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
येन बद्धं जगत्सर्वं वेष्टनं कलशस्य च।।

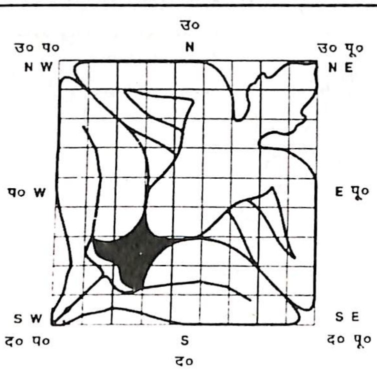

विद्युत व्यवस्था आग्नेय कोण में करनी चाहिए। आवासों में पूजा स्थल ईशान कोण व रसोई आग्नेय कोण में रखनी चाहिए। भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग ऊँचा रखें।

कलश औषधि औषधि सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तथा।
दूर्वासिर्पसंयुक्ता सर्वौषधयः पुनातृ माम्।।

कलश पुष्प—

विविधपुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्धनम्।
क्षिप्तं यत्कार्यसम्भूतं कलशे निक्षिपाम्यहम्।।

कलश पंच पल्लव—

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधपल्लवास्तथा।
पञ्च ते पल्लवाः प्रोक्ताः कलशे निक्षिपाम्यहम्।।

पंचरत्न—

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
एतानि पञ्चरत्नानि कलशे निक्षिपाम्यहम्।।

पूंगीफल—

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापशोधनम्।
पुत्रसौख्यादि-फलदं कलशे निक्षिपाम्यहम्।।

हिरण्यगर्भ—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

सप्तमृत्तिका—

अश्वस्थानादूगजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ह्रदात्।
राजद्वाराच्च गोगोष्ठाद् मृदमानीय निक्षिपेत्।।

पूर्णपात्र—

विधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम्।
पूर्णस्तु कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि।।

नारियल में लाल वस्त्र लपेट कर पूर्णपात्र पर रखें।

समूह आवास योजना में भूखण्डों के मध्य में रखे जाने वाले मार्ग की चौड़ाई भवनों की औसत ऊँचाई की दूनी होनी चाहिए।

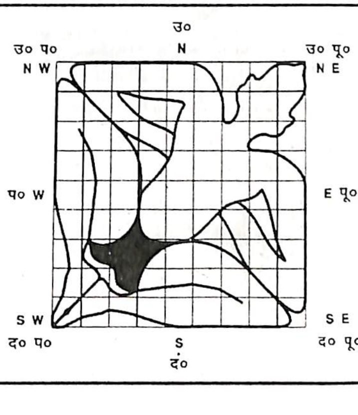

श्रीफल—

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाणा सर्वलोकम्म इषाण।।

वरुण आवाहन—

अस्मिन् कलशे वरुणंसाङ्गंसपरिवारंसायुधंसशक्तिकमावाहयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

देवावाहन—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
कलशस्य मुख विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकारी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

यज्ञकर्ता को चाहिए कि कलशाधिष्ठित आवाहित देवताओं को पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजा करे।

प्रार्थना—

देवदानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिरताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।

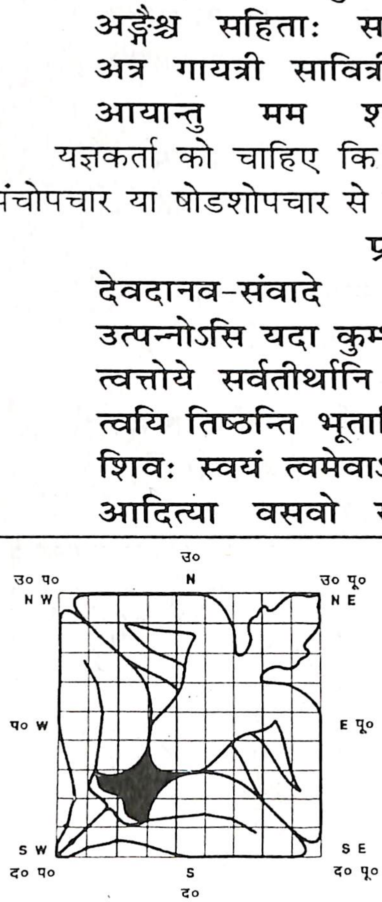

बहुमन्जिला भवन बनाना हो तो उसका उत्तर-पूर्व का ढलान नीचा और दक्षिण-पश्चिम भाग उन्नत होना चाहिए।

त्वयि विष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

प्रसन्नो भव। वरदोभव। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

इति कलशस्थापनम्।

नवग्रहस्थापनम्

श्वेतवस्त्र बिछाकर उस पर नव-कोष्ठ बनायें। मध्य में सूर्य की पूजा करे, सूर्य से दक्षिण भाग में मंगल (सूर्य व मंगल लाल), अग्नि कोण में चन्द्रमा (श्वेत), ईशान कोण में बुध (हरा), उत्तर में गुरु (पीला), पूर्व में शुक्र (श्वेत), सूर्य से पच्छिम में शनि (काला), नैर्ऋत्य कोण में राहु (काला), वायव्य कोण में केतु (काला), ग्रह के अनुसार वेदी का निर्माण करें। ग्रह देव के अनुसार ध्वजा दे। नीचे लिखे मन्त्र द्वारा स्थापन व पूजन करें।

संकल्प—

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अद्य वास्तुशान्त्याख्ये कर्माणि आदित्यादि ग्रहाणां सपरिवाराणां स्थापनप्रतिष्ठां पूजनं च करिष्ये।

(मध्य में सूर्य) कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र सूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः। (अग्निकोण में) यमुनातीरदेशोद्भव आत्रेयगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। सोमाय नमः (दक्षिण में) अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ। भौमाय नमः। (ईशान कोण में) मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह

प्रथम तल के आवासों से ऊपरी मन्जिलों के आवासों की ऊँचाई कम रखें। सभी मन्जिलों को ऊँचा-नीचा नहीं कर सकते। अतः सबसे ऊपरी तल को थोड़ा नीचा रखना चाहिए।

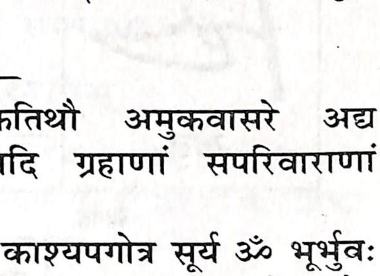

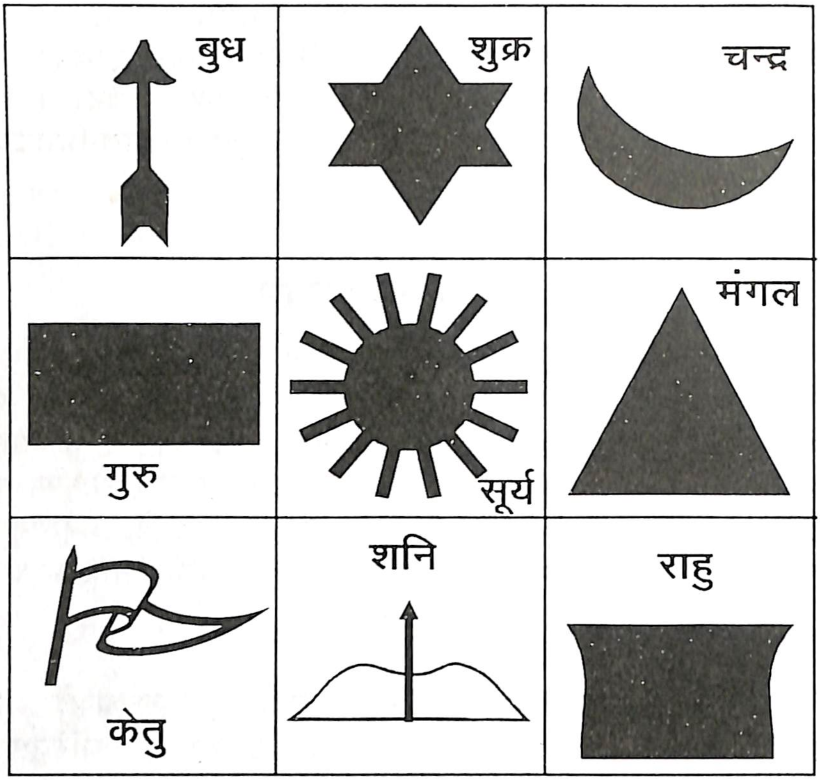

	ईशान	पूर्व	आग्नेय	
	बुध	शुक्र	चन्द्र	
उत्तर	गुरु	सूर्य	मंगल	दक्षिण
	केतु	शनि	राहु	
	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	

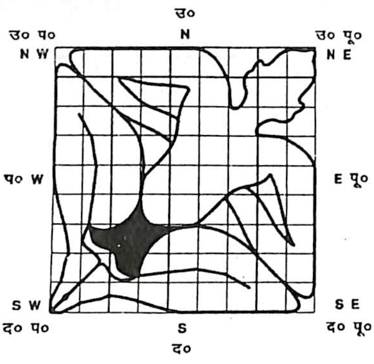

बहुमन्जिला भवन इस प्रकार बनाएँ जिससे सूर्य प्रकाश व वायु प्रवेश अवरुद्ध न हो। सामान्य घर की तरह ही सभी वास्तु सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए।

तिष्ठ। बुधाय नमः। (उत्तर में) सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरस गोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ, बृहस्पतये नमः। (शुक्र पूरब में) भोजकटदेशोद्भव ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ, शुक्राय नमः। (शनि, पश्चिम में) राष्ट्रदेगोद्भव काश्पगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इह तिष्ठ, शनैश्चराय नमः। (राहु, नैर्ऋत्यकोण में) राठिनदेशोद्भव पैठिनसगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ, राहवे नमः। (वायव्य कोण में) अन्तर्वेदिदेशोद्भव जैमिनिगोत्र ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ, केतवे नमः।

पञ्चोपचार से नवग्रहों की पूजा करने के पश्चात् प्रार्थना करें—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रि पुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

अनया पूजया सूर्यादि-नवग्रहाः प्रीयन्तां न मम—यह कहकर अक्षत छोड़ें।

इति नवग्रहस्थापन समाप्तम्।

दशदिक्पालपूजनम्

जहाँ वेदी बनी हो, वहाँ वेदी पर ही कलश स्थापन करके पूर्ण पात्र के ऊपर दिग्पालों की पूजा करें। वेदी न बनी हो तो कलश के अग्रभाग में आम्राल्लव पर नीचे लिखे मन्त्र से पूजा करे।

ॐ लं इन्द्राय सपरिवाराय नमः। ॐ वां वह्ने सपरिवाराय नमः।

ॐ यं यमाय सपरिवाराय नमः। ॐ नै नैर्ऋत्याय सपरिवाराय नमः।

ॐ वं वरुणाय सपरिवाराय नमः। ॐ वां वायवे सपरिवाराय नमः।

ॐ कुबेराय सपरिवाराय नमः। ॐ ऐशानाय सपरिवाराय नमः।

ॐ बं ब्रह्मणे सपरिवाराय नमः। ॐ अं अनन्ताय सपरिवाराय नमः।

किसी भी व्यावसायिक केन्द्र को बनाते समय भूमि चयन से निर्माण तक के सभी कार्यों में वास्तु नियमों को भली-भांति अपनाना चाहिए। यदि भूमि में वास्तुदोष हो तो दूर करके निर्माण करें।

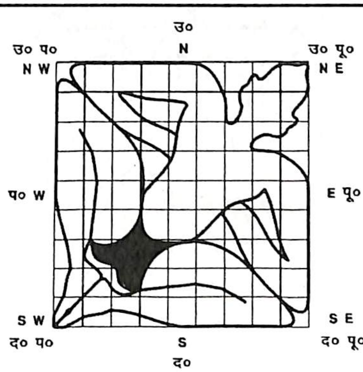

पञ्चोपचार या दशोपचार से पूजा करें। नीचे लिखे वाक्य का उच्चारण करके पुष्प और अक्षत छोड़ें।

अनया पूजया दशदिग्पालदेवताः प्रीयन्ताम्। प्रसन्ना वरदा भवन्तु कल्याणमस्तु।

इति दशदिक्पालपूजनम्।

गौर्यादि-मातृका-पूजनम्

यज्ञकर्त्ता को चाहिए कि गौर्यादि मातृका वेदी पर रक्त वस्त्र बिछाकर (16) सोलह कोष्ठ बनाये। यज्ञकर्त्ता हाथ में अक्षत, पुष्प और पुंगीफल लेकर प्रत्येक मन्त्र द्वारा वेदी के कोष्ठ में रखे।

गौरी — **हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।**
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

पद्मा — **पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभां परिस्थिताम्।**
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

शची — **दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुक्लकुण्डलधारिणीम्।**
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

मेधा — **मेधां विष्णुप्रियां नित्यं जगन्मोहनकारिणीम्।**
मम यज्ञे महाभागां मेधामावाहयाम्यहम्।।

सावित्री — **जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।**
देवगर्भामृतुमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

विजया — **सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।**
सर्वदेवनुतां ध्यातां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

जया — **सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।**
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाभ्यहम्।।

देवसेना — **मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।**

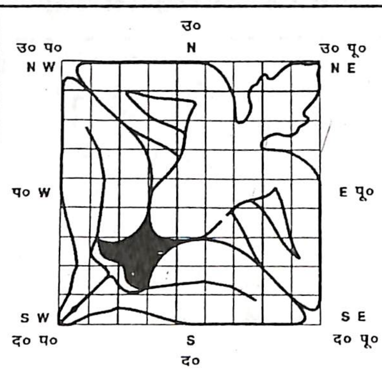

व्यावसायिक केन्द्र के लिए उत्तर-पूर्व क्षेत्र में बढ़ा भूखण्ड, शेरमुख भूखण्ड या ऐसा भूखण्ड जिसके चारों दिशाओं में मार्ग हो उत्तम है। उत्तराभिमुख भूखण्ड लाभदायी होते हैं।

आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्।।

स्वधा कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति।
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

स्वाहा हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।।

मातृ आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजितः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषिताः।।

लोकमातृ आवाहयेल्लोकमातॄर्जयन्तीः प्रमुखाः शुभाः।
नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः।।

धृति सर्वहर्षकारीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

पुष्टि पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवाव्ययम्।
बहुपुष्टिकरीं देवीं पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

तुष्टि आवाहयामि सन्तुष्टिं सूक्ष्मवस्त्रान्वितां शुभाम्।
सन्तोषो भविता चाऽत्र रक्षणायाऽध्वरे शुभे।।

कुलदेवी आत्मनो देवतां देवीमैश्वर्यसुखदायिनीम्।
वंशवृद्धिकरीं नित्यां धनदेवीं कुलाम्बिकाम्।।

ऊपर लिखे मन्त्रों द्वारा गौर्यादि मातृका का आवाह्न, स्थापन तथा षोडशोपचार या दशोपचार से पूजा करके प्रार्थना करें—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
पूजां गृहाण सुमुखि ! प्रसन्ना भव सर्वदा।।

इति गौर्यादिमातृकापूजनम्।

दुकानों में ईशान कोण में पूजा स्थल, अलमारी या फर्नीचर दुकान के दक्षिण-पश्चिम भाग में और स्वामी दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर बैठे। बिजली का मीटर आग्नेय कोण में रखें।

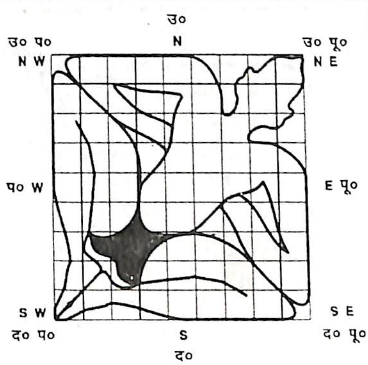

घृतमातृकापूजनम्

घृतमातृका वेदी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर पीढ़े पर रखें। उस पर घी तथा सिन्दूर से सात रेखा करे। रेखालम्ब आवृत्ति के प्रत्येक रेखा पर नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा आवाहन, स्थापन तथा पूजन करे।

श्री सुवर्ण पद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम्।
त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम्।।

लक्ष्मी शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसम्भवाम्।
चन्द्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।।

घृति संसारधारणपरां धैर्यलक्षणसंयुताम्।
सर्वसिद्धिकरीं देवीं घृतिमावाहयाम्यहम्।।

मेधा सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम्।
मम कार्ये शुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम्।।

पुष्टि सोमरूपां सुवर्णाभां विद्युज्जवलितकुण्डलाम्।
जननीं पुष्टिकरिणीं पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

श्रद्धा भूतग्रासमिदं सर्वमजेन श्रद्धया कृतम्।
श्रद्धया प्राप्यते सत्यं श्रद्धामावाहयाम्यहम्।।

सरस्वती प्रणवस्यैव जननीं रसनाग्रस्थितां सदा।
प्रगल्भदात्रीं चपलां वाणीमावाहयाम्यहम्।।

प्रार्थना—

श्रीश्च लक्ष्मीर्घृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

इति घृतमातृकापूजनम्।

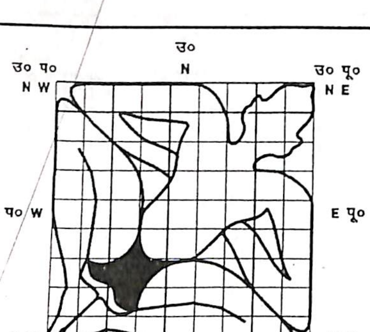

दुकान में दुछत्ती दक्षिण-पश्चिम व पीने के पानी की व्यवस्था उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम में रखें।

अन्य देव पूजन

निम्न देवों का भी एक स्थान पर आवाह्न पूजन करे। पहले की भाँति हर पूजनोपचार में 'ॐ भूर्भुवस्वः' लगा लें—

ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, शिवाय नमः दुर्गायै नमः, कीर्त्यादि सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः, ब्राह्मी आदि स्थल मातृकाभ्यो नमः, ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डल देवताभ्यो नमः, असिताङ्ग भैरवादि लिङ्गतोभद्र देवताभ्यो नमः, ईश्वरादि अधि देवताभ्यो नमः, अग्न्यादि प्रत्यधि देवताभ्यो नमः, पंच ओंकाराय नमः, गणपत्यादि पंच लोकपालेभ्यो नमः, इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यो नमः, गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः, गजाननादि चतुः षष्ठि योगिनीभ्यो नमः, अर्कादि सप्तवासदेभ्यो नमः, प्रतिपदादि पञ्चदश तिथिभ्यो नमः, अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रेभ्यो नमः, मेषादि द्वादशराशिभ्यो नमः, विष्णुयादि सप्तविंशति योगेभ्यो नमः, बवादि एकादश करणेभ्यो नमः, गंगायै नमः यमुनायै नमः, सरस्वस्त्यै नमः, सप्त समुद्रेभ्यो नमः, सप्त पितृभ्यो नमः, विश्वेभ्यो नमः, ग्राम देवेभ्यो नमः, इष्ट देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। भो देवताः सायुधाः सपरिवाराः सवाहनाः इहागच्छत।

पुनः पूजन कर पुष्पाञ्जलि से प्रार्थना करें—

अनेन पूजनेन भो देवास्सुप्रीता वरदा भवन्तु।

इसके बाद बाहर मुख्य द्वार के कलश, केले का खम्भा, वन्दनवार तथा मुख्य द्वार की पूजा गन्ध, पुष्पादि पञ्चोपचार से करनी चाहिए और इसके बाद नल पूजन करना चाहिए।

होटल या रेस्तरों में भोजन पाकशाला, ठहरने का स्थान और भोजनकक्ष महत्त्वपूर्ण होता है। इनको वास्तुनियमों के अनुसार क्रमशः आग्नेय, उत्तर और पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए।

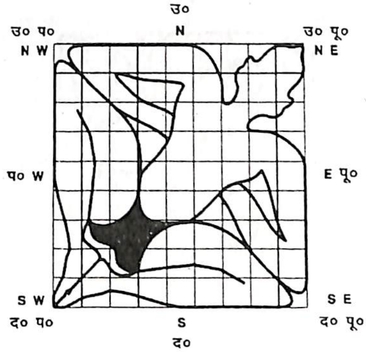

नल पूजन

आवाह्न—नीचे के मन्त्र से वरुण देव का आवाह्न करे—

ॐ आथाहि भगवन् देव ! तोयमूर्ते जलेश्वर।
शंखकुन्देन्दुवर्णाभ ! मकरध्वज पाशधृक्।।

अब गन्ध, अक्षतादि से 'ॐ वरुणाय नमः' इस वाक्य से वरुण की भावना कर पञ्चोपचार से नल की पूजा करें। पुनः निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ यज्ञेऽस्मिन् सरितां नाथ ! सर्वपाप प्रणाशन ! मयास्मिन् स्थिरते कले सान्निध्यमुपकल्पय।। सहिताः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।

प्रार्थना

ॐ भगवान् देवदेवेशत्व पिता सर्वदेहिवाम्।
यज्ञरूपेण भगवांस्त्वया त्याप्तं चराचरम्।।
जानताजानतावापि शास्त्रोक्तं न कृतं हिमत्।
तच्च सम्पूर्णामेवास्तु प्रसन्नो भव सर्वदा।।
इष्टान् कामान् प्रयच्छ त्वं दुर्भाग्यं च विनाशाय।
पुत्रपौत्रादि वृद्धि च सततं कुरु देव नः।।
यावच्चन्द्रो नगाः सूयस्तिष्ठन्ति प्रतिपादित।
तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्तयानुकम्पया।।
मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमि कीटनिपाततम्।
हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्।।
अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिदृक्षस्य पातनम्।
एतत्सर्वं क्षमस्वैनो यन्मया दृष्कृतं कृतम्।।
गृहार्थं यत्कृतं पापमज्ञानेनाथ चेतसा।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव गृहशालां शुभां कुरु।।

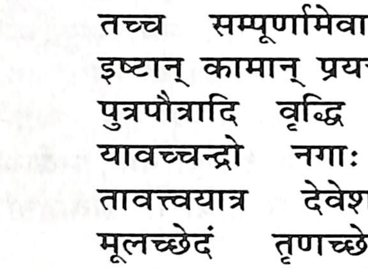

होटल की बालकनी उत्तर या पूर्व दिशा में रखनी चाहिए। स्टोर दक्षिण-पश्चिम और शौचालय व स्नानगृह पश्चिम दिशा में बनाएँ।

वास्तु पुरुष पूजन

हाथ में चावल लेकर वास्तु देवों का नाम लेकर यथा स्थान छोड़े। 'ॐ भूर्भुवः स्वः' सभी के आगे लगाते जायें।

शिखिने नमः, पर्जन्याय नमः, जयन्ताय नमः, इन्द्राय नमः, सूर्याय नमः, सत्याय नमः, भृशाय नमः, आकाशाय नमः, अग्नेय नमः, पूष्णे नमः, वितथाय नमः, वृहक्षताय नमः, यमाय नमः, गन्धर्वाय नमः, भृङ्गराजाय नमः, मृगाय नमः, पितृभ्यो नमः, दौवारिकाय नमः, सुग्रीवाय नमः, पुष्पदन्ताय नमः, वरुणाय नमः, असुराय नमः, शोषनाग नमः, पाप यक्ष्मणे नमः, रोगाय नमः, नागाय नमः, मुख्याय नमः, भल्लाटाय नमः, सोमाय नमः, भुजगाय नमः, अदितये नमः, दितये नमः, अद्भ्यो नमः, आपवत्साय नमः, अर्यम्णे नमः, सवित्रे नमः, सवित्राय नमः, विवस्वते नमः, इन्द्राय नमः, जयाय नमः, मित्राय नमः, रुद्राय नमः, रुद्रदासाय नमः, पृथ्वीधराय नमः।

(मण्डल के मध्य में) ब्रह्मणे नमः।

(मण्डल के बाहर ईशान कोण में) चरवयै नमः।

(मण्डल के आग्नेय कोण में) विदार्य्यै नमः।

(मण्डल के नैर्ऋत्य कोण में) पूतनायै नमः।

(मण्डल के वायव्य कोण में) पापराक्षस्यै नमः।

(मण्डल के बाहर पूर्व में) स्कन्दाय नमः।

(मण्डल के बाहर दक्षिण में) अर्य्यरणे नमः।

(मण्डल के बाहर पश्चिम में) जृम्भकाय नमः।

(मण्डल के बाहर उत्तर में) पिच्छिलाय नमः।

पुनः नीचे का मन्त्र पढ़कर सभी स्थानों (पुरुषाकार चक्र) पर चावल छोड़ें—

होटल का उत्तर-पूर्व क्षेत्र खाली व नीचा रखें। मुख्यद्वार उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में रखें।

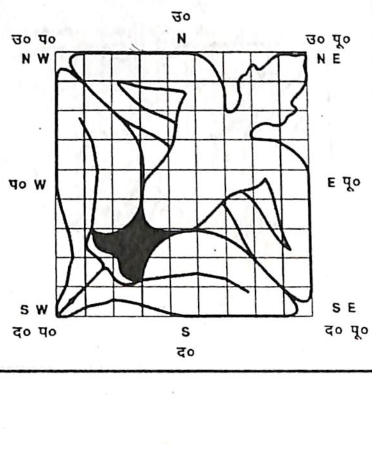

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवान।
यत्वेमहे प्रतितन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदेश्ञ्चतुष्पदे।।
ॐ आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित।
भगवन् कुरु कल्याणं गृहेऽस्मिन्सन्निधी भव।।

अब षोडशोपचार से पूजन करे। 'ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुषाय नमः' कहकर चन्दन, पुष्पादि समर्पण करे।

ॐ वास्तोष्पतिम्महादेवं सर्वसिद्धि विधायकम्।
शान्तिकर्तारमीशानं तं वास्तु प्रणतोऽस्म्यहम्।।

अब शालिग्राम, विष्णु भगवान् या सत्यनारायण भगवान् का पूजन कथादि कर हवन करे।

हवन विधि

वेदी बनाकर उस पर गङ्गा जल छिड़कें और अग्नि की स्थापना करें—

ॐ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरभिद्यते।
आगच्छ भगवन्नग्ने यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

फिर अग्नि का पूजन कर काष्ठ सजाकर लगा दें। ब्राह्मण को 'ॐ गन्ध द्वारा' मन्त्र से तिलक कर वरण करें—

एमिः वरण द्रव्यै, अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणत्वेन तथा च जाचार्यत्वेन त्वाम् अहम् वृणे।

ब्राह्मण **'वृतोऽस्मि'** कहे। अब आहुति छोड़े। परन्तु ये प्रारम्भ की 12 आहुतियाँ केवल घी की होनी चाहिए। श्रुवा के अवशिष्ट घी को प्रणीता पात्र में छोड़ें—

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इद इन्द्राय न मम।।

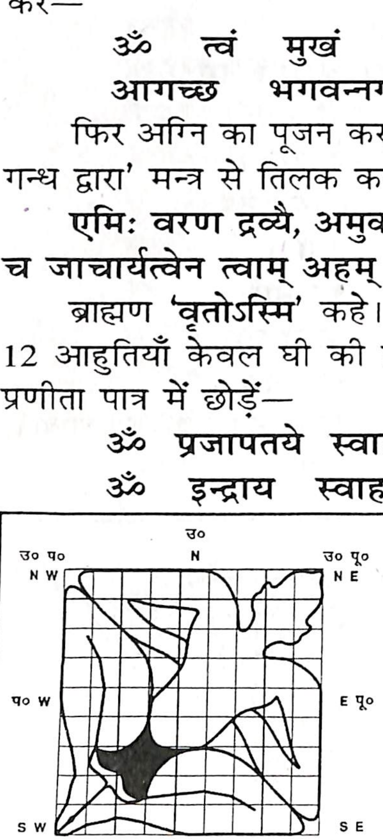

होटल में रिशेप्सन उत्तर-पूर्व दिशा में बनाएँ। कैश भी उत्तर में रखे व प्रबन्धक का कमरा भी वायव्य कोण में बनाएँ।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।।
ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम्।।
ॐ भुवः स्वाहा। इदम् वायवे न मम।।
ॐ स्वः स्वाहा। इदम् सूर्याय न मम।।

उदक स्पर्श—यहाँ कर्म कर्त्ता जल छुए अथवा आचार्य कुश से प्रणीता पात्र के जल को निम्न मन्त्र से कर्मकर्त्ता पर छोड़े—

यथा बाण प्रहाराणां कवचं भवति वारणाम्।
तद्वद्दैवोपघातानाम् शान्तिर्भवति वारिका।।

अब पुनः पञ्चवारुणी होम करे—

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणास्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ स त्वन्नोऽअग्ने वमोभवोतीने दिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणभ्यां न मम।।

ॐ अयाश्चाम्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वकया असि। अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा।। इदमग्नये अयसे न मम।।

ॐ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।

ॐ तदुत्तमं वरुणापाशमस्मदबाधमं विमध्यम् श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते वतानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाय न मम।। इति पञ्चवारुणी होमः।।

सिनेमा हॉल का प्रबन्धक उत्तर दिशा में अपना कक्ष बनाए और पूर्वाभिमुख होकर बैठे। सिनेमाहॉल की टिकट खिड़की उत्तर या उत्तर-पूर्व में रखें। कैश बाक्स उत्तर दिशा में अपने दायें हाथ में रखें।

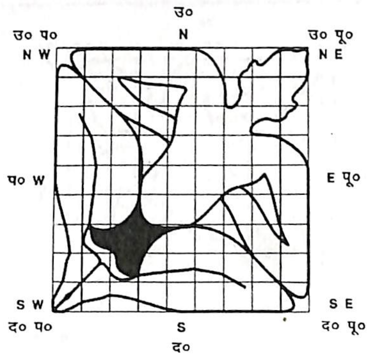

यहाँ 'उदक-स्पर्श' पहिले की भाँति कर एक आहुति और दें—

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

अब चरु का होम प्रारम्भ करे—

ॐ श्योना पृथिवी नो भावन्नृरक्षा निवेशनी। यच्छ न शर्म्म स प्रथाः। स्वाहा, इदं पृथिब्यै मम।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधिनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्ब्भधमात्वम् जासि गर्ब्भधम्।। स्वाहा।। इदं गणेशाय न मम।।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णान्निषाण मुम्मम इषाण सर्वलोकम्मइषाण।। स्वाहा। इदं गौर्यै न मम।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मण वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हर्विभिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरूश ँ समान आयुः प्रमोषीः। स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।

नवग्रह के हवन के मन्त्र वही है, जिन मन्त्रों से आवाहन किया गया था। जैसे 'ॐ अकृष्णेन' से 'पश्यन्' तक मन्त्र बोलकर स्वाहा। इदं सूर्याय न मम। यह कहना चाहिये। इसी प्रकार सब का समझें। इसके बाद 'अन्य देव पूजन' के तथा 'वास्तु-पुरुष' के सभी देवताओं के नाम से आहुति देना चाहिये।

अब निम्न मन्त्र से 108 आहुति वास्तु पुरुष को देना चाहिये—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशी अनभीतो भवातः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदेशञ्चतुष्पदे स्वाहा।।

इसी प्रकार यदि सत्यनारायण भगवान् का पूजन कथा हुआ है, तो 'ॐ सत्यनारायण स्वाहा' कहकर 108 आहुति देकर उदक स्पर्श करें।

स्विष्टकृत होम मन्त्र

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये न मम।।

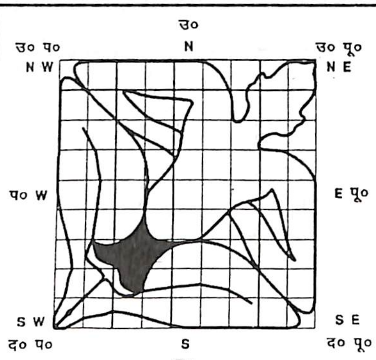

सिनेमाहॉल में पानी की व्यवस्था ईशान कोण में और पार्किंग व साईकिल स्टैण्ड उत्तर-पूर्व क्षेत्र में रखें। सिनेमाहॉल के लिए भूखण्ड आयताकार या वर्गाकार होना चाहिए। उत्तर-पूर्व कोण बढ़ा हो तो भी श्रेष्ठ है।

पूर्णाहुति

फल, पुष्प, ताम्बूल सहित घी सहित अथवा सूखे नारियल में घी भरकर व कलावा लपेटकर उसके ऊपर पुआदि रखकर अथवा एक पान के पत्ते पर एक बताशा और सुपारी रखकर शेष सामग्री से पूर्णाहुति करें—

ॐ मूर्द्धानन्दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्नि।
कवि ॐ सम्राजमतिथि जनानामासन्ना पात्र जनयन्तदेवाः स्वाहा।।

वसोर्धारा—

ॐ वसोः पवित्र मशीशतधारं वसोः पवित्रं सहस्त्रं धारं देवस्त्वा सविता पुनातु सवोः पवित्रे शतधारेण सुधा कमाधुक्षः।।

भस्म धारण—

श्रुवा में हवन का राख लगाकर अनामिका से ललाट में, गले में, बाहु में और हृदय में लगाना चाहिये।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति बाहुमूले।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

प्रार्थना

ॐ भगवन् देव देवेशत्व पिता सर्वदेहिनाम्।
यज्ञरूपेण भगवांस्त्वया व्याप्तं चराचरम्।।
जानताजानतावापि शास्त्रोक्तं न कृतं हिमत्।
तच्च सम्पूर्णमेवास्तु प्रसन्नो भव सर्वदा।।
इष्टान् कामान् प्रयच्छ त्वं दुर्भाग्यं च विनाशाय।
पुत्र पौत्रादिवृद्धि च सततं कुरु देव नः।।
यावच्चन्द्रो नगाः सूर्यस्तिष्ठन्ति प्रतिपादितः।
तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्तचानुकम्पया।।

बिजली के मेन स्विच, जैनरेटर आदि आग्नेय कोण में रखें और जीने का प्रवेश दक्षिण या पश्चिम से रखें।

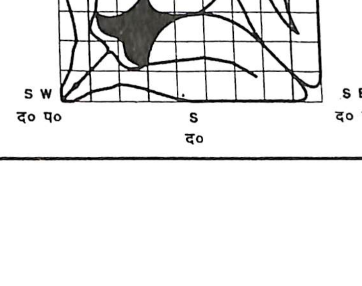

मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमि कीटनिपातनम्।
हननं जल जीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्।।
अनृतं भाषितं यच्च किञ्चदूवृिक्षस्य पातनम्।
एतत्सर्वं क्षमस्वैनो यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।
गृहार्थं यत्कृतं पापमज्ञानेनाथ चेतसा।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव गृहशाला शुभां कुरु।।

साष्टांग नमस्कार करें—

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहश्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटि युग धारिणे नमः।।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणायाम् पदे पदे।।

अभिषेक (अभिसिंचन)

ॐ द्यौः शान्तिरन्त रिक्ष ँ शान्ति पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधिः।।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

गोदान दक्षिणा संकल्प

कृतस्य अमुकमख कर्मणः साङ्गतासिद्धचर्थं इदम् गोमूल्योप कल्पितं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्रह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

आचार्य दक्षिणा संकल्प

ॐ अद्य कृतैतद् गृहप्रवेश पूजन कर्म प्रतिष्ठार्थमेतावद् द्रव्य मूल्यक हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहम्ददे।

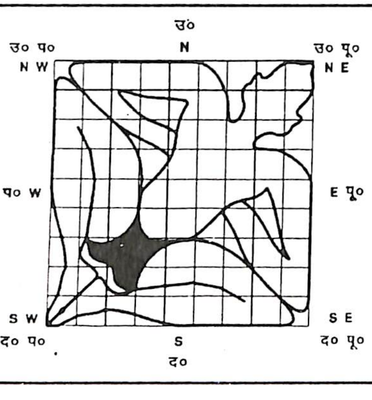

सिनेमाहॉल में पर्दा दक्षिण दिशा में और प्रोजेक्टर उत्तर दिशा में रख सकते हैं। कैन्टीन दक्षिण-पूर्व में और शौचालय व मूत्रालय पश्चिम या दक्षिण क्षेत्र में रखें।

भूयसी तथा ब्राह्मण भोजन संकल्प

अस्य होमकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं भूयसीं दक्षिणाम् ब्राह्मण भोजनं दातुमहमुत्सृजे।

विसर्जन

यान्तुदेव गणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम्समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरः।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशनः।।

पूजा जपादि समाप्त होने के बाद आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को ललाट और आँखों में लगायें—

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने।।

(उपरोक्त क्रिया न करने से जप-पूजादि के फल को इन्द्र ले लेता है)

आचार्य यजमान को तिलक करे—

आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवा मरुद्गणः।
तिलकन्तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

रक्षा बाँधे—

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रोमहाबला।
तेनत्वाम् प्रतिबध्नामि रक्षे माचलमाचलः।।

नारियल या फल गोद में दें—

ॐ मन्त्रार्था सफला सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणाम् बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणमुदयस्तव।।

आशीर्वाद—

स्वस्तिस्तु विनाशाख्या पुण्यकल्याण वृद्धिदा।
विनायक प्रिया नित्यं त्वां च स्वस्ति ब्रुवन्ति नः।।

औद्योगिक प्रतिष्ठान में उत्तर-पूर्व भाग दक्षिण-पश्चिम भाग की अपेक्षा नीचा रहे। कच्चा माल दक्षिण-पश्चिम दिशा में और तैयार माल उत्तर-पूर्व में होना चाहिए।

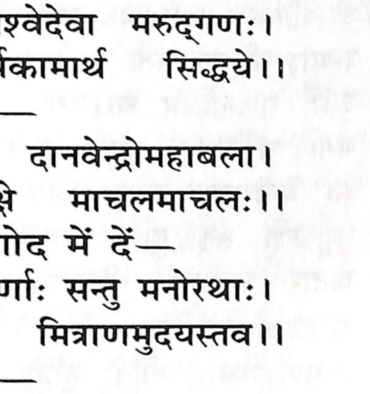

अन्त में इस मन्त्र को पढ़े—

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्वा च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यून सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
ॐ विष्णवे नमः ! ॐ विष्णवे नमः !! ॐ विष्णवे नमः !!!

अभिषेक

गणधिपो भानु शशी धरा सुतो, बुधे, गुरूर्भार्गव सूर्य नन्दनौ।
राहुश्च केतुर्प्रभुतिर्नवग्रहाः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।।
उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो, धर्मो यमो वायुहरिश्चतुर्भुजः।
गन्धर्व यक्षोरग सिद्ध चारणः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।।
नलो दधीचि, सगरः पुरूरवाः, सकौन्तलेयो भरतो धनञ्जयः।
राम त्रयं वेणु बलिर्युधिष्ठिरः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा।।
मनुर्मरीचिर्भृगु दक्ष नारदाः, पराशरो व्यास वशिष्ठ भार्गवाः।
वाल्मीकि कुम्भोद्भव गर्ग गौतमाः, कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा।।
रम्भाशची सत्यवती च देवकी, गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी।
कूर्मो गजेन्द्रोऽपि चराचरा धराः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा।।
गंगा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती, गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा।
सा चन्द्रभागा वरुण असी नदी, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथ सदा।।
तुङ्गश्रवा तद् गुरु चक्रपुष्करम्, गयाभिमुक्तो बदरी बटेश्वरः।
केदार पम्पासर नैमिषारकम्, कुर्वनतु वः पूर्ण मनोरथं सदा।।
शंखश्च दूर्वासित पत्र चामरम्, मणिप्रदीपोवर रत्नकांचनः।
सम्पूर्णकुम्भः सहितो हुताशनः, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा।।
प्रयाण काले यदि व सुमङ्गले, प्रभातकाले च नृपाभिषेचने।
व्यासेन सम्पूर्ण मनोरथाष्टकम्, कुर्वन्तु वः पूर्ण मनोरथं सदा।।

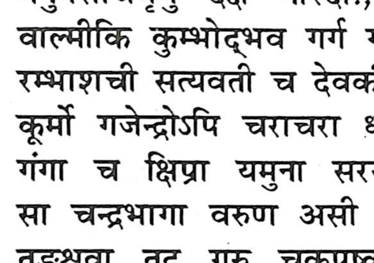

औद्योगिक प्रतिष्ठान में प्रशासकीय कार्यालय उत्तर-पूर्व में तथा पार्किंग उत्तर-पश्चिम में होनी चाहिए। सिक्योरिटी आफिस उत्तर दिशा में मुख्य मार्ग के उत्तर-पश्चिम कोण में हो।

कुलदेवता स्थापन विधिः

यज्ञकर्त्ता सायंकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर स्त्री सहित पूर्व देवता के स्थान पर जाकर आचार्य के आदेशानुसार बैठे। आचार्य को चाहिए कि वास्तु शान्ति पद्धति के अन्तर्गत गणेश पूजन द्वारा ही पूजा करे, कलश स्थापन के बाद पूर्ण पात्र के ऊपर कुल देवता के निमित्त पूंगीफल, द्रव्य रक्खे। अपने सामने कुल देवता का कलश रक्खे और स्त्री के सामने कुल देवियों का कलश रक्खे तथा षोडशोपचार से पूजा करे। पुनः दूसरे दिन स्थापन के समय उक्त कलश को अपने तथा स्त्री दोनों कलशों को लेकर गीत, वाद्यादि के सहित कुलदेव का स्थापन घर में ले जाकर करे। यज्ञकर्त्ता पवित्री धारण कर आचमन करे। आचार्य स्वस्ति वाचन कर संकल्प करे।

संकल्प—ॐ अद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्य सपरिवारस्य मम अमुकशर्मण उपस्थितशरीराविरोधेन सकलञ्चितदुरितसमूलक्षयपूर्वक वनजनपूर्णत्वामत्याभ्युदय कल्याणचतुर्वर्गसुखप्राप्तिकामनया अमुकाऽमुककुलदेवतास्थापनमहं करिष्ये।

आचार्य को चाहिये कि कुल परम्परा के अनुसार देवताओं का स्थापन करे। घी, सिन्दूर आदि से बिन्दु व लम्बे वृत्ताकार चिह्नाङ्कित करे तथा षोडशोपचार से पूजा करे। गणेश, पूजन में षोडशोपचार लिखा गया है। उसे देखकर ही करे। जहाँ परमेश्वर लिखा है वहाँ शाक्ति, देवियों की पूजा में 'परमेश्वरि' कहे। पूजनोपरान्त नीचे लिखी प्रार्थना करे।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूण तदस्तु मे।।

यज्ञकर्त्ता हाथ में कुशा, जल, पूंगीफल लेकर संकल्प द्वारा ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

औद्योगिक प्रतिष्ठान में पावर हाऊस, जैनरेटर, अग्नि संबंधी कार्य आग्नेय कोण या दक्षिण या पूर्व में रखने चाहिएं। पानी का समस्त प्रबन्ध ईशान कोण में करें।

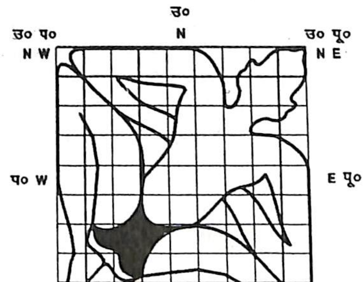

संकल्प—ॐ अद्य कृतस्य कुलदेवता स्थापनप्रतिष्ठार्थं यावद्द्रव्यमूलकहिरण्यमग्निदैवातं यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणाम् दातुमहमुत्सृजे।

हनुमत्पूजनं ध्वजास्थापनं च

यज्ञकर्त्ता को चाहिये कि वास्तु शान्ति (गृह प्रवेश) के दिन ही वायव्य कोण में एक छोटी सी महावीर जी की प्रतिमा स्थापित करे। कहीं-कहीं पर वायव्य कोण स्थित दीवार में घी, सिन्दूर मिलाकर हनुमान जी को चित्राङ्कित करते हैं। उक्त स्थान पर ही ध्वाजारोपण करते हैं। ध्वजा का निश्चय काल यह है—

कुजवारे नवम्यां वा अन्यस्यां शुभदातिथौ।
श्रद्धया चोत्तरे काले ध्वजादानादिनी शुभम्।।

रामनवमी, बसन्त पञ्चमी, कार्तिक चतुर्दशी, चैत्र चतुर्दशी, भौम वार तथा अन्य शुभ कार्यों में ध्वजा-स्थापन करना चाहिये। ध्वजा नीचे लिखे अनुसार काम में लानी चाहिये।

सरलच्छिद्ररहितो निर्वर्णो मूलसंयुतः।
दशहस्ताधिको ग्राह्यो वांसस्तु ध्वजहेतवे।।

बाँस सड़ा गला न होना चाहिये। जिसमें छिद्र न हो, मूल सहित हो, दस हाथ से अधिक हो। ध्वजा बाँस का ही होना श्रुति सम्मत है। यज्ञकर्त्ता पूजा स्थान में आसन पर बैठे। आचार्य यजमान को चन्दन लगा दे, आम्र पल्लव से मस्तक पर जल छींटे। शान्ति दीप प्रज्वलित कर अक्षत पर स्थापित करे। यह सब मन्त्र वास्तु शान्ति पूजा प्रकरण के अनुसार ही करे। प्रथम यज्ञकर्त्ता का कर्त्तव्य है कि हाथ में पुष्प, द्रव्य, अक्षत, पूंगीफल, कुशा लेकर संकल्प करे।

संकल्प—ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य सपरिवारस्य मम श्री अमुकशर्मण उपस्थितशरीररराविरोधेन सकलदोषनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुष्य

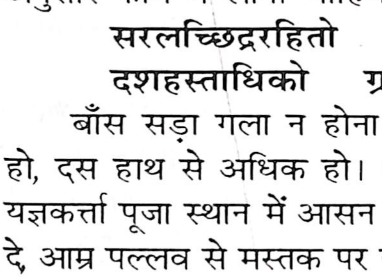

फैक्ट्री का स्टोर दक्षिण-पश्चिम में और जल का ओवर हैड टैंक वायव्य कोण में होना चाहिए। भारी मशीनरी दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखें। कर्मचारियों की कालोनी उत्तर-पश्चिम दिशा में बनाएँ।

पुष्टिनैरुज्यधनपरिजनसुखसौमनभीष्टसिद्धिकामनया हनुमत्पूजनं तथा हनुमद्ध्वजास्थापनमहं करिष्ये।

ध्यान—

अतुलित-बलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगणयम्।
सकलगुणनिधानं वानराणमधीशं रघुपतिप्रिय भक्तं वातजातं नमामि।।

पाद्य, अर्ध्य, आचमन, स्नानादि गणपति पूजन मन्त्र द्वारा ही करे। चन्दन में रक्त चन्दन ही काम में लाये तथा रक्त पुष्प भी होना चाहिये। नैवेद्य में लड्डू रक्खें। हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर प्रार्थना करे।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि।।

ध्वजा स्थापनम्

यज्ञकर्त्ता ध्वजा स्थापन के लिये स्थान को खोदकर गड्ढा बनाए और शुद्ध जल से गड्ढे को पोते। 'ॐ पृथिव्यं नमः' यह कहकर उक्त गड्ढे की पंचोपचार विधि से पूजा करे। भक्त शिरोमणि हनुमन्त लाल जी का ध्वजा रक्त वर्ण की होनी चाहिये तथा ध्वजा में हनुमन्त लाल जी का चित्राङ्कित हो। उक्त ध्वजा को स्वच्छ जल से स्नान कराये तथा घी, सिन्दूर से लिप्त कर उक्त गड्ढे में स्थापित करें। ध्वजा मूल को दृढ़ कर दें। जिससे वर्ष पर्यन्त उसके गिरने की आशंका न रहे, यह देख लेना चाहिये। ध्वजा भंग होने या पतन होने से गृहस्वामी का अनिष्ट होने की सम्भावना रहती है। हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर ध्वजा स्थित हनुमान जी की स्तुति करे।

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं,
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां,
नमामि त प्राञ्जलिराञ्जनेयम्।।

वास्तुविद् से सलाह लेकर सभी वास्तु दोष दूर करने चाहिएं। सोते समय सिर दक्षिण में हो, पानी पीते समय मुख उत्तर या पूर्व की ओर हो। पूजा ईशान कोण में मुख उत्तर या पूर्व की ओर करके बैठें। वास्तु सिद्धान्त आपकी उन्नति, सफलता व सुख-सम्पन्नता के परिचायक हैं, इन्हें अपनाकर अपना, अपने परिजनों व मित्रों का जीवन सफल बनाएँ।

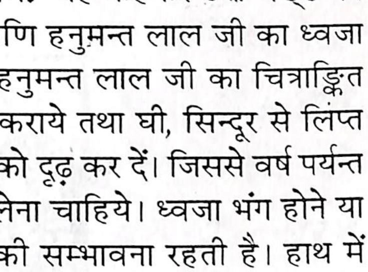

देवासुराणां सर्वेषां मंगलोऽयं महाध्वजः।
गृह्यतां सुखहेतोर्मे ध्वजः श्रीपवनात्मज।।

इस अध्याय में वास्तु शान्ति विधि के साथ-साथ नींव पूजन व शिलान्यास की सरल रीति समझा दी गई है। सभी मनोवांछित घर बनाकर सुखी रहें।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

लेज़र टाइप सैटिंग एवं डिजाइनिंग : सरस्वती कम्प्यूटर्स, मेरठ

भारतीय वास्तुशास्त्र और उसके सिद्धान्त

लेखक—डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

पुस्तक में प्राचीन भारतीय वास्तुशास्त्र के विभिन्न मतों के तुलनात्मक अध्ययन के साथ-साथ उनके गूढ़ रहस्यों को आपके लिये सरल ढंग से अनेकानेक रेखाचित्रों द्वारा समझाया गया है। इन रहस्यों को जानकर वास्तुसिद्धान्तों के अनुरूप भवन निर्माण करके सुख समृद्धि और शान्ति को अपनी सहचरी बनायें। यह पुस्तक सामान्य जन और वास्तुविदों के लिए अत्यन्त उपयोगी हे। इसे पढ़कर जीवन को उन्नत पथ पर प्रशस्त करना ना भूलें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

प्राचीन लालकिताब का सरल अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र भविष्य को जानने का विज्ञान है। इस विज्ञान को जटिल समझकर सामान्य जन इसमें रुचि नहीं लेते हैं। इसकी जटिलता को दूर करने के लिए अनेक वर्षों पूर्व एक पुस्तक उर्दू भाषा में 'लाल किताब' लिखी गई थी। यह पुस्तक जन्मपत्री का फल सरल ढंग से बताती है। उर्दू में होने के कारण हिन्दी पाठक इसके अमूल्य सिद्धान्तों को जान नहीं पाते हैं। हिन्दी में इस पुस्तक का सरल अध्ययन आपके लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। आप इसे पढ़कर कुण्डली का फलित करना सीखने के साथ-साथ नवग्रहों के कुप्रभाव से भी बच सकेंगे।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

लालकिताब और हस्त रेखाएँ

हाथ बनी-बनाई कुण्डली है, फलित जानने के लिए जन्म-तिथि, समय और स्थान की भी आवश्यकता नहीं है। आप भी हस्तरखाओं के अध्ययन से अपना भविष्य जानना चाहते हैं तो लाल किताब के हस्तरेखा सम्बन्धी अनमोल सिद्धान्त पढ़ना ना भूलें। हमें विश्वास हैं कि इस पुस्तक के अध्ययन के बाद आप हस्तरेखाओं में छिपे भविष्य को जान सकेंगे।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-249 401

लालकिताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय

प्राय: नवग्रह के कुप्रभाव से बचने के लिये रत्न-धारण, मन्त्र-जाप, नवग्रह उपासना, यन्त्र व जड़ी धारण आदि उपाय बताये जाते हैं। इन उपायों को सभी नहीं कर पाते हैं। लालकिताब में असानी से किये जा सकने वाले अद्भुत टोटके एवं उपाय दिये गये हैं, जिनको कोई भी कर सकता है। यदि आप इन उपायों को करके नवग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। यह पुस्तक आपको नवग्रह के अनिष्ट से बचाने के साथ-साथ नीच ग्रह को उच्च या शुभ या भाव विशेष में ग्रह पहुँचाने के उपाय भी बतलायेगी।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

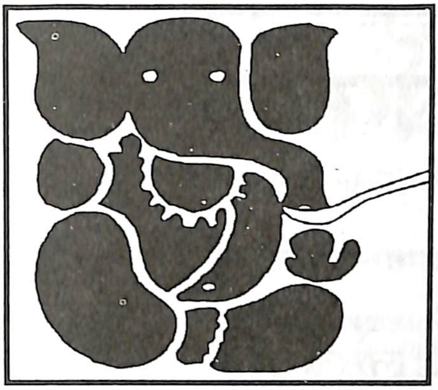

देवप्रतिमाओं द्वारा दुग्धपान से भविष्य के संकेत

देवप्रतिमाओं द्वारा दुग्धपान चमत्कार है या कुछ और . . .।

भौतिकता से घिरा हुआ मानव यन्त्र सदृश भोगलिप्सा में लिप्त है। उसके पास चिन्तन के क्षणों का अभाव है। ज्योतिष, विज्ञान और अध्यात्म की दृष्टि में इस दुग्धपान के पार्श्व में छिपा रहस्य क्या है ? इस दैवीय घटना का भविष्य के प्रति क्या संकेत है ? इस सम्बन्ध आपके अन्तर्मन में जो भी मानसिक-द्वन्द उथल-पुथल मचाए हुए है इस मानसिक-द्वन्द से मुक्त होने के लिए **'देवप्रतिमाओं द्वारा दुग्धपान से भविष्य के संकेत'** पुस्तक पढ़ना न भूलें। यह पुस्तक आपके विचारों को नई दिशा तो प्रदान करेगी ही, साथ ही आपकी ज्ञानपिपासा को भी शान्त करेगी।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-249 401

वर्षफल विचार

लेखक—डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

वर्ष कुंडली बनाकर सम्पूर्ण वर्ष के शुभ और अशुभ का ज्ञान करने के लिए यह पुस्तक पढ़ना न भूलें। इस पुस्तक को पढ़कर आप स्वयं वर्ष कुंडली बिना गुरु की सहायता के स्वयं बनाकर वर्ष भर के प्रत्येक दिन का शुभ और अशुभ फल जान कर सफलता के लिए निज योजनाएं बना सकते हैं। एक बार अवश्य पढ़ें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

वराहमिहिर कृत

'बृहज्जातकम्'

पर आधारित

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

जन्मकुण्डली बनाना आसान है, परन्तु उसका फल कहना अत्यन्त कठिन है। यदि आप जन्मकुण्डली का फलित करना सीखना चाहते हैं तो वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम' की सोदाहरण विस्तृत व्याख्या सहित लिखा गया उत्कृष्ट ग्रन्थ **'प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र'** अवश्य पढ़ें। यह ग्रन्थ आपको फलितज्ञ बना देगा और आप मित्रों, परिजनों और निकटस्थों की जन्मकुण्डलियों का फल कहकर यशस्वी बन सकेंगे।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

आपकी राशि क्या कहती है ?

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

भविष्य जान लेना सभी चाहते हैं। सफलता, सुख-समृद्धि एवं उन्नति को पा लेने की आकांक्षा किसे नहीं है। आप भी यह सब पा लेना चाहते हैं तो चुनिए अपनी राशि और पढ़ लीजिए क्या छिपा है उसके अन्दर ?

अंक बोलते हैं

लेखक—डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

आप भविष्य जानना चाहते हैं तो अंक-ज्योतिष के सरल सिद्धान्तों को खेल-खेल में गिनती गिनते हुए सीख लीजिए। फिर देखिएगा भविष्य की अज्ञात परतें एक-एक करके कितनी सरलता से आपके सम्मुख खुलती जाएंगी। आपकी जटिल समस्याओं का समाधान अंक-ज्योतिष से हो सकता है, लेकिन कैसे ? इसके लिए यह पुस्तक पढ़ना न भूलें।

रणधीर प्रकाशन

हरिद्वार-249 401

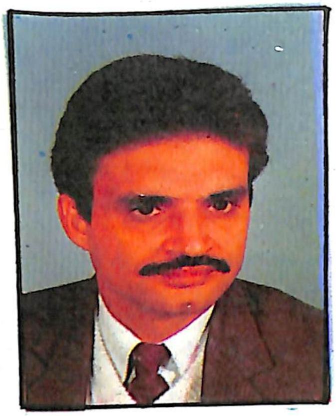

डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

बी०एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर

वास्तुकला और भवन निर्माण

प्राचीन भारत में भवनों का निर्माण वास्तुकला के आधार पर ही होता था, जिससे उस समय का मानव सुखी-समृद्ध था। कालान्तर में पाश्चात्य प्रभाव से वास्तुकला विकृत होती चली गयी। आधुनिक ढंग से बने भवनों में लोग दुःखी, संतप्त और उदासीन रहने लगे। मानव जीवन निरर्थक, अशान्त और तनावग्रस्त हो गया। भारतीय वास्तुकला के सिद्धान्तों में छिपी वैज्ञानिकता को वास्तुविदों ने पहचानकर प्रयोग किया तो पाया कि वास्तु-सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित गृह सुख-शान्तिदायक होते हैं। यदि आप अपने रहने के लिए भवन बना रहे हैं तो इस पुस्तक को पढ़कर सुख, शान्ति व समृद्धिकारक भवन बनाएं। **'वास्तुकला और भवन निर्माण'** नामक इस उपयोगी पुस्तक को आपके लिए लिखा है भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** ने। वास्तुकला के सिद्धान्तों पर आधृत भवन सुख-समृद्धि के पोषक हैं।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार